0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra
gGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-
B·1V2
uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

lic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

प्रकाशन • १

ath, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundatio

lic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

गेनरिख़ वोल्कोव

युगपुरुष का जन्म

कार्ल मार्क्स के व्यक्तित्व और विश्वदृष्टिकोण का विकास

६८२

ath, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundatio

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अनुवादक : ददन उपाध्याय

Генрих Волков

РОЖДЕНИЕ ГЕНИЯ.

Становление личности
и мировоззрения
Карла Маркса.

на языке хинди

Volkov G.
Birth of Genius.
The Development of the Personality
and World Outlook of Karl Marx.
in Hindi

नवान • प्र... प्रकाशन • १६८२

0103000000

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

आप कम्युनिस्ट केवल तभी बन सकते हैं, जब अपने मस्तिष्क को मानवजाति द्वारा संर्जित संपूर्ण निधियों के ज्ञान से समृद्ध बनायें।

लेनिन

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

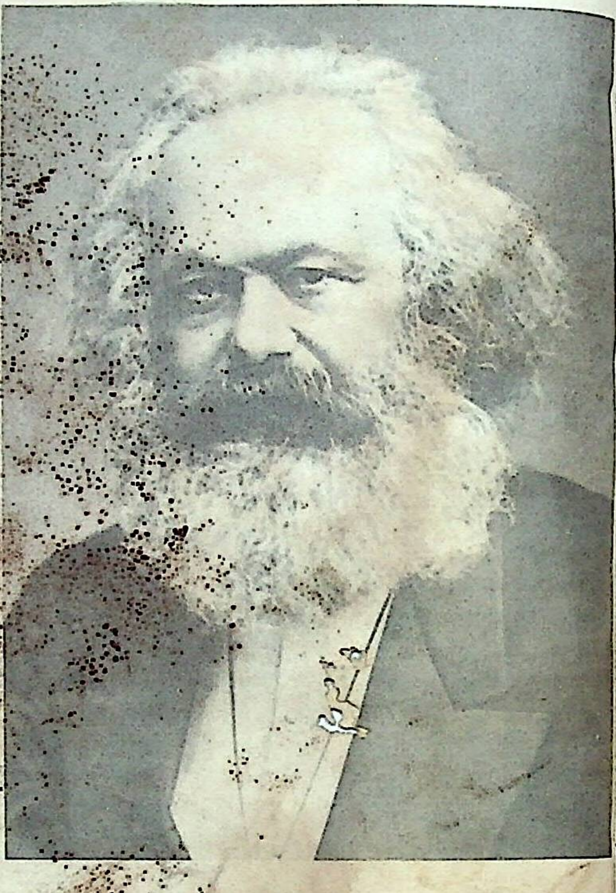

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

विषय-सूची

१

घोर निद्रालुता की बेड़ियों में १३

२

उद्देश्य की खोज में ३७

३

"परिहास का प्रचंड रोष" और "काव्य-प्रेरणा की लालसा" ५४

४

"सच तो यह है कि मैं देव-मंडली को घृणा करता हूं" ७६

५

"दर्शन के बिना कोई प्रगति नहीं हो सकती" . . ११०

६

"विद्यमान अवस्थाओं की निर्मम आलोचना" . . १४२

७

सच्चे संघर्ष-नारे की खोज में १७४

८

कम्युनिज़्म : पूर्ण मानवतावाद २०२

९

युगपुरुष और उनका परिवेश २३८

१०

युगपुरुष के साथ – युगपुरुष २७९

११

'पूंजी' का दर्शन ३०२

उपसंहार ३२७

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

कार्ल मार्क्स छात्र के रूप में।
चित्रकार – ऐ० ग्रिंश्टेइन

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

आपके हाथों में यह पुस्तक न तो कार्ल मार्क्स की जीवनी और न ही मार्क्सवादी सिद्धांत का आम विवेचन है। इसका उद्देश्य आम पाठक को मार्क्सवाद से परिचित कराना, इस महान सिद्धांत के जन्म और विकास का विवरण प्रस्तुत करना है, जिसने मानवजाति के भाग्य को किसी भी अन्य सिद्धांत से कहीं अधिक प्रभावित किया है।

पुस्तक के लेखक ने पाठक को अपने साथ युवा मार्क्स के अन्वेषणों, विचारों और मनोवेगों की दुनिया में, उस सृजन की प्रयोगशाला में खींचने का प्रयास किया है, जहां उनके उत्तेजक विचार विकसित किये गये, ताकि वह इस दुनिया में विचारमग्न होने के लिए अनुप्राणित हो सके, क्योंकि एक युगपुरुष के विकास के मार्ग को देख सकने पर, उससे आत्मिक संसर्ग स्थापित कर सकने पर, भले ही वह परोक्ष संसर्ग हो, जो बौद्धिक

uru.Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

और आत्मिक अनुभव प्राप्त होता है, वह किसी और तरह से नहीं प्राप्त हो सकता।

सुविदित है कि मार्क्सवाद एक जड़सूत्र नहीं, बल्कि कार्य का पथप्रदर्शक सिद्धांत है। स्पष्टतया, मार्क्सवाद का अध्ययन इसके विकास में, गति में, अमल में किया जाना चाहिए, न कि ऐसे "तैयारशुदा" सत्यों के संग्रह के रूप में, जिन्हें सिर्फ रट लेने और तोते की भांति व्यक्त करने की आवश्यकता होती है।

मार्क्सवाद के मर्म को कैसे समझा जाये, इसने संसार को समझने की जो नयी दृष्टि प्रदान की उसको, और मार्क्सवाद को इसके पूर्ववर्ती दार्शनिक, सामाजिक-आर्थिक सिद्धांतों से पृथक करने वाली चीज़ को कैसे समझा जाये? इसके लिए हमें उस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए जिससे मार्क्सवाद के सिद्धांतकार गुज़रे। इसके लिए आवश्यक है कि मार्क्स के रचनात्मक चिंतन के प्रयासों को दोहराया और अनुभव किया जाये, जिन्होंने नये विश्व-दृष्टिकोण को जन्म दिया और, सर्वोपरि मानव संस्कृति की विरासत में, जिसने मार्क्सवाद के स्रोत का काम किया, पारंगति प्राप्त की जाये तथा उसे आलोचनात्मक ढंग से अध्ययन किया जाये। इसके लिए सिद्धांत और व्यवहार में मार्क्सवाद को कार्यान्वित करने की योग्यता प्राप्त करना आवश्यक है।

बेशक, यह बहुत कठिन है और बड़ी मात्रा में शक्ति, प्रयास और समय लगाने की मांग करता है। लेकिन "विज्ञान का कोई सीधा और सपाट राजमार्ग नहीं है

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

और उसकी प्रकाशमान चोटियों तक पहुंचने का केवल उन्हीं को अवसर प्राप्त हो सकता है, जो उसके ढालू रास्तों की थका देने वाली चढ़ाई से नहीं डरते" (मार्क्स)।

इससे आसान रास्ते प्रायः मार्क्सवाद के अतिसरलीकरण और विकृतीकरण की ओर ले जाते हैं। वे, एक ओर, जड़सूत्रवादियों और दूसरी ओर, "हतोत्साहितों" को जन्म देते हैं। युवा कम्युनिस्ट लीग की तीसरी कांग्रेस में अपने सुप्रसिद्ध भाषण में लेनिन के दिमाग में तब यही बात थी, जब उन्होंने पाठ्यपुस्तकों और सुबोध पुस्तिकाओं में बने-बनाये निष्कर्षों और नारों की सहायता से मार्क्सवाद (कम्युनिज़्म) के "अतिसरलीकृत" अध्ययन के ख़िलाफ़ चेताया था।

स्वयं मार्क्स ने "जो कुछ मानव चिंतन द्वारा सृजित हुआ था, उसका नूतन संस्कार किया, उसकी आलोचना की और उसे मज़दूर आंदोलन की कसौटी पर कसकर ऐसे निष्कर्ष निकाले, जो बुर्जुआ संकीर्णता में जकड़े हुए या बुर्जुआ अंधविश्वास में डूबे हुए लोग नहीं निकाल सकते थे"*।

यदि हम जानना चाहते हैं कि मार्क्स किस रास्ते से मार्क्सवाद पर पहुंचे और कैसे मानव प्रतिभा की एक महानतम उपलब्धि संभव हुई, यदि हम यह मार्क्सवाद को इसके जन्म और विकास की प्रक्रिया में समझने के लिए ग्रहण करना चाहते हैं, तो स्वभावतः हम पहले

---

* व्ला० इ० लेनिन, 'युवक संघों के कार्यभार', १९२०।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

मार्क्स की प्रारंभिक कृतियों, उनके जीवन और कृतित्व की प्रारंभिक अवधि की ओर मुड़ते हैं।

वस्तुतः क्यों मार्क्स ने ही दर्शन में क्रांति लायी, जिसके फलस्वरूप मानवजाति को "नयी दृष्टि" मिली और इसके समक्ष नये क्षितिज खुले? इसके लिए किन व्यक्तिगत मानव गुणों की आवश्यकता थी? स्पष्टतया, ये प्रश्न उन लोगों के लिए गौण महत्व के नहीं हैं, जो दर्शन और जीवन में मार्क्स का अनुसरण करना चाहते हैं।

यदि यह सही है कि मनुष्य की पहचान उसके कार्य से होती है, तो यह मार्क्स के बारे में और भी ज्यादा सही है, क्योंकि वह असाधारण रूप से एकनिष्ठ और उद्देश्यपूर्ण व्यक्ति थे।

मार्क्स के क्रांतिकारी दर्शन के विकास के साथ-साथ उनका व्यक्तित्व भी विकसित होता गया। उनकी कृतियों का विश्लेषण उनकी आत्मिक प्रयोगशाला के अंतरतम विद्वान, क्रांतिकारी और नागरिक के रूप में उनके नैतिक चरित्र के प्रकटीकरण की सर्वोत्तम कुंजी है। अतः इस पुस्तक में मार्क्स के व्यक्तित्व के विकास और मार्क्सवाद के विकास को एक ही प्रक्रिया के रूप में देखा गया है।

यह पुस्तक वैज्ञानिक कम्युनिज़्म के संस्थापक के जीवन में अपेक्षाकृत संक्षिप्त अवधि – १८३५ से १८४४ तक यानी स्कूल छोड़ने के समय से लेकर उनकी पहली कृतियों तक, जिनमें भौतिकवाद और वैज्ञानिक कम्युनिज़्म में संक्रमण एक तथ्य बन जाता है – पर मुख्य ध्यान केंद्रित करती है।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

मनुष्य के जीवन में दस वर्ष उतने महत्वपूर्ण नहीं प्रतीत हो सकते हैं। तो भी, इसी अवधि में एक टुट-पुंजिया बुर्जुआ परिवार का स्कूली शिष्य अपने युग और अपने समकालीनों से वहुत आगे निकल जाते हुए आत्मिक विकास की ऊंचाइयों पर पहुंच गया।

मैंने युवा मार्क्स के आत्मिक विकास की विस्तृत या पूर्ण तस्वीर प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं किया है। इस संक्षिप्त कार्य के उद्देश्य के लिए केवल उन्हीं मुख्य दिशाओं पर विचार करना ही काफ़ी है, जिनमें उनका व्यक्तित्व और विश्व-दृष्टिकोण विकसित हुआ। उद्देश्य उतना मार्क्स की कृतियों की विषय-वस्तु की व्याख्या करना नहीं है, जितना कि उनमें पाठक की दिलचस्पी पैदा करना और स्वयं सोचने तथा जांच-पड़ताल करने के लिए उसे प्रोत्साहित करना।

संभवतः युवा पाठक को पुस्तक में ऐसे नामों, पारि-भाषिक शब्दों और समस्याओं से साक्षात्कार होगा, जिनसे वह परिचित नहीं है और संभवतः वह सब कुछ तत्काल ही नहीं समझ लेगा। बहुत-सी चीजें उसे चिंतन-मनन करने के लिए प्रेरित करेंगी और बहुत-सी चीजें ऐसे प्रश्न उत्पन्न करेंगी, जो उसमें अधिक गहराई से अध्ययन करने के लिए प्रेरणा जाग्रत करेंगी। मूल स्रोतों और पुस्तकों के संदर्भ, जो आगे के अध्ययन के लिए चिंतन-सामग्री प्रदान कर सकती हैं, यह ध्यान में रखते हुए दिये गये हैं कि वे उस क्षेत्र की स्वतंत्र जांच-पड़ताल के लिए मार्गदर्शन कर सकें, जिससे यहां उठायी गयी समस्याएं संबद्ध हैं।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

और यदि इस पुस्तक के बाद पाठक मार्क्स के विचारों के क्षेत्र में अधिक गहराई से जांच-पड़ताल करना चाहता है, यदि मार्क्स का अनुसरण करते हुए वह भी प्लेटो और अरस्तू, कांट और फ़िख़्ते, हेगेल और फ़ायरबाख़ के दर्शन, सेंट-सीमोन, फ़ुरिये और रिकार्डो की कृतियों तथा शेक्सपियर और बाल्ज़ाक, गेटे और हाइने की रचनाओं की ओर मुड़ता है, तो वह समझने के सही मार्ग पर होगा कि मार्क्सवाद का जन्म कैसे हुआ और यह क्या चीज़ है।

क्यों हमने ललित साहित्य का भी उल्लेख किया है? बात यह है कि केवल दार्शनिक और सामाजिक-आर्थिक पूर्वाधारों ने ही नहीं, बल्कि सौंदर्यात्मक पूर्वाधारों ने भी मार्क्सवाद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। युवा मार्क्स के लिए स्वतंत्रता-प्रेमी कला का संसार उनकी आस्थाओं का पहला विद्यालय था। कला ने ही उन्हें यथार्थ के प्रति आलोचनात्मक रुख अपनाने और दंभी आत्मसंतुष्ट कूपमंडूकता की भर्त्सना करने के लिए प्रेरित किया। मार्क्स की कलात्मक चेतना का विकास उनकी राजनीतिक चेतना के विकास के साथ एकाकार हो गया। कूपमंडूकता की उनकी आलोचना उस समाज के आधार की आलोचना बन गयी, जिसने इसे जन्म दिया।

कविता में मार्क्स की उत्कट दिलचस्पी, उनकी सौंदर्यात्मक अभिरुचियों के प्रारंभिक विकास तथा काव्य और गद्य में उनके अपने प्रयोगों—इस सबने बाद में उनकी कृतियों पर अत्यंत लाभदायक प्रभाव डाला, जिसमें गहन वैज्ञानिक विचार तथा विवेचन के मेधावी कलात्मक रूप का संगम हुआ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

१

घोर निद्रालुता की बेड़ियों में

यह सही है कि पुरानी दुनिया कूपमंडूक की है। लेकिन हमें कूपमंडूक को एक ऐसा भूत नहीं मानना चाहिए, जिससे भय खाकर पीछे हट जायें। इसके विपरीत, हमें उस पर नज़र रखनी चाहिए। दुनिया के इस मालिक का अध्ययन करना उपयोगी है।

कार्ल मार्क्स*

जी हां, कूपमंडूक की दुनिया पर एक दृष्टि डालना समीचीन है, मात्र इस वजह से कि इस दुनिया के साथ संघर्ष ने ही स्वयं मार्क्स की प्रतिभा, एक योद्धा, चिंतक और क्रांतिकारी के रूप में उनके व्यक्तित्व को प्रखर और विकसित किया। इसका कम से कम एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना संगत है, ताकि उस पृष्ठभूमि को अधिक स्पष्टता के साथ दर्शाया जा सके, जिसमें मार्क्स की प्रतिभा पुष्पित हुई।

जर्मन कूपमंडूकता इस बात के लिए प्रसिद्ध है कि हाइने की अति कठोर व्यंग्योक्तियों तथा मार्क्स और एंगेल्स के प्राणवेधी कटाक्षों ने इसकी धज्जियां उड़ा दीं। मार्क्स के लिए कोई भी चीज़ उतनी घृणास्पद नहीं थी, जितनी कि आत्मतुष्ट कूपमंडूकता, चाहे वह किसी भी

* *Deutsch-Französische Jahrbücher*, १८६३।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

क्षेत्र – व्यक्तिगत संबंधों, रोज़मर्रा के जीवन, विज्ञान, काव्य, राजनीति और क्रांतिकारी संघर्ष के व्यवहार के क्षेत्र – और किसी भी रूप में क्यों न हो।

लेकिन कूपमंडूकता केवल एक "राष्ट्रीय" आविष्कार हरगिज़ नहीं है। यह टुटपुंजिया बुर्जुआ आत्मतुष्टि, पाखंडपूर्ण धार्मिक नैतिकता और कल के चाटुकार की दासत्वपूर्ण मानसिकता की स्वाभाविक उपज है, जो तन-मन से एक चाटुकार ही बना रहा है। यह एक ऐसी सामाजिक प्रणाली का अनिवार्य फल है, जो "स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व" के "मानवीय" नारे के अंतर्गत मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण करती है, लोगों को धनकुबेरों के गुलाम बनाती है और इसे ही मानवजाति की महान उपलब्धि बताती है।

कूपमंडूकता विभिन्न देशों में ऐतिहासिक परिस्थितियों और राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसार विकसित हुई। जर्मनी की कूपमंडूकता की भी अपनी असाधारण विशेषता थी और इसके विशेष कारण थे।

१९वीं सदी के प्रारंभ में "जर्मन राष्ट्र के पवित्र रोमन साम्राज्य" में, जैसा कि तब इसे इतनी शान-शौक से कहा जाता था, काफ़ी बड़े राज्यों (जैसे प्रशा और अास्ट्रिया) से लेकर सबसे छोटे राज्यों, रियासतों, ड्यूक की रियासतों, नवाबी जागीरों और स्वतंत्र शाही नगरों तक कई सौ "संप्रभु" राज्य सम्मिलित थे। उन्हें राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त थी और वे केवल सम्राट तथा डायट की सत्ता के अधीन थे, एक ऐसी सत्ता, जो

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

कभी-कभी अत्यंत भ्रामक थी। परिणामस्वरूप, सर्वत्र गृह-युद्ध, गड़बड़ी और घोर अव्यवस्था का बोलबाला था।

हर छोटा राजा अपनी प्रजा के लिए एक निरंकुश शासक था। दरबार में सत्ता मंत्रियों और सरकारी अधिकारियों के हाथों में थी, जिन्हें, फ्रेडरिक एंगेल्स के शब्दों में, कार्य की पूर्ण स्वतंत्रता और पूर्ण दंडमुक्ति प्राप्त थी, बशर्ते कि वे अपने मालिक का ख़ज़ाना भरें और उसके "हरम" के लिए प्रचुर मात्रा में सुंदरियां जुटायें।

धनलोलुप कूपमंडूकों, बुर्जुआ लोगों ने उत्पीड़न और अपमान की स्थिति इस आशा सें स्वीकार कर ली कि खलबली से लाभ उठाना अधिक आसान था और वे निरंतर सामाजिक अव्यवस्था में धन-दौलत के अपार स्रोत पाने में सफल रहे। जनता के साथ ऐक्यबद्ध होकर वे पुरानी सत्ता का तख़्ता उलटने और साम्राज्य को रूपांतरित करने में समर्थ हो सकते थे, जैसा कि अंग्रेज़ बुर्जुआ वर्ग ने १६४० और १६८८ के बीच किसी हद तक किया था और जैसा कि उस समय फ्रांस में हुआ था।

लेकिन जर्मन बुर्जुआ वर्ग के पास ऐसी शक्ति नहीं थी और न ही उसने ऐसे साहस का कभी दम भरा। "किसानों, व्यापारियों और कारखानेदारों ने खून चूसने वाली सरकार तथा बुरे हालातों का दोहरा दबाव महसूस किया अभिजात और राजा अपने अधीन लोगों को बुरी तरह निचोड़ने के बावजूद अपने सतत बढ़ते व्ययों को पूरा नहीं कर पाते। सब कुछ ग़लत था और पूरे देश

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

में आम अशांति व्याप्त थी। कोई शिक्षा नहीं, लोगों की चेतना को प्रभावित करने के कोई साधन नहीं, कोई स्वतंत्र प्रेस नहीं, कोई जन-भावना नहीं, यहां तक कि दूसरे देशों के साथ थोड़ा बहुत व्यापार भी नहीं – नीचता और स्वार्थपरता के अलावा और कुछ नहीं। एक नीच, क्षुद्र, घृणित दुकानदारी मनोप्रवृत्ति सभी लोगों के मन में घर कर गयी है।"*

यह चित्र उस "राज्य की बीमारी" से बहुत कुछ मिलता-जुलता है, जिसके बारे में गेटे के 'फ़ाउस्ट' में चांसलर अपने सम्राट को यह शिकायत करते हुए बताता है कि चारों ओर घोर ग़रीबी और मुसीबत व्याप्त है, एक बुराई दूसरी बुराई को जन्म दे रही है:

इस दरजा बुलंदी से हर तरफ़ नज़र डालो
एक ख़्वाबे–परीशां है इस मुल्क को देखो,
एक ऐब के सांचे में यहां दूसरा ढलता है,
क़ानून की शह पर ही हर ज़ुल्म पलता है,
एक दौरे ग़लतकारी जो बढ़ता ही जाता है!...

...हर एक नेकनीयत इंसान का हश्र यही देखा
रिश्वत से, ख़ुशामद से आख़िर को पिघलता है,

---

* का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, 'पवित्र परिवार अथवा आलोचनात्मक आलोचना की आलोचना। ब्रूनो बा— और उनकी मंडली के विरुद्ध', १८४५।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

न्यायकर्ता को सज़ाओं का खुद कोई नहीं डर है;
मिल जाता है मुजरिम से अंजाम ये होता है।
मैंने जो ये खींचा है अच्छा तो नहीं नक्शा
बस मेरा अगर चलता इससे भी बुरा कहता।*

तभी अनायास फ़्रांसीसी क्रांति ने भारी निद्रालुता और निश्चल सड़ांध के इस राज्य पर वज्र-सा प्रहार किया। हताशा और नैराश्य का स्थान आम उत्साह ने ग्रहण किया। यहां तक कि उदारतावादी जर्मन बुर्जुआ लोगों ने "अंधाधुंध फ़ोंदवादी" कार्रवाइयां करने का भी साहस किया: वे सुरागारों में उत्साहपूर्वक मार्सेइयेज़ गा रहे थे और उन्होंने फ़्रांसीसी राष्ट्रीय सभा को अभिनंदन संदेश भेजे। जर्मन कवियों ने एक स्वर में फ़्रांसीसी जनता के यशगान किये। जर्मनी में क्रांति की ज़ोरदार हिमायत करते हुए जैकोबिन के समर्थक प्रकट हुए।

लेकिन पश्चिम से आये इस वज्रतूफ़ान से उन्माद थोड़े समय तक ही रहा। जैकोबिन आतंक ने जर्मन बुर्जुआ वर्ग को भयभीत कर दिया। भद्र कूपमंडूकों ने, जो निजी उद्यम की स्वतंत्रता और ड्यूकों तथा काउंटों के साथ समानता और भ्रातृत्व का सपना देखने लगे थे, अब फ़्रांस से आने वाली खबरों को कायरतापूर्ण थरथराहट और क्रोध से सुना। जो लोग अभी कुछ समय पहले क्रांति के जोशीले समर्थक बने हुए थे, अब इसके [illegible] कट्टर शत्रु बन गये।

---

* गेटे, 'फ़ाउस्ट'।

-465

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

और फिर नेपोलियन ने अपनी सेनाओं के साथ जर्मन भूमि पर आक्रमण कर दिया। वस्तुगत दृष्टि से वह जर्मनी के लिए क्रांति का एक प्रतिनिधि था, क्योंकि उसने इसके सिद्धांतों का प्रचार किया। पुरानी सामंती प्रथाओं का उन्मूलन करते हुए उसने अपनी, और निस्संदेह अधिक प्रगतिशील विधि-संहिता क़ायम की, सड़े-गले साम्राज्य को नष्ट किया और बड़े-बड़े राज्य बनाकर छोटे राज्यों की संख्या कम की।

फिर भी, जर्मनों ने नेपोलियन के प्रति कोई विशेष कृतज्ञता नहीं महसूस की। यह समझ में आने योग्य बात थी: उनके राष्ट्रीय अभिमान को फ़ौजी पराजय के कलंक और इस बात से ठेस पहुंचा था कि "अपहरणकर्ता" ने अपने बूट की एक ही ठोकर से सामंतवाद के जर्जर तंत्र को गिरा दिया था, जो कूपमंडूक को इतना प्रिय था। जर्मन कूपमंडूक अपने मालिक के प्रति स्वामिभक्ति बंद करने से मर जाना अधिक पसंद करता।

नेपोलियन की पराजय के बाद जर्मनी को घोर निद्रालुता की स्थिति में, जिससे इसे झंझोड़ कर जगा दिया गया था, पुनः वापस लौटने का चिरप्रतीक्षित अवसर प्राप्त हुआ। प्रतिक्रिया ने सर्वत्र विजयोत्सव मनाया। यहां तक कि एक जर्मन राजा ने तो अपने सैनिकों की चोटियां फिर से बनवायीं, जो फ़्रांसीसियों के अपवित्र हाथों द्वारा क़तर दी गयी थीं।

राजाओं के बीच भी प्रगति के कुछ समर्थक

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

मिसाल के तौर पर, वेर्टेम्बेर्ग के राजा ने अपनी प्रजा को एक संविधान देने का निर्णय किया, जिसमें संसद की स्थापना की व्यवस्था थी। इस उद्देश्य से उसने विभिन्न सामाजिक श्रेणियों के प्रतिनिधियों की एक सभा बुलायी। लेकिन तभी कुछ ऐसा हुआ, जो सिर्फ़ जर्मनी में ही हो सकता था। सामाजिक श्रेणियों के प्रतिनिधियों ने राजा के उदारतावादी प्रस्तावों को मानने से इन्कार कर दिया और "अच्छे पुराने क़ानूनों" की बहाली की मांग की। ठीक उसी तरह जैसे हाइने के 'चीन का सम्राट' में :

जो क्रांति की मौजूदगी से चैन मिले
तो कहने लगते हैं आपस में मंचू अभिजात लोग :
'ज़रूरत इसकी है तलवे पर मारिये डंडे,
यहां भले हमें संविधान की ज़रूरत क्या !"

क्या ऐसी परिस्थितियों में लेशमात्र भी उग्रवादी राजनीतिक आंदोलन उभर सकता था? क्या कोई आशा की जा सकती थी कि आम लोग अपने देश की नियति में हस्तक्षेप करेंगे, अपना संकल्प स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करेंगे?

जर्मन बुर्जुआ वर्ग ने अपनी सभी आशाएं प्रशा के राजतंत्र पर लगा दीं, उसने इसे देश में आर्थिक और राजनीतिक संकेंद्रण प्राप्त करने में समर्थ एकमात्र शक्ति के रूप में देखा। आपसी सांघातिक कलहों और विभाजन के चलते एक संयुक्त बुर्जुआ राज्य का आदर्श जर्मन

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

कूपमंडूक के लिए राष्ट्रीय आकांक्षाओं और आशाओं
जड़पूजा बन गया। "राज्य की यह स्थिति सरका
अधिकारी की अंतर्विवेकशीलता, जो और कहीं
पायी जाती; और राज्य के बारे में उन सभी भ्रमों
स्पष्ट कर देती है, जो जर्मनी में प्रचलित हैं"।*

जर्मन कूपमंडूक सत्ताधारियों की तावेदारी से
संतुष्ट नहीं था। वह ईश्वर का भी तावेदार था, जिस
वह "अपने दिल में लिये फिरता था"। जर्मनी धर्मसुधा
(रेफ़ार्मेशन) और प्रोटेस्टेंट धर्म का जन्म-स्थान
और धर्मपरायणता की भावना, जिसने "नैति
पवित्रता" और ईश-प्रेम की मांग की, वहां व
अधिक मजबूत थी।

सभी रूपों में दासता और पाखंडपूर्ण नैतिक
नैतिक बंधनों की संहिता सहित धर्म की वैध संता
कूपमंडूक—की संकुचित भौंहों पर अपने दोनों ज
दाताओं की छाप होती है। उसे अनेक भूमिकाओं में प
जा सकता था। वह मालिक या नौकर, एक माम
कबाड़ी या घटिया विचारों के बिसाती की भूमिक
अदा कर सकता था। सभी सूरतों में वह अपने वरि
के समक्ष, चाहे वह मालिक, राजा या ईश्वर हो, न
रगड़ने और उनकी तावेदारी करने के लिए प्रसिद्ध
सदियों के दौरान विकसित और दृढ़ीकृत यह चाटुका
कूपमंडूक के लिए एक आंतरिक, अचेत आवश्यक

---

* का० मार्क्स, 'जर्मन विचारधारा', १८४५-१८

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

उसकी मनोवृत्ति, उसकी आध्यात्मिक दुनिया बन जाती है। उसके विचारों और भावनाओं पर जड़सूत्रों की पट्टी चढ़ी होती है, वह अपने मन-मस्तिष्क में बेड़ियां ढोये फिरता है और इसलिए उनका आदर करता है। वह कुछ धर्मविधानों, ऊपर से गश्ती पत्रों और आदेशों के बिना तो अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता। स्वतंत्र कार्रवाई करने की आवश्यकता से पाला पड़ने पर उसे पसीना छूटने लगता है। यदि उसे चुनाव की स्वतंत्रता प्रदान की जाये, तो वह स्वतंत्रता को कभी नहीं चुनेगा।

उस समय का प्रशियाई कूपमंडूक अनुशासनप्रिय था। “महामहिम” की फ़ौजी और आध्यात्मिक बैरकों में प्रशिक्षित कूपमंडूक ने डंडा-अनुशासन को आसानी से अंगीकार कर लिया और यह सचमुच मान बैठा कि इस पर सारी दुनिया टिकी हुई है। उसे वस्तुतः डंडे से “श्वानवत्” अनुरक्ति थी और अपने मालिक के प्रति स्वामिभक्ति के प्रमाण के रूप में वह इस पर हाथ लगाने वाले किसी भी व्यक्ति का गला काटने के लिए तैयार था। स्वयं उसने स्वेच्छापूर्वक आनुशासिक डंडे की भूमिका अदा की और “उपद्रवियों” की खासी मरम्मत की।

कूपमंडूक अपनी धर्मपरायणता, अपने आचरण की निष्कलंक नैतिकता से इतना मदहोश होता है कि वह प्रत्येक और सबको “नैतिकता का उपदेश देना”, उन्हें सही रास्ते पर लाना अपना पवित्र कर्तव्य मानता है। वह ऐसी हर चीज़ के अज्ञान को एक सद्गुण मानता है,

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

जो आदमी को ऐशो-आराम से रहने में सहायता नहीं पहुंचाती।

मार्क्स ने उनमें से एक का वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया है: "कल हास्से ग्रेइफ़्स्वाल्ड से आये, जिनके बारे में एकमात्र चीज़, जो मुझे विलक्षण लगी, उनके गांव के पादरी जैसे बड़े ऊंचे बूट हैं। उन्होंने गांव के पादरी के ऊंचे बूटों जैसी बात भी की। उन्हें किसी चीज़ के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था। फिर भी, वह केंटरबरी के उबाऊ आंसेल्म के बारे में अनेक खंडों वाली कृति प्रकाशित करने की तैयारी कर रहे हैं, जिस पर वह दस साल से काम कर रहे हैं। उनका ख़्याल है कि वर्तमान आलोचनात्मक प्रवृत्ति एक ऐसा क्षण है, जिस पर अनिवार्यतः क़ाबू पाया जाना चाहिए। वह धार्मिकता को जीवन-अनुभव का परिणाम बताते हैं, जिससे शायद उनका आशय बहुत अधिक बच्चे होने और अपनी मोटी तोंद से है, क्योंकि मोटी तोंदें सभी प्रकार के अनुभवों से गुज़रती हैं, और जैसा कि कांट कहते हैं, यदि वे पिचकती हैं, तो अश्लीलता बन जाती है, यदि फूलती है, तो धार्मिक प्रेरणा बन जाती है। अहै, धार्मिक क़ब्ज़ के साथ क्या ख़ूब आदमी है यह पवित्र हास्से!"*

हास्से मार्का कूपमंडूक आडंबरपूर्ण भाषण झाड़ने के शौक़ीन होते हैं और अपनी निकृष्ट और सीमित आवश्यकताओं

---

* का० मार्क्स, आ० रूगे को, १८४२।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

ताओं को दुनिया के समक्ष "मन-मस्तिष्क" की आवश्यकताओं के रूप में पेश करते हैं। वे योद्धा होने से भी इन्कार नहीं करते, लेकिन वे ऐसे योद्धा हैं, जो अपने "प्राणों की बाज़ी लगाने" के लिए नहीं, बल्कि अपने "जीवन" और "स्वार्थ" के लिए योद्धा बने रहते हैं।

विचारों की अपनी आत्मसंतुष्ट व्यभिचारिता को सत्य की खोज में रोमानी विचरण के रूप में प्रस्तुत करते हुए वे चिंतक होने का दम भरते हैं, लेकिन आम तौर पर "दैवी विधान" से आगे नहीं बढ़ पाते। वे घिसी-पिटी, सतही बातों और "शिक्षाप्रद" बकवास की बंद गली में अपनी मतिमंदता पर शान चढ़ाते हैं।

मार्क्स ने अंग्रेज़ नीतिवादी जेरेमी बेन्थम (१७४८–१८३२), १९वीं सदी के बुर्जुआ चिंतन के उस गुरु-गंभीर, पंडिताऊ और नीरस भविष्यवक्ता, "बुर्जुआ मूर्खता" के उस "महामनीषी" को "कूपमंडूकों का" सैद्धांतिक "जन्मदाता" कहा।* "भोली-भाली मंदबुद्धि" से बेन्थम ने कूपमंडूक को, जो अपने स्वार्थपरक हित को समाज में सभी "उपयोगी" चीज़ों का मापदंड मानता है, आदर्श मानव के रूप में घोषित किया।

मार्क्स ने 'पूंजी' में लिखा है, "बेन्थम का कूपमंडूकों में वही स्थान है, जो कवियों में मार्टिन टप्पर का है।" पिछली शताब्दी के मध्य में अंग्रेज़ी कूपमंडूक हलकों में टप्पर को बड़ी लोकप्रियता प्राप्त थी, जिन्हें उसकी

---

* कार्ल मार्क्स, 'पूंजी', खंड १।

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

कविताओं का आडम्बरी भोंडापन और मिथ्या गूढ़
खूब जंची। अपनी 'आत्मस्वीकृतियों' – १८६५ में अप
बड़ी पुत्रियों की एक प्रश्नावली – में एक प्रश्न "आप
लिए असह्य" के उत्तर में मार्क्स ने लिखा : "मार्टि
टप्पर"। बाज़ारू कलमघिस्सु लेखकों, गंदे राजनीति
षड्यन्त्रकारियों और बुद्धिहीन शेखीबाज़ों की पूरी जमा
में से, जिन्होंने मार्क्स को जीवन भर निर्ममतापूर्व
सताया, मार्क्स ने बिल्कुल सही-सही एक नाम चुना
एक ऐसे व्यक्ति का नाम, जिसके साथ मार्क्स का क
कोई व्यक्तिगत संपर्क नहीं था, लेकिन जो मार्क्स
नज़रों में कूपमंडूकों की अश्लील रुचियों को उभारने
सहायक बाज़ारू सफलता, साहित्यिक कूपमंडूकतावाद
प्रतीक था।

ऐसा कूपमंडूक "सिद्धांतकार" सभी उदात्त, रोमा
और "आदर्श" चीज़ों की "पूजा करता" है और "भ
भौतिकवाद" की "निन्दा करता" है। कूपमंडूक के ि
भौतिकवाद शब्द का अर्थ है पेटूपन, पियक्कड़पन, दुर्वा
नाएं, दंभ, धनलिप्सा, तृष्णा, लोलुपता, मुनाफ़ाखो
और स्टाक-एक्सचेंज की ठगबाज़ी – संक्षेप में वे स
कुत्सित दुर्गुण, जिनमें वह पर्दे की आड़ में स्वयं लि
रहता है। और "आदर्शवाद" शब्द का अर्थ वह सदाचा
लोकोपकार और साधारणतः "एक बेहतर दुनिया"
विश्वास समझता है, जिसकी वह औरों के सामने
हांकता है, पर जिसमें वह ज्यादा से ज्यादा तभी विश्व
करता है, जब अधिक पीने के बाद उसके सिर में

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

होता है या जब वह दिवालिया हो जाता है, जो कि उसकी "भौतिकवादी" ज्यादतियों के परिणाम होते हैं। उसी समय वह अपना यह प्रिय राग अलापता है: "मानव क्या है? – आधा जानवर और आधा फ़रिश्ता।"*

संभवत: कूपमंडूक का यही राग हेनरिख़ हाइने के दिमाग़ में था, जब उन्होंने लिखा:

न मैं बुरा हूं, न मैं अच्छा हूं,
न तेज़ चलता हूं, न मैं धीमें।
जो कल बढ़ा था ज़रा-सा आगे,
तो आज जाना है मुझको पीछे।

मैं बुद्धिमत्तापूर्ण पुराणपंथी हूं,
न मैं हूं घोड़ी, न मैं हूं घोड़ा,
सोफ़ोक्लीज़ और चाबुक दोनों से
प्रेरणा मैं हूं लेने वाला।

आह, वे बहुत भावुक हैं, "सोफ़ोक्लीज़ और चाबुक" के ये उन्मत्त प्रेमी। "वही कूपमंडूक नीचता, जो सर्वहारा में कुत्सित, भ्रष्ट फटेहालों के अलावा और कुछ नहीं देखती और जो जून, १८४८ में पेरिस कत्लेआम पर खुश हो रही है, जबकि ३,००० 'फटेहालों' को मौत

* फ़्रे० एंगेल्स, 'लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अंत', १८८६।

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

के घाट उतार दिया गया – वही कूपमंडूक नीचता जानवरों के प्रति क्रूरता की रोकथाम के लिए भावुक समाजों के परिहास पर क्रुद्ध है।"*

बेशक, कूपमंडूकता के अनेक चेहरे होते हैं। यह ऐसे परिमार्जित, प्रांजल रूप भी धारण कर सकती है, जिनमें यह आसानी से पहचान में नहीं आती। यह फ़ैशन का अनुकरण करती है और प्रत्येक नये युग के साथ अपनी वेशभूषा बदल देती है।

१९वीं शताब्दी के प्रारंभ में कूपमंडूकता जर्मन समाज की नस-नस में बैठ गयी थी। इसका ज़हर विज्ञान, काव्य और राजनीति में फैल गया था।

लेकिन कूपमंडूक जर्मनी ही वस्तुतः संपूर्ण जर्मनी नहीं था। उदीयमान सर्वहारा, "सिलेशिया के बुनकरों का भी जर्मनी था, जिन्होंने "पितृभूमि के बगुला-भगतों के लिए अभिशाप" (हाइने) बुना। लेसिंग, गेटे, कांट, फ़िख़्ते और हेगेल का भी जर्मनी था। पर कूपमंडूक दलदल से बहुत बुलंद गेटे और हेगेल जैसी विराट हस्तियों ने भी कभी-कभी अपने पैर इस दलदल में फंसा लिये। फिर भी, "पृथ्वी पर स्वर्ग बनाने" के बारे में "नया राग शुरू" करने वालों ने अपनी सारी आशाएं उन पर लगा दीं।

---

* का० मार्क्स और फ़्रे० एंगेल्स, '*Neue Rheinische Zeitung. Politisch-Ökonomische Revue No. 2* समीक्षाएं', १८५०।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

१९वीं सदी के पांचवें दशक तक, अर्थात उस समय तक, जब मार्क्स और एंगेल्स ने सामाजिक कार्यकलापों के क्षेत्र में प्रवेश किया, जर्मनी अपनी "घोर निद्रालुता" से जगने लगा था। यह क्रांति से व्याप्त था और जर्मन क्लासिकीय दर्शन ने एक तरह से इसके सैद्धांतिक आधार का काम किया।

जिस तरह वाल्तेयर का अट्टहास राजा का सिर गिलोटीन से क़लम होने के पहले प्रतिध्वनित हुआ, जिस तरह मान्तेस्क्यू, रूसो और दिदेरो के विचारों ने, जिन्होंने फ़्रांसीसी सामाजिक चेतना में एक क्रांति ला दी, १८वीं सदी के अंत में देश में राजनीतिक क्रांति का मार्गदर्शन किया, उसी तरह गेटे की उदास, मेफ़िस्टोफ़ीलीस जैसी मंदमुस्कान तथा कांट और हेगेल की भारी-भरकम सैद्धांतिक रचनाओं ने जर्मनी में आसन्न क्रांति की उद्घोषणा की।

कांट का दर्शन, एक ओर, फ़्रांसीसी क्रांति के विचारों और दूसरी ओर, तत्कालीन प्राकृतिक विज्ञानों की उपलब्धियों से संपोषित हुआ। उनके प्रकांड मस्तिष्क ने खगोल-विज्ञान और गणितशास्त्र से लेकर नीतिशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र तक पूर्ववर्ती चिंतन के सभी प्रश्नों के उत्तर देने के लिए संपूर्ण ब्रह्मांड को अपनी परिधि में सम्मिलित करने का प्रयास किया।

रूसो का अनुसरण करते हुए कांट ने कहा कि मानव अन्य ध्येयों को प्राप्त करने का एक साधन नहीं, बल्कि सामाजिक विकास का स्वयं में ध्येय है। उसने स्वार्थपरक,

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

मालिकाना हितों के संघर्ष के खिलाफ़ नैतिक कर्तव्य – उसी तरह व्यवहार करो, जिस तरह बुद्धि के आदेशानुसार सबको करना चाहिए – की परम आवश्यकता पेश की। उन्होंने जनसत्ता की संप्रभुता और क़ानून के समक्ष सबकी बराबरी के विचार विकसित किये।

कांट ने मानव की बुद्धि, संज्ञान और सृजन की उसकी योग्यता को दार्शनिक परीक्षण का मुख्य विषय बनाया। उन्होंने चिंतन की अधिनायकवादी धार्मिक प्रणाली की बेड़ियों से संदेह – "ईश्वर-प्रदत्त" सचाइयों की अंतिमता और संपूर्णता में संदेह, कभी पूर्ण और सर्वांगीण ज्ञान प्राप्त करने की हमारी योग्यता में संदेह – के दान को मुक्त कर दिया। कांट ने ईश्वर को भी अज्ञेय "वस्तुनिजरूप" ठहराया और इस तरह जर्मनी में धर्म की दार्शनिक आलोचना की आधारशिला रखी।

लेकिन कांट पर चिंतन की अत्यधिक निर्भीकता और निर्दोष सुसंगतता का आरोप लगाना मुश्किल होगा। अफ़सोस यह कि वह सिद्धांत के क्षेत्र में भी जन्मजात क्रांतिकारी नहीं थे। आगे क़दम लेने में उन्होंने हमेशा पीछे मुड़ कर देखा। उन्होंने फ़्रांसीसी क्रांति और प्राकृतिक विज्ञानों में क्रांति द्वारा प्रेरित देदीप्यमान विचारों को जर्मन दर्शन में गुपचुप "चोर दरवाज़े" से घुसाने, उनको ऐसे रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया कि संकीर्णमना जर्मन कूपमंडूक उनसे स्तंभित न होने पाये। उन्होंने अपने में अत्यंत अविश्वसनीय ढंग से बुर्जुआ उदारतावाद और राजतंत्रवादी, संशयवादी और बुद्धिवादी, भौतिकवाद

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

और भाववादी, अनीश्वरवादी और सुसंस्कृत धर्म-रक्षक को समन्वित किया।

कांट की संकीर्णता, असंगतता और सतर्कता की व्यंग्यभरी आलोचना करते हुए हाइने ने इस "चिंतन के क्षेत्र में विध्वंसक" की तुलना फ्रांसीसी जैकोबिनों के नेता मैक्सिमिलियन रोबेस्पियेर से की, जिसके नाम से ही फ़्रांसीसी अभिजात-वर्ग में आतंक फैल जाता था। फिर भी हाइने पाते हैं कि वे किसी चीज़ के समान रूप से भागीदार हैं। यह सबसे पहले अनमनीय, तीक्ष्ण, शुष्क, गंभीर ईमानदारी है। इसके अलावा, दोनों "अविश्वास की प्रतिभा" से संपन्न हैं, बस एकमात्र अंतर यह है कि एक ने इसे विचारों पर लागू किया और इसे आलोचना कहा, जबकि दूसरे ने इसे लोगों पर लागू किया और इसे जनतंत्रवादी सदाचार कहा। और अंत में, "... लेकिन दोनों में कूपमंडूकता का नमूना उच्चतम सीमा तक स्पष्ट था। प्रकृति ने उन्हें काफ़ी और चीनी तौलने के लिए तैयार किया था, लेकिन नियति ने तय किया कि उन्हें अन्य चीजें तौलनी चाहिए और तुला पर एक के लिए राजा और दूसरे के लिए ईश्वर रखा..."

यह उक्ति रोबेस्पियेर के बारे में भले ही सख्त हो, कांट के मर्म को एकदम प्रकट कर देती है, जिन्होंने ईश्वर को एक हाथ से "मृत्यु-दंड" देकर दूसरे हाथ से "क्षमा-दान" दे दिया।

हाइने अगले दृश्य का रोचक वर्णन प्रस्तुत करते हैं, जिसमें दुखांतिकी के बाद प्रहसन आता है। पहले तो

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

इमानुएल कांट निर्मम दार्शनिक का दम भरते हैं, स्व परं धावा बोलते हैं, संपूर्ण गैरिज़न को तलवार से मौ के घाट उतार देते हैं और ईश्वर के अस्तित्व के समर्थ में सभी तर्कों की धज्जियां उड़ा देते हैं और अब जगत्पि असत्य सिद्ध होकर अपने ही खून में तैर रहा है। अ कोई सार्विक अनुकंपा नहीं, कोई पितृतुल्य प्रेम नहीं इहलोक में स्वार्थत्याग के लिए परलोक में कोई पुरस्का नहीं। आत्मा की अनश्वरता मौत की अंतिम घोर पीड़ादाय हिचकियां ले रही है। और कांट का स्वामिभक्त सेव बूढ़ा लांपे, जो जीवन भर प्रोफ़ेसर का छत्रधार ब रहा, यह सब कुछ भयस्तब्ध होकर देख रहा है औ उसके चेहरे से ठंडा पसीना और आंसू वह रहे हैं।

तब इमानुएल कांट को तरस आता है और वह य दिखाते हैं कि वह एक महान दार्शनिक ही नहीं, ए नेक आदमी भी हैं। वह चिंतनमग्न होकर कुछ नेकनीयती कुछ व्यंग्यपूर्ण ढंग से कहते हैं: "बूढ़े लांपे के लिए ईश्व लाज़िमी है वरना वह सुखी नहीं रह सकता। लेकि व्यावहारिक बुद्धि के अनुसार आदमी को पृथ्वी पर सु होना चाहिए; ठीक है, व्यावहारिक बुद्धि को ईश्व का अस्तित्व प्रमाणित करने दें।"

हालांकि कांट में कूपमंडूक उनके दार्शनिक निष्क पर भी हावी था, उनकी रचनाओं में विद्यमान आलोच की भावना ने जर्मनी में एक बड़ा बौद्धिक उफान पै कर दिया, एक ऐसा उफान, जिसने फ़िख़्ते, शेलि और ख़ास तौर से हेगेल के दर्शन में चरमोत्कर्ष प्राप्त किय

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

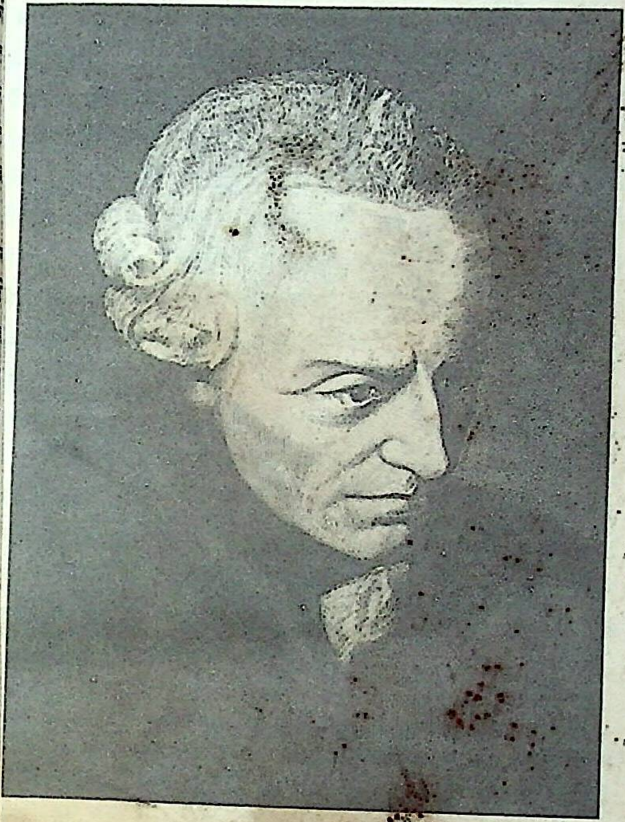

इमानुएल कांट

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

हेगेल ने कांट द्वारा शुरू दार्शनिक क्रांति को इस तर्कसंगत निष्कर्ष तक पहुंचाया। उनके द्वारा विकसि द्वंद्वात्मक पद्धति ने उनकी रचनाओं में सैद्धांतिक चिंत की आलोचनात्मक शक्ति को एक प्रचंड अस्त्र प्रदान किया। हेगेलीय द्वंद्ववाद ने इस विचार को दृढ़तापूर्वक ग़लत सि कर दिया कि कोई सैद्धांतिक जड़सूत्र परम और अनश्व है, कि कोई सामाजिक व्यवस्था अनश्वर और शाश्व है। हेगेल द्वारा विकसित द्वंद्वात्मक दर्शन का वर्णन क हुए एंगेल्स ने लिखा कि इसके लिए कोई भी चीज़ अंति पवित्र नहीं है। वह हर चीज़ के और हर चीज़ अस्थायी स्वरूप को प्रकट करता है।"*

हेगेल की इस सुप्रसिद्ध प्रस्थापना की कि "स यथार्थ चीज़ें बुद्धिसंगत होती हैं और सभी बुद्धिसंगत च यथार्थ होती हैं" व्याख्या इस अर्थ में भी की जा सक है कि मानव इतिहास के क्षेत्र में सभी यथार्थ चीज़ें स के साथ अबुद्धिसंगत बन जाती हैं और अतः क्रांति द्व ध्वंस्य हैं।

हेनरिख हाइने एक महान कवि ही नहीं, गं दार्शनिक भी थे और उन्होंने स्वयं हेगेल के संरक्षण दर्शन का अध्ययन किया। उन्होंने इस बात का व किया है कि वह कैसे "आचार्य के पीछे" खड़े थे, वह अपनी द्वंद्ववादी संरचनाओं का संगीत रच रहे

---

* फ़्रे॰ एंगेल्स, 'लुडविग फ़ायरबाख और क्लासि जर्मन दर्शन का अंत'।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

"यह सही है कि उन्होंने यह वहुत अस्पष्ट और गूढ़ संकेतों में लिखा ताकि इसे हर कोई न पढ़ सके। कभी-कभी मैंने देखा कि वह इस भय से आतुरतापूर्वक इधर-उधर देख रहे हैं कि उन्हें कोई समझ न ले। वह मुझे वहुत चाहते थे, क्योंकि उन्हें पूर्ण विश्वास था कि मैं उन्हें धोखा नहीं दूंगा। यहां तक कि उस समय मैंने उन्हें चाटुकार भी सोचा। एक दिन जब मैंने "सभी यथार्थ चीजें बुद्धिसंगत होती हैं" शब्दों पर आपत्ति प्रकट की, तो उन्होंने अजीब-सी हंसी हंसते हुए कहा: 'इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि सभी बुद्धिसंगत चीजें यथार्थ होनी चाहिए।' उन्होंने हड़बड़ाकर चारों ओर देखा, लेकिन वे तुरंत आश्वस्त हो गए, क्योंकि उन्होंने जो कुछ कहा था उसे केवल हेनरिख हाइने ने ही सुना था। यह तो बाद में जाकर मैंने इन रूपकों को समझा। और बाद में जाकर ही मैं यह समझ पाया कि क्यों उन्होंने इतिहास के दर्शन में यह घोषणा की कि ईसाई धर्म इस वजह से प्रगतिशील था कि इसने एक ऐसे ईश्वर का उपदेश दिया, जो मर चुका था, जबकि ग़ैर-ईसाई देवताओं को मृत्यु बिल्कुल नहीं मालूम थी। अत: यह मान्यता कि ईश्वर का कभी अस्तित्व नहीं था, कितनी प्रगति का सूचक है!..."

हेगेल 'फ़ाउस्ट' में मेफ़िस्टोफ़ीलीस की तरह चिल्ला कर कह सकते थे: "मैं आत्मा हूं, जो सदा-सर्वदा इनकार करती है और ठीक ही, क्योंकि जन्म लेने वाली सभी चीज़ें नश्वर हैं।"

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

लेकिन हेगेल अपने द्वंद्ववाद से दुनिया की धज्जि उड़ा देने वाले "मेफ़िस्टोफ़ीलीस-जैसे" निष्कर्ष निका से बहुत दूर थे। वह एक बहुत ही भद्र नागरिक प्रशियाई राजा के वफ़ादार नौकर थे।

कांट की भांति हेगेल भी विज्ञान में कूपमंडूक रहे। उन्होंने द्वंद्ववाद की तलवार खींची और फ़ौरन अपनी दर्शन-प्रणाली के ज़ंग लगे म्यान में बंद कर म्यान को अपने होंठों तक ऊपर उठाया और अपने सम्र फ्रेडरिक विल्हेल्म तृतीय के समक्ष "वीरोचित ढंग घुटने टेक दिये तथा सुप्रसिद्ध रात्रि-टोपी धारण कि अपना श्वेतकेशी सिर भी झुका दिया। बदले में सरकारी दार्शनिक की उपाधि मिली।

जर्मन क्लासिकीय दर्शन की विरासत से "क्रा के बीजगणित" का इन शब्दों के सही अर्थ में सृजन क के लिए अन्य मस्तिष्कों, अन्य व्यक्तित्वों की आवश्यक थी। ऐसे लोगों की आवश्यकता थी, जो पुराने स के सभी कूपमंडूक बंधनों से मुक्त हों, जो अपने से बुलंद हों, जो अपने चिंतन के परिणामों से भय नहीं हों और उन पर निर्भीकतापूर्वक अमल करते। लोग, जिनके लिए ज्ञान के प्रति ईमानदारी और के प्रति समर्पण ही एकमात्र निष्ठाएं हों।

महान व्यक्ति वहां और उस समय प्रकट होते जहां और जब उनके महान कार्यकलापों के लिए परिस्थि प्रौढ़ हो चुकी होती हैं। हेगेल की मृत्यु के वर्ष में के एक विद्यालय में कार्ल मार्क्स नाम का १३ साल

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

एक लड़का पढ़ रहा था और इस नगर से कोई बहुत दूर नहीं बार्मेन में ११ वर्ष का फ़्रेडरिक एंगेल्स नाम का एक बालक रह रहा था।

वे दोनों राइन प्रदेशवासी थे। क्या यह सहज एक संयोग था?

राइन प्रदेश दो महान जर्मन और फ़्रांसीसी संस्कृतियों के प्रभाव में था। नेपोलियन के काल में यह फ़्रांस का एक अंग भी बन गया था। शेष जर्मनी के विपरीत, यहां सामंती प्रथाएं पूरी तरह नष्ट कर दी गयी थीं।

लेकिन राइन प्रदेशवासियों की निराशा उस समय सबसे प्रबल थी, जब वे पिछड़ी प्रशियाई निरंकुशता के शासनाधीन आये। अंतर बहुत स्पष्ट था! यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि राइन प्रदेश में कुछ सरकारी अधिकारियों ने भी उदारतावाद और आमूल परिवर्तनवाद की डींगें मारीं।

पड़ोसी फ़्रांस को झंझोड़ देने वाले क्रांतिकारी तूफ़ान की गड़गड़ाहट राइन प्रदेश में साफ़-साफ़ सुनायी दी। सी के रास्तों से फ़्रांसीसी भौतिकतावाद और प्रबोधन के विचारों की धारा जर्मनी पहुंची। स्वभावतया, यहां जर्मन क्लासिकीय दर्शन के विचारों का कल्पनावादी समाजवाद के विचारों (खास तौर से सेंट-सीमोन के विचारों) से जितना टकराव हुआ, उतना कहीं और नहीं। यहां फ़्रांसीसियों की वाग्विदग्ध, विनोदी, व्यंग्यात्मक कला ने भावात्मक काव्य, मध्यकालीन रोमांसवादी साहित्य

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

और चर्च गीतों पर पले जर्मनों के विचारों और भावना पर स्फूर्तिदायी प्रभाव डाला।

इसके अलावा, राइन प्रदेश जर्मनी के सबसे विक विविध उद्योगों और अतः पुराने समाज के "क़ब्र खो वाले" बहुसंख्यक औद्योगिक सर्वहारा से भी भरा-पू था।

नहीं, यह कोई संयोग नहीं था कि जर्मनी का रा प्रदेश मार्क्स और एंगेल्स का जन्म-स्थान था।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

२

उद्देश्य की खोज में

—आपकी नज़र में सुख क्या है?
—संघर्ष।

कार्ल मार्क्स की
'आत्मस्वीकृतियां'

वसंत के एक धूपहले दिन को गठीले बदन का, काले बालों वाला एक आदमी त्रियेर नगर मेयर भवन की ओर लंबे कदमों से जा रहा था। उसका चेहरा खुशी से खिला हुआ था और वह अपनी गोद में कपड़े में लिपटा एक नवजात शिशु लिये हुए था। कुछ ही मिनटों में वह एक अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत हुआ, जिसने उससे ऐसे अवसर पर पूछे जाने वाले आम सवाल पूछे और काग़ज़ पर सधी, चरमराती पर की क़लम से लिखा:

"सन् अठारह सौ अठारह में मई मास के सातवें दिन को अपराह्न में चार बजे मेरे, त्रियेर ज़िले में त्रियेर मेयर कार्यालय के जन्म, विवाह और मृत्यु रजिस्ट्रार के समक्ष, श्री हेनरिख मार्क्स, त्रियेर में अधिवासित, आयु सैंतीस वर्ष, पेशे से अपीली उच्च न्यायालय के बैरिस्टर प्रस्तुत हुए। उन्होंने मुझे एक नवजात बच्चा दिखाया और कहा कि उक्त बच्चा त्रियेर में मई मास

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalo

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

के पांचवें दिन को दो बजे सुबह श्री हेनरिख मार्क्स पेशे से बैरिस्टर, त्रियेर में अधिवासित, और उन पत्नी हेनरियेट प्रेस्बोर्क को हुआ और उन्होंने अपने बच्चे को कार्ल नाम देने की इच्छा प्रकट की।"

अधिकारी ने इसके नीचे अपने हस्ताक्षर किये जन्म प्रमाणपत्र पिता को थमा दिया। उसे इस बात तनिक भी आभास नहीं हुआ कि यह एक ऐसा दस्तावेज़ था, जिसने दुनिया में एक ऐसे व्यक्ति के आगमन को प्रमाणित किया, जिसे प्रौढ़ावस्था प्राप्त करने पर अपनी जन्म-भूमि से निर्वासित किया जायेगा और जो इसे त्रि भी व्यक्ति से ज़्यादा प्रसिद्धि दिलायेगा।

न ही सौभाग्यशाली पिता को ही इसका आभास हुआ वह ६६४, ब्रुक्केनगास्से मार्ग स्थित छोटे दो-मंज़िले मका में रह रहे अपने परिवार में लौट आये। वह रास्ते मिलने वाले अनेकानेक लोगों के अभिवादनों और बधाइ का जवाब मुश्किल से ही दे पा रहे थे।

हेनरिख मार्क्स इस नगर में अपनी उच्च शि निष्कलंक चरित्र, परोपकारिता और मुश्किल में प्र किसी भी निर्दोष आदमी की अपनी संपूर्ण क़ानूनी से सहायता करने के लिए सुप्रसिद्ध और सम्मानित यहूदी धर्मगुरुओं के परिवार में जन्मे हेनरिख मार्क्स यहूदी धर्म का परित्याग करके लूथर मत अपना लि

लेकिन मार्क्स के घर में ईसाई संतों के ब वाल्तेयर, शिलर, रासीन, रूसो, लेसिंग, स्पिनोज़ा और कांट की पूजा होती थी। हेनरिख मार्क्स ने यूं

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

संस्कृति की समृद्ध विरासत को आत्मसात किया और इसे अपने प्रिय पुत्र कार्ल को प्रदान किया। इसकी बदौलत "कलादेवियों द्वारा उनके पालने में रखी गयी" (मेहरिंग) अनेक प्रतिभाओं को बचपन से ही विकास के लिए पूर्ण क्षेत्र प्राप्त हुआ।

युवा मार्क्स के लिए यह सौभाग्य की बात थी कि उनके परिवार की कौंसिलर वैरन लुडविग फ़ोन वेस्टफ़ालेन के परिवार के साथ दोस्ती थी। वेस्टफ़ालेन परिवार के तीन लोग उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले थे: पहला, स्वयं परिवार के मुखिया, जो मार्क्स के पितातुल्य थे; दूसरा, उनका सबसे छोटा पुत्र एड्गर, जो उनका बचपन के खेलों और स्कूली दिनों के शौक़ों का जिगरी दोस्त था (१९वीं शताब्दी के पांचवें दशक के अंत में वह एक समय कम्युनिस्ट लीग के निकट था); और अंत में, एड्गर की बहन जेनी, मार्क्स की भावी पत्नी और उनकी वफ़ादार जीवन-संगिनी।*

लुड्विग फ़ोन वेस्टफ़ालेन एक जीवंत व्यक्ति थे। प्रसिद्ध स्काटी और जर्मन अभिजात परिवारों के वंशज के रूप में वह अपने समय के एक सुशिक्षित व्यक्ति और महान काव्य-प्रेमी थे। जबकि कार्ल के पिता ने उन्हें वाल्तेयर और रासीन से परिचित कराया, लुड्विग फ़ोन

---

* जेनी का बड़ा भाई फ़र्डीनांड बाद में १९वीं सदी के छठे दशक की प्रतिक्रियावादी प्रशियाई सरकार में गृहमंत्री के रूप में मार्क्स का कटु राजनीतिक विरोधी बन गया।

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

वेस्टफ़ालेन ने उन्हें जेनी और एड्गर के साथ हो और शेक्सपियर की रचनाएं पढ़ कर सुनायीं, जिन्हें कंठस्थ थीं। वस्तुत: वयोवृद्ध वेस्टफ़ालेन ने ही मार्क्स काव्य के प्रति रुचि प्रोत्साहित की और उनकी सौंदर्या प्रवृत्तियों को विकसित किया। उन्हीं से मार्क्स ने प बार सेंट-सीमोन का नाम सुना।

संभवत: वेस्टफ़ालेन ही पहले व्यक्ति थे, जिन्हें मार्क्स के मस्तिष्क को सामाजिक विषयों की ओर मो और विद्यमान व्यवस्था के प्रति आलोचनात्मक रुख प्रे किया। यह संयोग की बात नहीं है कि मार्क्स ने वि के क्षेत्र में अपनी पहली कृति – अपने डाक्टर की उप संबंधी शोध-प्रबंध – को उन्हें "मेरे प्रिय पितातुल्य को" के संबोधन से समर्पित किया। कृति-समर्पण उन्होंने वेस्टफ़ालेन को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में किया है, "जो समय के हर प्रगतिशील क़दम का उ और यथार्थपूर्ण विवेक से स्वागत करते हैं," जो "प्र गामी भूतों की काली प्रतिच्छायाओं के समक्ष कभी भय नहीं हुए"।* निस्संदेह, "वयोवृद्ध वेस्टफ़ालेन के घ में युवा मार्क्स को अपने परिवार अथवा विद्यालय से कम समृद्ध बौद्धिक आहार नहीं मिला।

तत्कालीन विद्यालय शिक्षा प्रणाली तोतारटंत "पुरा अच्छी परंपराओं" के अनुसार निदेशित होती थी। अध्या

---

* कार्ल मार्क्स, 'प्रकृति के डेमोक्रिटियन और एपि रियन दर्शन के बीच अंतर', १८३९-४१।

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

अपने शिष्यों में पूर्व-निष्पन्न ज्ञान – धर्मशास्त्रीय उक्तियों, ऐतिहासिक तथ्यों, गणितीय फ़ार्मूलों – को कंठस्थ करने और इसे हूबहू उद्धृत करने की योग्यता को बड़ा महत्व देते थे। उनके लिए सर्वोत्तम शिष्य वह होता था, जो रटी-रटायी चीज़ को धारा-प्रवाह सुना सके और सुंदर लिखावट में लिख सके। विचार-स्वातंत्र्य, कल्पना की निर्भीक उड़ान, समस्याओं के समाधान के प्रति मौलिक दृष्टिकोण – इस सबको गुण से अधिक दोष ही माना जाता था।

उन दिनों की विद्यालय शिक्षा प्रणाली व्यक्तित्व को इतना विकसित नहीं करती थी जितना उसे दबा देती थी। यह विज्ञानों के प्रति प्रेम नहीं, बल्कि उबाऊ जड़सूत्रों के एक संग्रह के रूप में उनके प्रति जुगुप्सा ही पैदा कर सकी। जो कुछ पढ़ाया जाता था, उसके निर्विवाद, सुनिश्चित और परम स्वरूप ने शिष्यों के मस्तिष्कों को भ्रष्ट बनाया, जड़ और परजीवी चिंतन, दूसरों के विचारों के लकीर का फ़क़ीर बनने और "स्वीकार्य" चीज़ को शिरोधार्य करने की आदत विकसित की। इस तरह, विद्यालय ने शिष्यों की नज़रों में विज्ञान की प्रतिष्ठा को हेय बनाया, क्योंकि इसने धर्मसूत्रों के चिंतन की निरंकुश प्रणाली विकसित की। सत्य-निष्ठा के स्थान पर इसने घासी-पिटी बातों की अपरिवर्तनीयता में विश्वास विकसित किया। स्वतंत्र समाधानों की खोज में, अन्वेषणात्मक "चिंतन-व्यथा" के स्थान पर इसने ऊल-जलूल चीज़ों को रट-रट कर याद करने की यातना प्रदान की।

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

त्रियेर के जिस विद्यालय में मार्क्स पढ़ते थे, वे
एक सर्वोत्तम स्कूल माना जा सकता था, क्योंकि इस
न्यूनाधिक उदारतावादी भावना का बोलबाला था। मा
के विद्यालय में अध्यापक अपने-अपने क्षेत्र के सुप्रसि
लोग थे। मिसाल के लिए, फ्रांसीसी प्रबोधन के विचा
के अनुयायी और त्रियेर के इतिहासकार जोहान्न ह्यू
विट्टेन्बाख (प्रधानाध्यापक), जिन्हें गेटे से व्यक्ति
रूप से परिचित होने का गौरव प्राप्त था। उन्होंने अ
शिष्यों में मानव की प्रगति और गरिमा में पवित्र विश्व
प्रेरित करने का प्रयास किया। गणितशास्त्र और भौति
विज्ञान के अध्यापक जोहान्न श्टेइनिंगेर पर पुलिस निगरा
रखती थी।

लेकिन ये अध्यापक शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य
विधियों में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं कर स
प्रशियाई सरकार अध्यापकों और शिष्यों पर कड़ी न
रखे हुए थी ताकि उनकी चिंतन-प्रणाली "सही" ब
रहे। इस उद्देश्य से उसने किसी विटुस ल्योर्स को विद्या
का सह-प्रधानाध्यापक नियुक्त किया, जो अपने प्रतिक्रि
वादी विचारों के लिए सुप्रसिद्ध था। त्रियेर विद्यालय
राज्य को शिक्षित कूपमंडूक – राजा और देश का दु
प्रदान करने की अपेक्षा की जाती थी और इसने
उद्देश्य को पूरा किया।

जिस समय मार्क्स ने विद्यालय पास किया, उस स
उनकी कक्षा में ३२ शिष्य थे। उनमें से अधिकांश विद्या
आयु से अधिक उम्र – १९ से २७ साल तक – के

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

गये अधिकायु शिष्य काहिल थे और लगभग हर कक्षा में दो-दो साल रहे थे। उनमें से १३ लोग, जो जैसे-तैसे अंतिम कक्षा तक पहुंचने में सफल हुए थे, विद्यालय पास करने की परीक्षा में असफल रहे।

टुटपुंजिया बुर्जुआ और किसान परिवारों से आने वाले मार्क्स के अनेक सहपाठी अंध धार्मिकता के पूरे प्रभाव में थे: पादरी का पद उनका सबसे बड़ा सपना होता था। कक्षा में २५ कैथोलिक शिष्यों द्वारा विद्यालय पास करने की परीक्षा में लिखे गये निबंधों से पता चलता है कि उनमें से आधे से अधिक अपने को धर्मशास्त्र की सेवा में लगाने को इच्छुक थे।

उनका सपना पूरा भी हुआ। १८३५ में त्रियेर विद्यालय पास करके जाने वाले शिष्यों ने प्रशा को १३ कैथोलिक पादरी, सात बैरिस्टर और उच्च अधिकारी तथा दो डाक्टर प्रदान किये। तब यह कौन सोच सकता था कि विद्यालय पास करके जाने वाले शिष्यों का वही ग्रुप दुनिया को कार्ल मार्क्स देगा!

कम से कम उनके अध्यापक तो यह नहीं ही सोचते थे: वे कार्ल को मेधावी शिष्य बिल्कुल नहीं मानते थे। सभी विषयों में उनके प्राप्तांक मध्यम दर्जे के थे और उनके अध्यापकों ने ऐतिहासिक भौतिकवाद के भावी निर्माता को इतिहास की परीक्षा में उनके ज्ञान के लिए सबसे कम अंक दिये।

यह तनिक भी आश्चर्यजनक नहीं था। जिस कसौटी से अध्यापक मार्क्स को परखते थे, वह उनके लिए नहीं

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

बनायी गयी थी। मार्क्स के विचारों की मौलिकता ने उन्हें भयभीत कर दिया था। वे सफलता की जड़ तक पहुंचने, हरेक विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने, अपने विचारों को घिसी-पिटी नहीं, बल्कि सजीव अभिव्यक्ति देने के उनके प्रयासों को डांट-फटकार लगाते थे। उन्होंने इसमें "क्लिष्ट-कल्पित अभिव्यक्तियों की अतिरंजित प्रवृत्ति", "अनावश्यक अतिपरिपूर्णता" और "शब्दाडंबर" देखे। वे खास तौर से उनकी लिखावट से बहुत चिढ़ते थे। "कैसी गिच-पिच लिखावट है!", लैटिन अध्यापक ने शिकायत करते हुए कहा और दूसरे अध्यापकों ने उससे सहमति प्रकट की।

स्कूली दिनों से मार्क्स के मन में इन "नौजवानों के परामर्शदाताओं" के पांडित्य-प्रदर्शन के प्रति जो घृणा बैठी, वह बाद के वर्षों में भी बनी रही। उन्होंने १८६८ में एंगेल्स को लिखे एक पत्र में इनमें से एक पांडित्यदंभी के बारे में लिखा। देखने में तो यह परामर्शदाता बड़ा आदरणीय व्यक्ति लगता है, जिसे अपनी विद्वत्ता पर नाज़ है, पर वह अपनी तोतारटंत अध्ययन और अभ्यास की विधि से कभी आगे नहीं जाता। उसकी विद्वत्ता तैयार उत्तरों के ढेर के अलावा कुछ नहीं है। वह संपूर्ण गणित, साहित्य जानता है, लेकिन गणित तनिक भी नहीं समझता। यदि यह पांडित्यदंभी ईमानदार होता, तो अपने शिष्यों के लिए उपयोगी हो सकता था। यदि वह मिथ्या गोलमोल बातों का सहारा न लेता और उन्हें साफ़-साफ़ बता देता कि यहां एक अंतर्विरोध है, कि कुछ लोग ऐसा कहते

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

हैं और दूसरे लोग वैसा, मेरा इस प्रश्न पर कोई व्यक्तिगत विचार नहीं है, इस पर ग़ौर करो और देखो कि क्या स्वयं तुम इसकी तह में पहुंच सकते हो। "इस ढंग से, एक ओर, शिष्यों को कुछ सामग्री मिलती और दूसरी ओर, वे स्वयं काम करने के लिए प्रोत्साहित भी होते।" लेकिन मार्क्स तुरंत यह ध्यान दिलाते हैं कि वह एक ऐसी मांग कर रहे हैं, जो पांडित्यदंभी के स्वभाव से लेशमात्र मेल नहीं खाती।

यह कहना मुश्किल है कि मार्क्स के विद्यालय के अध्यापक इस मिसाल से कितना मिलते-जुलते थे। संभवत:, व्यक्तिगत स्तर पर वे पांडित्यदंभी नहीं थे। तो भी, यह व्यक्ति की विशिष्ट मानसिक संरचना का नहीं, बल्कि इस प्रणाली का विषय था; जिसने अनिवार्यत: पांडित्य-प्रदर्शन और विद्यालय शिक्षा के यंत्रणामय उबाऊपन को जन्म दिया।

कार्ल मार्क्स के आत्मिक जगत् का विकास इस विद्यालय शिक्षा प्रणाली के कारण नहीं, बल्कि वह तो इसकी सारी कमियों के बावजूद स्वतंत्र और बहुत सघन सैद्धांतिक कार्य में, मित्रों की एक छोटी मंडली के सत्संग में, जो अच्छे काव्य और अच्छे मज़ाक़ का आनंद लेते थे, वेस्टफ़ालेन परिवार के सत्संग में और बेशक अपने पिता के साथ विकसित हुआ।

त्रियेर में अपीली उच्च न्यायालय के बैरिस्टर के रूप में हेनरिख मार्क्स ने अपने पेशे के दायित्वों को पूरा करने के दौरान राजनीतिक मुक़दमों की सुनवायी में भाग

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

लिया था। उन्होंने सामाजिक अन्याय के भयंकर को निकट से देखा था और स्पष्टतया उनके बारे में पुत्र को बताया था।

ये तथ्य क्या थे, इसका अंदाज़ा कार्ल मार्क्स लिखित उस लेख से लग जाता है, जिसे उन्होंने में *Rheinische Zeitung* ('राइनी-समाचारपत्र') प्रकाशित किया। 'मोज़ेल के संवाददाता की सफ़ाई' शीर्षक इस लेख में वह यह सिद्ध करने के लिए कि मो प्रदेश के लोग अपना विचार साफ़-साफ़ व्यक्त करने समर्थ नहीं थे, चौथे दशक के अंत में यानी अपनी युवाव में हुए कुछ अदालती मुक़दमों का उल्लेख करते हैं।

"अपने नेक स्वभाव के कारण लोकप्रिय एक नाग में एक ज़िला अध्यक्ष की, जिसने एक दिन पहले को आनंदपूर्ण मंडली में राजा का जन्म-दिवस हुए खूब डट कर शराब पी थी, नौकरानी से मज़ा लहजे में कहा: 'तुम्हारे मालिक को पिछली रात कुछ सुरूर आ गया था।' इस बेगुनाह मज़ाक़ के उसे त्रियेर में पुलिस अदालत के समक्ष लाया लेकिन जैसा कि उम्मीद की जा सकती थी, उसे दिया गया।"

संभवत: यह अदालती मुक़दमा, मार्क्स की में इस वजह से ताज़ा बना रहा कि उनके पिता ने सुनवायी में एक वकील के रूप में हिस्सा लिया जिनकी निष्कलंक ईमानदारी और क़ानूनी प्रतिभा ने विपद्ग्रस्त व्यक्ति को छुड़ाने में सहायता की।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

जब त्रियेर ज़िले के कुछ किसानों ने प्रांतीय सभा के अपने प्रतिनिधि के ज़रिये युवराज को एक याचिका भेजने का निर्णय किया तो उस प्रतिनिधि के विरुद्ध अदालती कार्रवाई शुरू की गयी। "कई साल पहले" एक राइनी समाचारपत्र में प्रकाशित "राजस्व-प्रबंध के प्रोफ़ेसर श्री काउफ़मान के 'मोज़ेल प्रदेश में अंगूर उत्पादकों की बुरी स्थिति पर' शीर्षक लेख को सरकारी आदेश से प्रतिबंधित कर दिया गया"।*

ये तथ्य युवा मार्क्स के इर्द-गिर्द राजनीतिक वातावरण को सुस्पष्ट करते हैं।

उन्नीसवीं सदी के चौथे दशक में त्रियेर में बुद्धिजीवी हल्क़ों में प्रशियाई सरकार के खिलाफ़ एक उदारतावादी विरोध शुरू हुआ, जिसमें कार्ल मार्क्स के पिता ने सक्रिय भाग लिया। १८३४ के प्रारंभ में उदारतावादियों की सभाएं और प्रदर्शन 'मार्सेइयेज़' के गीत और भाषणों के साथ हुए, जिनमें पुलिस के तेज़ कानों को फ़्रांसीसी क्रांति की प्रतिध्वनियां सुनायी दीं। हेनरिख़ मार्क्स ने "राजद्रोहपूर्ण" गीत गाये और भाषण दिये, जो वस्तुतः नरमवादी स्वरूप के थे। लेकिन यह उनके खिलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई शुरू करने के लिए काफ़ी था।

कार्ल मार्क्स अपने पिता को बहुत चाहते थे। उनकी मधुर स्मृतियां उनके पुत्र के साथ प्रौढ़ावस्था में भी बनी

---

* का० मार्क्स, 'मोज़ेल के संवाददाता की सफ़ाई', १८४३।

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

रहीं। वह हमेशा अपने साथ अपने पिता का एक फ़ो[illegible] रखते थे और इसे अपने जीवन के अंतिम समय तक अ[illegible] पास रखा। लेकिन अपने सभी धार्मिक और राजनी[illegible] उदारतावाद के बावजूद हेनरिख मार्क्स एक प्रशि[illegible] देशभक्त और पुण्य ईसाई बने रहे। शिलर के एक प्रश[illegible] के रूप में वह स्वयं शिलर के एक नायक, उस नेक [illegible] भावुक मूर से मिलते-जुलते थे, जिसकी संपूर्ण खुशी अ[illegible] परिवार और बच्चों की सुख-सलामती में है। उन्[illegible] अपने प्रिय पुत्र में कुशाग्र प्रतिभा को उसकी नौजवा[illegible] ही पहचान लिया था, लेकिन उन्होंने आशा की कि [illegible] उनका अनुकरण करेगा और अपने लिए एक शा[illegible] किंतु "उदात्त" पेशा चुनेगा, जो उसे सम्मानित नागरि[illegible] के बीच एक "योग्य स्थान" प्राप्त करने और [illegible] परिवार का एक आदर्श प्रतिनिधि बनने में समर्थ बनायेगा।

इस संभावना के बारे में युवा मार्क्स अपने [illegible] से बहुत कम उत्साही थे। अपने विद्यालय के दिनों [illegible] ही वह कूपमंडूक अस्तित्व के सुखद आदर्श के प्रति [illegible] घृणा महसूस करने लगे थे, चाहे यह अस्तित्व कि[illegible] ही परिष्कृत क्यों न हो।

हम इसकी पहली पुष्टि १[illegible] विद्यालय पास करने की परीक्षा में [illegible] चयन पर एक नौजवान के विचार' शीर्षक निबंध [illegible] पाते हैं।

यह दिलचस्प है कि अपने अधिकांश सहपाठियों [illegible] विपरीत मार्क्स ने इस निबंध को "मैं क्या बनना चाहूँगा[illegible]

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

े पूर्णतया व्यक्तिगत विषय पर विचार-विमर्श के लिए क अवसर के रूप में नहीं, बल्कि पेशे के चुनाव से संबद्ध स्तुगत और आत्मगत परिस्थितियों के एक व्यापक ामाजिक विचार-विमर्श के लिए एक अवसर के रूप में नया। यहां युवा मार्क्स के मस्तिष्क में वे विचार सौदामिनी की तरह कौंध गये" (मेहरिंग), जिन्हें उन्होंने ढ़ावस्था में पूर्णतया और सुस्पष्टतया विकसित किया। उन्होंने लिखा, "हम हमेशा वह पेशा नहीं चुन कते, जिसे हम स्वीकार्य मानते हैं; समाज में हमारे बंध जब तक हम उन्हें निर्धारित करने की स्थिति में हुंचते हैं, उसके पहले ही कुछ-कुछ स्थापित होने लगते र्ग।"

जबकि उनके सहपाठी व्यापारी के पेशे पर फ़ौजी ेशे के लाभों अथवा धर्मशास्त्री और पादरी के पद से प्त होने वाली सुख-सुविधाओं के बारे में आडंबरपूर्वक चार-विमर्श कर रहे थे, मार्क्स ने पेशों की झूठी चमक-मक के बारे में लिखा, जो अहम्मन्यता प्रेरित करती तथा महत्वाकांक्षा के शैतान को भाती है, उन "भ्रांतियों" [illegible] बारे में लिखा, जो कल्पना में भावी पेशे [illegible] जाती हैं। उनके विचार में, हमारी [illegible] में भ्रांतियों का यही कारण है, "एक ा दोष, जो स्वयं हमसे ही अपना बदला लेता है और े ही इसे बाह्य दुनिया की भर्त्सना का सामना न करना , यह हमारे मन को उस क्लेश से कहीं अधिक भीषण ंश पहुंचाता है, जो इस भर्त्सना से पहुंचता। यह

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

एक ऐसा आत्मतिरस्कार उत्पन्न करता है, जो "हम दिल को हमेशा सालता रहता है और इसके जीवनवह रक्त को चूस कर मानव-द्वेष और निराशा के साथ भिं देता है"।

यदि चुनाव झूठे विचारों पर आधारित हो, तो के के चुनाव में "आत्म-प्रवंचना" का शिकार होना आसा है। एक ऐसे नौजवान के लिए, जिसके पास अभी सुनिश्चित सिद्धांत, कोई दृढ़ विश्वास नहीं हैं, खतरनाक वे पेशे हैं, "जो इतना स्वयं जीवन से संलग्न नहीं हैं, जितना कि अमूर्त सत्यों से संबद्ध हैं"।

यह दिलचस्प आत्मस्वीकृति उस अवधि में के आत्मिक जगत् पर रोशनी डालती है। यह रूढ़िवादी शिक्षा-विधि के प्रति उनके असंतोष और "अ सत्यों" को "स्वयं जीवन से संलग्नता" से सम करने की उनकी बढ़ती इच्छा का प्रमाण है।

मार्क्स अपनी निम्नलिखित प्रस्थापना से व्यक्ति समृद्धि के कूपमंडूक आदर्श को चुनौती देते हैं: " यह (एक व्यक्ति) "स्वयं अपने हितार्थ काम है, तो शायद वह प्रसिद्ध विद्वान, एक बड़ा मनी एक श्रेष्ठ कवि ... लेकिन एक पूर्ण, सच्चे, महान व्यक्ति तो कभी नहीं बन सकता।"

जी हां, बेशक, एक व्यक्ति की आत्मपूर्णता साध्य है, जिसके संबंध में प्रत्येक पेशा एक साधन लेकिन मानव अपनी आत्मपूर्णता "केवल लोगों की और भलाई के लिए काम करके ही प्राप्त कर सकता

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

"मानवजाति का कल्याण (और अतः हमारी पूर्णता भी) वह "मुख्य मार्गदर्शक" है, जिससे हमें पेशे के चुनाव में निदेशित होना चाहिए।

अपने विचारों के समर्थन में मार्क्स उन महान लोगों के ऐतिहासिक उदाहरणों का उल्लेख करते हैं, जिन्होंने सार्विक भलाई के लिए काम करते हुए अपने को उदात्त बनाया। "अनुभव बताता है कि सबसे सुखी व्यक्ति वह है, जिसने अधिक से अधिक संख्या में लोगों को सुखी बनाया है।"

अपने स्वतंत्र मार्ग के प्रारंभ में मार्क्स वह प्रस्थापना सूत्रबद्ध करते हैं, जो उनके संपूर्ण जीवन का आदर्श बनने वाली थी: "मानवजाति के लिए काम करो।" वह यह मानते हैं कि यह मार्ग फूलों से नहीं, कांटों से भरा है, लेकिन वह उन कांटों से परेशान नहीं है। वह इस चुनाव की "महान ज़िम्मेदारी" के पूर्ण महत्व से अवगत हैं।

लेकिन चुनाव किया जा चुका है। "यदि हमने जीवन में एक ऐसी स्थिति का चुनाव किया है, जिसमें हम मानवजाति के लिए अधिक से अधिक काम कर सकते हैं, तो कोई भी दायित्व हमें [illegible] नहीं सकते, क्योंकि समष्टि के [illegible]र्थ त्याग हैं।" यहां भी मार्क्स पुनः कूपमंडूक जीवन के "तुच्छ, सीमित, स्वार्थपरक आनंद" की तुलना उस जीवन से करते हैं, जिसकी खुशी "करोड़ों लोगों की खुशी होगी"।

निस्संदेह, यह निबंध तब लिखा गया था, जब मार्क्स

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अभी एक स्कूली छात्र ही थे। इसमें हम उनके तव
के संपूर्ण आत्मिक विकास का निचोड़ पाते हैं,
और फ्रांसीसी प्रवोधन का प्रभाव महसूस करते हैं,
भावुक और रोमानी टिप्पणियां तथा "दैवी मार्गदर्शन
"दैवी पुकार" के उद्धरण भी मिलते हैं, लेकिन
ही, संपूर्ण निबंध में लेखक की अपनी छाप है, इस
शैली और सारतत्व उस मौलिक शक्ति और आत्मा
उद्देश्यपूर्णता से ओत-प्रोत हैं, जो मार्क्स के चरित्र
शुभ लक्षण थे।

एक नौजवान की इस रचना में जीवन का सं
कार्यक्रम है, हालांकि यह सामान्य रूप में अभिव्य
हुआ है। मार्क्स नें अपनी भवितव्यता की भविष्यद्
अपने हृदय की "जन्मपत्री" के अनुसार की थी।

पेशे के चुनाव के बारे में इस निबंध से यह पता
चलता कि मार्क्स का राजनीतिक रुझान अभी
बना था। लेकिन यह सभी प्रतिक्रियावादी चीजों
प्रति उनकी घृणा को प्रकट कर देता है। यह घृ
जैसा कि हम पहले देख चुके हैं, उन्होंने केवल पुस्
से ही नहीं, बल्कि अपने ईर्दगिर्द दुनिया से भी प्राप्त कर

मिसाल के लिए, हमें मालूम है कि १८३३
त्रियेर विद्यालय में प्रतिबंधित साहित्य, राजनीतिक क
ताएं पायी गयीं और एक शिष्य को गिरफ्तार भी कि
गया। यह शिष्यों के मन में उफान पैदा किये और ज
के प्रति मार्क्स के विचार को प्रभावित किये बिना
रह सकता था। जब मार्क्स ने विद्यालय पास करने

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE.

प्रमाण-पत्र प्राप्त किया और वह बोन विश्वविद्यालय में जाने के लिए अपना जन्म-नगर छोड़ने वाले थे, तो उन्होंने विद्यालय के सह-प्रधानाध्यापक विटुस ल्योर्स के पास, जिसके जिम्मे शिष्यों को पुलिस निगरानी में रखने का विशेष कार्य था, विदा लेने जाने से इन्कार कर दिया। उससे मिलने जाने से इन्कार करके मार्क्स ने अपना चरित्र-बल ही प्रदर्शित किया और यह अपने पिता के साथ टकराव का कारण भी बन सकता था।

अपने पुत्र को लिखे पहले पत्रों में से एक में हेनरिख मार्क्स ने इस व्यवहार के लिए उन्हें फटकारा भी। इस पत्र से हमें यह भी मालूम होता है कि कार्ल के साथ एक दूसरे शिष्य हेनरिख क्लेमेंस ने भी ल्योर्स से मिलने जाने से इन्कार किया था। अपने पुत्र के इस "दुर्व्यवहार" पर, जिसका ल्योर्स ने बुरा माना, पर्दा डालने के लिए मार्क्स के पिता को "सफ़ेद झूठ" का सहारा लेना और उससे कहना पड़ा कि "हम वहां उसकी अनुपस्थिति में गये थे"।

लेकिन जीवन और ज्ञान के साथ मार्क्स का वास्तविक टकराव अभी आगे होना था।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

३

"परिहास का प्रचंड रोष" और "काव्य-प्रेरणा की लालसा"

– आपका प्रिय आदर्श-वाक्य?
– *De omnibus dubitandum.*
(हर चीज़ को संदेह का विषय बनाओ।)

कार्ल मार्क्स
'आत्मस्वीकृति'

१८३५ की पतझड़ में मार्क्स क़ानून पढ़ने के बोन विश्वविद्यालय गये। लेकिन मार्क्स के लिए दुःख मात्र विधिशास्त्र तक ही सीमित नहीं थी। तारुण जोश के साथ वह स्वतंत्र जीवन के भंवर में कूद आत्मिक कार्यकलापों के कभी एक क्षेत्र में तो कभी क्षेत्र में अपनी शक्ति आज़मायी और इसके दौरान द्यार्थियों की मौजी मंडलियों, उनके मनमौजी आ प्रमोदों, दावतों, द्वंद्वयुद्धों और सभी प्रकार के दुस्सा को भी नहीं भुलाया। एक द्वंद्वयुद्ध में कार्ल घायल गये और एक बार तो उन्हें "रात्रि में शांति भंग के लिए" गिरफ़्तार भी किया गया। उनके मित्र उनकी असीम विनोदशीलता के लिए बहुत प्यार करते लेकिन वे उनके चुभते कटाक्षों और मर्मांतक विदग्धों से डरते थे, जिनके लिए मार्क्स स्कूल में भी मशहूर

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

स्पष्टतया, सदय, वयोवृद्ध हेनरिख मार्क्स के पास अपने पुत्र से यह पूछने का उचित कारण था कि वह "दर्शन के साथ द्वंद्वयुद्धों का तालमेल बैठाने" का अपना काम कैसे निकालता है। पिता के पत्र अपने पुत्र के शारी-रिक और आत्मिक कुशल-क्षेम के प्रति सुचिंता से ओत-प्रोत हैं। वह उसे अपनी सेहत का ख्याल रखने के लिए प्रेरित करते हैं "क्योंकि एक रुग्ण विद्वान पृथ्वी पर सबसे अभागा प्राणी है"। वह अपने पुत्र को शिक्षाप्रद प्रवचनों का उपदेश देते हैं और किसी गुंस्तेर का उदाहरण देते हैं, जिसे अपने "नौजवानी के बुरे कर्मों" के लिए "भयानक सजा" मिली।

पिता अपने पुत्र के विद्यार्थी-जीवन के केवल नैतिक पक्ष से ही नहीं, बल्कि बौद्धिक पक्ष से भी चिंतित थे। बॉन विश्वविद्यालय से पिता को लिखे गये अपने पहले पत्रों में से एक में १७-वर्षीय कार्ल ने स्पष्टतया धर्म के संबंध में अपने नवजात संदेहों के बारे में लिखा। उत्तर में हेनरिख मार्क्स ने लिखा: "तुम सच्चरित्र बने रहोगे, इसमें मुझे तनिक भी संदेह नहीं है। लेकिन ईश्वर में पवित्र विश्वास से सदाचार को बड़ा बल मिलता है। तुम जानते हो कि मैं एक कट्टर बिल्कुल नहीं हूं। लेकिन यह विश्वास देर-सवेर मनुष्य की एक वास्तविक आवश्यकता बन जाता है और जीवन में ऐसे क्षण आते हैं, जब अनीश्वरवादी तक ईश्वर की पूजा करने के लिए अनजाने खिंच आता है।"

अपने तर्क को ज्यादा वज़नी बनाने के लिए हेनरिख

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मार्क्स न्यूटन, लॉक और लीबनिज़ का उदाहरण हैं। लेकिन केवल चेतावनियों पर ही निर्भर न रहते हेनरिख मार्क्स इस बात पर ज़ोर देते हैं कि कार्ल के अत्यधिक उन्मुक्त वातावरण को छोड़ कर प्रशि राज्य की राजधानी बर्लिन के संयत, कड़े वाताव को ग्रहण करे। इसके लिए और भी अधिक वज़नी थे: बर्लिन विश्वविद्यालय तत्कालीन जर्मनी के सैद्धां चिंतन का गढ़ था। लुडविग फ़ायरबाख़ के शब्दों "इस कर्मशाला के मुक़ाबले में दूसरे विश्वविद्यालय मधुशालाएं हैं"*।

एक सुनिश्चित पेशा चुनने का प्रश्न कार्ल के बार-बार प्रस्तुत हुआ। त्रियेर की एक सबसे सुंदर ल "नृत्य की रानी", जेनी फ़ोन वेस्टफ़ालेन के साथ की सगाई के बाद, जो उनकी "पहली और सबसे विजय थी" (मेहरिंग), यह अत्यावश्यक बन

अपने पत्रों में कार्ल के पिता अपने पुत्र को इस की याद दिलाने से नहीं थकते कि जेनी ने उसके बड़ा त्याग किया है। अब जबकि कार्ल ने बिल्कुल तीत ढंग से जेनी का दिल जीत लिया है, जिसने लिए अधिक सौभाग्यशाली वरों को ठुकरा दिया, मालूम होना चाहिए कि इस असाधारण लड़की का उसके हाथों में है और इसलिए उसे "दुनिया का आ

---

* ओ० कोर्नू, 'कार्ल मार्क्स और फ़्रेडरिक एं जीवन और कार्य'।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जीतना चाहिए तथा अपने भावी परिवार की भौतिक सुख-समृद्धि की चिंता करनी चाहिए।

स्वयं कार्ल यह सब कुछ समझते थे। बर्लिन विश्वविद्यालय में, जहां वह १८३६ में गये, उन्होंने अपने को अध्ययन में उसी अदम्य, एकाग्रचित्त जोश से लगा दिया, जिससे उन्होंने अपने को बोन में जीवन की खुशियों में लगाया था। उनकी आत्मिक दिलचस्पियां अत्यंत विविध थीं। वह प्राचीन यूनान और रोम, नाट्य, सौंदर्यशास्त्र, काव्य, दर्शन और क़ानून में गहरी रुचि लेते थे। वह अब भी पेशे की अपनी कठिन खोज में लगे हुए थे। एक समय उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि यह पेशा लेखन ही है। उन्होंने गाथाकाव्यों, सॉनेटों, कविताओं की पूरी की भरी नोटबुकों की रचना की और एक ऐतिहासिक नाटक तथा एक हास्य-उपन्यास भी लिखा। पिता ने उनके साथ कवि और लेखक, साहित्यिक आलोचक और नाटककार इस पेशे के लाभों और नुक़सानों के बारे में गंभीरतापूर्वक विचार-विमर्श किया, मुमकिन विषयों का विश्लेषण किया और उनकी प्रतिभा के बारे में बातचीत की।

अपने पुत्र के विपरीत, जो अपने पिता के विचार में "अमूर्त आदर्शीकरण" की ओर प्रवृत्ति था, हेनरिख मार्क्स व्यावहारिक प्रश्नों के बारे में चिंतित थे। उन्होंने कार्ल को "देशभक्तिपूर्ण" शैली में एक नाटक लिखने, रूशियाई राजतंत्र की "मेधा" को संप्रेषित करने, एक ऐतिहासिक विषय को जर्मन भावना में विवेचित करने की सलाह दी, क्योंकि ऐसी "संबोध-गीति" में "प्रसिद्धि

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

की आधारशिला रखने" और "नाम को संस्थापित करने की शक्ति होती है। वह एक साहित्यिक आलोचक की अपने पुत्र की योजना को स्वीकृति प्रदान करने पक्ष में नहीं थे, क्योंकि महान लेसिंग को भी अपने जीवन काल में बहुत कम सफलता मिली और वह एक निर्धन लाइब्रेरियन की मौत मरे।

लेकिन हेनरिख मार्क्स को ही इस बात का श्रेय कि, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, कार्ल की असाधारण योग्यताओं को पहचानने वाले पहले व्यक्ति थे, चाहे अस्पष्ट रूप में ही क्यों न हो, महान भविष्य का अनुमान करने वाले पहले व्यक्ति १८३६ में उन्होंने अपने पुत्र को लिखा : "ईश्वर ने तो तुम्हें अभी स्वयं अपने और अपने परिवार के लाभ और यदि मेरा अनुमान ग़लत नहीं है, तो मानवजाति की भलाई के लिए एक लंबा जीवन जीना है।"

लेकिन कभी-कभी हेनरिख मार्क्स के मन में पुत्र के भाग्य के प्रति खटका होता था। उनकी प्रतिभा अपने समकालीनों के साथ उनका असादृश्य, उनकी आ की लबरेज़ शक्ति और सत्य की दृढ़संकल्प खोज-पन सब चीज़ों ने पिता को अपने पुत्र के उस "सांघा शैतान" के बारे में आभास दे दिया, जो उसे सांसा सफलता के साफ़ और सीधे मार्ग से भटका देगा उसे शांत जीवन के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए भड़काये

"क्या यह शैतान स्वर्गिक है या फ़ाउस्टीय?" रूप में हेनरिख मार्क्स ने इस प्रश्न को व्यक्त किया

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

ो उनके मन को मथ रहा था। गेटे के फ़ाउस्ट का ाग्य स्नेहशील पिता को एक अनुकरणीय उदाहरण नहीं तीत हुआ। फ़ाउस्ट की प्रतिमा, सत्य और जीवन अर्थ के शाश्वत रूप से इस असंतृप्त अन्वेषक की प्रतिभा, ो शैतान से मंत्रमुग्ध है, जो अतिदीप्तिमान क्षण की ्रामक मृग-मरीचिका के चक्कर में पल भर को भी म नहीं लेता, जो सच्ची खुशी की खोज में इसके लघु ंश से संतुष्ट नहीं होता और अपने निकट के लोगों को :ख-विषाद ही लाता है, जो केवल उन्हीं लोगों को ीवन और स्वतंत्रता के योग्य मानता है, जो उनके ए अपने जीवन और स्वतंत्रता का उत्सर्ग करने को यार हैं – यह प्रतिमा पिता के लिए आकर्षक नहीं हो कती थी, वह उससे एक भूत की तरह भयभीत हो हे थे, जो कार्ल को खतरे में डाल रहा था।

"कभी-कभी मेरा दिल तुम्हारे और तुम्हारे भविष्य बारे में चिंता से भर जाता है। पर कभी-कभी मैं अपने उन विचारों से मुक्त नहीं कर पाता, जो मेरे मन बुरी आशंकाएं और भय उत्पन्न करते हैं, और मैं पनी चिंता के वज्र-प्रहार से मर्माहत हो उठता हूं: ा तुम्हारा चित्त तुम्हारे मस्तिष्क, तुम्हारी प्रतिभाओं अनुरूप है? क्या इसमें सांसारिक किंतु कोमल भावनाओं लिए कोई जगह है, जो इस शोक-भरी घाटी में एक वेदनशील व्यक्ति के लिए इतनी सांत्वनाकारी होती ?.. क्या तुम कभी – और यह मेरे दिल का कम कष्टकर देह नहीं है – क्या तुम कभी सच्ची, मानवीय, घरेलू,

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

खुशी के योग्य बनोगे? क्या तुम – और इस संदेह मुझे हाल में, जबसे मैं किसी व्यक्ति को अपने की तरह प्यार करने लगा हूं, कोई कम परेशान किया है – क्या तुम कभी अपने सगे लोगों को खुशी के योग्य बनोगे?" बेशक, यह "कोई व्यक्ति" फ़ोन वेस्टफ़ालेन ही है, जिसकी खुशी के बारे में हेन मार्क्स इतने मर्मस्पर्शी ढंग से चिंतित हैं।

लेकिन स्वयं खुशी की व्याख्या कैसे की जाये? सम्भ कार्ल मार्क्स "अपने सगे लोगों" को वह निर्मल नहीं लाये, जिसकी उनके पिता ने कल्पना की उनके ही शब्दों में, उन्होंने अपने जीवन की कृति 'पूं के लिए अपनी सेहत, खुशी और परिवार को त्याग दिय जेनी को अपने पति के साथ उनके व्यग्र जीवन के भारों – घुमक्कड़पन, जेल, प्रवास, दरिद्रता और अत्याचार – को सहना पड़ा। उनके तीन बच्चे के शिकार हुए। लेकिन वह मार्क्स की निकटतम सह और परामर्शदाता, उनकी फ़रिश्ता थीं। वह तब जीवित रहीं, जब तक मार्क्स का नाम रूस में अम तक नयी, संघर्षरत दुनिया का प्रतीक नहीं बन गया इसने सभी कमियों को पूरा कर दिया।

हेनरिख मार्क्स का अनुमान गलत नहीं निक उनके पुत्र का "शैतान" स्वर्गिक नहीं बल्कि फ़ाउस्ट मूल का था। इसने उन्हें दम नहीं लेने दिया, इसने अपने आत्मिक विकास, अपनी सिद्धि की खोज, और मोहक "पैशाचिक तर्क", पूर्ण ज्ञान की मृग-मरी

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

और यथार्थ की पूर्ण समझ के शाश्वत अन्वेषण में निरंतर आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया। और इसके लिए उसने स्वयं मार्क्स और "उनके सगे लोगों" से त्याग की मांग की। मार्क्स ने अपने को पूरी तरह सामाजिक सत्य के तर्क की सेवा में अर्पित कर दिया। वह खुशी उस विचार ("समष्टि के लाभार्थ त्याग", "करोड़ों लोगों की खुशी") के प्रति ईमानदार बने रहे, जिसे उन्होंने अपने स्कूल के निबंध में व्यक्त किया था।

फ़ाउस्ट के विपरीत, "मेफ़िस्टोफ़ीलीस" मार्क्स के अन्दर रहता था – वह हमेशा ही अपनी कृतियों के सबसे निर्मम आलोचक थे। उन्होंने अपनी प्रिय सूक्ति "हर चीज़ को संदेह का विषय बनाओ" को सबसे पहले अपनी रचनाओं पर लागू किया।

खास तौर से, उनके आरंभिक छात्र जीवन के काव्यात्मक प्रयोगों को कठोर निर्णय का सामना करना पड़ा। अपने पिता को लिखे एक पत्र में १९-वर्षीय मार्क्स उनका मूल्यांकन निम्नलिखित रूप में देते हैं: "हमारे आधुनिक जीवन पर आक्रमण, भावना की बेतरतीब और अपरिपक्व अभिव्यक्तियां, कुछ भी स्वाभाविक नहीं, सब कुछ मनगढ़ंत, क्या है और क्या होना चाहिए के बीच पूर्ण विरोध, काव्यात्मक विचारों की जगह आडंबरपूर्ण उद्गार, लेकिन संभवतः भावना की कुछ गर्मजोशी और ओज-प्रेरणा की लालसा भी।" स्वभावतया, मार्क्स के आलोचनात्मक बोध ने उन्हें यहां धोखा नहीं दिया। और अंततः उस समय भी, जब उन्होंने कुछ कविताओं

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

में "एक सुदूर परी महल की तरह" "सच्चे का उज्ज्वल राज्य को देखा, इस सफलता ने मार्क्स को काव्यात्मक योग्यता के गंभीर मूल्यांकन के लिए एक अवसर प्रदान किया "और मेरी संपूर्ण र टुकड़े-टुकड़े होकर भस्म हो गयीं"। इसे शब्दशः सम चाहिए: मार्क्स ने अपनी कविताओं और उपन्यास स्केचों को अग्नि में होम कर दिया।

"कलादेवियों के नृत्यों और देवताओं के संगीत संन्यास लेकर मार्क्स विज्ञान की ओर और भी पूरी से मुड़े। पहले भी काव्य उनके लिए केवल एक विषय ही था। उन्होंने गाथाकाव्य या नाटक को उ एक किनारे रख दिया और विधिशास्त्र और दर्श अध्ययन में तन-मन से जुट गये। उन्होंने लेसिंग की 'लाओकून', विंकेलमान के 'कलाओं का इतिह ओविडियस के 'शोकगीत' और साथ ही, रेई की 'ज़ानवरों की कलात्मक स्वतःप्रवृत्तियां', लुडेए 'जर्मनों का इतिहास', अरस्तू के 'साहित्यशास्त्र' बेकन, शेलिंग, कांट और हेगेल की कृतियों का अ किया। उन्होंने विधिशास्त्र पर ढेर सारी विशेष सम् पढ़ डाला। एक ही वर्ष में उन्होंने वस्तुतः जितना डाला, वह अत्यंत विस्मयकारी है।

लेकिन मार्क्स ने सिर्फ़ पढ़ा ही नहीं। उन्होंने ऐसी आदत बना ली थी, जिसका उन्होंने जीवन पालन किया। वह जो कुछ पढ़ते थे, उससे बड़े नक़ल करके उतार लेते थे और उनके साथ-साथ

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

विचार भी टांक लिया करते थे। इसने उनके सृजन में अपने चिंतन और अपनी स्मृति को संगठित करने में सहायता की।

मार्क्स का एक दूसरा लक्षण यह है कि ज्ञान के एक नये क्षेत्र का उनका **अध्ययन** तुरंत उनके द्वारा इस क्षेत्र के एक स्वतंत्र **विश्लेषण** में विकसित हुआ। उनका साहित्य-अध्ययन एक विद्यार्थी की निष्क्रिय प्रक्रिया नहीं, बल्कि स्वतंत्र, सृजनात्मक चिंतन के लिए एक अवसर, एक प्रेरणा, एक प्रोत्साहन था।

दर्शन और क़ानून के अपने अध्ययन में वह "क़ानून के संपूर्ण क्षेत्र से संबद्ध विधि-दर्शन" का अन्वेषण करने का प्रयास करते हैं। मात्र इस विषय की भूमिका के रूप में ही १८-वर्षीय मार्क्स एक "अभाग्यशाली कृति... लगभग ३०० पृष्ठों की एक कृति"* लिख डालते हैं। कला-इतिहास और दर्शन-इतिहास का अध्ययन करते हुए उन्होंने उसी शैक्षिक वर्ष के दौरान लगभग २४ पृष्ठों का एक संवाद लिखा, जिसमें "कला और विज्ञान कुछ हद तक एक में पिरोये हुए थे।" संवाद का शीर्षक 'क्लेआंत या दर्शन का आरंभ-बिंदु और आवश्यक विकास' था। पर, दुःख की बात है कि यह संवाद उपलब्ध नहीं है, क्योंकि यही संभवतः उस अवधि की एकमात्र कृति है, जिसने स्वयं मार्क्स से प्रशंसा प्राप्त की। अन्य सभी

---

* कार्ल मार्क्स द्वारा त्रियेर में पिता के नाम लिखित पत्र, १८३७।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

चीज़ों को उन्होंने कविताओं की भांति ही उसी विनाश आलोचना का विषय बनाया।

इस शैक्षिक वर्ष (१८३६-३७) में कोई कम निद्रा रातें, कोई कम कटु आत्मिक लड़ाइयां नहीं थीं। "सोचने का प्रलाप" सामान्यतया अब तक जो कुछ उन्होंने थां, उसकी अस्वीकृति में समाप्त हुआ। मार्क्स या विधिशास्त्र के क्षेत्र में एक या दूसरे विद्वान की वि प्रणाली को लेते और इसे इसके तर्कसंगत निष्कर्ष विकसित करने की कोशिश करते। लेकिन अंत में विचाराधीन विद्वान, उसके सिद्धांत और अपनी की निषिद्धता पर ही पहुंचते। वह एक देव-मंदिर नये देवताओं से भरने के लिए नष्ट करते। वह एक प्रति को गिरा कर सत्य-स्तंभ पर दूसरी प्रतिमाएं स्थ करते। उन्होंनें अपनी काव्यात्मक, सौंदर्यात्मक और दा कृतियों के पूरे के पूरे खंड सिर्फ़ बाद में जला देने के लिखे। एक ही साल में उन्होंने इतना कुछ लिख डा जितना दूसरे लेखक अपनें संपूर्ण जीवन में जाकर लिख पाते हैं। लेकिन जो चीज विज्ञान में आत कूपमंडूक के लिए अभिमान का विषय होती, वही युवा मार्क्स को असंतोष की घोर व्यथा से लेती।

मार्क्स अपने स्वप्न-लोकों को उनकी सृष्टि कर पहले ही नष्ट कर देते हैं और नयी दुनियाओं की में जुट जाते हैं। जेनी को समर्पित 'खोज' शीर्षक में उन्होंने स्वयं इसके बारे में यह लिखा:

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

रे बंधन तोड़कर जब मैंने अपनी राह ली,
तू किधर को?" "ढूंढ़ना है मुझको एक दुनिया नयी!"
क्या कहा, क्या खूबसूरत कम है तेरा जहां,
"चे मौजों का तरन्नुम, सर पर तारों का समां?..."

योंकि मेरी रूह से हो मेरी दुनिया की तामीर
र उसी के सीने से लग जाये होकर अधीर
र उसको साथ मेरे हर तरफ़ से घेर ले
दे व्योम उसका मेरी सांसों से भरे।"

अपनी राह ली, फिर से जब आया लौट के,
थ में शब्दों से जनित दुनियाएं लिये,
नमें जगमग धूप थी और खेलती थी रोशनी,
केन एक बिजली गिरी और अब वे दुनियाएं नहीं।

के अपने कार्य में प्राप्त सफलताओं के प्रति निरंतर तोष, पूर्णता के लिए सतत खोज प्रौढ़ावस्था में भी के लक्षण बने रहे। उनका विचार तब तक ठोस रूप लेता था, जब तक यह उनके प्राप्त परिणामों से क श्रेष्ठ नहीं बन जाता था, जब तक वह अपनी ना को अविजित शिखरों से साफ़-साफ़ देख नहीं लेते और इसके बाद तुरंत एक नया शिखर शुरू हो जाता उनका उद्देश्य शिखरों को अहंकारपूर्वक अपने पैरों उतारना नहीं, बल्कि मात्र एक ऐसी उपयुक्त ऊंचाई पहुंचना था, जहां से सत्य उन्हें अपने वास्तविक श में साफ़-साफ़ दिखाई दे।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

बाल्ज़ाक ने 'अज्ञात श्रेष्ठ कलाकृति' शीर्षक स्केच लिखा। यह एक असाधारण प्रतिभाशाली चि के बारे में है, जो अपने जीवन में एक ही, महान बनाता है। वह इसमें रंग की संपूर्णता को साकार क प्रकृति को इस रूप में व्यक्त करना चाहता है कि उससे भी उत्तम बन जाये। वह अनेक वर्षों तक प्रेरणा से इस पर काम करता है, पौराणिक पिगमे के हाथों में मूर्ति की तरह रंगों को जीवंत बना प्रयास में वह चित्र के रंगों और रेखाओं को बा बदलता जाता है। अंत में उसे ऐसा लगता है कि अपना उद्देश्य पूरा कर दिया है। लेकिन आश्चर्य दर्शकों को चित्र में मात्र कूची की रंग-रेखाओं का गड्डमड्ड समुच्चय ही दिखता है। प्रतिभा-बाहुल्य ने ते को नष्ट कर दिया था।

फ़रवरी, १८६७ में, जब 'पूंजी' के प्रथम पर अनेक वर्षों का उनका थकाने वाला कार्य पूरा के क़रीब था, तो मार्क्स ने बाल्ज़ाक का यह स्केच से पढ़ा और एंगेल्स से उत्कृष्ट विडंबना से भरी एक श्रेष्ठ रचना के रूप में इसकी बड़ी सराहना की। सं मार्क्स ने इसमें 'पूंजी' पर अपने कार्य में पूर्णता की घोर कष्टपूर्ण खोज की विडंबना देखी, जब कभी-कभी ऐसा लगता था कि यह कार्य कभी पूरा नहीं हो

बाल्ज़ाक के नायक के विपरीत, मार्क्स अपने निर्मम आत्मालोचना के साथ, विषय की पूर्णतम और व्याख्या के सर्वोत्तम रूप के लिए अपनी अ

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

ंग के साथ इस संघर्ष में विजयी हुए। उन्होंने पूंजीवादी माज की जो तसवीर खींची, वह एक वास्तविक, श्रेष्ठ ति सिद्ध हुई, जो सदियों तक अमर रहेगी। उनको पनी 'पूंजी' को एक कलात्मक ग्रन्थरत्न कहने का हर धिकार था। लेकिन उन्होंने इसकी क़ीमत अनेक वर्षों घोर परिश्रम, बल्कि ठीक-ठीक कहें तो अपने जीवन चुकायी, क्योंकि उनका संपूर्ण जीवन 'पूंजी' की रचना लिए एक तैयारी था।

सभी सच्चे रचनाकारों की तरह मार्क्स भी हमेशा नी रचनाओं से बहुत बुलंद थे। उनका आत्मिक जगत् ना समृद्ध था कि यह उनकी रचनाओं में अपने समूचे ा में प्रतिबिंबित नहीं हुआ, जिससे कि उनकी "सर्वोत्तम ते" अलिखित रह गयीं। यहीं तो उनके असंतोष निरंतर व्यथा का कारण था।

संदेह विचार-मंदता और कायरता का एक लक्षण सकता है, जो अस्तित्व के मर्मों की पेचीदगी के समक्ष ने टेकता है और उन्हें इंजील के उस उपदेशक की ह सात तालों में बंद बताता है, जिसने अपनी पूरी से "सूर्य के नीचे किये जाने वाले सभी कामों" की नबीन की और अंत में निष्कर्ष निकाला कि "वे सब और मानो वायु को पकड़ना हैं।"

लेकिन ठीक वही संदेह तब सैद्धांतिक साहसिकता एक आवश्यक अस्त्र बन जाता है, जब विचार विगत उन विक्षुब्ध प्रेतों पर निष्पक्ष निर्णय देता है, जिनकी त मायावी हरगिज़ नहीं है।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

हास्य-व्यंग्य, दु:खांत व्यंग्य और अंतत: संदेह
के बारे में कहा जा सकता है, जो अहंवाद की ओ
जाता है, जब, दिदेरो के शब्दों में, एक पागल
अपने को दुनिया में एकमात्र पियानो सोचने लगता
लेकिन एक रचनात्मक व्यंग्य भी होता है, जो
सृजनात्मक जोश का प्रेरक है, जो नये विचारों के
में सहायता करता है, इसका मार्ग साफ़ करता है
इसे आत्मविश्वास से अनुप्राणित करता है।

कहते हैं कि मानवजाति अपने विगत से मुस्करा
विदा लेती है। यह अपने सैद्धांतिक विगत से भी मुस्
हुए ही विदा लेती है। पुनर्जागरण काल में धर्म की
णिकता और "अपने कैथोलिक मुंडन के साथ अ
की प्रामाणिकता के प्रति एक व्यंग्यात्मक रुख विच
क्षेत्र में – नये युग के प्राकृतिक विज्ञान और दर्शन
एक क्रांति का अग्रदूत था। फ़्रांसुआ राब्ले की
अश्लील हंसी सर फ़्रांसिस बेकन द्वारा मध्यकालीन
सिद्धांतों की "प्रतिमाओं" को अपने तर्कवितर्कों से
किये जाने और उनके [illegible] विचारों और आद
खंडन किये जाने से पहले [illegible] सुनायी देने लगी थ

जो चीज़ संपूर्ण समाज [illegible] लिए सही है, व
मामले में व्यक्ति के लिए, विशेष रूप से मार्क्स जैं
व्यक्ति के लिए भी सही है। युगपुरुष हमेशा निषे
व्यंग्य का वाहक होता है, इसलिए कि "महान"
चीज़ में वह जितनी तीक्ष्णता से क्षणभंगुरता, दीनत
दयनीयता का अनुभव करता है, उतना कोई भी

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

ोई भी इन चीज़ों से "महान" को इतनी अच्छी तरह साफ़ नहीं कर सकता, इसे मूर्तिकार की उत्तम छेनी मुक्त नहीं कर सकता।

मार्क्स के व्यंग्य के स्रोतों में गहराई से खोज करने लिए हमें कला की ओर मुड़ना चाहिए।

बाल्ज़ाक ने अपने कटु व्यंग्यात्मक नायक को अपने पूर्ण मर्मों, अंतःप्रेरणाओं और दिवास्वप्नों के साथ कला ा प्रतिमूर्ति कहा। यह बहुत अर्थपूर्ण है, क्योंकि कला ा सभी प्रकार की जड़सूत्रवादिता, जीवन के सभी ड़ विचारों से कोई संबंध नहीं है। यह यथार्थ को एक क्रिया, एक गति, एक कार्रवाई के रूप में समझती , अन्यथा यह कला नहीं रह जायेगी। अपनी स्मारकीय नी में भी यह "अश्मीभूत" तथ्यों के खिलाफ़ विरोध ती है और उनमें प्राण डालने का प्रयास करती है।

यथार्थ के सैद्धांतिक आत्मसातकरण के विपरीत, विज्ञान से परिभाषाओं, सूत्रों और प्रमेयों की विशुद्धता र पूर्णता की मांग करता है और इसके ज़रिये प्राप्त रिणामों को "शाश्वत", "अडिग", आदि सत्यों में लने की संभावना पैदा करता है, कला (वस्तुतः ची कला) में दुनिया के बारे में हमारे विचारों के मीकरण के लिए ऐसा कोई आश्रय नहीं है।

यह सर्वोपरि कला ही है, जो व्यक्ति की उन यताओं को विकसित करती है, जो विचार की निश्चलता खिलाफ़ एक विश्वसनीय गारंटी हैं और साथ ही नात्मक जोश का "प्रेरक", नये विचारों के जन्म

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

का अजस्र स्रोत भी हैं। यह समग्र रूप में दुनिया देखने की योग्यता है, यह अनुपात, सामंजस्य और सौ कल्पना, फ़तासी और अंतर्ज्ञान का बोध, हास्य के अंतिम लेकिन कम महत्वपूर्ण नहीं, व्यंग्य का बोध

कला व्यावसायिक गुण नहीं विकसित करती, किसी भी पेशे के लिए आवश्यक सार्विक और बल्कि मानवीय योग्यता – सृजन की योग्यता – विकसित ने है। इसीलिए बौद्धिक संस्कृति के विकास में इसकी भूमिका इतनी बड़ी है, चाहे यह वैज्ञानिक, कलाकार या इंजीनियर की बुद्धि क्यों न हो।

अपने आरंभिक बचपन से ही मार्क्स कला से प्रेरित वातावरण में बड़े हुए। शिलर ने उनमें निरंकुश अभागे लोगों के ख़िलाफ़ अत्याचार के प्रति घृणा की, शेक्सपियर ने उन्हें मानवीय भावनाओं और की जटिल दुनिया दिखायी और वाग्विदग्धता की नैसर्गिक प्रतिभा को परिमार्जित किया, गेटे ने विचार के साथ भावना, जीवन और मृत्यु के बारे में उदात्त विचारों के साथ फ़तासी के अद्भुत ज्ञान के लिए वाग्नेर जैसी धुन और इसकी सर्वशक्ति में विश्वास के साथ रूढ़ नैतिकता के पाखंड पर मों फ़ीलीस जैसे उपहास की एक लड़ी में पिरोने के प्रेरित किया।

लेकिन आइये, अब हम पुराने बर्लिन की एक सड़क पर स्थित एक विद्यार्थी के कमरे में लौटें जहां तंबाकू के धुएं के बादलों में, लगभग उसके

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

ोमवत्ती के मद्धिम प्रकाश में एक काले बालों वाला ौजवान कार्ल हेनरिख मार्क्स जिसका नाम तब १८३७ में किसी व्यक्ति के लिए कोई मानी नहीं रखता था, अपने ्पता को लिख रहे पत्र की इति कर रहा था।

अपने पिता को लिखे उस पत्र में मार्क्स ने सूचित ्किया कि इतना कुछ निषिद्ध हो जाने के बाद वह "परिहास ् वास्तविक रोष से ग्रस्त" हो गये हैं, उन्हें ऐसा लगा ्क उनका संपूर्ण श्रम "निष्फल" हो गया है और उनमें ्न "दुर्दांत शैतानों" से जूझने की शक्ति नहीं रह ायेगी, जिन्हें उन्होंने स्वयं जगाया।

लेकिन यह जीवन में एक मोड़ का मात्र अस्थायी ्कट था, जब उनका सृजनात्मक ... अंशत: यथार्थ ्र विज्ञान के साथ अपने संघर्षों की पहली अपरिपक्व ्वधि का अंत था और अंशत: भावी और अधिक ्भीर तथा मौलिक संघर्षों की एक साहसिक शुरु- ्त था।

इस शुरुआत में जगह-जगह, चाहे वह बहुत आत्म- ्श्वासपूर्ण और साफ़-साफ़ न हो, उन मूल भावों के ्स्वर सुनायी देते हैं, जो आगे चल कर संपूर्ण सिम्फ़नियों ्में विकसित होने वाले थे। सभी चीजों को निषिद्ध करने ्ला और दुनिया तथा स्वयं अपने प्रति निर्मम बौद्धिक ्म "निष्फल" नहीं था, जैसी कि मार्क्स ने सोचा। ्नके निषेध व्यर्थ और निस्सार नहीं थे, उनमें नये ्ों के बीज निहित थे। उनका विचार परंपरागत, ्म-वैज्ञानिक प्रलाप के पूर्वाग्रहों की जड़ खोद रहा था

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

और वास्तविक विज्ञान के अंकुरों के लिए भूमि तै
कर रहा था।

यह वस्तु-स्थिति अपने पिता को लिखे गये १० नव
१८३७ के उसी पत्र से बिल्कुल साफ़ है।

विधि-दर्शन पर अपने व्यापक कार्य के बारे में
पिता को एक विस्तृत वर्णन में मार्क्स इसकी अ
के कारणों की खोज करते हुए लिखते हैं कि शुरू में
सत्य को समझने में एक बाधा "गणितीय जड़सू
का अवैज्ञानिक रूप" थी। मार्क्स के दिमाग़ में सि
के समय से दर्शन में विकसित हो रही "ज्यामिति
विधि" थी, एक ऐसी विधि, जिसमें वस्तु का
प्रदत्त चीज़ के रूप में उसी तरह विभिन्न पक्षों से अध्ययन
किया जाता है जिस तरह ज्यामिति में एक त्रिको
विश्लेषण विभिन्न संबंधों में किया जाता है और
विश्लेषण को आधार-तथ्यों से ठेठ आकारिक नि
द्वारा प्राप्त प्रमेयों या अवधारणाओं में सूत्रबद्ध किया
है। स्वयं त्रिकोण अपरिवर्तनीय बना रहता है तथा
आगे किसी चीज़ में विकसित नहीं होता"। दूसरे
में, "विषयी विचारशील वस्तु के इर्द-गिर्द चक्कर
हुए जहां-तहां तर्क-वितर्क करता है, जबकि स्वयं
बहुपक्षीय ढंग से विकसित नहीं हो रही होती है
जीवित किसी चीज़ की शक्ल लिये बिना बनी रहती है

वह विधि, जो "मृत" द्रव्य के बाह्य रूपों के
में उत्तम परिणाम देती है, "जीवित" द्रव्य की अभि
के लिए, ख़ास तौर से सामाजिक प्रक्रियाओं की अभिनव

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

के लिए, "विचारों की जीवित दुनिया" के ठोस विश्लेषण के लिए बिल्कुल अपर्याप्त है। "यहां स्वयं वस्तु का अध्ययन सके क्रमिक विकास में किया जाना चाहिए और मनमाने भाजन नहीं लागू किये जाने चाहिए; स्वयं वस्तु बुद्धिसंगत स्वरूप को स्वयं में अंतर्विरोधों से परिपूर्ण किसी चीज़ के रूप में विकसित होना और स्वयं में ही अपनी एकता पाना चाहिए।"

वस्तु का अध्ययन इसके क्रमिक विकास में, "स्व-निर्माणशील, बहुपक्षीय ढंग से विकसित हो रही और ाणित" किसी चीज़ के रूप में करना – यह वह विधि-संबंधी अपेक्षा है, जिसने 'पूंजी' में देदीप्यमान अभिव्यक्ति पायी।

बेशक, इस उद्धृत सूत्र में हेगेल का बहुत कुछ है, यहां उनका प्रभाव महसूस होता है। यह हम इस तथ्य भी देखते हैं कि मार्क्स ने इस बात के लिए स्वयं अपनी आलोचना की कि उन्होंने द्रव्य और रूप की ऐसी प्रत्यापना की है, जिससे "द्रव्य" से भरे दराज़ों वाली मेज़ जैसी कोई चीज़ बन जाती है। इस दृष्टिकोण बारे में व्यंग्यात्मक ढंग से लिखते हुए, जिसकी उन्होंने भी सराहना की, मार्क्स ने यह निष्कर्ष निकाला है "रूप को केवल अंतर्वस्तु का सिलसिला होना चाहिए"।

लेकिन मार्क्स ने हेगेल को अपनाने की जल्दबाज़ी की, हालांकि हेगेल ने उन्हें घिसी-पिटी परंपरागत नवाज़ी के कुछ गतिरोधों से अवश्य निकाला। वह

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मानते हैं कि पहले हेगेलीय दर्शन के "अनोखे बेसुरे ने उन्हें आकर्षित नहीं किया। लेकिन हद से ज्यादा के कारण अपनी अस्वस्थता के दौरान जब कार्ल ने को "शुरू से अंत तक" पढ़ डाला, तो भी उन्होंने प्रति सतर्कता बनाये रखी। वह "एक ऐसे विचार जिससे मुझे नफ़रत थी, अपनी आराध्य प्रतिमा लेने पर कष्टजनक चिढ़" के बारे में लिखते हैं। स्पष्ट "बेसुरे लय" में जलपरियों के गीत का चुम्बकीय आ था और उससे प्रभावित न होना कठिन था।

कुछ भी हो, हेगेल के उत्साही प्रशंसकों के जिन्हें मार्क्स ने 'डाक्टर्स क्लब' में शामिल तरुण वादियों के बीच पाया, वही एकमात्र ऐसे व्यक्ति जो इस विद्वान के प्रभा-मंडल से तनिक भी चकित थे। हेगेलीय मार्ग का अनुसरण करें या न करें, यह उनके सामने एक खुला प्रश्न बना रहा।

हेगेल के विस्तृत अध्ययन के पहले मार्क्स ने पर क्लासिकीय जर्मन दर्शन के दो महान मनीषियों और फ़िख्ते के प्रभाव को महसूस किया था। यदि की कृतियों में मार्क्स उच्च नैतिक आदर्शों और तथा धार्मिक विचार के जड़सूत्र के दृढ़ संदेहवाद से प्र हुए, तो फ़िख्ते ने उन्हें मुख्यतया अपने दर्शन के जोशीले, दृढ़-संकल्प स्वरूप से प्रभावित किया।

सक्रिय कार्रवाई के लिए और वैज्ञानिक विचार दुनिया को बदलने की आग और तलवार बनाते अत्यंत उत्सुक युवा मार्क्स ने अपने आरंभिक विद्यार्थी

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

ं फ़िख़्ते के दर्शन और विश्व-दृष्टिकोण से बहुत कुछ पाया।

फ़िख़्ते के व्यक्तित्व ने तत्कालीन उग्र रुझान वाले ौजवानों को बहुत प्रभावित किया। फ़िख़्ते ने अपने में द्धांतिक चिंतन के प्रति अनुराग और कार्रवाई की उत्कट ालसा को उचित ढंग से समन्वित किया। वह सेनानी ौर दार्शनिक एक साथ दोनों ही थे, उनके लिए चिंतन ौर कर्म एक में मिले हुए थे। वह दर्शन के बोनापार्त नाम से सुप्रसिद्ध थे, लेकिन उनके कार्य की आरंभिक वधि में उन्हें दर्शन का जैकोबिन भी कहा जा कता था। वह अपने को क्रांतिकारी फ्रांस का एक ागरिक कहने के अधिकार को एक सम्मान की बात ानते थे।

कांट के विपरीत, फ़िख़्ते किसी भी रूप में कोई मझौता करने को झुकने वाले नहीं थे। उनके विचार ौर कर्म चुनौती भरे और "अपमानजनक ढंग से" ाहसिक थे। उनकी रचनाएं गर्वित स्वतंत्रता, स्वातंत्र्य-ेम और वीरतापूर्ण गरिमा से ओत-प्रोत थीं, उनकी ैली प्रांजल, भव्य और मर्मस्पर्शी थी। उनमें अपने र्शन से संपूर्ण युग के विचारों को शासित करने का िष्कपट दावा महसूस होता है। उन्होंने लिखा, "दर्शन ेक चिंतन सारहीन सूत्रों में खोजबीन नहीं है... गहरी से गहरी जड़ों में आत्मा का रूपांतरण, पुनर्जन्म ौर नवीकरण है [illegible] अवयव और इसके आधार एक नयी दुनिया की स्थापना है।"

फ़िख़्ते ने निष्क्रिय चिंतन की जगह रचनात्मक कार्य

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मानव के रचनात्मक कार्य को स्थापित किया। उ मूल विचार यह था कि मानव अपने कार्यों में स्वयं अ सृज़न करता है। इन विचारों ने तरुण हेगेलवादियों बड़ा प्रभावित किया था, जिनकी संगति में मार्क्स अ विद्यार्थी जीवन में रहे।

स्वभावतया, फ़िख़्ते का "कार्य-दर्शन" विश्व भाववादी व्याख्या था। उनका व्यवहार आत्मा का व्यव था। मार्क्स को तब तक आत्मिक विकास का एक मार्ग तय करना था, जब तक कि फ़िख़्ते के वि (और दूसरे चिंतकों के विचारों) का "बुद्धिसंगत म व्यवहार में द्वंद्ववादी-भौतिकवादी सिद्धांत, एक ऐसे वैज्ञा सिद्धांत की रचना में विकसित हो सके, जो दुनिया बदलने का एक सच्चा अस्त्र बना।

कांट और फ़िख़्ते मानवतावादी थे, लेकिन उ व्यक्ति की स्वतंत्रता और ओजस्वी विकास के अ को या तो किसी दूरस्थ भविष्य के अधीन कर (कांट) या उसे कल्पनावादी लक्षण प्रदान किये (फ़ि क्यों जर्मन भाववाद के क्लासिकीय दर्शन ने युवा म को संतुष्ट नहीं किया, यह १८३७ में लिखी गयी उ एक कविता से साफ़ है :

कांट और फ़िख़्ते हैं गुम आसमानों में कहीं
ढूंढ़ते हैं दूर की आदर्श दुनियाएं वहां,
उससे बेहद कम है लेकिन मेरी दिल की आरज़ू
उसको समझूं जो मिला मुझको सरे राह यहां

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

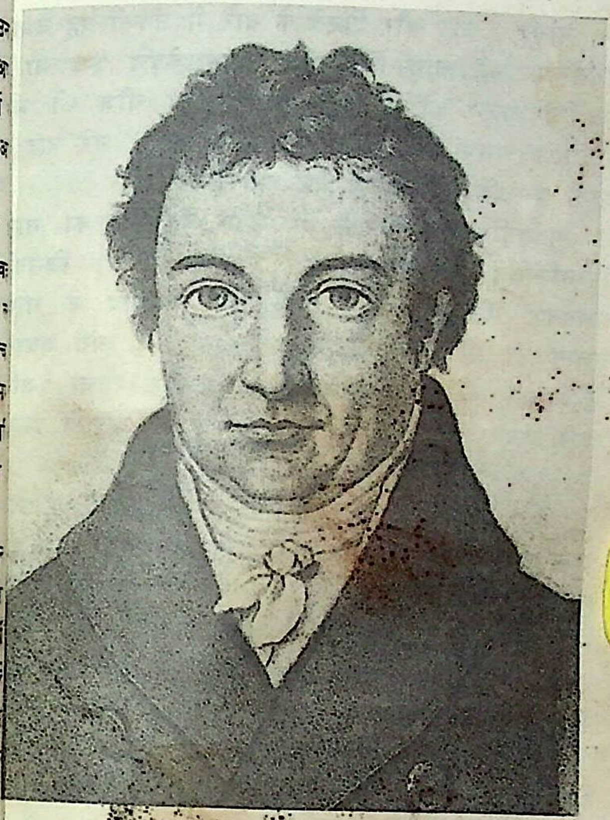

जोहान गात्तलिब फ़िख्ते

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

वस्तुतः, कांट और फ़िख़्ते के बारे में उनकी यह
हेगेल पर भी लागू होती है। मार्क्स केवल "आत
के त्रिविभाजन की ही नहीं, बल्कि उस चीज़ की
सैद्धांतिक समझ की जिज्ञासा करते हैं, जो "सरे
यानी वास्तविक जीवन में घट रही है।

पूर्ववर्ती वर्ष के बारे में उनके विचारों का
निम्नलिखित निष्कर्ष में है: "भाववाद से, जि
प्रसंगवश मैंने कांट और फ़िख़्ते के भाववाद के
तुलना की और उन्हीं से पोषित माना, मैं स्वयं य
में विचार की खोज करने के निर्णय पर पहुंचा।
पहले ईश्वर पृथ्वी से ऊपर रह रहे थे, तो अब वे
केन्द्र बन गये"।

यहां मार्क्स के भौतिकवाद की ओर संक्रमण का
प्रश्न ही नहीं उठता, वह अभी बहुत दूर है। "ई
अभी पदच्युत नहीं हुए हैं, वे तो केवल दूसरी दु
से उतर कर इस दुनिया में, "वस्तुनिजरूप" से "
हमारे निमित्त" में स्थानांतरित भर हुए हैं। वह
यथार्थ को मात्र दिव्य विचार का मंदिर बताते हैं। तन

लेकिन मार्क्स इस मंदिर में इसका शाश्वत कैदी बन
और हेगेलीय दर्शन में अपने को अवबोधन करने
परम विचार का घुटने टेककर भक्तिपूर्वक मनन करने
लिए नहीं घुसे। वह इस बात की परीक्षा लेना चाह
थे कि क्या यह देव सचमुच उतना "परम" है, कि
यह उनकी कटु आलोचना के निर्मम प्रहारों को झेल
सकेगा?

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

४

"सच तो यह है कि मैं देव-मंडली को घृणा करता हूं"

मैं टोकता हूं आ सामने मुक़ाबले को
तो देव जैसी ये दुनिया
हक़ीर नाहंजार।
एक आह भरती है
ढह पड़ती है वहीं पर वो
उसी तरह से मैं रहता हूं
फिर भी शोलाबार।

और एक शाने ख़ुदावंदी से बेरोकटोक
मैं इस खंडहर में हूं विजय की तरह महमंत।
मेरी ज़बान का हर क़ौल आग और अमल
कि मेरा सीना है, अब, सीन-ए-विधाता।

कार्ल मार्क्स

बर्लिन में विद्यार्थी जीवन कार्ल मार्क्स की दार्शनिक तना के ही नहीं, बल्कि राजनीतिक चेतना के भी द्रुत कास का काल था। पहले के अध्यायों में हम देख चुके कि अपने स्कूली वर्षों में भी वह सभी प्रतिक्रियावादी करोजों के प्रति तीव्र घृणा महसूस करते थे। बोन विश्व-द्यालय में वह युवा लेखकों की एक साहित्यिक मंडली शामिल हो गये। यह एक ऐसा संगठन था, जिसे लिस संदेह की नज़र से देखती थी। बोन विश्वविद्यालय प्राप्त उनके चरित्र-प्रमाणपत्र में यह लिखा हुआ

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

था कि उन्होंने "कोलोन में वर्जित हथियार पहुंचा

निस्संदेह, प्रशियाई राजतंत्र की राजधानी बर्लि मार्क्स को देश के राजनीतिक जीवन की भावना को ग से समझने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने उग्र रुझान युवा लेखकों से परिचय किया, हान्स हेफ़्टेर जैसे उदा वादी हेगेलवादी प्रोफ़ेसरों के व्याख्यान सुने और समसाम वैज्ञानिक, राजनीतिक और धार्मिक प्रश्नों पर वि वादविवादों में भाग लिया।

स्पष्टतया कार्ल ने अपने पिता को अपने बढ़ते नीतिमूलक संदेहों के बारे में बताया। हेनरिख मार्क्स संदेहों से कुछ-कुछ सहमत भी थे। फ़िर भी, इस संभ के लेशमात्र अंदेशे से ही उनके रोंगटे खड़े हो जाते उनके पुत्र में "अत्यधिक वामपंथी" विचार घर सकते हैं और वह ऊंची नौकरी पाने से हमेशा के लिए वंचित रह जायेगा।

"क़ानून के बारे में तुम्हारे [illegible] रहित नहीं हैं," १८३६ के अंत में उन्होंने अपने पुत्र को लि "लेकिन यदि उन्हें एक प्रणाली में [illegible] कर ते जाये, तो बहुत संभव है कि वे तूफ़ान खड़ा कर और क्या तुम्हें नहीं मालूम कि विद्वानों के बीच कि प्रचंड तूफ़ान उठते हैं? यदि इन विचारों में मौजूद आरव जनक चीज़ों को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया जा सक तो कम से कम उनका रूप नरम और सुग्राह्य होना चाहि

तूफ़ानों से बचो, नरम और [illegible] जनक चीज़ों को दूर करो!

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

ये सलाहें एक ऐसे नौजवान को दी गयी थीं, जिसमें क अदम्य योद्धा का जोशीला स्वभाव, क्रांतिकारी फ़ानों के भावी "वज्रधर ज़ीयस" की झलक पहले ी देखी जा सकती थी।

पिता और पुत्र के बीच ग़लतफ़हमी का दायरा बढ़ता ा रहा था। उनके बीच कांच की दीवार-सी पड़ गयी ी। वे एक-दूसरे को देख कर मुस्कराते थे और अब ी अपनेपन की स्नेहपूर्ण भावनाओं से बंधे हुए थे, लेकिन एक-दूसरे की बातों को ठीक-ठीक सुन-समझ नहीं पा े थे। यह कार्ल मार्क्स के उस लंबे स्वीकारात्मक पत्र र पिता की प्रतिक्रिया से बिल्कुल साफ़ हैं, जिसका क्र हम इसके पहले वाले अध्याय में कर चुके हैं। साल के दौरान मार्क्स के सघन परिश्रम, उनके ानिक और काव्यात्मक अन्वेषण को पिता का समर्थन लना तो दूर रहा, उल्टे उसने उनमें बड़ा क्षोभ और ष पैदा कर दिया। वह अपने पुत्र पर आंसू भरे उलाहनों ी [illegible] हेनरिख मार्क्स इसे सोच में डूब ते हैं [illegible] समय में जबकि स्वयं उनके जीवन [illegible] है, जब उनका छोटा पुत्र एदुआर्ड [illegible] मृत्यु को प्राप्त हो चुका है, कार्ल जो अब आरवार के लोगों की एकमात्र आशा रह गया है, उन्हें [illegible] कटु निराशा ही [illegible] कर रहा है। वह अपना [illegible] शक्ति [illegible] स्वास्थ्य बेमतलब के कामों में गंवा [illegible] कुछ बनाता है, उसे कल नष्ट कर [illegible] न तो "[illegible] काम" की क़द्र करता है और

5

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

न "दूसरों के काम" से सीखता है। वह अपनी प्र... व्यर्थ की अस्पष्ट कपोल-कल्पनाओं, निष्फल "अविवे... और अनुपयुक्त" विद्वत्ता पर नष्ट कर रहा है।

अपने पुत्र की जीवन-पद्धति के बारे में सोच... कर हेनरिख मार्क्स बहुत दु:खी और निराश हो... हैं: "अनियमितता, ज्ञान के सभी क्षेत्रों में गोल... भ्रमण, मद्धिम तेल के लैम्प की रोशनी में अस्पष्ट ... मनन, बियर के गिलास के लिए पागल होने के ... विद्यार्थी के ड्रेसिंग गाउन और बिखरे-उलझे बालों... साथ पागल हो जाने, सभी शिष्टता और यहां त... अपने पिता के प्रति भी सभी आदर-सम्मान को ... पर रख कर दूसरों से कटे-कटे एकांत में रहना। ... के साथ साहचर्य की कला मात्र गंदे अध्ययन के ... तक सीमित हो गयी है, जहां जेनी के प्रेम-पत्रों... आंसुओं के साथ लिखे गये पिता के सदाशयपूर्ण ... का इस्तेमाल शायद चुरुट जलाने की बत्तियों के ... किया जाता है..."

यह तो रही वर्तमान की बात, लेकिन भविष्... क्या होगा? क्या एक निकृष्ट कमरे में "पागल ... विद्वान" का जीवन जेनी जैसी लड़की के लिए एक ... भविष्य हो सकता है? हेनरिख मार्क्स का हृदय यह ... कर विदारित हो उठा कि यदि माता-पिता का ... अब और उसका मार्गदर्शन करने में असफल रहा ... उनके इतने अव्यावहारिक पुत्र का कितना बड़ा ... होगा। उन्होंने उसे "दुष्ट प्रेतों" को भगाने ...

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

ंभीर, व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए समझाया-ुझाया। उन्होंने कार्ल को अपने माता-पिता और अपनी ंगेतर के प्रति कर्तव्यों को एक-एक करके समझाया। उन्होंने आशा की कि इन कर्तव्यों की पूर्ति उनके पुत्र ो "सत्य मार्ग" पर लाने में सहायता करेगी, "एक सभ्य नौजवान को एक सभ्य आदमी, एक निषेधकारी धावी को एक सच्चे चिंतक उच्छृंखल नौजवानों के क उच्छृंखल सरदार को समाज के योग्य मानव में दल देगी, एक ऐसा मानव, जो ईल की तरह अदृढ़ होने के लिए काफ़ी गर्वित हो, बल्कि यह अनुभव करने ी काफ़ी व्यावहारिक बुद्धि और कौशल से संपन्न हो क वह केवल शिष्ट लोगों के साहचर्य में ही अपने व्यक्तित्व अत्यधिक जीवंत और लाभप्रद पहलू को दुनिया को खाने, शीघ्र से शीघ्र सम्मान, प्रेम और प्रतिष्ठा जीतने था अपनी उस प्रतिभा का व्यावहारिक उपयोग करने ी कला सीख सकता है, जिसे प्रकृति माता ने उसे दारतापूर्वक प्रदान किया है"।

ये शब्द उन्होंने अपने पुत्र से विदा लेते हुए कहे। हेनरिख मार्क्स बिस्तर पर गिरे तो फिर कभी नहीं उठ ये और मई, १८३८ में उनका देहांत हो गया। ओग्यूस्त नूं ने यह ठीक ही लिखा है कि हेनरिख मार्क्स की काल मृत्यु ने उनके और उनके पुत्र के बीच कटु संघर्ष हा बचा दिया और इसलिए कार्ल मार्क्स अपने पिता की द स्मृतियों को अपने साथ जीवन भर बनाये रख सके। जहां तक कार्ल मार्क्स की माता हेनरियेट का संबंध

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

है, वह अपने पुत्र के स्वास्थ्य के प्रति बड़ी चिंता करती थीं, लेकिन वह उसके आध्यात्मिक अन्वेषणों समझने से बहुत दूर थीं। वह १८६३ तक जीवित और अपने पुत्र को एक दयनीय असफल आदमी मा थीं। वह कटुतापूर्वक कहा करती थीं कि बेहतर होता कार्ल पूंजी के बारे में पुस्तक लिखने के बजाय कुछ प्राप्त करने का प्रयास करता। अपनी जगह उनका कहना सही भी था, क्योंकि, जैसा कि स्वयं मार्क्स स्वीकार किया, 'पूंजी' के प्रकाशन से प्राप्त रा से तो इसकी रचना के दौरान पी गयी तंबाकू का भी नहीं निकला। बुर्जुआ, कूपमंडूक मानदंडों के अ जिस ध्येय में उन्होंने अपना जीवन लगाया, वह बिल्कुल अलाभकर ध्येय था।

समाज में चलते पुरज़े और अपने ज्ञान से अधि लाभ प्राप्त करने (बेशक, "सार्वजनिक भलाई लिए!) में समर्थ "सम्मानजनक" विद्वान का माता-पिता का आदर्श विद्यार्थी जीवन में भी के लिए बिल्कुल हेय और नापसंद था। न जाने ऐसे "विद्वान" वह विश्वविद्यालय और जीवन में चुके थे। (न जाने ऐसे कितने ही पूंजी के "डिग्री चाकरों" को वह उनकी योग्यताओं के अनुसार पुर कर चुके थे!)

मानो "विद्वानों के बीच तूफ़ान" ... पिता के अनुनयों के उत्तर में युवा मार्क्स ने अपनी कविता में लिखा :

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

कैसे मैं निष्क्रिय, बेपरवाह रहूं उस चीज़ से
आत्मा की खातिर जो बिजली-सी बेचैन।
चैन से और काहिली से भला क्या लेना मुझे
मैं वहां हूं, जिस जगह यह अलगार है, तूफ़ान है...

रह न जाये आधी-अधूरी कोई तृष्णा
ईश्वरीय वरदानों को समझने के लिए यत्नवान् हूं मैं।
ज्ञान की गहराइयों में कर रहा हूं गवेषणा
आलमे गीत और कला में आत्मविभोर हूं मैं।

काश जुर्रत और हिम्मत अब हमारा साथ दें
नहीं अपना मुक़द्दर, सुलहेकुल सब की उम्मीद।
और कितने दिन रहेंगे बेज़बां बस रह लिये
बस हुआ बेअक्ल और बेकार जीना बस हुआ।

न हो हम बुज़दिलों की तरह से हों लाचार
जब्र से दबे-डरे, कराहते जुए के बोझ से।
ख्वते हर आरज़ू और क़ुव्वते अफ़कारोकार
पाप से शर्मिंदा होकर दिल की दिल में ही रहे।

बेशक मार्क्स के काव्यात्मक प्रयोग पूर्ण हरगिज़
नहीं थे और इस चीज़ को स्वयं युवा कवि भी बहुत
अच्छी तरह समझता था। लेकिन फिर भी, ये कविताएं
अत्यंत [illegible] हैं, वे उनके आत्मिक जोश का दर्पण
हैं, वे उनके विश्व-दृष्टिकोण, उनकी सामाजिक पसंद-

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

नापसंदों और उनकी बढ़ती सामाजिक चेतना को प्रतिबिंबित करती हैं।

आम तौर से कला और ख़ास तौर से काव्य राजनीतिक वातावरण में घट रहे परिवर्तनों के प्रति हमेशा संवेदनशील होते हैं और सामाजिक उथल-पुथलों की नब्ज़ हैं, विशेष रूप से तब, जब अन्य रूपों में राजनीतिक कार्रवाई फ़िलहाल असंभव होती है। १९वीं सदी के चौथे दशक के अंत में जर्मनी में वस्तुतः यही स्थिति थी, जहां "... आंदोलन ... धीरे-धीरे विलुप्त हो गया"*, लेकिन यह तूफ़ान आने के पूर्व की शांति थी।

नयी हवा के पहले झोंकों के स्फूर्तिकारी स्पर्श का अनुभव होने लगा था। १८३५ से युवा लेखकों की आवाज़ क्रमशः जोर-शोर से गूंज उठी, वे तरुण जर्मनों के ग्रुप के सदस्य थे और उन्होंने प्रेस और धर्म की स्वतंत्रता तथा एक संविधान की मांग की। हाइने की तीक्ष्ण व्यंग्य से भरी वीणा की झंकार जर्मनी में झंकृत हो रही थी, प्लातें और फ़्रेइलिग्राथ की स्वतंत्रता-प्रेमी कविताएं प्रकाशित हो रही थीं और ग्योर्ग हेर्वेग ने अपना काव्यात्मक ... आरंभ कर दिया था। मेधावी कवि तथा जन-... और प्रचारक लुडविग बेर्ने विदेश से प्रशियाई निरंकुशता पर ज़बर्दस्त प्रहार कर रहे थे।

अतः, काव्य में असाधारण दिलचस्पी, जो इन वर्षों में युवा मार्क्स और एंगेल्स का लक्षण थी, ...

---

* फ़्रे॰ एंगेल्स, 'जर्मनी की स्थिति', ...

...u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja...

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

स्वाभाविक है। उन्होंने अपने रचनात्मक कार्यकलाप कवियों के रूप में शुरू किये: उनकी पहली प्रकाशित पुस्तकें कविताएं ही थीं। एक लंबे अर्से तक मार्क्स के मन में पेशेवर लेखक बनने की आकांक्षा बनी रही।

युवा मार्क्स के काव्यात्मक प्रयोग एक तूफ़ान की आशा और विद्रोहात्मक भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। इन प्रयोगों में हम इर्द-गिर्द की दुनिया का निषेध और इसे एक चुनौती साफ़-साफ़ देखते हैं। उनकी फ़ंतासी ने तूफ़ानी, उन्मत्त भावनाओं, उस त्रासिक नायक की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतिमा को जन्म दिया, जो "आग के चक्के से बंधा हुआ" है और इस संसार की "निर्मम सत्ता" को धर दबाने और इसे अपने "भारी अभिशाप" से नष्ट कर डालने का स्वप्न देखता है (त्रासदी 'ओउलानेम')। हाइने की तरह, जिन्होंने कहा: "मैं ही तलवार हूं, मैं ही आग हूं!", मार्क्स अपने शब्द को "कार्य और आग" बनाने की उत्कंठा करते हैं।

मानव नियतियों के संयोग भी कैसे-कैसे होते हैं! जहां १९वीं सदी के पांचवें दशक के मध्य में मार्क्स के साथ भेंट हाइने के जीवन की एक बड़ी घटना थी – उनके काव्यात्मक तीरों ने अधिक राजनीतिक तीक्ष्णता प्राप्त की थी, वहीं कुछ समय पहले, चौथे दशक के उत्तरार्द्ध में हाइने के काव्य के साथ मार्क्स के परिचय ने मार्क्स के रचनात्मक विकास में उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

यह सुविदित है कि १८३७ तक १९-वर्षीय मार्क्स हाइने की रचनाओं से परिचित हो चुके थे, हालांकि उस

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

समय जर्मनी में उनका नाम लेना भी जुर्म माना
था। अपने पिता को लिखे उसी पत्र में, जिसका
पहले उल्लेख कर चुके हैं, मार्क्स जानबूझकर निर्वा
कवि की सुप्रसिद्ध कविता, 'शांति' से स्प्री के गंदे
के बारे में एक पंक्ति उद्धृत करते हैं, "जिसमें आ
नहाती हैं और जो चाय को हल्का करता है"।

निस्संदेह, जर्मन काव्य के विद्रोही हाइने उस
मार्क्स के एक "आराध्य व्यक्ति" थे और यह
कविताओं में भी प्रतिबिंबित हुआ है। हमें उनमें मार्क्
"विद्रोही आत्मा" के विस्वरों के सदृश लयबद्ध वि
से युक्त हाइने की नयी शैली का अनुभव होता है।
महत्वपूर्ण बात तो यह है कि हम उनमें रोमांसवाद
"सांसारिक" यथार्थवाद, आत्मीय गीतिकव्य और ना
भावना से संपृक्त हाइने का व्यंग्य पाते हैं।

"देव-जैसी इस दुनिया" को सामने मुक़ाबले
आने के लिए ललकारते हुए मार्क्स कटूक्ति और व्यंग
खड्ग से "मुनीमी नैतिकता और मोटी तोंद वालों के
पर कुछ और जबर्दस्त प्रहार करने से नहीं चूकते।
संबंध में जर्मन कूपमंडूकता, "खामोश कुछ सोये
लोगों" का मजाक उड़ाने वाली सूक्तियां बहुत दिलच

बैठकर आराम कुर्सी पर ज़रा खोये हुए
जर्मनी के लोग थे, खामोश कुछ सोये हुए
इस तरफ़ तूफ़ान था और उस तरफ़ आंधी की
काले-काले बादलों का आसमां पर था हुजूम

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

सांप-सी फनकारती थीं बिजलियों पर बिजलियां
ये सब ऐसा क्या था, जिस पर वो खपाते अपनी जान।
जब मगर तूफ़ां ठहरा और हवा मद्धिम हुई
और हल्के नरम सूरज की झलक दिखायी दी
अब तो सब एकबारगी उठ बैठे जांबाज और जरी
और लिख डाली किताब अपनी "बला सर से टली"।

किस क़दर वजहे मसर्रत है कल्पना के पंखों पर बैठ कर उड़ना
पहले जो कुछ हो चुका उसकी उड़ा दो धज्जियां
फ़िर कर दो ये फ़ैसला इस सब में कुछ मानी नहीं
ये हुजूमे मेघ था भोंडा मज़ाक और कुछ नहीं
काम है लोगों का ये ऊपर से ले नीचे तक अब
आसन एक पैदा करें और ढूंढ़ लायें भेद सब।

खोटे और नादां बच्चों की तरह है ढूंढ़ना
उसको जो बिल्कुल हमेशा के लिए गुम हो गया
समाज की तामीर में मसरूफ़ होना है उन्हें
इस ज़मीन और आसमां को भूल जाना है उन्हें
इनको छोड़ो हाल पर इनके यों ही चलते रहें
और अर्से तक चट्टानें मौजों का तोड़ा करें।

मार्क्स कूपमंडूक के आत्मसंतोष की मज़ाक उड़ाते जो यह नहीं समझ पाता कि अगर आदमी की थैली अच्छी तरह से भरी हुई और सुरक्षित है तो उसके मन कैसा अंतर्द्वंद्व हो सकता है। 'वृश्चिक' और फ़ेलिक्स

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

शीर्षक उपन्यास में मार्क्स प्रतिक्रियावादी व्यक्तियों उदारतावाद के विरुद्ध योद्धाओं की खिल्ली उड़ाते "सच्चे जर्मन", एक "बहुत अधिक ईसाई" का व्यंग्यात्मक चित्र प्रस्तुत करते हैं। इसमें हम की प्रौढ़ कृतियों जैसे ही तीक्ष्ण बुद्धि-चातुर्य का पुट हैं। वह लिखते हैं कि हर बड़ी चीज़ का अपना एक होता है, जो अपने मूल को अपदस्थ कर देता है तरह जैसे बौना महाकाय को, दक़ियानूस कूपमंडूक भाशाली को, नाट्य-अभिनेता ओक्टेवियानस वीर को, बुर्जुआ राजा लुई फ़िलिप सम्राट नेपोलियन पर्यंक-वीर क्रुग दार्शनिक कांट को, परामर्शदाता रा कवि शिलर को और वोल्फ़ का क्लासरूम लीबनि स्वर्ग को अपदस्थ कर देता है। उसी तरह, समुद्र तूफ़ान हमेशा अपने पीछे कीचड़-कचरा छोड़ जात

बाद में, 'लुई बोनापार्त की अठारहवीं (१८५१–१८५२) में मार्क्स अपनी जवानी में व्यंग्यात्मक चित्र की ओर पुनः लौटते हैं: "हेगेल जगह कहा है कि विश्व इतिहास में वे सभी अत्यंत मह घटनाएं और हस्तियां, कहा जा सकता है, दो बार भूत हुई हैं। वह इतना और कहना भूल गये: ह बार दुःखांत नाटक के रूप में और दूसरी बार के रूप में। जैसे, दांतों की जगह कोसीदियेर, रोबे की जगह लुई ब्लां, १७९३–१७९५ के पर्वत द जगह १८४८–१८५१ का पर्वत दल; चाचा की उसका भतीजा। इसी प्रकार 'अठारहवीं ब्रूमेर' का

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

संस्करण जिन परिस्थितियों में हुआ है, वे उसे प्रथम संस्करण का कार्टून बना देती हैं !"*

कूपमंडूक हमेशा मूल की जगह इसके कार्टून को ही तरजीह देता है। तूफ़ान से तो वह भय खाता है, लेकिन तूफ़ान अपने पीछे जो कीचड़-कचरा छोड़ जाता है, उसमें उसे स्वर्गिक सुख की अनुभूति होती है। वह पुनः संपूर्ण तूफ़ान को सुव्यवस्थित ढंग से पुस्तकों में उतार देने की कोशिश करता है, जिनके खरीदार भी आसानी से मिल जाते हैं। युवा मार्क्स अपनी सूक्तियों में इस विषय पर प्रायः लौट कर आते हैं:

"एक बार ऐसा हुआ जब जर्मनी वाले तमाम
जैसे-तैसे आ गये, बरमंज़िले फ़तहे अवाम
सब सुनाते फिर रहे थे कामयाबी की खबर
देखते क्या हैं कि लिखा है हर मोड़ पर
कि एक चमत्कार चारों तरफ़ देखा गया
तीन टांगें होंगी सबकी आज से ये तय हुआ!"
देखते ही देखते सब हो गये चेहरे उदास
खुद से शर्मिंदा थे सब और दिल में था खौफ़ोहरास
हद से ज़्यादा हो गया जल्दी के इस बेचैन में

---

* यहां मार्क्स अठारहवीं सदी की फ़ांसीसी क्रांति के महान नेताओं दांतों और रोबेस्पियेर की व्यंग्यात्मक तुलना अन्यमनस्क टुटपुंजिया बुर्जुआ राजनीतिज्ञों कोस्सिदियेर और लुई ब्लां से कर रहे हैं, जिन्होंने १८४८ की क्रांति में प्रमुख भूमिका अदा करने का प्रयास किया।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अब समझ की बात पड़ने लगी है कान में
एक किताब अब तो लिखें नासमझियों को सोच
उसके ग्राहक ढूंढ़ लेंगे देखते ही देखते।"

इन रचनाओं में युवा मार्क्स अपनी राजनी भावनाओं – प्रतिक्रिया के प्रति असहिष्णुता, क्रांति तूफ़ान की आशा, जनता की जीत, राजनीतिक का और उदासीनता की आलोचना, वास्तविक जीवन नहीं, बल्कि किताबों में क्रांति लाने की जर्मनों की धारण प्रतिभा के प्रति व्यंग्यात्मक रुख – को करते हैं।

फ्रांज़ मेहरिंग का यह कहना बिल्कुल ठीक कि कलादेवियों ने मार्क्स के पालने में जो विपुल प्र रखीं, उनमें लयात्मक वाक्शक्ति की प्रतिभा नहीं हालांकि मार्क्स की अनेक कविताएं अनुकरणात्मक हैं जैसा कि स्वयं युवा कवि ने माना, विस्तृत तथा हैं, उनमें एक "दूरस्थ परीमहल की तरह" उज काव्य के बीज भी हैं। ये "प्रिय, सदा प्रिया जेनी समर्पित गीतात्मक कविताओं और विशेष रूप से व्यंग्य कविताओं दोनों में विद्यमान हैं, जिनमें उनके विचार और रोष-भावना अपनी प्रचंड शक्ति के प्रकट होते हैं। जहां उनके प्रारंभिक काव्य-प्रयोग शिलर के भावात्मक रोमांसवाद का प्रभाव देखा सकता है, वहीं बाद की कविताओं पर गेटे और तौर से हाइने की छाप है।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

मार्क्स अपने तीखे व्यंग्य से चर्च पादरियों, कूपमंडूकों
आत्मिक उपदेशकों के पाखंडपूर्ण उपदेशों की आलोचना
रते हैं। वह लूथरमतवादी पादरी पुस्टकुखेन पर अनेक
क्तियां लिख डालते हैं, जिसने १९वीं सदी के तीसरे
शक में गेटे के 'विल्हेल्म मेइस्टेर' पर एक बाज़ारू
रोडी लिखी थी और महान जर्मन कवि पर "अनैतिकता"
ा दोष लगाया था।

बेहतर तो यह होता कि पादरी पुस्टकुखेन चर्च के
वर्चीखाने में अपने श्रद्धालु भक्तजनों के लिए असार
पदेशों से समोसे पकाता। लेकिन "बौनों" को महत्वोन्माद
ा मर्ज़ लगा होता है और वे "महाकाय" से अपनी
राबरी करने का व्यर्थ प्रयास करते हैं। वे उसे अपने
चश्मे से देखते है, लेकिन वे उसके विराट बूटों पर
चड़ के अलावा और कुछ भी नहीं देख पाते। तब बौने
हंकारपूर्वक कृपाशील बन जाते हैं और "महाकाय"
"गुणों" को ही "दोष" मान लेते हैं और उसे उन
ज़ों से रहित पाते हैं, जो स्वयं बौनों की नज़र में
त्वपूर्ण होती हैं। किस चीज़ के लिए उनका आदर-
मान किया जाता है? अपनी आत्मिक सादगी में इतना
त्र पुस्टकुखेन पर व्यंग्य करते हुए मार्क्स कहते हैं:
ा गेटे का उतना क़द्र क्यों किया जाये, जबकि उन्होंने
भी प्रवचन नहीं लिखा? उन्होंने तो केवल प्रकृति
अध्ययन किया, जबकि उन्हें लूथर के उपदेशों का
यन करना और उन पर कविताएं लिखनी चाहिए
।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

गेटे पढ़ना बिल्कुल ही अश्लील है औरत के लिए,
और अगर सीनदार हो तो फिर उसके लिए बेसूद है
प्रकृति को तो उसने लिया जैसी भी उसके हाथ
लेकिन कुछ गिरजे के प्रवचनों से उसकी सजावट न
चाहिए तो ये था उसको लूथर के वसूलों को
और उन्हीं की बुनियादों पर अच्छी-अच्छी नज़में
आह गेटे सच है, उसने सौंदर्य की कुछ सृष्टि भी
भूल गया लेकिन ये कहना "ये सब उसकी कृपा

जी हां, उनकी रचनाओं में क्या कोई काम की चीज़ है? आखिरकार, "मदरसे के सबक़ तक में मुश्किल थी!"

अज़ीब है न ये ख़ाहिश कि सर चढ़ायेंगे,
कि आसमां पर गेटे को हम बिठायेंगे।
कभी तो ऐसी इबारत न उससे लिखी गयी,
कि 'पर्वत-प्रवचन' पर कुछ जिससे रोशनी पड़ती
है उसके पास कोई एक ऐसा रेज़ा भी,
किसान जिस पर ललच जाये या मुदर्रिस ही।
न उसको मरज़िये हक़ की कभी समझ आयी,
कि मदरसे के सबक़ तक में उसको मुश्किल थी।

और 'फ़ॉउस्ट' के बारे में क्या कहा जाये इस चीज़ के बारे में एक शिक्षाप्रद कहानी का विषय हो सकता है कि कैसे "पाप मनुष्य को

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

पास ले जाता है" और कैसे हमें अपनी आत्मा को चाने की चिंता करनी चाहिए। लेकिन गेटे ने इसे बिल्कुल लत ढंग से चित्रित किया। उनके फ़ाउस्ट ने "ईश्वर ौर संसार पर संदेह करने का दुस्साहस किया" और नासमझ युवती को उससे प्रेम करना बदा है, बजाय सके कि वह उसके अंतःकरण को जगाती" और "उसे तान की धूर्ततापूर्ण चालों और क़यामत के दिन की द दिलाती"।

स्सए 'फ़ाउस्ट' लिखा इस तरह कर लो यक़ीन,
ब दरोग़ और झूठ शायर का है और कुछ भी नहीं।
सल में फ़ाउस्ट पापी और उस पर काहिली
स्त था, ग़ाफ़िल ख़ुदा के ख़ौफ़ से थी ज़िंदगी।
पको ऊपर से मदद कोई न इतनी भी मिली,
र्मनाक एक मौत आती, ख़त्म होती ज़िंदगी।
सलिए बस बेतहाशा ख़ौफ़ था दिल में लिये,
ाजिर था ख़त्मे ज़हमत आतशे-दोज़ख़ को।
र लगा फिर सोचने क्या चीज़ है मौत और ज़िंदगी,
म क्या है और फ़ना क्या है, क्या है हश्रे-ब्रह्मांड।
र एक अंबार शब्दों, आंकड़ों का लग गया,
नके मानी का सिरा घोर अंधेरे में गुम रहा।
श शायर ने संवारा होता इस सबको ज़रा,
र कहता ये कि शैतान इस गुनाह तक ले गया।
र कभी भी क़र्ज़ से जो चाहता अपनी नजात,
से कहते रूह की ख़ातिर करो फ़िक्रे-नजात।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जहां तक शिलर का संबंध है, वह एक भिन्न मा
है। "शिलर, उसकी राय में, थोड़ा कम उबाऊ
होते, बशर्ते उन्होंने बाइबिल और ज़्यादा पढ़ी हो
गेटे की महानता पुस्टकुखेन जैसे आत्मसंतुष्ट "वै
को आहत करती है, यह उनकी धार्मिक भावना को
पहुचाती है और वे सहर्ष उन्हें कम से कम सिर
"छोटा करना" चाहेंगे ही।

पुस्टकुखेन की घिनौनी, पुराणपंथी दुनिया की
चना ऐसे व्यक्तियों को पोषित करने वाली धार्मिक
की भी आलोचना थी और इसने अनिवार्यतः स्वयं
को कटघरे में खड़ा कर दिया।

१८३७ की अपनी सूक्तियों में पादरियों की आ
मूर्खता के विरुद्ध युद्ध घोषित करते हुए मार्क्स स्वयं
ईश्वर" – इस परम पाखंडी और सबसे बड़े ता
के विरुद्ध भी युद्ध घोषित कर रहे थे।

धर्म के साथ अंतिम रूप से नाता तोड़े बिना
पुंजिया बुर्जुआ, कूपमंडूकी विश्व-दृष्टिकोण से नाता
तोड़ा जा सकता। इसी तरह, भाववादी स्थिति
की सुसंगत और निर्मम आलोचना असंभव थी, यह
की आलोचना पर आधारित थी। ऐसा ही था
का अनिवार्य तर्क, जिसे कार्ल मार्क्स ने अपनाया

१९वीं सदी के चौथे दशक के अंत में उनके
मित्रों 'डाक्टर्स क्लब' के तरुण हेगेलवादियों की
मार्क्स का ध्यान मुख्यतया धर्म की आलोचना पर
हुआ। धर्म के विरुद्ध दार्शनिक आक्रमण १८३५ में प्रका

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

डेविड स्ट्रॉस की पुस्तक 'ईसा का जीवन' द्वारा शुरू हुआ, जिसमें इंजील की "दिव्य अमोघता" को ग़लत ठहराया गया था। 'डाक्टर्स क्लब' के मार्क्स के निकटतम मित्र ब्रूनो बावेर ने और भी आगे बढ़ कर कहा कि चारों इंजीलों में लेशमात्र भी ऐतिहासिक सत्य नहीं है।

इसी समय लुडविग फ़ारबाख़ ने *Hallische Jahrbücher* में अपने लेखों के साथ धर्म और दर्शन की एकता पर हेगेलीय शोध-कृति की आलोचना ऐसी स्थितियों से शुरू की, जिन्होंने उन्हें तेज़ी से भौतिकवाद की ओर मोड़ दिया।

मार्क्स के एक दूसरे वरिष्ठ मित्र फ्रेडरिक कोपेन ने १८वीं सदी के फ़्रांसीसी और जर्मन प्रबोधन की परंपराओं की पुनर्स्थापना के लिए संघर्ष किया। कोपेन ने १८४० में प्रकाशित अपने पैम्फ़लेट को "त्रियेर के मेरे मित्र कार्ल हेनरिख मार्क्स को" समर्पित किया।

मार्क्स 'डाक्टर्स क्लब' के सबसे नौजवान सदस्य [illegible]ता। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने शीघ्र ही प्रोफ़ेसरों और सहायक प्रोफ़ेसरों के बीच एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। वे उनकी असाधारण बुद्धि, उनकी रचनात्मक शक्ति और विचार-स्वातंत्र्य से भली-भांति अवगत थे। मार्क्स की बहुत ही व्यापक आत्मिक दिलचस्पियों, निर्णय की निर्भीकता और उनके व्यंग्य की भी सराहना किये बिना नहीं रह सके। सहायक प्रोफ़ेसर और तरुण हेगेलवादी आंदोलन के मान्य नेता ब्रूनो बावेर विद्यार्थी मार्क्स को बोन से दोस्ताना पत्र लिखा करते थे, जो

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

उनकी प्रतिभा के प्रति आदर से भरे होते थे। इन में उन्होंने लिखा कि 'डाक्टर्स क्लब' की "बौ दिलचस्पी" अतुलनीय है और मार्क्स से स्वीकार कि "बर्लिन में मैंने जितना हंसा है उतना कभी चाहे वह तुम्हारे साथ बस सड़क पार करने की बात

कार्ल मार्क्स ने तरुण हेगेलवादियों द्वारा धर्म के चलाये जा रहे संघर्ष में सक्रिय हिस्सा लिया। धर्मशास्त्र के एक प्रोफ़ेसर के ख़िलाफ़ एक वि पुस्तक भी लिखी, लेकिन उसे प्रकाशित नहीं फिर भी, ऐसा नहीं कि उनके विचार उस पुस ही बंद रह गये: उनके वरिष्ठ सहयोगियों ने उन को उठाया और विकसित किया। कोपेन ने मार्क्स लिखे पत्र में जो बात स्वीकार की है, उससे यह सा अपने पर व्यंग्य करते हुए कोपेन ने १८४१ में लि जब से कार्ल बोन चले गये, तब से उन्होंने अंततः को अपने" यानी मार्क्स से उधार न लेकर "मौलि से सुचिंतित कुछ विचार" पाये। कोपेन लिखते *Hallische Jahrbücher* में प्रकाशित ब्रूनो बा लेख के विचार मूलतया मार्क्स के ही थे। अपने वह लिखते हैं: "जैसा कि साफ़ है, तुम विचार कर्मशाला या एक बर्लिनवासी के शब्दों में, विचा खान हो"।

अपने विद्यार्थी जीवन में ही मार्क्स ने युवा जीवियों के बीच एक प्रमुख स्थान प्राप्त कर लि वह वामपंथी हेगेलवादियों के भी सबसे "वाम

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

और उनके मित्र भी उन्हें एक "अतिवादी क्रांतिकारी" मानते थे।

बेशक, यह अभी मात्र सैद्धांतिक क्रांति का, सबसे पहले धर्म के प्रति क्रांतिकारी रुख का एक प्रश्न था। इस संबंध में मार्क्स वस्तुतः बावेर, कोपेन और उनकी मंडली से बहुत आगे गये। विद्यार्थी के रूप में अपने अंतिम तीन वर्षों में वह धार्मिक आडंबर के खिलाफ़ प्रतिवाद से बिल्कुल धर्म की ही अस्वीकृति तक आगे बढ़ गये। तरुण हेगेलवादी गेओर्ग युंग ने १८४१ में आर्नोल्द रूगे को लिखा कि मार्क्स ने कहा कि ईसाई धर्म "अनैतिक" है और कि वह बावेर और फ़ायरबाख के साथ पुराने प्रभु ईश्वर को स्वर्ग से बाहर निकालने और उसे अदालत में घसीट लाने जा रहे हैं।

ईश्वर को स्वर्ग से बहिष्कृत करने, धर्म की प्रतिमाओं को अपदस्थ करने की अपनी तैयारी में १८३८ में ही मार्क्स ने अपने समर्थन में प्राचीन काल के महान अनीश्वरवादियों एपिक्यूरस और लुक्रेशियस कारूस का गहन अध्ययन किया। ईश्वरों को उनकी साहस-भरी चुनौती ने उस अवधि में मार्क्स के अन्वेषण को गंभीर रूप से प्रभावित किया और वह "मानव-मस्तिष्क को धर्म की मजबूत पकड़ से मुक्त करने"* और इस प्रकार "ईश्वर के दास" को स्वर्ग तक उठाने की उनकी आकांक्षाओं से पूर्णतया सहमत थे।

---

* का० मार्क्स, 'एपिक्यूरियन दर्शन पर नोटबुक', १८३९।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अपने डाक्टर की डिग्री संबंधी शोध-प्रबंध में "यूनानी प्रबोधन के महानतम प्रतिनिधि" एपिक् के बारे में लुक्रेशियस की भव्य पंक्तियों को उद्धृत क हैं*:

उस वक्त कि जब सब देख रहे थे बेबस-से मजबूर
लोगों का जीवन अजीरन था धर्म के भारी बोझ त
एक नश्वर और वीर इंसान उस वक़्त उठा सबसे प
जो खड़ा हुआ बाग़ी बन कर और धर्म को ललकारा जि
क़िस्सों से ख़ुदाओं के न डरा, सहमा नहीं बिजली
गरज से
स्वर्ग का सारा ग़ुस्सा भयभीत नहीं कर पाया जि
यह यश है उसकी हिम्मत का कि धर्म है उसके
तले, और विजय ख़ुद ही हमको – स्वर्ग का
पल्ला है

एपिक्यूरस के युग और १९वीं सदी के चौथे के अंत में जर्मनी में धर्म पर 'तूफ़ान और आक के युग के बीच बहुत-सी बातें मिलती-जुलती हैं। प्रा यूनान में एपिक्यूरस के अलावा दूसरे लोगों ने भी पर प्रहार किया, लेकिन उन्होंने यह कायरतापूर्वक ऊलजलूल ढंग से किया। मिसाल के लिए, स्टोइक दार्श

---

* का० मार्क्स, 'प्रकृति के डेमोक्रिट्रियन और एपि रियन दर्शन के बीच अंतर', १८३९-४१।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ने प्राचीन धर्म को अपनी ही चिंतन-प्रणाली के उसी तरह अनुकूल किया, जिस तरह तरुण हेगेलवादियों ने। मार्क्स ने एपिक्यूरस की इस बात के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की कि उन्होंने कोई रूरियायत नहीं बरती, कि वह "चालाक" या "धूर्त" नहीं थे, बल्कि उन्होंने "दुनिया के प्रति एक खुला अनीश्वरवादी" रुख अपनाया और "सीधे इसके धर्म पर प्रहार किया", जिसके फलस्वरूप वह सदियों तक चर्च पादरियों का कोप-पात्र बने रहे। *

जर्मनी में स्वयं हेगेल सहित ऐसे अनेक धार्मिक दार्शनिक थे, जिन्होंने महान यूनानी परमाणुवादियों की निन्दा की। हेगेल का बड़ा प्रभाव युवा मार्क्स को आगे बढ़ने से तनिक भी नहीं रोक पाया, हालांकि वह उस समय हेगेलवादियों के निकट थे। वह हमेशा अन्य सभी सोच-विचारों के मुक़ाबले सत्य की प्रामाणिकता को ही तरजीह देते थे। विज्ञान के आत्म-संतुष्ट देवों और प्रतिमाओं तथा अपने विचारों की नाभि पर ही सारा ध्यान केंद्रित करने वाले आत्मा के "ब्राह्मणों" को धराशायी करने वाले इस व्यक्ति के लिए तो सत्य ही एकमात्र आराध्य देव था।

अपने शोध-प्रबंध की प्रस्तावना में मार्क्स ने कहा कि हेगेल के परिकल्पनात्मक रुख़ ने ही इस "महाकाय चिंतक" को एपिक्यूरियन, स्टोइक और संदेहवादी प्रणा-

* का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, 'जर्मन विचारधारा'।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

लियों का यूनानी दर्शन के इतिहास और सामान्य
यूनानी मस्तिष्क के लिए जो महान महत्व है, उसे मा
नहीं दिया।*

आगे प्लुटार्क के बारे में बात करते हुए, जि
दर्शन को धर्म के न्यायालय में ला खड़ा किया, मा
वस्तुतः हेगेल के साथ, बल्कि उनके दक्षिणपंथी सम
के साथ वादानुवाद करते हैं।

"ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाणों" के संबंध में
मार्क्स हेगेल की आलोचना करते हैं। कांट ने इन "प्रमा
का पहले ही खंडन कर दिया था। लेकिन हेगेल ने
सिर के बल खड़ा कर दिया है यानी उन्होंने
औचित्य सिद्ध करने के उद्देश्य से उन्हें अस्वीकार
दिया है। मार्क्स ने व्यंग्यात्मक ढंग से टिप्पणी की,
किस तरह के मुवक्किल हैं, जिन्हें पैरवी करने
वकील स्वयं उनकी हत्या करके ही सज़ा पाने से
सकता है?"**

मार्क्स ने दर्शाया कि "ईश्वर के अस्तित्व के प्रमा
वस्तुतः परम मानवीय चेतना के अस्तित्व के प्र
और इसलिए "ईश्वर के अनस्तित्व" के ही प्रमाण
वास्तव में, एक प्रमाण कहता है कि चूंकि प्रकृति सु
है, इसलिए ईश्वर का अस्तित्व है। लेकिन प्रकृति

---

* का० मार्क्स, 'प्रकृति के डेमोक्रिटियन और
क्यूरियन दर्शन के बीच अंतर'।

** वही।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

"बुद्धिसंगत" संगठन तो उल्टे ईश्वर की फ़िज़ूलता, ईश्वर की अनावश्यकता को ही सिद्ध करता है।

"ईश्वर के अस्तित्व के सही प्रमाणों" को यह दर्शाना चाहिए: "चूंकि प्रकृति खराब ढंग से बनी है, इसलिए ईश्वर का अस्तित्व है", "चूंकि संसार बुद्धिरहित है, इसलिए ईश्वर का अस्तित्व है", "चूंकि कोई चिंतन नहीं है, इसलिए ईश्वर है"।

"लेकिन क्या इसका यह अर्थ नहीं है कि जिस व्यक्ति के लिए संसार बुद्धिरहित है... उसी के लिए ईश्वर का अस्तित्व है? अथवा बुद्धि-अभाव ही ईश्वर का अस्तित्व है।"*

यह निष्कर्ष अपने समय के लिए बहुत चुनौतीपूर्ण था। मार्क्स ने दृढ़तापूर्वक मानवीय आत्म-चेतना को "उच्चतम देवत्व" बताया और कहा कि "इसके साथ और कोई देवत्व नही होगा"। "सच तो यह है कि मैं देव-मंडली को घृणा करता हूं" – प्रोमीथियस की इस साहसपूर्ण आत्मस्वीकृति को उन्होंने सभी स्वर्गिक और सांसारिक देवों के खिलाफ़" मोड़ दिया। यह चुनौती-भरा वक्तव्य केवल धर्म-विरोधी ही नहीं, बल्कि राजनीतिक स्वरूप का भी था।

विद्यार्थी जीवन से विदा लेते हुए मार्क्स ने "डरपोक शकों", सत्ताधारियों के नीच चाकरों को चुनौती दी।

---

* का० मार्क्स, 'प्रकृति के डेमोक्रिटियन और एपिक्यूरियन दर्शन के बीच अंतर'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

एस्खीलस के प्रोमीथियस के साथ, जिसने ज़ीयस के
हेर्मेस के ज़ंजीर में बंधे विद्रोही से "अक्लमंदी से
लेने" और बात मानने के परामर्श को गौरवपूर्ण
से ठुकरा दिया, मार्क्स ने उनसे कहा :

> समझ लो अच्छी तरह मुझसे हो नहीं सकता
> मैं दुर्भाग्य के बदले में चाकरी कर लूं।
> पिता ज़ीयस का ख़िदमतगुज़ार बनने से
> मुझे ये अच्छा है चट्टान से बंधा रहना।*

"डरपोक शशक" वास्तव में मार्क्स के अ
"वामपंथी" रुख़ से स्तंभित थे। आर्नोल्ड रूगे ने
की क्रांतिकारिता के बारे में लिखा। यहां तक कि
भी, जिन्होंने सिद्धांत के आतंकवाद की मांग की,
की चुनौती से भयभीत थे। उन्होंने मार्क्स को
शोध-प्रबंध की चुनौती-भरी प्रस्तावना की तीक्ष्णता
कम करने के लिए राज़ी करने की कोशिश की,
दिया कि उन्हें प्रतिक्रियावादी मंत्री एइखहोर्न से
मांग लेनी चाहिए और उन्हें संघर्ष में सतर्क रहने
सरकार की आलोचना से बाज़ आने की सलाह

लेकिन ऐसी सलाह पर ध्यान देना मार्क्स के
में नहीं था, चाहे यह उनके पिता या उनके दो

---

*का० मार्क्स, 'प्रकृति के डेमोक्रिटियन
एपिक्यूरियन दर्शन के बीच अंतर'।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ही क्यों न दी हो। स्वर्गिक और सांसारिक देवों को रोक-टोक चुनौती देने के बाद उन्होंने अपने को मात्र इसी तक सीमित रखने की हरगिज़ नहीं कोशिश की। एक बार संघर्ष का मार्ग अपना लेने पर मार्क्स अंत तक लड़ाई करने के लिए तैयार थे और उनका कोई भी निकट परिचित यह ज़रा भी अनुमान नहीं लगा सकता था कि वह इस संघर्ष में कितनी दूर जायेंगे।

युवा एंगेल्स ने १८४१ के अंत में लिखी गयी अपनी व्यंग्यात्मक वीरोचित कविता 'विश्वास की विजय' में उनकी अदम्य योद्धा की प्रकृति का सुवर्णन किया। शुरू में वह ब्रूनो बावेर का चित्रण करते हैं:

...बक रहा है तैश में वह मरियल शैतान-सा सब्ज़पोश,
उसके कुटिल चेहरे से ज़ाहिर है क्रोध, अशांति व जोश।
बाइबिल पर एतराज़ों का है एक सैलेरवां,
हाथ में परचम लिये करता है सैरे आसमां।

इसके बाद मार्क्स आते हैं:

और फिर तूफ़ान की मानिंद ये कौन आ गया?
त्रियेर का वाशिंदा काले बाल गुस्से में भरा।
उसकी आमद जैसे एक पर्वत-सा आ फटा,
जिसकी आंखों से टपकता है उन्मत्त हौसला।
हाथ बेबाकी से हैं इस तरह से आगे बढ़े,
फेंक देगा आसमानों की तनाबें नोच के।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

भविष्य ने दिखा दिया कि मार्क्स और ब्रूनो बा
के जीवन-मार्ग, जो १८४१ में धर्म की आलोचना
उनके साथ-साथ काम करने के दौरान परस्पर
बाद में अलग हो जाने वाले थे। समय के गुज़रने के
बावेर का सैद्धांतिक "आतंकवाद" सरकार के
अधिकाधिक वफ़ादार बनता गया और फिर तर्कसं
बिस्मार्क के अत्यंत स्वामिभक्तिपूर्ण समर्थन में रूपां
हो गया, जिसने जर्मन सामाजिक-जनवादियों के वि
बुर्जुआ आतंक-शासन का नेतृत्व किया।

१८४३ में ही मार्क्स धर्म की आलोचना में
से बहुत आगे बढ़ गये थे। *Deutsch-Französ*
Jahrbücher में प्रकाशित लेखों में उन्होंने दिखाया
धर्म की मूलभूत आलोचना के लिए महज़ धर्म का दा
खंडन ही काफ़ी नहीं है।

बादलों में उड़ कर "आसमानों के खंभे गिरा
असंभव है। इसके लिए तो उसे ज़मीन पर खड़ा
चाहिए। धर्म की जड़ें मूलतया "सांसारिक" हैं
की दयनीयता सामाजिक संबंधों की वास्तविक दय
की ही एक अभिव्यक्ति है। वे ही इसके जन्मदाता

ईश्वर के समक्ष "ईश्वर के दासों" की विनम्र
मात्र समाज में मनुष्य की हेय, उत्पीड़ित, परा
स्थिति की एक अभिव्यक्ति है, इस तथ्य की अभि
है कि सामाजिक संबंध अभी वस्तुतः मानवीय नहीं ह—

"धर्म एक ऐसे मनुष्य की आत्म-चेतना
आत्मबोध है, जिसने या तो अभी अपने को पाया

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

या अपने को पुनः खो दिया है।"* यह अमानवीय निया की उपज है, जहां मनुष्य ऐसी शक्तियों द्वारा ासित होता है, जिन्हें वह समझ नहीं सकता।

"सिर के बल खड़ी दुनिया" "सिर के बल खड़े" वश्व-दृष्टिकोण को जन्म देती है। आंसुओं की घाटी वह आदमी, "जिसने अभी अपने को पाया नहीं है," रलोक के भ्रामक सपनों में सांत्वना की तलाश करता है। कि वह पृथ्वी पर सुखी नहीं है, इसलिए स्वर्गसुख के रे में उपदेशों से ही अपने को आश्वस्त करता हता है।

अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष और प्रकृति के साथ घर्ष में अपने को दुर्बल और असहाय पाकर मनुष्य ईश्वर ो सर्वशक्ति-संपन्न मान लेता है। उसका जीवन इतना नता-भरा है कि वह ईश्वर में ही कुछ संतोष पाने की ोशिश करता है। यही वजह है कि उस काल का धर्म वल "हृदयविहीन दुनिया का हृदय" और "आत्माविहीन रिस्थितियों की आत्मा" ही नहीं, बल्कि इस दुनिया र इन परिस्थितियों के विरुद्ध एक प्रतिवाद भी था। लेकिन यह प्रतिवाद एक निष्क्रिय प्रतिवाद है। यह त्र एक दास, "उत्पीड़ित प्राणी की आह" है। दयनीयता ामाजिक और व्यक्तिगत) कोई ऐसी चीज़ नहीं है, ईश्वरीय का विलोम हो, बल्कि यह तो उसका एक

---

* का० मार्क्स, 'हेगेल के विधि-दर्शन की समीक्षा एक प्रयास', १८४३-४४।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अनिवार्य गुण है। एक दूसरे को जन्म देता और निर्धारित करता है।

धर्म के ख़िलाफ़ उग्र संघर्ष "उस दुनिया" के लिए संघर्ष की अपेक्षा करता है, "जिसकी आत्मिक सुगन्ध धर्म है"। यह अलगाव के सभी रूपों से मनुष्य की मुक्ति के लिए संघर्ष, उसके पूर्ण विकास के लिए संघर्ष है।

ब्रूनो बावेर और लुडविग फ़ायरबाख भी धर्म की आलोचना पर रुक गये, जबकि "धर्म की आलोचना सभी आलोचना का पूर्वाधार है"*।

यदि, जैसा कि फ़ायरबाख का विचार था, मनुष्य स्वयं ही मनुष्य के लिए ईश्वर है, तो मार्क्स ने तर्कसंगत निष्कर्ष निकाला कि उन सभी संबंधों को, जिनमें मनुष्य हेय, पराधीन, असहाय और घृणित प्राणी है, समाप्त कर दिया जाना चाहिए, ऐसे संबंध, जिनका वर्णन एक फ़्रांसीसी के उस उद्गार से बेहतर ढंग से किया जा सकता, जो उसने तब व्यक्त किये थे, जब कुत्तों पर कर लगाया जाना तय हुआ था: "बेचारे कुत्तो! तुमसे भी मनुष्यों जैसा बर्ताव किया जाने लगा है!"**

अपने डाक्टर की डिग्री संबंधी शोध-प्रबंध में

---

* का० मार्क्स, 'हेगेल के विधि-दर्शन की समालोचना का एक प्रयास'।

** वहीं

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ने ईश्वरों को जो साहस-भरी चुनौती दी, उसके परिणामों को दर्शाने में हम कुछ आगे निकल आये हैं। शोध-प्रबंध के इस निष्कर्ष से कि "अबुद्धि ही ईश्वर का अस्तित्व है", "बुद्धिरहित" दुनिया के क्रांतिकारी रूपांतरण की आवश्यकता संबंधी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए बस एक डग ही भरना था। लेकिन यही डग था, जिसने उग्र तरुण हेगेलवादी को क्रांतिकारी से अलग किया।

धर्म की आलोचना तो मात्र एक दिशा थी, जिसमें युवा मार्क्स के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हुआ। ...ाद के विद्यार्थी जीवन में उनकी मुख्य दिलचस्पी दर्शन में थी। धर्म के प्रति मार्क्स का आलोचनात्मक रुख मुख्यतया उनके दार्शनिक विकास द्वारा निर्धारित हुआ।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

५

"दर्शन के बिना कोई प्रगति नहीं हो सकती"

दार्शनिक अन्वेषण की आवश्यकता एक साहसी, मस्तिष्क है।

कार्ल मा

मार्क्स के इस वक्तव्य को, जो उनके डाक्टरेट डिग्री संबंधी शोध-प्रबंध की प्रारंभिक नोटबुकों से गया है, प्रदान्वित किया जा सकता है, क्योंकि जानकारी एक साहसी, स्वतंत्र मस्तिष्क के लिए स्वतंत्र सैद्धांतिक चिंतन के लिए उतना ही आवश्यक है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण स्वयं मार्क्स हैं।

हम पहले देख चुके हैं कि न्यायशास्त्र के स्वतंत्र सैद्धांतिक अध्ययन शुरू करते ही उन्होंने कि वह दार्शनिक ज्ञान से पूरी तरह से लैस उन्होंने अनुभव किया कि वह सिद्धांत के उन रूपों में पारंगति प्राप्त किये बिना ठोस क्षेत्र में कोई नहीं कर सकते, जिनमें सैद्धांतिक चिंतन आगे बढ़

---

* का० मार्क्स, 'एपिक्यूरियन दर्शन पर नो

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

एक विकासमान विषय की विश्वसनीय प्रतिकृति प्रस्तुत करने में समर्थ है।

हेगेल की सुप्रसिद्ध उक्ति के अनुसार, मिनर्वा का उल्लू – बुद्धिमत्ता और दर्शन का प्रतीक – झुटपुटे में, जीवन के सूर्यास्त के समय उड़ान भरता है, जबकि रोजमर्रा के सभी कार्य संपन्न कर लिये जा चुके होते हैं और विचार आत्म-चेतना के शिखरों तक उठता है, ताकि वहां आत्मा के सुप्त जगत के ऊपर अपनी निश्शब्द उड़ाने भरे। इस अवधारणा की व्याख्या इस अर्थ में की जा सकती है कि दर्शन का अध्ययन बूढ़े लोगों का एक विषय है, जो जीवन के अपने अनुभव से बुद्धिमान बन गये है। लेकिन वस्तुस्थिति यह नहीं है।

कहा जा सकता है कि मानव संस्कृति की महान प्रयोगशाला में, जो युवा मस्तिष्क को प्रौढ़ता में ढालती है, दो मात्र विशिष्ट भूमिका अदा करते हैं। ये कला और दर्शन हैं। भौतिक विज्ञान को जाने बिना गणितशास्त्र का अध्ययन किया जा सकता है (हालांकि यह सर्वोत्तम विधि नहीं है), पदार्थों के प्रतिरोध के बारे में जानने का कोई कष्ट किये बिना डाक्टर बना जा सकता है और खगोल विज्ञान की कोई धारणा के बिना मशीनों का आविष्कार किया जा सकता है। लेकिन कला और दर्शन के ज्ञान के बिना सुसंस्कृत आदमी नहीं बना जा सकता। बल्कि इससे भी स्पष्ट रूप में कहूंगा कि उनके बिना तो कार्यकलाप के किसी भी ठोस क्षेत्र में कोई वस्तुतः रचनात्मक सफलता नहीं प्राप्त की जा सकती।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

यह बात कुछ विचित्र-सी लग सकती है। हमें
की सभ्यता प्राप्त है, जो पूर्ववर्ती पीढ़ियों और अनेका
पीढ़ियों के श्रम का फल है। ये नगर – इन्हें निर्मा
और वास्तुकारों ने बनाया है। ये नहरें, पुल और
इनका निर्माण मजदूरों और इंजीनियरों ने किया है।
फ़ैक्टरियां, मशीनें, धमन-भट्ठियां, मशीन-औज़ार,
और लारियां, विमान, रॉकेट – ये सभी वैज्ञानिकों
ज़ाइनरों, तकनीशियनों और मज़दूरों के कार्यरत
और कठिन परिश्रम की उपज हैं। ये पकती हुई
इन्हें कृषिविज्ञानियों और किसानों ने उगाये हैं।
मानवजाति के गौरव और आनंद की चीज़ें हैं। यह
जीवन का केन्द्र और मर्म है। लेकिन इन सब
दार्शनिकों का श्रम कहां पाते हैं?

दर्शन का "व्यावहारिक" उपयोग क्या है?
यह दुनिया में खाली हाथ नहीं आता है? अ
विज्ञानों के विपरीत, इसके परिणाम नयी मशीनों
अधिक सुदक्ष टेक्नोलाजिकल प्रक्रियाओं में साकार
होते। यह ऊर्जा के शक्तिशाली स्रोतों की खोज
करता और न ही संश्लिष्ट पदार्थों अथवा नये
नुसखों की रचना करता है।

स्पष्टतया, दर्शन पर उनसे भिन्न कसौटि
विचार किया जाना चाहिए, जो प्राकृतिक
लागू की जाती हैं। उपयोगितावादी
तरह अस्वीकार्य है, जिस तरह यह, उदाहरणार्थ,
कृतियों के सामाजिक महत्व के मूल्यांकन में अस्वीकार्य

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

यह पूछना बिल्कुल हास्यास्पद है कि किसी कलाकृति का क्या व्यावहारिक उपयोग है?

कला हमें उदात्त और सुसंस्कृत बनाती है, सौंदर्यात्मक सुख प्रदान करती है, प्रेम और घृणा करना, रंगों और बिम्बों में दुनिया को देखना-समझना सिखलाती है। यह नहीं है। यही स्थिति दर्शन के साथ है। जहां कला हमारी भावनाओं को परिष्कृत करती है, दुनिया के बारे में हमारी सौंदर्यात्मक अनुभूति को विकसित करती है, वहां दर्शन (इसके अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यकलापों के अलावा) बुद्धि, सैद्धांतिक [illegible] को परिष्कृत करता है। जहां कला [illegible] हृदयंगम करना सिखलाती है, वहां दर्शन [illegible] पर सोचना सिखलाता है।

जहां कला का अध्ययन चिंतन के सौंदर्यात्मक पहलू, इसकी कल्पना-सृष्टि करने, अनपेक्षित संपर्क-सूत्रों और सहचर्यों की खोज करने की क्षमता को विकसित करता है, वहां दर्शन का अध्ययन उच्चतम कोटि के सामान्यीकरण करने की हमारे चिंतन-मनन की क्षमता, अवधारणाओं के द्वंद्वात्मक लचीलेपन की क्षमता को विकसित करता है। यह हमें किसी वस्तु को अलग-थलग रूप में नहीं, बल्कि निरंतर बदलते संबंधों की बहुमुखी प्रणालियों दुनिया के एक अभिन्न अंग के रूप में देखना सिखलाता [illegible]

[illegible] के सं[illegible]तिक विकास का सारतत्त्व [illegible], जो ज्ञान में अब तक की प्रगति के परिणामों को [illegible]षित करता है, तो इस नाते ही दर्शन व्यक्ति की

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

आत्मिक समृद्धि में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका
करता है।

दर्शन मात्र दूरवर्ती पर्वतों के बर्फ़ीले शिखर
है, जहां थका-मांदा यात्री ज्ञान के पथरीले मार्गों
चल कर अपनी यात्रा के अंत में पहुंचता है। दर्शन "
तारोहण उपकरण" भी है, जो चुनौतीपूर्ण प्राक्कल्प
की खड़ी-सी चट्टान पर उसे अपना पैर जमाने,
परिघटना को दूसरी परिघटना से अलग करने
खाई पर सादृश्यों और सामान्यीकरणों का पुल
और उस ऊंचाई पर पहुंचा देने वाले शिला-प्रक्षेप
देखने में सहायता करता है, जहां और किसी ने
नहीं देखा है, जो उसे निम्नभूमि में भ्रमण के सम्
मार्ग की सीमित संभावनाओं को समझने में सह
करता है, वह मार्ग, जो अच्छी से अच्छी दशा में
तो ले जाता है, मगर ऊपर की ओर नहीं।

दूसरे शब्दों में, दर्शन का अध्ययन केवल पूर्ण
समृद्ध रूप में ज्ञान का आत्मसात्करण ही नहीं,
बुद्धि-साधना भी है और युवाकाल सैद्धांतिक चिंतन
को प्रशिक्षित करने का सर्वोत्तम समय है। अपने
की डिग्री संबंधी शोध-प्रबंध की तैयारी में
एपिक्यूरस के निम्नलिखित शब्दों को उद्धृत

"आदमी को जवान रहते ही दर्शन का
कर लेना चाहिए। इस काम को टालना नहीं चाहिए

---

* का० मार्क्स, 'एपिक्यूरियन दर्शन पर नोट

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

केवल कूपमंडूक मस्तिष्क के भोंडेपन को ही दर्शन एक बेकार पेशा नज़र आता है। दर्शन के प्रति कूपमंडूक रुख की तुलना सुकरात की चिड़चिड़ी पत्नी, अमर क्सान्थिप्पे के अपने पति – "दुनिया की प्रतिमा और शिक्षक" (मार्क्स) – के प्रति रुख से की जा सकती है। क्सान्थिप्पे घर-गृहस्थी का ध्यान नहीं रखने और "बेहूदी बातों" की खातिर अपने परिवार की सुख-समृद्धि की चिंता करने से इन्कार करने के लिए सुकरात को गाली देने और उन पर कीचड़ फेंकने से भी कभी नहीं बाज आयी। वह इस बात से बहुत चिढ़ी हुई थी कि जबकि दूसरे कम योग्य और कम चतुर पतियों ने उच्च पद, सम्मान और धन-दौलत प्राप्त कर लिया था, उसका सुकरात पैवंद लगे कुर्ते में नंगे पांव जाता था और अपने शिष्यों द्वारा दिये गये अत्यल्प अध्यापन-शुल्क को भी लेने से इन्कार कर देता था।

"सहज बुद्धि" को इस बात में कोई श्रेय नहीं दिखायी देता कि मूर्त विज्ञानों और कलाओं के विपरीत दर्शन का विशेष उद्देश्य मनुष्य को चिंतन करना सिखाना है। उल्टे, कूपमंडूक तो इसमें दोष ही देखता है, क्योंकि उसके लिए सैद्धांतिक चिंतन का कोई उपयोग नहीं होता। जिसकी नजर में यह व्यक्ति को सनकी, "इस दुनिया का नहीं" बनाता है।

अपने शोध-प्रबंध संबंधी नोटबुकों में मार्क्स लिखते हैं कि मानव सहज बुद्धि "मानती है कि इसे दार्शनिकों के बदले अपनी बेहद मूर्खतापूर्ण तुच्छ और घिसी-पिटी

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

बातों को *terra incognita*" ('अज्ञात प्रदेश'- "के रूप में रखने का अधिकार है। चूंकि यह अंडों सीधा खड़ा कर सकती है, इसलिए अपने को कोल सोचने लगती है।"

कूपमंडूक समझता है कि दर्शन झाड़ने से आसान कुछ भी नहीं है और वह स्वयं भी "ि स्थानों में गूढ़ दर्शन" झाड़ने को तैयार रहता है, नैतिक उपदेश देने और सूर्य तले सभी चीज़ों के में मेज़-वार्ता के अलावा और कुछ नहीं होता।

अच्छी से अच्छी दशा में दर्शन के प्रति "बुद्धि दृष्टिकोण सामान्यतया कतिपय दार्शनिक अवधार में पारंगति प्राप्त करना और नियमों तथा प्रवर्गों कंठस्थ करना है, ठीक वैसे ही जैसे कोई भौतिक या गणितशास्त्र में नियमों और फ़ार्मूलों को कंठस्थ लेता है। लेकिन यह "ज्ञान" तो उच्चतर गणितशा क्षेत्र में अनुसंधान के लिए गुणन-सारणी के ज्ञान से कम उपयोगी है।

यथातथ्य विज्ञान वहां शुरू होते हैं, जहां नि निर्विवाद, आनुभविक रूप से सिद्ध सत्यों को प्रश्न है। दर्शन वहां समाप्त होता है, जहां यह अंतिम की घोषणा आखिरी दृष्टांत में करने का करता है।

किसी एक दर्शन प्रणाली के बने-बनाये परि का अध्ययन करके तो सैद्धांतिक रूप से सोचना सीखा जा सकता। अपने अमूर्त रूपों में मान

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

के विकास के इतिहास के रूप में दर्शन के संपूर्ण इतिहास का अध्ययन करना आवश्यक है।

लेनिन ने लिखा कि हेगेल के संपूर्ण 'तर्कशास्त्र' का सम्यक् अध्ययन किये और समझे बिना मार्क्स की 'पूंजी' को समझना असंभव है। लेकिन इसी तरह, शेल्लिंग, फ़िख़्ते, कांट, लीबनिज़, स्पिनोज़ा, अरस्तू, प्लेटो, सुकरात, डेमोक्रिटस और हेराक्लिटस के दर्शन के बिना हेगेल के 'तर्कशास्त्र' को भी संपूर्ण रूप से समझना असंभव है।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि दार्शनिक और सामाजिक चिंतन के संपूर्ण इतिहास का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किये बिना हेगेल के 'तर्कशास्त्र' पर क़ाबू पाना, हेगेल से आगे बढ़ जाना, एक नये विश्व-दृष्टिकोण का सृजन करना असंभव था। हेगेलीय प्रणाली के ढांचे के भीतर ही चक्कर काटते हुए, इसकी प्रस्थापनाओं की व्याख्या करते हुए, उनके सिद्धांत के कभी इस पहलू और कभी उस पहलू पर विचार करते हुए १८३० के दशक के युवा हेगेलवादियों ने अपने को एक दुष्चक्र में फंसा पाया और वे आगे की ओर एक भी महत्वपूर्ण डग नहीं भर पाये। उन्होंने इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक वाद-विवाद किया कि हेगेलीय दर्शन में "विश्व-चित्त" के अपने लक्ष्य – आत्मज्ञान पर पहुंच जाने के बाद दुनिया का क्या होगा।

मार्क्स कभी भी कट्टर हेगेलवादी नहीं थे। हम पहले देख चुके हैं कि शुरू में हेगेल के सिद्धांत के प्रति उनका

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

रुख कुछ ऐसा था कि उन्हें उससे "नफ़रत" तक लेकिन यह चीज़ हेगेल का सांगोपांग और एकाग्र अध्ययन करने में उनके आड़े नहीं आयी। उन्होंने को महान चिंतक का उचित श्रेय तो दिया, लेकिन अपनी आराध्य-प्रतिमा नहीं बनाया। हेगेल में बहुत ऐसी बातें थीं, जिन्हें – और सर्वोपरि परम सत्य पूर्ण प्रणाली के दावे को – उन्होंने हमेशा अस्वी पाया।

डाक्टर की डिग्री संबंधी शोध-प्रबंध से युवा का यही दार्शनिक दृष्टिकोण प्रकट होता है, एक दृष्टिकोण, जिसमें वह हेगेल के माध्यम से हेगेल परास्त कर हेगेल से आगे बढ़े।

संदेह और निषेध की भावना ने मार्क्स को दा चिंतन के स्रोतों के अन्वेषण की ओर मोड़ दिया। सुकरात, प्लेटो, अरस्तू के अध्ययन में जुट गये अन्य क्लासिकीय लेखकों – डायोजेनिज़, लाएर्टियस, टार्क, सिम्प्लीसियस, फ़िलिस्टस, सिसेरो, स्टोबा फ़िलोपोनस, लुक्रेशियस कारूस और सेक्सटस एम्पिरि की अनेकानेक कृतियों का अध्ययन किया।

लेकिन यूनानी दर्शन की संपूर्ण विविधतापूर्ण प्र और सिद्धांतों में से मार्क्स ने अपना ध्यान महान भौतिकवादियों डेमोक्रिटस और एपिक्यूरस पर किया। भौतिकवादियों के सिद्धांतों के विश्लेषण का प्रयास स्वयं ही हेगेल और उनके कट्टर अनुयायि एक चुनौती था। इसने उस दिशा को इंगित

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

गेओर्ग विल्हेल्म फ़्रेडरिक हेगेल

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जिसमें एक नये विश्व-दृष्टिकोण का अन्वेषण रहा था।

भाववाद के ढांचे के भीतर हेगेल को परास्त किया जा सकता था और कोई भी भाववादी सि इस मामले में सहायता नहीं कर सकते थे। यहां तो भौतिकवाद से ही काम लिया जा सकता था।

डाक्टर की डिग्री संबंधी शोध-प्रबंध अभी भी भौ वादी दृष्टिकोण की ओर मार्क्स के संक्रमण का प्र नहीं है, लेकिन यह भाववाद से उनके असंतोष को कर देता है, जिसने दर्शन को यथार्थ से अलग कर और इसे परिकल्पना के दायरे में डाल दिया। परि यह हुआ कि दर्शन और "संसार" के बीच, वि और यथार्थ के बीच एक खाई बन गयी। "संसार" के लिए और दर्शन "संसार" के लिए पराया "अपने को साकार करने की आकांक्षा से अनुप्रा दर्शन का "शेष संसार से तनावपूर्ण संबंध" जाता है।

जैसे-जैसे "संसार" दार्शनिक बनता जाता वैसे-वैसे दर्शन "सांसारिक" हो जाता चाहता इसका अर्थ यह है कि हेगेलीय दर्शन में "आंतरिक आत्म-संतोष और पूर्णता" भंग की चुकी है।

हेगेलीय दर्शन हेगेलवादियों के विभिन्न सि में विभक्त होकर ढहने लगता है। "वह चीज, जो में दर्शन और संसार के बीच एक प्रतिलोमित

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

और विरोधी प्रवृत्ति के रूप में प्रकट होती है, बाद में अलग दार्शनिक आत्म-चेतना का अपने में विच्छेद बन जाती है और अंत में दर्शन के बाह्य पृथक्करण और द्वैत के रूप में, दो परस्पर-विरोधी दार्शनिक प्रवृत्तियों के रूप में प्रस्तुत होती है।"*

मार्क्स हेगेल के चाटुकार और पराश्रित अनुयायियों पर मर्मांतक कटूक्तियों की झड़ी लगा देते हैं। ये छुटमैये, जिनका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं होता, प्रायः "अतीत के किसी दार्शनिक महाकाय की पीठ के पीछे अपने को छिपाते हैं, लेकिन शेर की खाल में गीदड़ का भेद तुरंत ही खुल जाता है। आज या कल के किसी पुतले की गिड़गिड़ाती आवाज़ युग-युगों से गूंजती ओजस्वी आवाज़ की भोंडी नक़ल मात्र प्रतीत होती है।"**

तीक्ष्ण प्रहार करते हुए मार्क्स दो-दो चश्मों से लैस किसी बौने का व्यंग्यचित्र खींचते हैं, जो एक महाकाय के अवशिष्ट प्रदार्थ के पर्वत पर खड़ा होकर दुनिया को यह बता रहा होता है कि यहां से कितना अनूठा क्षितिज दिखायी देता है और यह समझाने के प्रयास में अपने को हास्यास्पद बना लेता है कि आर्किमिडीज़-बिंदु प्रवाही हृदय में नहीं, बल्कि उस "ठोस वास्तविक आधार" में पाया गया है, जिस पर वह खड़ा है। "इस तरह,

---

* का० मार्क्स, 'प्रकृति के डेमोक्रिटियन और एपिक्यूरियन दर्शन के बीच अंतर'।

** वही।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

बालों, नाखूनों, अंगुलियों और मल के दार्शनिक
दूसरी ऐसी ही हस्तियां पैदा होती है..."*

यहां मार्क्स एक ओर, दक्षिणपंथी हेगेलवादियों
दरिद्रतापूर्ण दृष्टिकोण के ख़िलाफ़ और दूसरी ओर
हेगेल की पूजा, उनकी शिक्षा को परम विचार का
देने के खिलाफ़, उस तर्क के ख़िलाफ़ प्रहार कर रहे
कि दर्शन का अनुवर्ती विकास मात्र हेगेलीय दर्शन
विभिन्न लक्षणों और पहलुओं की व्याख्या के मार्ग
आगे बढ़ा।

इस संबंध में हेगेल के दर्शन के भाग्य की तु
अरस्तू के दर्शन के ऐतिहासिक भाग्य से की जा सकती
जिसे मध्ययुगीन टिप्पणीकारों ने बिल्कुल नपुंसक
दिया। अरस्तू के विचारों को एक प्रकार की प्रा
पुस्तक में बदल दिया गया, उनकी प्रतिष्ठा का इस्ते
धार्मिक विश्वास के प्रभुत्व को बढ़ावा देने के लिए
गया। उनकी अचूकता में विश्वास बेहूदेपन की
सीमा तक पहुंच गया। मिसाल के तौर पर, कहा
है कि जब १७वीं सदी में एक जेसुइट प्रोफ़ेसर को टेली
से खुद यह देखने के लिए बुलाया गया कि सूर्य पर
हैं, तो उसने खगोलज्ञ किर्खेर को उत्तर दिया
बेकार है, वत्स। मैंने अरस्तू को आदि से अंत त
बार पढ़ा है और मुझे सूर्य पर धब्बे होने का ज़रा

---

* का० मार्क्स, 'प्रकृति के डेमोक्रिटियन
एपिक्यूरियन दर्शन के बीच अंतर'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

संकेत नहीं मिला। अतः ऐसे धब्बे नहीं हैं।"

दर्शन के प्रति इस "भक्तिमय" दृष्टिकोण ने, चाहे यह "महाकायों" का ही दर्शन क्यों न हो, मार्क्स के आलोचनात्मक मस्तिष्क को संतुष्ट नहीं किया। उनके शब्दों में, "कोई भी हस्ती या सद्‌विश्वास तो यह मानने का सबसे कम आधार हो सकता है कि यह या वह दर्शन सच्चा है, भले ही यह हस्ती सारी जनता हो या यह विश्वास सदियों से चला आ रहा हो"।* इसीलिए, मार्क्स कहते हैं कि दार्शनिक अन्वेषण की पहली आवश्यकता एक साहसी, स्वतंत्र मस्तिष्क है, जो प्राप्त कामयाबियों से संतुष्ट होकर बैठ नहीं जाता, बल्कि अतीत की विरासत का रचनात्मक ढंग से विश्लेषण करता है तथा नयी कामयाबियों के लिए प्रयास करता है।

अतः, धर्म के साथ दर्शन की तुलना नहीं की जा सकती। दर्शन अंध-श्रद्धा या विश्वास पर आधारित कोई सर्वोच्च प्रतिष्ठा की पूजा को बर्दाश्त नहीं कर सकता।

मार्क्स हेगेल में अरस्तू की बराबरी का हीं एक चिंतक और अरस्तू के बाद के दर्शन (एपिक्यूरियन, स्टोइक और संदेहवादी) के भाग्य तथा हेगेलीयोत्तर दर्शन के भाग्य के बीच कुछ मिलती-जुलती चीज़ देखते हैं। जहां दक्षिणपंथी हेगेलवादियों ने दर्शन के मुक़ाबले धर्म की सर्वोच्चता को सिद्ध करने की कोशिश की और "प्रतापी" प्लुटार्क की भांति दर्शन को "धर्म के न्यायालय" में ला खड़ा किया,

---

* का० मार्क्स, 'एपिक्यूरियन दर्शन पर नोटबुक'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

वहां मार्क्स दर्शन की "सर्वोच्च प्रतिष्ठा" की किन्ही
करते हैं। "जब तक दर्शन के विश्व-विजयी और पू
मुक्त हृदय में ख़ून का एक क़तरा भी स्पंदित होता
तब तक यह एपिक्यूरस के इन शब्दों से अपने विरो
को हमेशा उत्तर देता रहेगा: 'भीड़ जिन देवताओं
पूजा करती है, उनको अस्वीकार करने वाला
अपवित्र नहीं है, बल्कि वह आदमी वास्तव में अ
है, जो देवताओं के बारे में भीड़ के विश्वास को
करता है।'"*

अरस्तू के बाद का दर्शन यूनानी दर्शन का शी
था। इसने दास-स्वामित्व वाली दुनिया के पतन
एक नये युग के आरंभ की सूचना दी। हेगेली
दर्शन भी उसी ऐतिहासिक स्थिति में था। इसके
"टुकड़े-टुकड़े हो चुकी दुनिया" थी। इसके "
"एओलसी हार्प" थे, जिनके तारों को तूफ़ान झ
रहा था। "किंतु इस तूफ़ान से, जो एक महान
एक विश्व-दर्शन का अनुगमन कर रहा है, अप
गुमराह नहीं होने देना चाहिए।"**

तूफ़ान की यह प्रत्याशा, एक नये "महा
युग की प्रत्याशा १९वीं सदी के चौथे दशक के अं
पांचवें दशक में प्रारंभ में मार्क्स की मनोदशा को

---

* का० मार्क्स, 'प्रकृति के डेमोक्रिटियन
एपिक्यूरियन दर्शन के बीच अन्तर'।

** का० मार्क्स, 'एपिक्यूरियन दर्शन पर नोट

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ही लाक्षणिक ढंग से अभिव्यक्त कर देती है, जब जर्मनी अपनी निद्रा से जगने लगा था और इसके आर्थिक, राजनीतिक और बौद्धिक जीवन का पुनरुत्थान शुरू हो गया था, जिसने १८४८ की क्रांतिकारी उथल-पुथल की पूर्वसूचना दी।

इसमें संदेह नहीं कि शोध-प्रबंध लिखने के दौरान मार्क्स की "तूफ़ान-पूर्व" मनोदशा अभी भी बहुत अस्पष्ट तथा वास्तविक राजनीति से दूर थी। यह मात्र भाववादी दर्शन के विस्तीर्ण प्रवर्गों में ही अभिव्यक्त हो पायी थी। किंतु यह एक पलीते की तरह था, जो धीरे-धीरे जलते हुए एक विस्फोट पैदा करता है।

यह अभिलाक्षणिक है कि एक "तूफ़ान" की भविष्यवाणी करने में मार्क्स उन हेगेलवादियों की कायरतापूर्ण स्थिति पर प्रहार करते हैं, जो "हमारे शिक्षक को ग़लत ढंग से समझते हैं," जो सोचते हैं कि "अनुग्रता ही परम आत्मा की सामान्य अभिव्यक्ति है"। वह "अधकचरे दिमाग़ों" के विचारों की आलोचना करते हैं, जो सोचते हैं कि दर्शन और "संसार" के बीच कलह को "वास्तविक आवश्यकताओं से शांति-संधि द्वारा," "सशस्त्र फ़ौजों को [illegible] करके, उन्हें पृथक् करके" मिटाया जा सकता है।*

यह पृथक्करण खास तौर से महत्वपूर्ण समस्याओं से आत्म-चेतना की दुनिया में दर्शन के हटने में व्यक्त

---

* का० मार्क्स, 'एपिक्यूरियन दर्शन पर नोटबुक'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

है। मार्क्स के विचार में, यह व्यंग्य "साधारण चेत
को चुनौती देने वाले सारे दर्शन का विशेष लक्षण
सुकरात "दर्शन का मूर्त रूप" हैं, पहले तो
अर्थ में कि उनके रूप में हम दर्शन को कार्यान्
व्यवहार में, **जीवन में मूर्तित हुआ पाते हैं।** ठीक
वजह से मार्क्स इसकी ऐतिहासिक रूप से प्रति
सीमितता, इसकी "आत्मगतता", इसके निज में
होने को देखते हैं। लेकिन स्पष्टतया व्यक्तिगत, मा
स्तर पर यह सुकरात ही थे, जो युवा मार्क्स के
बुद्धिमत्तापूर्ण पुरुष का आदर्श, एक ऐसा सुसंगत
ईमानदार दार्शनिक थे, जिन्होंने वस्तुतः खुद अपने
मौत की सज़ा देने का निर्णय किया, क्योंकि यह
उनके आंतरिक विश्वास का तर्कसंगत परिणाम

मार्क्स का यह विचार [illegible] पर किसी भी
दार्शनिक से ज्यादा लागू होता है कि "दार्शनिक
जीवंत प्रतिमाएं, जीवंत कलाकृतियां हैं"**, उनके
सर्जित प्रणालियों और सिद्धांतों के जीवंत व्याख्यात
युवा मार्क्स के विचार से, दार्शनिक के व्यक्तित
उसकी शिक्षाओं से पृथक् नहीं किया जा सकता।

इस दृष्टि से यह देखना बहुत दिलचस्प है कि
मार्क्स अपने डाक्टर की डिग्री संबंधी
इसके लिए तैयार किये गये नोटों में देमोक्रिटस, ए

---

* का० मार्क्स, 'एपिक्यूरियन दर्शन पर नोट

** वही।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

और प्लुटार्क के बारे में वर्णन करते हैं। इन दार्शनिकों के प्रति उनके रुख में तथा इनमें वे जिन चीजों को पसंद-नापसंद करते हैं, उनमें युवा मार्क्स के व्यक्तित्व के लक्षण साफ़-साफ़ व्यक्त होते हैं।

डेमोक्रिटस और एपिक्यूरस दो ऐसे दार्शनिक हैं, जिनके सिद्धांतों को हमेशा समान या लगभग समान माना जाता रहा है। लेकिन मार्क्स दिखाते हैं कि यह सही नहीं है। हालांकि दोनों ने ही परमाणुवादी सिद्धांत का एक ही विधि द्वारा प्रतिपादन किया, फिर भी जहां तक सत्य, प्रामाणिकता और इस सिद्धांत के प्रयोग का सवाल है, वे एक दूसरे के एकदम विपरीत थे। यहां तक कि ज्ञान के प्रति भी उनका दृष्टिकोण एक दूसरे के विपरीत था।

डेमोक्रिटस ने [illegible] अन्वेषण के सिद्धांत को निम्नलिखित [illegible] "फ़ारसी ताज पाने के बजाय मैं एक नये कार्य-कारण संबंध की खोज करना पसंद करूंगा।"*

---

* का० मार्क्स, 'एपिक्यूरियन दर्शन [illegible] नोटबुक'।

डेमोक्रिटस यूनानियों के बीच [illegible] मस्तिष्क [illegible]। वह परमाणुवादी दर्शन के एक संस्थापक [illegible]। डेमोक्रिटस [illegible] अनुसार दो मूल तत्त्व – परमाणु और [illegible]शून्यता – हैं। [illegible] सामग्री इंद्रियों से प्राप्त होती [illegible] वे वस्तुओं के "धुंधले" ज्ञान के अलावा और [illegible]छ नहीं प्रदान [illegible], इससे भी उत्कृष्ट एक दूसरा, "उज्ज्वल", अधिक सूक्ष्म ज्ञान, बुद्धि के द्वारा ज्ञान है। [illegible] ज्ञान अपने विश्लेषण में परमाणुओं और परिशून्यता [illegible] खोज पर पहुंचता है।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

वह सभी चीज़ों में कार्य-कारण के संबंध ढूंढ़ते हैं; संयोग को इन्कार करते हैं, जो "युक्तियुक्त चिंत लेशमात्र मेल नहीं खाता"। उन्हें अपने प्राप्त ज्ञा निरंतर असंतोष बना रहता है। वह रेखागणित का प्राप्त करने के लिए मिस्र और फ़ारस में कैलडि निवासियों की यात्रा करते हैं। कुछ लोगों का तो यह विचार है कि उन्होंने हिन्दुस्तान की भी यात्रा की और योगियों से ज्ञान प्राप्त किया था।

अपने युग के इस प्रकांड मस्तिष्क ने ब्रह्मांड के विश्वसनीय परिकल्पनात्मक सिद्धांत – परमाणुवादी सि की रचना की, जिसके मूल लक्षणों को सदियों के ज्ञान के संपूर्ण विकास ने पुष्ट कर दिया है। फिर उन्हें अपने ज्ञान से कभी संतोष नहीं हुआ। कहा है कि उन्होंने स्वयं अपनी आंखें फोड़ लीं, ताकि का ऐंद्रिय प्रकाश बुद्धि की तीक्ष्णता को धुंधला न पाये।

एपिक्यूरस एक मूलतया भिन्न व्यक्ति थे और के प्रति भी उनका एक अलग ही दृष्टिकोण था। डेमोक्रिटस ने सभी से ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास वहां एपिक्यूरस को अपने पर इस बात का गर्व उनका कोई शिक्षक नहीं है, कि वह स्वयंशिक्षित किसी की सहायता के बिना ही ... का अप खोजा है। डेमोक्रिटस की बेचैन आत्मा उन्हें दुनि सभी भागों में ले गयी और उन्होंने ८० साल वि बितायें; जबकि एपिक्यूरस एथेन्स में अपनी

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

से मुश्किल से दो-तीन बार ही बाहर गये होंगे और वह भी अपने दोस्तों से मिलने के लिए। वह दर्शन में शांति और ख़ुशी पाते थे और डेमोक्रिटस के विपरीत, उन्होंने यथातथ्य ज्ञान को ज़रूरी नहीं समझा। सभी चीज़ों का ज्ञान प्राप्त करने में अपने को असमर्थ पाकर डेमोक्रिटस ने निराशा से अपनी आंखें फोड़ लीं, लेकिन जब एपिक्यूरस को लगा कि उनका अंत समय निकट आ रहा है, तो उन्होंने गर्म जल से स्नान किया, शुद्ध शराब का पान किया और अपने दोस्तों से दर्शन के प्रति निष्ठावान् बने रहने का अनुरोध किया।

एपिक्यूरस को परिघटना-आभास की ऐंद्रिय अनुभूति में पूरा विश्वास था। इसी वजह से जहां डेमोक्रिटस को सूर्य वृहत् प्रतीत हुआ, वहां एपिक्यूरस को यह लगभग दो फ़ुट बड़ा प्रतीत हुआ यानी जितना बड़ा यह दिखायी देता है।

जिस आवश्यकता को डेमोक्रिटस सभी चीज़ों में देखने की आशा करते हैं, उसे एपिक्यूरस अस्वीकार करते थे। वह आवश्यकता को मनुष्य को उत्पीड़ित करने वाली अनिवार्य स्थिति, भाग्य की एक अभिव्यक्ति मानते हैं। वह इसे धर्म और देवताओं से सूत्रबद्ध करते हैं, जो मनुष्य के सभी कार्यकलापों को पूर्वनिर्धारित करते हैं। मनुष्य का व्यवहार स्वयं उस पर, संयोग पर निर्भर होना चाहिए, न कि आवश्यकता पर।

एपिक्यूरस के अनुसार, आवश्यकता में जीना दुर्भाग्य है लेकिन ऐसा जीवन एक आवश्यकता हर्गिज़ नहीं है।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

स्वाधीनता के मार्ग सभी दिशाओं में खुले हैं, वे अनेका
छोटे और आसान हैं, केवल हमें आवश्यकता को "दबा
चाहिए। उनके विचार में, हमें "संयोग को, न
ईश्वर को" मानना चाहिए। इसके ठीक अनुरूप एपिक
डेमोक्रिटस के विपरीत अपने परमाणुवादी सिद्धांत
अणुओं का **सांयोगिक** विचलन लागू करते हैं।

मार्क्स ने पहली बार दिखाया (और इसमें
शोध-प्रबंध का शाश्वत वैज्ञानिक मूल्य निहित है)
एपिक्यूरस के अणुओं का सांयोगिक विचलन उपहास
सनक नहीं, जैसा कि बहुतों ने सोचा, बल्कि एक
नवाचार है, जिसने परमाणुवादी सिद्धांत में मह
सुधार किया और इसके विकास में सहायता की।
चीज़ की ओर मार्क्स ने अपने द्वंद्वात्मक अंतर्ज्ञान से ग
होते हुए ध्यान खींचा, वह प्रायोगिक रूप से आ
अवपरमाण्विक भौतिकी द्वारा, जिसने अनिश्चितता
सिद्धांत पेश किया, पुष्ट की जा चुकी है।

दार्शनिक दंभियों और कूपमंडूकों ने एपिक्यू
दर्शन को – अनीश्वरवाद और यूनानी प्रबोधन के
को, जिसने जीवन की सहज और नैसर्गिक खुशि
मस्त रहने वाले स्वतंत्र व्यक्ति की सराहना की –
कटु आलोचना का विषय बनाया।

इन आलोचकों में सबसे आगे "प्रतापी" प्लूटा
जो मार्क्स के लिए "आत्म-संतुष्ट मूढ़ता", "अप
बुद्धि का भंडार समझने वाली अह... सम्पूर्ण सद्
का जीता-जागता उदाहरण हैं।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मार्क्स तिरस्कारात्मक ढंग से एपिक्यूरस के सुसंगत, सच्चे और साहसी तर्क – एक ऐसा तर्क, जो अपने निष्कर्षों से तनिक भी भयभीत नहीं होता, भले ही वे धर्म की अस्वीकृति की ओर ही क्यों न ले जायें – की तुलना प्लुटार्क के कायरतापूर्ण, अधकचरे, सारसंग्रहवादी दृष्टिकोण, उसकी धार्मिक, उपदेश से भरी बातों, उनकी आडंबरपूर्ण चाटुकारिता से करते हैं।

प्लुटार्क का तर्क अधकचरे दिमाग़ के बाज़ारू "दर्शन" का श्रेष्ठ उदाहरण है, जो अपनी "धार्मिकता", "सद्-गुणों" में परलोक में भलाई और "शाश्वत सुख" की चिंता में ही संतोष प्राप्त करने की चेष्टा करता है, एक ऐसा "दर्शन", जो अपने तुच्छ "अहम्" की दरिद्रता और अधःपतन पर नैतिकता का बर्फ़ीला खोल चढ़ाता है। प्लुटार्क की छवि मार्क्स को एक ऐसे व्यक्ति का स्मरण दिलाती है, जो भय से आक्रांत रहता, चाटुकारितापूर्वक गिड़गिड़ाता है और दूसरों को यह उपदेश देता है कि "यह बात कितनी अन्यायपूर्ण है कि अच्छे लोग मृत्यु के साथ अपने जीवन के फ़लों से वंचित हो जाते हैं"।* स्वभावतया, प्लुटार्क चिंतन के क्षेत्र में "शालीनता" के सभी उल्लंघनों की निन्दा करते हैं। प्लुटार्क को पढ़ते हुए हमें ऐसा लगता है मानो हम किसी दमघोंटू "क्लास-रूम" में बैठे हों। "विश्व के नये, प्रखर, काव्यात्मक शिक्षक" एपिक्यूरस और लुक्रेशियस को पढ़ते हुए हमारे

* का० मार्क्स, 'एपिक्यूरियन दर्शन पर नोटबुक'।

u.Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सामने रंग-बिरंगे वस्त्रों में एक साहसी कलाबाज़
छवि प्रस्तुत होती है और हम अपने को भूल जाते
अपने से ऊपर उठ जाते हैं, आगे देखने और
स्वतंत्रतापूर्वक सांस लेने लगते हैं।

खैर, हर कोई अपनी बुद्धि से काम करता है।
व्यक्ति को अपनी शक्ति से जगत् का निर्माण क
जगत् का स्रष्टा होने की अपेक्षा अपने अंत:जगत्
कुरेदने में ही अधिक संतोष प्राप्त होता है, उस पर
का अभिशाप होता है, वह बहिष्कृत होता है,
विपरीत अर्थ में, वह मंदिर से निकाला गया हो
और एक शाश्वत आत्मिक आनंद से वंचित हो
और उसे अपने व्यक्तिगत सुख-चैन के सोच से ही
मन बहलाना पड़ता है और रात को अपने ही सपने
पड़ते हैं।"*

निस्संदेह, प्लुटार्क के साथ मार्क्स का वाद
दर्शन में उनके सभी आत्मिक अनुयायियों के सा
वादानुवाद था, जिनकी संख्या कोई कम नहीं थी।
के "प्रतापी" छंटे हुए बदमाशों, प्लुटार्क के उन
यियों का शब्दाडंबर जो जीवंत, स्पंदनशील विचा
अपनी लोरियों से बहला कर सुलाने के लिए
निषेधों और देशभक्तिपूर्ण उपदेशों का प्रपंच र
मार्क्स के स्वभाव से लेशमात्र मेल नहीं खाता था।

---

* का० मार्क्स, 'एपिक्यूरियन दर्शन पर नोट', १८३९।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

तेज़ क़लम से उन्होंने प्लुटार्क मार्का "नैतिकता-भरी आलोचना और आलोचनात्मक नैतिकता" की सभी अभिव्यक्तियों को इतिहास के कटघरे में खड़ा कर दिया।

१६वीं सदी में टुटपुंजिया बुर्जुआ जनवादी कार्ल हेइंज़ेन एंगेल्स के साथ वादानुवाद में उसी तरह की "आलोचना" का उतना ही ज्वलंत रूप था, जितना कि दो हज़ार साल पहले प्लुटार्क एपिक्यूरस के साथ वादानुवाद में। मार्क्स ने हेइंज़ेन के रूप में "आलोचनात्मक कूपमंडूकता" को निर्मम वाग्विदग्धता और व्यंग्य के तीरों से खूब अच्छी तरह भेदा है, जो बड़े गर्व के साथ डींग मारती है कि उसका मत दर्शन या ज्ञान नहीं, बल्कि "जीवन की पूर्णता" है, जो "सहज बुद्धि" का उपदेश झाड़ती है, "आत्म-संतुष्ट सद्गुणी कूपमंडूक की ईमानदारी-भरी चेतना" का प्रदर्शन करती है, कुछ "स्वल्प, थोथे" सत्यों को अडिग जड़सूत्रों में रूपांतरित करती है और धर्म के ऐसे प्रतीक के विरोधियों के 'अंधेपन', 'मूढ़ता' और 'दुष्टता' के बारे में अपना नैतिक रोष बरसाती है"।*

मार्क्स ने प्लुटार्क के सभी अनुयायियों का यह जो तीव्र नकारात्मक मूल्यांकन किया है, उससे विज्ञान के प्रति उनका वास्तविक दृष्टिकोण और सच्चे दार्शनिक चिंतन के कार्य और भूमिका की उनकी समझदारी बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है।

---

* का० मार्क्स 'नैतिकता-भरी आलोचना और आलोचनात्मक नैतिकता', १८४७।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जड़सूत्र से, अपरिवर्तनीय, जड़ीभूत प्रस्थापनाओं दर्शन लेशमात्र मेल नहीं खाता। यह हेगेलीय प्रणाली अंतिमता, पूर्णता, परम और "परिकल्पनात्मक" ही था, जिसने मार्क्स को संतुष्ट नहीं किया। हम ही देख चुके हैं कि कैसे उन्होंने अपने डाक्टर की संबंधी शोध-प्रबंध में "संसार", यथार्थ से हेगेलीय के अलगाव के खिलाफ़ अपनी आलोचना की पूरी लगा दी।

उनके प्रारंभिक दार्शनिक दृष्टिकोण के इस विचार की तह में एक विस्फोटक पलीता था और शीघ्र ही मार्क्स को दर्शन के बारे में दूरगामी नि पर पहुंचा दिया।

चूंकि अभी प्राकृतिक विज्ञान अल्प विकसित इसलिए दर्शन कुछ समय के लिए यथातथ्य विज्ञा स्थान पर काम करने के लिए विवश था। इसने वि एक सार्विक सिद्धांत, विज्ञानों का राजा होने का किया। हेगेलीय दर्शन में इस दावे की पूर्णतम अभि हुई। और इसीलिए हेगेलीय प्रणाली पुराने अर्थ में का **समापन**, इसका शीर्ष, इसका कुल योग और निष्कर्ष थी।

मार्क्स ने अपने छात्र-जीवन के अंतिम वर्ष भली-भांति समझ लिया था कि चित् के अगम्य में शासन करने वाले दर्शन, "विज्ञानों के इस के समक्ष ज़मीन पर उतरने की आवश्यकता प्रस्तु गयी है। लेकिन उस समय वह अभी न तो कम्यु

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

न क्रांतिकारी जनवादी थे और न ही उन्होंने अभी राजनीति में अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट किया था। स्वभावत:, "संसार" के बारे में उनका विचार और दर्शन को "संसार" से सूत्रबद्ध करने के तरीके कुछ अमूर्त थे।

कोई तीन साल बाद ही हम मार्क्स को अपने 'हेगेल के विधि-दर्शन की समीक्षा का एक प्रयास' पर काम करते हुए पाते हैं। इसकी भूमिका में उन्होंने क्रांतिकारी विश्व-दृष्टिकोण की संपूर्ण दृढ़ता के साथ "संसार" से दर्शन के संबंध पर अपनी प्रस्थापना को सूत्रबद्ध किया।

मार्क्स के शब्दों में, क्रांति उस "दार्शनिक के मस्तिष्क में शुरू होती है," जो उभरते हुए अंतर्विरोधों को प्रतिबिम्बित करता है। परंतु सैद्धांतिक आलोचना का अस्त्र "अस्त्रों द्वारा आलोचना" का स्थान नहीं ले सकता। ज्योंही सिद्धांत जनसाधारण के मन में घर कर जाता है, त्योंही यह भौतिक शक्ति बन जाता है।* अत:, भौतिक शक्ति बनने के लिए दर्शन को अनिवार्यत: क्रांतिकारी वर्ग अर्थात सर्वहारा के दर्शन के रूप में काम करना चाहिए।

"जिस तरह दर्शन सर्वहारा में अपना भौतिक अस्त्र पाता है, उसी तरह सर्वहारा दर्शन में अपना आत्मिक अस्त्र पाता है और जैसे ही जनसाधारण की अछूती धरती पर विचार का तड़ित-आघात होगा, वैसे ही

* का० मार्क्स : 'हेगेल के विधि-दर्शन की समीक्षा का एक प्रयास'।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जर्मनों की मुक्ति हो जायेगी और वे मनुष्य जायेंगे"।*

लेकिन "विद्यमान" दर्शन, अर्थात हेगेलीय में उस यथार्थ के सभी दोष हैं, जिसका उन्मूलन जाना चाहिए। इसलिए, "जब तक स्वयं दर्शन उन्मूलन नहीं किया जाता, तब तक दर्शन को यथा नहीं बदला जा सकता।"** मार्क्स और एंगेल्स ने में पूर्ववर्ती दर्शन का उन्मूलन किया। इस उन्मूल अर्थ मात्र अस्वीकृति नहीं था, बल्कि इसका अर्थ ऐसी क्रांति था, जिसके परिणामस्वरूप संपूर्ण क्ला दर्शन, सर्वप्रथम हेगेल और फ़ायरबाख की विरा आधार पर घातक "निबेलुंगों की तलवार", भौति द्वंद्वात्मक पद्धति की रचना की गयी। इस पद्धति ने कम्युनिज़्म के सिद्धांत में उत्कृष्ट अभिव्यक्ति जो सर्वहारा का सच्चा संघर्ष-तारा, मानवजाति के संघर्ष और मानवोचित समाज के निर्माण में एक अस्त्र बन गया है।

मार्क्स की भविष्यवाणी के अनुसार २०वीं स सर्वहारा उत्पीड़ित, निर्धन वर्ग के रूप में अपना कर रहा है और मार्क्सवादी दर्शन को यथार्थ में कर रहा है।

---

* का० मार्क्स, 'हेगेल के विधि-दर्शन की का एक प्रयास'।

** वही।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

* * *

लेकिन आइए हम युवा मार्क्स की ओर लौट चलें और वर्लिन विश्वविद्यालय से पास होने के समय तक उनके आत्मिक विकास का सार प्रस्तुत करें।

युवा मार्क्स के डाक्टर की डिग्री संबंधी शोध-प्रबंध से उनकी अनीश्वरवादी धारणा स्पष्ट हो जाती है। सुसंगत अनीश्वरवाद, जैसा कि हम जानते हैं, भाववाद से लेशमात्र मेल नहीं खाता। यह अनिवार्यतः भौतिकवाद की ओर लाता है। हालांकि अपने शोध-प्रबंध में मार्क्स ने अभी भी भाववादी दर्शन से अपना नाता नहीं तोड़ा है, फिर भी उनका ध्यान यूनानी दर्शन के भौतिकवाद और प्रवुद्ध मानवतावाद की ओर मोड़ लेने लगा है।

यहां यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि मार्क्स अपने शोध-प्रबंध के प्रकाशन की तैयारी कर रहे थे और सेंसरशिप की वजह से अनेक प्रश्नों पर अपने को खुल कर नहीं व्यक्त कर सके।

अपने आत्मिक विकास में मार्क्स तरुण हेगेलवादियों से बहुत आगे बढ़ गये थे। हालांकि वह अभी भी एक अज्ञात युवा विद्यार्थी थे और उन्होंने अपनी एक भी सैद्धांतिक कृति प्रकाशित नहीं की थी, फिर भी तरुण हेगेलवादी आंदोलन की प्रमुख हस्तियों ने भी उनकी कुशाग्र बुद्धि का लोहा माना।

इस संबंध में मोजेस हेस्स – भावी "सच्चा समाजवादी" – का साक्ष्य विशेष रूप से दिलचस्प है। १८४१ तक हेस्स एक सुप्रसिद्ध प्रचारक और दार्शनिक बन चुके

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

थे। उस समय तक उन्होंने हेगेलीय दर्शन को फ्रां… समाजवाद से सूत्रबद्ध करने के लिए दृढ़ प्रयास … था, भले ही यह पूर्णतया सुसंगत नहीं था, और अ… अर्ध-रहस्यवादी रूप में, ईसामसीह के आगमन … क्रांति की घोषणा की थी। फिर भी, जहां तक दा… विकास का संबंध है, मोजेस हेस्स ने हाल ही में … बने कार्ल मार्क्स को अपने से अत्यधिक श्रेष्ठ माना … असाधारण दूरदर्शिता के साथ उनके लिए एक … भविष्य की भविष्यवाणी की।

अपने मित्र औयेरबाख़ को २ सितम्बर, १८… एक पत्र में वह लिखते हैं: "तुम्हें यहां एक व्यक्ति… परिचित होकर ख़ुशी होगी, जो अब हमारी मित्र-… में शामिल है, हालांकि वह बोन में रहता है, जहां … शीघ्र ही पढ़ाने लगेगा… यह एक ऐसा व्यक्ति… जिसने इस तथ्य के बावजूद कि मैं भी उसी क्षे… काम कर रहा हूं, मुझ पर बड़ा प्रभाव डाला। … में, तुम्हें महानतम, संभवत: वर्तमान समय के एक… **सच्चे दार्शनिक** से परिचय करने के लिए तैयारी … चाहिए, जो लोगों के सामने (प्रकाशित रूप में … मंच पर) उपस्थित होते ही तुरंत सारे जर्मनी का … अपनी ओर आकर्षित कर लेगा। अपनी प्रवृत्ति, … दार्शनिक विद्वत्ता में वह न केवल **स्ट्रॉस** से, बल्कि फ़ा… से भी श्रेष्ठ है और फ़ायरबाख़ से श्रेष्ठ होना बहु… रखता है! यदि तर्कशास्त्र पर उसके व्याख्यान के … मैं बोन में मौजूद रहा, तो मैं उसका सबसे …

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

श्रोता हूंगा। मैंने हमेशा चाहा है कि ऐसा ही व्यक्ति दर्शन में मेरा शिक्षक हो। अब मैं महसूस करता हूं कि वास्तविक दर्शन में मैं कितना अनाड़ी हूं! लेकिन धैर्य रखो! मैं अभी भी कुछ और सीखूंगा।

"डा० मार्क्स – मेरे आराध्य व्यक्ति का यही नाम है – अभी बिल्कुल नौजवान (अधिक से अधिक २४ साल के) हैं। वह मध्ययुगीन धर्म और राजनीति को अंतिम आघात पहुंचायेंगे। उनमें तीक्ष्णतम वाग्विदग्धता और गहनतम दार्शनिक गंभीरता का पूर्ण संगम हुआ है। कल्पना कीजिए कि रूसो, वोल्तेयर, होल्बाख, लेसिंग, हाइने और हेगेल एक व्यक्ति में संयुक्त हो गये हैं; मिल-जुल नहीं गये हैं, संयुक्त हुए हैं – और यह व्यक्ति डा० मार्क्स ही हैं।"

संभवतः हेस्स युवा मार्क्स की रचनाओं से परिचित थे, जो अब विद्यमान नहीं हैं, अथवा शायद उनका विचार उनके साथ वार्तालाप पर आधारित था, लेकिन उनकी भविष्यवाणी बिल्कुल सही निकली। मार्क्स एक क्रांतिकारी दर्शन के सृजन की तैयारी कर रहे थे। सैद्धांतिक चिंतन की प्रतिभा उनमें तेज़ी से विकसित और प्रकटित हो रही थी।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

६

"विद्यमान अवस्थाओं की निर्मम आलोच

जनता में साहस का
करने के लिए आवश्यक है कि
अपनी स्थिति की वीभत्सता
दहल उठे।

कार्ल मा

पी-एच० डी० की चिर-प्रतीक्षित डिग्री प्राप्त क
बाद मार्क्स १८४१ के वसंत में अपने जन्म-नगर
और वहां से बोन गये, जहां आने के लिए ब्रूनो
उन्हें लंबे अर्से से बुलावे पर बुलावा भेज रहे थे।

त्रियेर में मार्क्स का अपने रिश्तेदारों और मा
संबंध टूट गया। उनकी माता ने, जो अपने पु
फ़िज़ूलखर्च और असफल मानती थीं, उन्हें उनके
की पैतृक संपत्ति में हिस्सा देने से इन्कार कर
मार्क्स की माता और वेस्टफ़ालेन परिवार के बी
झगड़ा खड़ा हो गया। इससे जेनी बड़ी मुसीबत
गयी। मार्क्स को यह जान कर घोर क्लेश पहुं

---

* का० मार्क्स, 'हेगेल के विधि-दर्शन की
का एक प्रयास'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

चूंकि उनके पास परिवार के समर्थन के लिए कोई साधन नहीं है, इसलिए वह जेनी के साथ अपना भाग्य नहीं जोड़ सकते।

इन भावुकतापूर्ण घटनाओं के बावजूद, जो जेनी के साथ मार्क्स के परिणय-सूत्र में बंधने तक चलती रहीं, वह शक्ति, ओज और उत्साह से भरे हुए थे। वह अपनी प्रतिभा और ज्ञान का उपयुक्त प्रयोग करने के लिए अत्यंत उत्कंठित थे और राजनीतिक जीवन में सक्रिय भूमिका अदा करना चाहते थे।

मार्क्स २३ साल के हो गये थे, लेकिन पी-एच० डी० की श्रद्धास्पद डिग्री ने इस प्रफुल्ल नौजवान को, जो भाग्य के उतार-चढ़ाव पर सदा मज़ाक़ और चुहलबाज़ी करने को तैयार रहता था, कोई "प्रतिष्ठा" प्रदान करती नहीं प्रतीत हुई।

पहले की भांति मार्क्स उल्लास-भरी मित्र-मंडली के प्राण थे, एक ऐसे व्यक्ति, जिनसे कोई अपना दुःखड़ा सुना कर मन हल्का कर सकता था और मर्मभेदी व्यंग्य-बाणों की, (जो हमेशा अहानिकर नहीं होते थे) "निर्मम बौछार" से आहत होने का खतरा मोल लेते और जी भर कर हंस सकता था। नैतिक भ्रष्टता, चाटुकारिता और नीचता की लेशमात्र अभिव्यक्ति पर भी उनका व्यंग्य निर्मम बन जाता था। और तब तो वह अपने "अच्छे से अच्छे दोस्त" को भी नहीं बख़्शते थे।

मार्क्स ने स्वतंत्र कार्यकलापों की विभिन्न योजनाएं बनायीं। १८४१ के वसंत में उन्होंने ब्रूनो बावेर के साथ *Archiv des Atheismus* नामक उग्र पत्रिका निकालने

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

का विचार पेश किया। उदारतावादी बुर्जुआ वर्ग एक नेता आर्नोल्ड रूगे ने, जो उस समय वामपंथी *Deutsche Jahrbücher* निकाल रहे थे, इस संबंध सितम्बर, १८४१ में लिखा: "मेरा अब बुरा हाल क्योंकि ब० बावेर, कार्ल मार्क्स, क्रिस्तियांसेन फ़ायरबाख क्रांतिकारिता की घोषणा करने जा रहे हैं कर चुके हैं और अनीश्वरवाद तथा आत्मा की का ध्वज फहरा दिया है। ईश्वर, धर्म और पदच्युत कर दिये जायेंगे और लोगों को ईश्वर किया जायेगा। एक अनीश्वरवादी पत्रिका निकलने है और यदि पुलिस स्थिति को चरमावस्था तक देती है, तो होहल्ला मचेगा, जिससे मगर बचा जा सकता।"*

लेकिन यह योजना कार्यान्वित नहीं हो पायी। में प्रोफ़ेसरी प्राप्त करने की मार्क्स की आशाएं भी नहीं हो सकीं, क्योंकि प्रतिक्रियावादी आलोचना के के कारण ब्रूनो बावेर को उनके अध्यापन-पद से दिया गया और यह साफ़ हो गया कि वहां मार्क्स के जगह पाने की संभावना और भी क्षीण हो गयी

प्रत्यक्षत: मार्क्स इस सबसे खास विचलित नहीं अपनी पोथियों में मग्न रहने वाले विद्वान की चलने वाला जीवन उन्हें पसंद नहीं था। मार्क्स ने

---

* ओ० कोर्नू, 'कार्ल मार्क्स और फ़्रेडरिक जीवन और कार्य'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

फ़ायरबाख़ के उदाहरण से कोई प्रेरणा नहीं ली, जो अपनी प्रिय पत्नी के साथ ग्रामीणक्षेत्र की एकांतता में जा कर बस गये थे और अपने को प्रकृति के शांतिपूर्ण चिंतन-मनन तथा गीतात्मक दर्शनबाज़ी में लगाने के लिए ब्रुकबेर्ग दुर्ग की मोटी दीवारों के पीछे बंद होकर शेष दुनिया से नाता तोड़ लिया था, हालांकि वह शीघ्र ही कुछ समय के लिए फ़ायरबाख़ के "नृवैज्ञानिक" भौतिकवाद के एक उत्कट समर्थक बन गये थे।

मार्क्स व्यवहार में दर्शन और यथार्थ की एकता को बढ़ाने वाले कार्यकलापों की चेष्टा करते थे। सैद्धांतिक ज्ञान को "स्वयं जीवन में सक्रिय भागीदारी" से जोड़ने की यह चेष्टा पेशे के चुनाव पर उनके स्कूली निबंध में भी प्रतिबिम्बित हुई और विश्वविद्यालय में अध्ययन के वर्षों के साथ निरंतर बढ़ती गयी। इसे मार्क्स के राजनीतिक दृष्टिकोण के विकास, उनके बढ़ते और गहन होते इस विश्वास से बल मिला कि विद्यमान सामाजिक यथार्थ अतर्कसंगत, कुत्सित है और इसे क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है।

आम तौर से लोग यह सोचते हैं कि अपने विश्वविद्यालय वर्षों में मार्क्स राजनीति से दूर रहे तथा "शुद्ध" सिद्धांत के अध्ययन में दिन-रात जुटे रहे। केवल विश्वविद्यालय से पास होने के बाद जाकर ही वह अचानक जीवंत राजनीतिक प्रश्नों की ओर मुड़े। लेकिन स्पष्टतया बात ऐसी नहीं थी। हम पहले ही देख चुके हैं कि १८३७ में लिखी गयीं उनकी अनेक कविताएं कूपमंडूक दुनिया से

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

उनके निर्णायक संबंध-विच्छेद को प्रतिबिम्बित करती
इसी अवधि में उन्होंने एडुआर्ड हान्स के व्याख्यानों
बड़े मनोयोग से सुना, जिन्होंने खुलेआम सेंट-सीमोन
विचारों का प्रचार किया और श्रम की मुक्ति की
की। मार्क्स ने शीघ्र ही हान्स से व्यक्तिगत सं
क़ायम किया। १८३७ में ही मार्क्स ने आडोल्फ़ रू
को अपना एक बहुत घनिष्ठ मित्र बताया। आ
रूटेनबेर्ग एक बार तरुणों के एक संगठन Burschens
के सदस्य के रूप में गिरफ़्तार किये जा चुके थे
"दुर्भावनापूर्ण लेखों" के लेखक के रूप में पुलि
निगरानी में थे।

ब्रूनो बावेर के साथ मार्क्स की बढ़ती आत्मी
का भी कारण यह था कि ब्रूनो बावेर इतिहास-क्र
प्रभावित करने में समर्थ "कार्य के दर्शन" का प्र
करने का प्रयास कर रहे थे। मार्क्स ने बावेर और फ़ा
द्वारा की जा रही धर्म की आलोचना को उस समय
नीतिक आलोचना का एकमात्र संभव रूप माना।

पर जिस सैद्धांतिक आलोचना से बावेर संतुष्ट
वह मार्क्स को अपने अंतिम विद्यार्थी वर्षों में भी
अपर्याप्त प्रतीत होती थी। प्रत्यक्षतया, दोनों के बी
अंतर ३१ मार्च, १८४१ को मार्क्स को लिखे बावे
पत्र के दिलचस्प वाक्यों को स्पष्ट कर देता है:
को एक व्यावहारिक पेशे में लगाना तुम्हारे लिए प
होगा। सिद्धांत ही अब सबसे शक्तिशाली व्य
और हम अभी भी यह भविष्यवाणी नहीं कर

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कि यह किस अर्थ में व्यावहारिक बनेगा।"

इस बीच में जर्मनी में ऐतिहासिक घटनाएं इस ढंग से विकसित हो रही थीं कि राजनीतिक समस्याएं सिद्धांत और स्वयं जीवन में प्रधानता प्राप्त करने लगी थीं।

१८४० की गर्मी में प्रशा की गद्दी पर एक नया राजा – फ़्रेडरिक विल्हेल्म चतुर्थ – बैठा, जिससे सभी लोग उदारतावादी सुधारों और एक संविधान की आशा करते थे। अच्छी-अच्छी बातें बनाने और उदारहृदयता का दिखावा करने के अपने शौक़ से उसने जनता के मन में स्वतंत्रता की एक मरीचिका खड़ी कर दी। लेकिन करनी में राजतंत्र और ईसाई चर्च की सत्ता को मज़बूत बनाने में दिलचस्पी लेते हुए राजा ने "प्रतिक्रियावादी रोमांसवाद" की नीति का अनुसरण किया।

मार्क्स ने, जैसा कि उन्होंने स्वयं बाद में लिखा, शीघ्र ही नये सम्राट के मूल्य और उसकी भूमिका को समझ लिया: "कूपमंडूकों के इस राजा" ने अपने राज्याभिषेक पर "घोषणा की कि उसका मन-मस्तिष्क ही भावी मूलभूत क़ानून होगा"।* उसने बड़े सनकी ढंग से प्रशा को "अपने घर का राज" और जर्मन लोगों को ऐसे बच्चे कहा, जिन्हें पिटाई और मिठाई से अक़्ल सिखायी जानी चाहिए।

---

* का० मार्क्स, *Deutsch-Französische Jahrbücher* में पत्र, १८४३।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

"पिटाई" मुख्यतया साहसी तरुण हेगेलवादियों लिए सुरक्षित कर दी गयी, जिन्होंने धर्म के विरुद्ध चलाने का बीड़ा उठाया था। प्रमुख तरुण हेगेलवा को विश्वविद्यालयों से निकाल दिया गया। अर्ध मस्तिष्क, भाववादी दार्शनिक शेल्लिंग को बर्लिन गया, ताकि हेगेलवाद का सैद्धांतिक खंडन किया सके।

लेकिन जिस तेज़ी से मरीचिका खड़ी की गयी उतनी ही तेज़ी से वह ग़ायब भी हो गयी। तरुण हे दियों ने, जो अब तक प्रशा के राजा के संयत वि रहे थे, स्वयं तेज़ी से वाम की ओर बढ़ना शुरू क्योंकि अब उन्हें इस बात की कोई आशा नहीं रह थी कि राजतंत्र कभी वाम की ओर जायेगा।

देश में उदारतावादी जनवादी आंदोलन दिन-प्रति मज़बूत होता गया और जनता की राजनीतिक जागृत होने लगी। जैसे-जैसे जर्मनी में उद्योग वि होता गया और राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग मज़बूत होता वैसे-वैसे राजतंत्र की पुरातन सामंती आकांक्षाएं का बनती गयीं।

इस समय मार्क्स एक नये प्रकार के कार्य की कर रहे थे। १८४१ के अंत में उन्होंने लिखा कि मूलतया भिन्न प्रकृति के राजनीतिक और दार्शनिक अब मुझे" यूनानी दर्शन के अध्ययन के क्षेत्र में योजनाओं के कार्यान्वयन के बारे में "सोचने नहीं देते"।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ये कार्यकलाप क्या थे? सबसे पहले, मार्क्स धर्म के साथ निपटारा कर लेने के लिए चिंतित थे और ईसाई कला पर एक पुस्तक लिख रहे थे। लेकिन उनकी राजनीतिक आकांक्षाएं राज्य व्यवस्था की हेगेलीय अवधारणा की आलोचना को समर्पित एक कृति में सुनिश्चित ढंग से अभिव्यक्त हुई, जिसे मार्क्स ने इस समय में लिखना शुरू किया था।

जहां स्वयं हेगेल और तरुण हेगेलवादियों के लिए भी आदर्श संवैधानिक राजतंत्र था, वहां मार्क्स ने, उनके ही शब्दों में, इस "पाजी" के विरुद्ध युद्ध घोषित किया, जो "शुरू से अंत तक स्वयं अपना खंडन और उन्मूलन करता है"*।

मार्च, १८४२ के प्रारंभ में दिया गया यह वक्तव्य मार्क्स की राजनीतिक उग्रता का प्रमाण है। उन्होंने समाधान विद्यमान राजतंत्रीय व्यवस्था के उदारीकरण में नहीं, अपितु इसके उन्मूलन में देखा। मार्क्स राजनेताओं के बारे में, इन "दंभी बदमाशों," "मंजे हुए बांके-छैलों" के बारे में घृणापूर्वक लिखते हैं, जिनकी सरकारी नीति "इंसानों को हैवान बनाने"** के सिद्धांत पर आधारित है।

मार्क्स ने प्रशियाई राजतंत्र के साथ अपनी पहली असली लड़ाई प्रेस की स्वतंत्रता पर अपने लेखों से शुरू

---

* का० मार्क्स, आ० रूगे को, १८४२।
** वही।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

की ('नवीनतम प्रशियाई सेंसरशिप आदेश पर टिप्पणि
और 'प्रेस की स्वतंत्रता पर वाद-विवाद')। इस
पर मार्क्स का ध्यान इस वजह से आकर्षित हुआ कि
की स्वतंत्रता सामान्यतया राजनीतिक स्वतंत्रता की
है और प्रेस की स्वतंत्रता के बिना "सभी अन्य स्वतं
मरीचिका बन जाती हैं"*।

१८४१ के अंत में एक नया सेंसरशिप आदेश प्र
किया गया। इस दस्तावेज़ ने राजा की उन नीति
मिथ्या उदारतावादी ढोंग को सुस्पष्ट कर दिया
कथनी में प्रगतिशील होने का दम भरती थीं,
करनी में प्रतिक्रियावादी थीं।

जबकि इस आदेश के प्रकाशन पर बुर्जुआ उ
वादियों के शिविर में जशन मनाया जा रहा था,
ने इस पर अच्छी-अच्छी बातों का जो आवरण
गया था, उसे फाड़ दिया और निर्ममतापूर्वक
सत्ता" द्वारा दी गयी स्वतंत्रताओं की "दयनीय द
को बेनक़ाब कर दिया।

मार्क्स ने बुर्जुआ यथार्थ की अपनी आलोच
सिद्धांतों को निम्नलिखित रूप में सूत्रबद्ध किया: "
सभी विद्यमान अवस्थाओं की निर्मम आलोचना
कर रहा हूं। यह आलोचना दो अर्थों में निर्मम
चाहिए: यह स्वयं अपने ही निष्कर्षों से भयभीत

---

* का० मार्क्स, 'प्रेस की स्वतंत्रता पर वाद-वि
१८४२।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

होती और सत्ताधारियों से टकराव से बचने की कोशिश नहीं करती।"*

मार्क्स के इन वक्तव्यों से केवल उनका राजनीतिक लक्षण ही नहीं, नैतिक लक्षण भी स्पष्ट हो जाता है। ये हम उन मापदंडों का अंदाज़ा लगाने में समर्थ बनाते हैं, जिन्हें युवा मार्क्स ने अपने अनुसंधान कार्य और सैद्धांतिक अध्ययन में प्रयोग किया।

मार्क्स सत्य की गहन और सुसंगत अभिव्यक्ति, वस्तुओं के तर्क के साहसी और दृढ़ अनुसरण, ऐसे "स्वतंत्र विचार" के लिए प्रयास कर रहे थे, "जो **प्रत्येक वस्तु को उसकी मूलभूत प्रकृति** के रूप में लेता है"**। सत्यान्वेषी को किसी भी बाह्य विचारों से विचलित नहीं होना चाहिए। क्या दायें-बायें देखे बिना सत्य पर अर्जुन-दृष्टि रखना सत्यान्वेषी का पहला कर्तव्य नहीं है? यदि मैं इसके लिए विवश हूं कि मामले के सारतत्व को निर्धारित रूप में अभिव्यक्त करना न भूलूं, तो क्या मैं मामले के सारतत्व को ही नहीं भूल जाऊंगा?" ***

वैज्ञानिक अनुसंधान में केवल परिणाम ही नहीं,

---

* का० मार्क्स, *Deutsch-Französische Jahrbücher* पत्र, १८४३।

** का० मार्क्स, 'नवीनतम प्रशियाई सेंसरशिप आदेश पर टिप्पणियां', १८४२।

*** [illegible]

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

बल्कि वह मार्ग भी महत्वपूर्ण है, जिसके ज़रिये यह परि
प्राप्त होता है, और इसमें विद्वान के आंतरिक दृष्टि
को भी ध्यान में रखा जाता है: जिस साध्य के
अनुचित साधनों की आवश्यकता होती है, वह
साध्य नहीं है। विज्ञान में कायरता, अधकचरापन वि
के साथ गद्दारी है।

प्रेस की स्वतंत्रता पर वाद-विवाद संबंधी लेख
मार्क्स इस विचार की ओर और भी सुनिश्चित रू
लौटते हैं।

विज्ञान आम लेखन की तरह एक "पेशा" नहीं
इसे पेशे के स्तर पर नहीं उतरना चाहिए। "ले
लेखक को जीने और लिखने के लिए कमाना चा
लेकिन उसे कमाने के लिए कदापि नहीं जीना और लि
चाहिए। जब बेरांजे गाते हैं:

मैं तो जीता हूं गीत लिखने को,
और अगर आप ने निकाल दिया,
तब मैं लिखूंगा गीत जीने को,

तो इस चुनौती में यह व्यंग्यात्मक स्वीकृति
जब काव्य कवि के लिए एक साधन बन जाता है,
अपने वास्तविक क्षेत्र को त्याग देता है।

"लेखक अपने कार्य को एक **साधन** बिल्कुल
मानता। यह तो निज में एक **साध्य** है। यह स्वयं
लिए और औरों के लिए भी इस हद तक साधन

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

है कि आवश्यकता पड़ने पर वह इसके अस्तित्व पर अपने अस्तित्व की आहुति दे देता है।"

इन शब्दों में मार्क्स ने अपना सृजनात्मक विश्वास व्यक्त किया। उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन द्वारा यह पुष्ट कर दिया कि उन्होंने कभी भी "जीने के लिए गीतों की रचना नहीं की", बल्कि वैज्ञानिक सत्य की खोज के लिए अपना सर्वस्व जीवन अर्पित कर दिया।

मार्क्स ने अपने को नये राजा के आदेशों के मिथ्या उदारतावाद का मात्र व्यंग्यपूर्वक मज़ाक़ उड़ाने तक ही सीमित नहीं रखा। उन्होंने उस प्रणाली के सामाजिक सारतत्व को भी बेनक़ाब किया, जिसमें लोगों को उनके मात्र "सोचने के ढंग के लिए" सज़ा देने वाले क़ानून हो सकते हैं। वह दिखाते हैं कि ये क़ानून केवल जनविरोधी शासन में, एक ऐसे समाज में ही संभव हो सकते हैं, "जिसमें एक अवयव अपने को राजकीय बुद्धि और राजकीय नैतिकता का एकमात्र, अनन्य मालिक मान लेता है, एक ऐसी सरकार में ही संभव हो सकते हैं, जो सिद्धांत रूप में जनता की विरोधी है"*।

केवल "एक भ्रष्ट राजनीतिक दांवपेच चलाने वाले गुट का बुरा अंत:करण" ही प्रतिशोध-क़ानूनों, लोगों के मात्र उनके "सोचने के ढंग" के लिए सज़ा देने वाले क़ानूनों का आविष्कार कर सकता है। "लोगों को मात्र

* कार्ल मार्क्स, 'नवीनतम प्रशियाई सेंसरशिप आदेश पर टिप्पणियाँ'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

उनके सोचने के ढंग के लिए सज़ा देने वाले क़ानून सि
विहीन सोचने के ढंग पर, राज्य के अनैतिक,
भौतिकवादी दृष्टिकोण पर आधारित होते हैं"।*

मार्क्स इस क्रांतिकारी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं
जन-विरोधी क़ानून जारी करके "राजनीतिक दां
चलाने वाला गुट" अपने को **क़ानून की परिधि से**
रख रहा है, कि उसकी कार्रवाइयां, जो राज्य को म
बनाने के उद्देश्य से की जाती हैं, वस्तुतः राज्य-वि
स्वरूप की हैं।

मार्क्स यहां राज्य की आलोचना अमूर्त दा
दृष्टिकोण से कर रहे हैं। वह अभी केवल इसके
ऐतिहासिक सारतत्व की समझदारी के समीपतर
शुरू ही कर रहे हैं। इस समझदारी की दिशा में
पग राज्य के वस्तुगत स्वरूप पर, जो अलग व्यक्ति
निर्भर नहीं है, उनके ध्यान का संकेन्द्रण था।

राज्याधिकारियों की कार्रवाइयों का असल का
जैसा कि मार्क्स दर्शाते हैं, इस या उस व्यक्ति की स्वा
में नहीं निहित होता है, बल्कि यह तो "सिर के
खड़ी दुनिया" की एक अभिव्यक्ति है।

यदि सरकार जन-विरोधी होती है, तो इसकी
कार्रवाइयां, यहां तक कि अच्छी कार्रवाइयां भी
कार्रवाइयों में बदल जाती हैं। क़ानून की पुष्टि कर

---

* का० मार्क्स, 'नवीनतम प्रशियाई सेंसरशिप
पर टिप्पणियां'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

प्रयास करते हुए यह क़ानून के उल्लंघन का सहारा लेनें के लिए विवश हो जाती है। यह मनमानेपन को ही क़ानून का दर्जा दे देती है। प्रेस को आलोचना के अधिकार से वंचित करके यह सरकारी अधिकारियों पर आलोचना का कार्य थोप देती है।

"अलग व्यक्तियों" की रक्षा करने के नाम पर यह व्यक्तियों को अपमानित करती है, उन्हें अपने स्वतंत्र विचार के अधिकार से भी वंचित कर देती है। राष्ट्रीय भावना का उत्थान करने के प्रयास के नाम पर ऐसी सरकार स्वयं "राष्ट्र को हेय बनाने वाले विचार पर आधारित होती है"।

सरकारी आदेश "अधिकारियों में असीमित विश्वास" की मांग करता है "और ग़ैर-अधिकारियों में असीमित अविश्वास पर आधारित होता है"।

प्रशियाई अधिकारी "संरक्षक" की भूमिका अदा करता है, उसे "मस्तिष्कों के नियंत्रण" का काम सौंपा गया है। इस चीज़ के बारे में लेशमात्र भी संदेह नहीं किया जाता कि उसके पास सभी प्रकार की वैज्ञानिक योग्यता पर निर्णय देने की वैज्ञानिक योग्यता है या नहीं।*

मार्क्स इस नौकरशाही सिद्धांत की आंतरिक विडंबना को बेनक़ाब करते हैं। चिंतनशील लोगों को जांचने के

---

* कां० मार्क्स, 'नवीनतम प्रशियाई सेंसरशिप आदेश पर टिप्पणियां'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

लिए अधिकारी को सभी क्षेत्रों में उनसे श्रेष्ठ होना चाहि
संभवत:, प्रशा में "सरकार को ज्ञात सार्विक मेधा
की भीड़" वास्तव में रहती है? लेकिन यदि यही
है तो ये "प्रकांड मस्तिष्क" लेखकों और वैज्ञा
के रूप में आगे क्यों नहीं आते? अपनी संख्या में
अधिक और अपने वैज्ञानिक ज्ञान के कारण शक्ति
ये अधिकारी सामाजिक मंच पर क्यों नहीं चढ़ जाते
अपने भार से क़लमघिस्सुओं का गला क्यों
घोंटे देते?

लेकिन उन अधिकारियों की प्रतिभा कितनी
होनी चाहिए, जो विचार के क्षेत्र में शांति के रक्षक
चुनते और स्वयं ही उन पर निगरानी रखते हैं।
की इस **नौकरशाही** में हम जितना ही ऊपर की
चढ़ते हैं, उतने ही असाधारण मस्तिष्कों से हमारी मु
होती है।"*

वास्तव में, नौकरशाही, पुलिस राज्य में सेंस
पर सेंसरशिप लगी होती है और हरेक अधिकारी
मनमानापन उसके ऊपर बैठे अधिकारी के मन
से प्रतिबंधित होता है। लेकिन यह अनिवार्य है कि
व्यवस्था में "तीसरी या ९९वीं मंज़िल में क़ानू
उल्लंघन शुरू होता है"**। नौकरशाही राज्य इ

* का० मार्क्स, 'नवीनतम प्रशियाई सेंसरशिप
पर टिप्पणियां'।

** वही।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

को इतना ऊंचा रखने की कोशिश करता है कि यह आंखों से ओझल रहता है।

यह विश्लेषण मार्क्स को इस स्वाभाविक निष्कर्ष पर पहुंचा देता है कि "**सेंसरशिप का मूलभूत इलाज इसका उन्मूलन** होगा, क्योंकि स्वयं इसका संस्थापन एक बुरा संस्थापन है..."*।

मार्क्स यहां बुर्जुआ राज्य की संपूर्ण "नौकरशाही" मशीन को नष्ट करने की आवश्यकता का निष्कर्ष अभी सूत्रबद्ध नहीं करते, लेकिन वह इस विचार के समीप आ जाते हैं।

मार्क्स ने अपने प्रौढ़ वर्षों में सेंसरशिप आदेश पर लेख को बहुत मूल्यवान माना, जैसा कि यह इस बात से स्पष्ट है कि उन्होंने इसे अपनी रचनाओं के उस संग्रह में प्रारंभिक लेख का स्थान दिया, जो १८५१ में प्रकाशित किया जाने लगा (सरकारी दबाव के कारण इस संस्करण को पहले खंड के प्रकाशन के बाद बंद कर दिया गया)।

निस्संदेह, यह लेख ऐसी विस्फोटक शक्ति से भरा था कि इसे जर्मनी में प्रकाशित किये जाने का प्रश्न ही नहीं उठता था। जैसा कि मार्क्स ने पहले ही देख लिया था, लेख पर प्रतिबंध लगा करके सेंसरशिप ने इसमें अपने बारे में दिये गये वर्णन की सत्यता को पुष्ट करने में जरा भी समय नष्ट नहीं किया। यह लेख पहली बार १८४३ में स्विट्जरलैंड में प्रकाशित हुआ।

* का० मार्क्स, 'नवीनतम प्रशियाई सेंसरशिप आदेश पर टिप्पणियां'।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

लेकिन १८४२ के वसंत में मार्क्स ने *Rheini Zeitung* ('राइनी समाचारपत्र') में राइन प्रां असेम्बली में प्रेस की स्वतंत्रता पर वाद-विवादों के में उपर्युक्त लेख को प्रकाशित किया, जहां उन्होंने समस्या पर एक भिन्न दृष्टिकोण से विचार किया।

मार्क्स का नया रुख इस बात में था कि प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिनिधियों के विभिन्न और उनकी सामाजिक तथा वर्ग स्थिति के बीच संबंध की ओर इंगित किया। यह आगे का एक म क़दम था। प्रेस की स्वतंत्रता पर बहस में साम श्रेणियों के हित इतने परस्पर-विरोधी ढंग से हैं कि यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि "सामान्य कोई स्वतंत्रता नहीं है, हर श्रेणी "अपनी" स की रक्षा कर रही है।

मार्क्स दर्शाते हैं कि शहरी टुटपुंजिया बुर्जुआ और कृषक वर्ग ने भी प्रेस की स्वतंत्रता के लिए मांगों की सीमितता को प्रदर्शित कर दिया है। प्रेस की बुर्जुआ स्वतंत्रता को, उस रूप में भी में वह उस समय फ्रांस में विद्यमान थी, पर्याप्त स्वतंत्र नहीं मानते थे। हालांकि फ़ांसीसी प्रेस " सेंसरशिप के अधीन नहीं है... यह बड़ी नक़द प्रति की शक्ल में भौतिक सेंसरशिप के अधीन है", व्यापारिक सट्टेबाज़ियों की परिधि में खींचा जाता

---

* का० मार्क्स, 'प्रेस की स्वतंत्रता पर वाद-वि

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

यहां हम स्पष्ट रूप से एक नये विचार यानी "आत्मिक सेंसरशिप" की "भौतिक सेंसरशिप" पर, बुर्जुआ समाज के व्यापारिक और मुद्रा संबंधों पर निर्भरता के विचार का आविर्भाव देखते हैं। मार्क्स की हर नयी कृति में हम इस विचार का विकास पायेंगे।

मार्क्स के इस पहले अखबारी लेख से ही यह साफ़-साफ़ प्रकट है कि वे बुर्जुआ स्वतंत्रताएं, जो उदारतावादी जर्मन बुद्धिजीवी वर्ग के लिए आदर्श थीं, मार्क्स के लिए कदापि आदर्श नहीं थीं। उन्होंने शुरू से ही सबसे उग्र बुर्जुआ उदारतावादियों से अधिक गहन और सुसंगत ढंग से जर्मन यथार्थ की आलोचना करते हुए एक क्रांतिकारी जनवादी के रूप में अपना राजनीतिक कार्यकलाप आरंभ किया।

मार्क्स प्रेस की स्वतंत्रता पर वाद-विवाद पर अपने लेख का समापन हेरोडोटस के इस उद्धरण से करते हैं कि एक बार स्वतंत्रता का आस्वाद चखने के बाद इसके लिए "न केवल भालों से, बल्कि कुल्हाड़ियों से भी लड़ना चाहिए"।

Rheinische Zeitung में मार्क्स की देदीप्यमान पहली शुरुआत ने एक वास्तविक सनसनी पैदा कर दी। उनके प्रतिमित्रों को, जो एक लंबे अर्से से मार्क्स से उनकी असाधारण प्रतिभा के ठोस प्रमाण की आशा कर रहे थे, बड़ा संतोष हुआ। आ० रूगे ने लिखा कि इससे पहले प्रेस की स्वतंत्रता के बारे में और इसकी रक्षा में इतनी गहन और सुतर्कित चीज़ कभी नहीं लिखी गयी।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

Rheinische Zeitung के संपादकीय कार्यालय मार्क्स का प्रभाव, जो पहले भी बहुत अधिक था, बढ़ गया कि वह व्यावहारिक रूप से इसके एक सं बन गये और कुछ समय बाद मुख्य संपादक दिये गये।

अक्तूबर, १८४२ में इस अख़बार ने राइन प्र असेम्बली में इस बार वन की चोरी पर क़ानून पर विवादों के संबंध में एक नयी लेखमाला प्रकाशित

ये लेख मार्क्स की सृजनशील जीवनी में विशेष से उल्लेखनीय हैं। पहली बार वह सिद्धांत के स्त "ठोस भूमि" पर उतरने अर्थात उन भौतिक का अध्ययन करने के लिए विवश हुए, जिन हेगेलीय दार्शनिक प्रणाली ने कोई चिंतन-मनन क़िया था।

इसके बाद मार्क्स का चिंतन एक ऐसी दि अग्रसर हुआ, जो शीघ्र ही उन्हें समाज के वर्ग आर्थिक संरचना के विश्लेषण पर ले गयी। वन की पर वाद-विवाद पर लेख को पढ़ते हुएं हमें पहली "बि की कौंधों" की कल्पना कर सकते हैं, जिन्होंने विचारों के "उषा-काल" की सूचना दी।

आर्थिक जीवन के एक निजी और महत्वहीन वाले प्रश्न – वन की चोरी और आखेट तथा पर क़ानूनों का उल्लंघन – से संबद्ध परिस्थितियों के अध्ययन ने निर्धन जन-साधारण की ग़रीबी और अ हीनता को पूरी तरह प्रकट कर दिया।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मार्क्स ने देखा कि कैसे निर्लज्जतापूर्वक बड़े ज़मींदारों के हित में मूल मानवाधिकारों का उल्लंघन किया जा रहा है, कैसे ज़रा भी सोचे-विचारे बिना लोगों को "काष्ठ-मूर्तियों" पर बलि चढ़ाया जा रहा है, बशर्ते कि वे मूर्तियां निजी स्वामित्व थीं।

उन्हें यह बिल्कुल साफ़ हो गया कि "निजी स्वामित्व" मानव-विरोधी और व्यक्ति-विरोधी है, यह व्यक्ति के विरुद्ध सभी प्रकार के अपराधों को उचित ठहराता है और इंसान को हैवान बना देता है।

जहां प्राकृतिक प्राणि जगत् में कर्मी मधुमक्खियां काम न करने वाली मधुमक्खियों को मार डालती हैं, वहां मानव "प्राणि जगत्" में उल्टे "काम न करने वाली मधुमक्खियां कर्मी मधुमक्खियों को वस्तुतः कड़ी मशक्कत द्वारा मार डालती हैं।"*

संपत्ति संबंधों के सामाजिक अन्याय पर प्रचंड रूप से क्रुद्ध मार्क्स दृढ़तापूर्वक "निर्धन, राजनीतिक और सामाजिक रूप से संपत्तिविहीन जनसाधारण"** के हितों की रक्षा करते हैं।

वह "चालू" वन-मालिकों की कलई खोलते हैं, जो "विद्वानों और जीहुज़ूर शिक्षार्थियों की चाटुकारिता" की सहायता से हर नीच दावे को "अधिकार के शुद्ध

---

* का० मार्क्स, 'वन की चोरी संबंधी क़ानून पर वाद-विवाद', १८४२।

** वही।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

स्वर्ण" में बदल देते हैं, जबकि वन-मालिकों की हुक्म-दार असेम्बली श्रमजीवी लोगों के अधिकारों को भी कम करने के लिए सभी प्रकार की कपटी चालों शरण लेती है।

जब वन-क़ानूनों के उल्लंघकों के हितों का उठता है, तो असेम्बली गिरी हुई लकड़ियों को एक करने, वन-क़ानूनों के उल्लंघन और वन की चोरी बीच अंतर को नज़रंदाज़ कर देती है। लेकिन वन-मालिकों के हितों का प्रश्न उठता है, तो यह अंतर को मान लेती है"।*

निजी हित चालू, स्वार्थी और कायर होता है। यह अधिकारहीनता पर आधारित होता है और पास जो कुछ है, उसे खो देने के खतरे से भयभीत है, इसलिए यह कायर है। विधायक की भूमिका करते हुए निजी हित को केवल उन "दुष्कर्मियों भय होता है, जिनके खिलाफ़ यह क़ानून जारी कर "निर्ममता कायर द्वारा थोपे गये क़ानूनों का एक लक्षण है, क्योंकि कायर मात्र निर्मम हो कर ही शक्ति हो सकता है।"**

वन-मालिकों के औज़ार के रूप में राइन असेम्बली की दयनीय भूमिका को प्रकट करते हुए

---

* का० मार्क्स, 'वन की चोरी संबंधी क़ानून वाद-विवाद'।

** वही।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

समाज में राज्य की भूमिका को एक मूलतया भिन्न दृष्टिकोण से देखे बिना नहीं रह सके। मनुष्य के क़बायली सारतत्व की अभिव्यक्ति के रूप में राज्य की हेगेलीय जड़सूत्र से संबद्ध उनके शेष भ्रम ही जाते रहे।

मार्क्स के शब्दों में, "स्वार्थपरता के तर्क से कुछ भी अधिक भीषण नहीं है!" यह तर्क राज्य की सत्ता को वन-मालिक के एक अनुचर में बदल देता है। "राज्य के सभी अवयव कान, आंख, बांह, पैर बन जाते हैं, जिनके द्वारा वन-मालिक का हित सुनता, देखता, मूल्यांकन करता, रक्षा करता, पकड़ता और दौड़ता है।"*

स्वार्थपरता के "कुतर्क" ऐसे हैं कि वे वस्तु को एक "अनोखा गुण" प्रदान करते हैं। वन-मालिक से चुरायी गयी लकड़ी तुरंत उसे राज्य का मूर्तरूप बना देती है, क्योंकि वह चोर पर एक राजकीय अधिकार प्राप्त कर लेता है। इस तरह, यह प्रकट है कि "वन-मालिक ने चोर का इस्तेमाल स्वयं राज्य को हड़पने के लिए किया है"**। एक लकड़ी के टुकड़े पर अधिकार खो करके वन-मालिक मनुष्य से मनमरज़ी करने का अधिकार प्राप्त कर लेता है, ठीक उसी तरह, जिस तरह शेक्सपियर के 'वेनिस का व्यापारी' में सूदखोर शाइलाक अपने कर्ज़दार

---

* का० मार्क्स, 'वन की चोरी संबंधी क़ानून पर वाद-विवाद', १८४२।

** वही।

Jangamwadi Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

से कर्ज़ न चुका पाने की स्थिति में उसके शरीर के पौंड गोश्त से कर्ज़ चुकाने का अधिकार प्राप्त लेता है।

जैसा कि हम देखते हैं, मार्क्स पुनः सिर के खड़ी दुनिया के विचार पर लौट रहे हैं, एक ऐसा वि जो बाद में श्रम के अन्यसंक्रामण और माल-पूजा के में विकसित किया जाने वाला था। जहां युवा लकड़ी की चोरी पर अपने लेख का समापन इस के साथ करते हैं कि लकड़ी "राइन प्रदेशवासियों" जड़पूजा है, वहां 'पूंजी' में वह दिखाते हैं कि कैसे का "काष्ठ मस्तिष्क" पूंजीवादी संबंधों की संपूर्ण का शासन करता है।

मार्क्स ने माना कि वन की चोरी के बारे में पर उनका काम सुखद नहीं था, कि उन्होंने प्रतिनि के उबाऊ और तुच्छ वाद-विवादों का घृणापूर्वक अ किया, फिर भी उनके इस कार्य ने उनकी दिलच को एक नयी दिशा में मोड़ दिया। वह दरिद्र और अधि विहीन जनसाधारण की स्थिति के एकदम आमने- आ गये, जिसके बारे में अखबारों के संवाददाता रहे थे। उन्होंने "निर्धनता की निर्मम आवाज़" कि से नहीं, किसी तीसरे व्यक्ति से नहीं, बल्कि सीधे मोज़ेल के किसानों से सुनी। मार्क्स इसे अपना नीतिक कर्तव्य" मानते थे कि वह अखबार के पर "जन-वेदना के स्वर मुखरित करें, जिसे दे परिस्थितियां भुलाने नहीं देती'" और "

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

धारण की आवाज़ को ईमानदारी से संप्रेषित करें"।*

बुर्जुआ मार्क्सवादवेत्ताओं को (जब उन्हें मार्क्सवाद के खिलाफ़ कोई और तर्क नहीं मिल पाता) मार्क्स के "शुष्क बुद्धिवाद" के बारे में, इस चीज़ के बारे में लिखने का शौक़ चर्रा उठता है कि मार्क्स के लिए, जैसा कि वे सोचना चाहते हैं, व्यक्ति मात्र एक अमूर्त अवधारणा, एक प्रकार का "आर्थिक मानव" था और वह जन-साधारण की वास्तविक मुसीबतों से कम ही प्रभावित थे।

ऐसे दावे केवल वे लोग ही कर सकते हैं, जो मार्क्स के बारे में मात्र सुनी-सुनाई बातों से जानते हैं। न केवल उत्पीड़ित जनसाधारण की रक्षा में उनके "बुद्धिसंगत तर्कों" की शक्ति का, बल्कि उनकी भावनाओं की शक्ति का, मानव के अपमान, मानवाधिकारों और गरिमा के उल्लंघन की हरेक वास्तविक घटना से उत्पन्न उनके क्लेश और आक्रोश का भी अनुभव करने के लिए मार्क्स की कृतियों 'मोज़ेल के संवाददाता की सफ़ाई' (१८४३ के आरंभ में), '१८४४ की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियां' या 'पूंजी' के पहले खंड को पढ़ लेना ही काफ़ी होगा।

निजी स्वामित्व के संबंधों के यांत्रिक स्पंदन के पीछे मार्क्स ने, उन्हीं के शब्दों में, "मानव हृदय का स्पंदन"**

* का० मार्क्स, 'मोज़ेल के संवाददाता की सफ़ाई', १८४३।

** का० मार्क्स, 'हेगेल के विधि-दर्शन की समीक्षा का प्रयास'।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सुना। ठीक उसी तरह हम मार्क्स की कृतियों में … हृदय का स्पंदन महसूस करते हैं, एक ऐसा हृदय … करुणा से विगलित और क्रोध तथा घृणा से संकुचि… उठता था।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि यदि मार्क्स … मस्तिष्क ने मानव-संस्कृति की संपूर्ण संपदा को आत्म… किया, तो उनका हृदय मानवजाति की सभी मुसी… के प्रति अत्यंत संवेदनशील था। हेनरिख मार्क्स की आ… निर्मूल थीं: उनके पुत्र के हृदय और मस्तिष्क के … पूरा मेल था।

प्रसंगवश, 'मोज़ेल के संवाददाता की सफ़ाई' … जहां मार्क्स "जन-वेदना के स्वर" को मुखरित कर… वह स्पष्टतया बैरिस्टर के रूप में अपने पिता के … की ओर, न्याय की रक्षा में उनकी कार्रवाइयों की … इंगित कर रहे हैं, जब वह अपने जन्म-नगर त्रि… अधिकारियों के मनमाने व्यवहार के उदाहरण … करते हैं।

यदि मार्क्सवाद की जड़ को स्वयं जीवन के … दायी अमृत से नहीं सींचा गया होता, तो यह एक वै… विश्वदृष्टिकोण में नहीं विकसित हो सका होता। … "स्वयं जीवन" के तथ्यों का साधारण आनुभविक सा… करण ही काफ़ी नहीं था। मार्क्स का शुभ लक्षण … कि उनमें सैद्धांतिक विचार की बुलंदी से "आ… यथार्थ" पर प्रकाश डालने और विपरीततः, ठोस … के ठोस विश्लेषण को सामान्यीकरण की नयी …

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

की ओर अग्रसर होने तथा एक संगत सिद्धांत की खोज का आधार बनाने की योग्यता थी।

ग़लत ढंग से संगठित दुनिया और जनसाधारण की मुसीबतों के उनके भावुक अनुभवों ने उन्हें इस ग़लत संगठन के कारण की खोज करने, दुनिया के अंतर्विरोधों को प्रकट करने, उन "परिस्थितियों के प्रभाव को समझने के लिए प्रोत्साहित किया, जहां पहली दृष्टि में केवल व्यक्ति काम करते हुए प्रतीत होते हैं"।*

जनवादी प्रेस के बारे में मार्क्स का वक्तव्य स्वयं मार्क्स पर लागू होता है, जिसे लोगों की जीवन-परिस्थितियों के प्रति "न केवल बुद्धि पर आधारित, बल्कि ... वैसे ही भावना पर भी आधारित" रुख अपनाना चाहिए और जो विद्यमान संबंधों का अवलोकन करते समय "केवल निर्णय की चतुर भाषा में ही नहीं, बल्कि स्वयं जीवन की भावपूर्ण भाषा में भी बोलता है"।**

नौकरशाही निरंकुशता और राजतंत्र के मिथ्या उदारतावादी हावभावों के खिलाफ़ अखबार में अपने लेखों के बाद वस्तुओं के तर्क ने मार्क्स को राजतंत्र और नौकरशाही की सामाजिक स्थिति और भूमिका की एक सैद्धांतिक व्याख्या प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया। इसने उन्हें राज्य के हेगेलीय सिद्धांत, राजतंत्र के प्रति हेगेल की वफ़ादारी और संवैधानिक निरंकुशता के उनके

* का० मार्क्स, 'मोज़ेल के संवाददाता की सफ़ाई'।
** वही।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

आदर्श से निपटने के लिए प्रोत्साहित कि

'हेगेल के विधि-दर्शन की समीक्षा का एक प्र की बड़ी पांडुलिपि १८४३ की गर्मी में पूरी हो लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने १८४१ के उ में यानी विश्वविद्यालय से पास होने के बाद ही इ काम शुरू किया। इसमें हम संवैधानिक राजतंत्र के "प की वही आलोचना पाते हैं, जिसके बारे में मार्क्स ने को मार्च, १८४२ में लिखा। प्रत्यक्षतया मार्क्स *Rheini Zeitung* के लिए लेख लिखने के साथ-साथ हेगे विधि-दर्शन के बारे में अपने लेख पर भी काम क थे। लेख में व्यक्त अनेक विचार उस काल उनके अखबारी लेखों के विचारों से लगभग मिलते हैं।

जहां समाचारपत्र के पृष्ठों पर मार्क्स ने प्रशियाई राज्य मशीन के विभिन्न ठोस पहलु विनाशकारी आलोचना का विषय बनाया, वहां के कानून-दर्शन पर अपनी पांडुलिपि में वह रा और नौकरशाही राज्य के सिद्धांत की आलोचना हैं। वह प्रशियाई निरंकुशता के अलग-अलग पर प्रहार नहीं करते, बल्कि इसके मर्म," निजी पर सीधे आघात करते हैं, जिसे अफ़सरशाही प्रदान करता और पवित्र बनाता है।

हेगेलीय दर्शन की भाषा से अनभिज्ञ पाठक हेगेल के विधि-दर्शन पर इस कृति को पढ़ना कठि है। लेकिन इसमें व्यक्त अत्यधिक गहन और वि

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

विचार गागर में सागर समान हैं, जिनका महत्व वर्तमान समय में भी बना हुआ है।

आइए, हम मार्क्स की आलोचना के केवल मुख्य-मुख्य मुद्दों पर विचार करें।

इसके मर्म में राजतंत्र और सम्राट की आलोचना है। हेगेल का सम्राट राज्य का मूर्तरूप है। हेगेल उसे एक सच्चे "ईश-मानव", राज्य के विचार के सच्चे मूर्तरूप की शक्ल में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। राज्य हेगेल के अनुसार, देश के सभी नागरिकों के हित का प्रतिनिधित्व करने, "सामान्य हित" को सिद्ध करने के लिए विद्यमान रहता है।

यहां हेगेल बड़े ही हास्यास्पद ढंग से स्वयं अपना खंडन कर देते हैं। यदि एक आदमी संपूर्ण राज्य का मूर्तरूप है, तो क्या इसका यह अर्थ नहीं है कि सभी अन्य नागरिक व्यक्तित्व से वंचित हैं? चूंकि शासन की प्रभुसत्ता एक व्यक्ति में संकेंद्रित है, इसलिए सभी अन्य लोग प्रभुसत्ता से वंचित हैं। जब एक व्यक्ति को "ईश-मानव" का दर्जा प्रदान किया जाता है, तो इसका अर्थ यह है कि संपूर्ण समाज अमानव, प्राक्-मानव, पशु स्थिति में है, क्योंकि उसी तरह जिस तरह धर्म में ईश्वर की प्रभुसत्ता आदमी को "ईश्वर के दास" में बदल देती है।

"सम्राट की प्रभुसत्ता या जनता की प्रभुसत्ता – यहीं है असली सवाल है!"

हेगेलीय अवधारणा का बेतुकापन इस तथ्य में प्रकट होता है कि भाववादी सिद्धांत का सुसंगत रूप से अनुसरण

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

करने की इच्छा करते हुए वह अत्यंत भोंडे "भौतिक
में बह जाते हैं।

राज्य का **विचार** सम्राट के रूप में मूर्तित होता
परंतु सम्राट ही इस विचार द्वारा क्यों चुना जाता
आनुवंशिकता के आधार पर, शरीर के आधार
अपने वंश के पुनरुत्पादन का कार्यकलाप शरीर का
कार्य है। "अतः राजा का उच्चतम संवैधानिक
उसका यौन कार्यकलाप है, क्योंकि इसके जरिये वह
बनाता है और अपने शरीर को शाश्वतत्व प्रदान
है। उसके पुत्र का शरीर उसके अपने शरीर का
त्पादन, एक राजा के शरीर की सृष्टि है।"

इस तरह, "अपने सर्वोच्च कार्यकलापों में
एक पाशविक यथार्थ प्राप्त करता है"। इस
"प्रकृति हेगेल से अपने तिरस्कार का बदला
लेती है"।

निरंकुश शासन, जैसा कि मार्क्स दिखाते हैं,
शाही पदसोपानक्रम पर आधारित होता है। रा
मात्र नौकरशाही के पिरामिड का शीर्ष-बिंदु हो
हेगेल ने इस परिघटना की प्रकृति को नहीं प्रकट
और वैसा वह अपने राजनीतिक विचारों के
नहीं कर सके। मार्क्स निरंकुश राज्य के अंत
में घुस कर इस ग़लती को दूर कर देते हैं।

नौकरशाही "राज्य की चेतना", राज्य की
"राज्य की शक्ति" है। यह बाह्यतः "सामान्य
के प्रतिनिधि और संरक्षक के रूप में काम कर

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

हालांकि यह काल्पनिक सामान्यता है, जिसके पीछे एक निश्चित विशेषाधिकृत समूह का हित या, जैसे कि मार्क्स हेगेल के शब्दों को दुहराते हुए कहते हैं, "निगमों की प्रवृत्ति" होती है।

नौकरशाह राज्य के पुरोहित, इसके जेसुइट, इसके धर्मविज्ञानी होते हैं। उनके लिए हर चीज का दोहरा अर्थ – वास्तविक और गुप्त होता है, जो भोले-भाले लोगों की नजरों से ओझल रहता है। अतः "नौकरशाही की सामान्य प्रवृत्ति गोपनीयता, रहस्यमयता है"।

इस रहस्यमयता का पालन बाह्य दुनिया से पृथकता और "निगम की प्रवृत्ति" में नौकरशाही के अलगाव के द्वारा सुनिश्चित किया जाता है। लेकिन अपने परिवेश में इस गोपनीयता का पालन इसके पदसोपानक्रम संगठन द्वारा सुनिश्चित किया जाता है। नौकरशाही को "निगम" की गोपनीयता, "स्वीकृत राजनीतिक प्रवृत्ति" का उल्लंघन गद्दारी प्रतीत होती है। "इसका पदसोपानक्रम **ज्ञान का पदसोपानक्रम** है। शीर्षस्थ स्तर निम्नतर स्तरों को तफ़सील की जानकारी सौंपता है, जबकि निम्नतर स्तर शीर्षस्थ स्तर की सभी सामान्य बातों की व्याख्या में विश्वास करते हैं और इस तरह सभी एक-दूसरे को धोखा देते हैं।"

लेकिन नौकरशाही का "ज्ञान" वैज्ञानिक ज्ञान पर नहीं आधारित होता: नौकरशाही विज्ञान को निस्सार मानती है। नौकरशाही का "ज्ञान" प्रभुत्व में विश्वास, आज्ञाकारिता और मजबूती से स्थापित औपचारिक

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

कार्रवाइयों, बने-बनाये सिद्धांतों, विचारों और प… पर आधारित होता है।

"अत:, प्रभुत्व इसके ज्ञान का आधार है… प्रभुत्व का देवीकरण इसका **विश्वास** है।"

इस तरह, निरंकुश राज्य ऐसी निश्चित नौक… शक्तियों की एक प्रणाली के रूप में क़ायम होता… जो एक-दूसरे से अधीनता और अंध आज्ञाकारि… जुड़ी होती हैं।

मार्क्स ने राज्य का यह जो विश्लेषण दिया है… हमें अनिवार्यत: इस निष्कर्ष पर पहुंचा देता है कि… के राजनीतिक जीवन को "मानवीय" बनाने के… राजतंत्र का तख्ता उलटना ही काफ़ी नहीं है। इसके… संपूर्ण नौकरशाही पिरामिड को गिराना आवश्यक… जो निजी स्वामित्व तथा सामाजिक और आर्थिक अस… पर आधारित होता है। यह बिल्कुल साफ़ है कि… की उनकी आलोचना की परिधि में न केवल र… की निरंकुशता, बल्कि बुर्जुआ जनवाद भी शामि…

मार्क्स नौकरशाही पुलिस राज्य का वर्णन ए… चीज़ के रूप में करते हैं, जिसका जन-साधारण के… कार्यकलापों से कोई संबंध नहीं होता, एक ऐसी… जो "नागरिक समाज" से पृथक और इसके ऊप… होती है, जबकि राजकीय प्रणाली का मूल सिद्धां… जनता, मानव होना चाहिए।

'हेगेल के विधि-दर्शन की समीक्षा' के लेखन… के दौरान ही आ० रूगे को लिखे पत्र में मार्क्स

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जगत् में जनवाद के संक्रमण" की घोषणा करते हैं। वह साफ-साफ देखते हैं कि "व्यापार और उद्योग की प्रणाली, निजी स्वामित्व और लोगों के शोषण की प्रणाली" के कारण समाज के भीतर एक गहरी दरार पैदा हो जाती है, जिसे "पुरानी प्रणाली ठीक करने में असमर्थ है"।

लेकिन जहां मार्क्स ने विद्यमान व्यवस्था की जीर्ण-शीर्णता को स्पष्टतया देख लिया था, जिसे नष्ट किया जाना आवश्यक था, और जहां उनके लिए यह प्रश्न कि "कहां से आगे बढ़ें?", बिल्कुल समाप्त हो गया था, तो भी वह अभी "किधर जायें?" सवाल का उत्तर नहीं दे सके। अर्ध-सामंती जर्मनी में इसका उत्तर पाना कठिन था।

एक सच्चे संघर्ष-नारे की खोज मानवजाति के संपूर्ण सामाजिक इतिहास के वैज्ञानिक, भौतिकवादी दृष्टिकोण के प्रतिपादन द्वारा ही सफल हो सकती थी।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

७

सच्चे संघर्ष-नारे की खोज में

...हम संसार के सामने
हियों की तरह कोई बना
नया सिद्धांत नहीं रखते:
सत्य, बस इसके सामने न
हो जाइए! हम स्वयं सं
ही सिद्धांतों के आधार प
सिद्धांतों को विकसित क

कार्ल

इतिहास के भौतिकवादी दृष्टिकोण के प्रतिपा
लिए मार्क्स किन मार्गों से आगे बढ़े?

१८४२ के शुरू में ही मार्क्स ने अपने एक
अनीश्वरवाद, भौतिकवाद और मानववाद के
अग्रदूत लुडविग फ़ायरबाख को "हमारे युग का परि
स्वाधीनता और सत्य के मार्ग पर "आग का दरिया"

---

* का० मार्क्स, *Deutsch-Französische Jahr*
से पत्र।

** यहां मार्क्स का श्लेष "फ़ायरबाख" के
अर्थ — "फ़ायर" अर्थात "आग" और "बाख"
"दरिया" — पर है।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

उन्होंने "परिकल्पनात्मक धर्मविज्ञानियों और दार्शनिकों" अर्थात पुरोहितों और भाववादियों के नाम एक अपील जारी की: "यदि आप वस्तुओं तक उसी रूप में पहुंचना चाहते हैं, जिस रूप में वे यथार्थ में क़ायम हैं, तो अपने को पहले के परिकल्पनात्मक दर्शन की अवधारणाओं और पूर्वाग्रहों से मुक्त कर लीजिए।"*

मार्क्स ने १८४१ की गर्मी में लुडविग फ़ायरबाख़ की पुस्तक 'ईसाई धर्म का सार' पढ़ी। उस समय तरुण हेगेलवादियों पर इस पुस्तक का कितना प्रभाव पड़ा था, इसका एंगेल्स ने अत्युत्तम वर्णन किया है।

इस पुस्तक ने "एक ही प्रहार" में उन सभी अंतर्विरोधों को छिन्न-भिन्न कर दिया, जिनमें तरुण हेगेलवादी फंसे हुए थे और स्पष्ट शब्दों में भौतिकवाद की विजय की घोषणा की। "प्रकृति का अस्तित्व समस्त दर्शन से स्वतंत्र है। यह वह नींव है, जिसके ऊपर हम, मानव, जो स्वयं प्रकृति की उपज हैं, बढ़े और बड़े हुए। प्रकृति और मानव से परे किसी चीज़ का अस्तित्व नहीं है और हमारी धार्मिक कल्पना की उड़ानों ने जिन उच्चतर प्राणियों की सृष्टि कर रखी है, वे हमारे अपने ही सार के कल्पनात्मक प्रतिबिम्ब मात्र हैं। जादू उतर गया, एक ही झटके में 'प्रणाली' की धज्जियां उड़ गयीं, और अंतर्विरोध, जो केवल कल्पना की वस्तु सिद्ध हुआ, काफ़ूर हो

* का० मार्क्स, 'स्ट्रास और फ़ायरबाख़ के बीच सरपंच के रूप में', १८४२।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

गया। इसे समझने के लिए इस पुस्तक का उन्मुक्त प्रभाव अनुभव करना चाहिए था। आम उत्साह का वातावरण छा गया, सभी फ़ौरन फ़ायरबाख के चेले गये।"*

एंगेल्स के इस अर्थपूर्ण वक्तव्य को मार्क्स के विकास पर अतिसरलीकृत ढंग से यह द्योतित करने के लिए नहीं लागू किया जाना चाहिए कि मार्क्स को इस बात के लिए सिर्फ़ फ़ायरबाख़ को पढ़ना ही था कि कल का भाववादी तरुण हेगेलवादी एकदम पलटा खाकर एक ही रात में भौतिकवादी बन जाये।

अपने जवानी के वर्षों में भी मार्क्स जैसे गंभीर और स्वतंत्र विचार के व्यक्ति के लिए मूलभूत सैद्धांतिक धारणाओं में परिवर्तन तत्क्षण अथवा विशुद्धतया बाह्य प्रभाव का प्रश्न नहीं हो सकता था।

वह उन लोगों में से एक नहीं थे, जो नये सिद्धांतों पर सहज ही विश्वास कर लेने को तैयार रहते हैं, भले ही वे विश्वासोत्पादक और अनुप्राणित ढंग से प्रतिपादित किये गये हों। किसी भी सच्चे वैज्ञानिक-सिद्धांतकार की भांति उन्होंने दूसरे लोगों की धारणाओं को ग्रहण नहीं किया, बल्कि उन्हें अपनी धारणाओं के सृजन का आधार बनाया। एक नये सैद्धांतिक विचार को स्वीकार करने के पूर्व वह इसे अनिवार्यतः अपने अन्तर्...

---

* फ्रे० एंगेल्स, 'लुडविग फ़ायरबाख और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अंत'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

और निर्मम आलोचनात्मक विचार की कसौटी पर भली-भांति परखते थे। इसके अलावा, वह नये सिद्धांतों को पुराने सिद्धांतों में मात्र "जोड़" नहीं देते थे, वल्कि संपूर्ण संचित आत्मिक ज्ञान का पुनर्मूल्यांकन भी करते थे। दर्शन की संपूर्ण प्रणाली में उनका अपना अलग-अलग स्थान निश्चित किया जाना था। पूरी प्रणाली और अलग-अलग सिद्धांतों को पुनर्संगठित किया जाना था, ताकि उनकी "संगतता" परिनिष्पन्न बने।

ऐसा दृष्टिकोण हर प्रकार के विचार के संबंध में मार्क्स का लक्षण था, चाहे वह महत्वहीन से महत्वहीन विचार ही क्यों न था। अतः, मार्क्स की दार्शनिक अव-धारणाओं में अत्यंत महत्वपूर्ण मोड़ का मूल्यांकन करते समय इसे सर्वोपरि ध्यान में रखा जाना चाहिए।

भौतिकवाद की दिशा में मार्क्स का मार्ग आसान नहीं था। इस मामले में केवल फ़ायरबाख़ ने ही महत्वपूर्ण भूमिका नहीं अदा की। लंबे और संजटिल आत्मिक विकास, संपूर्ण पूर्ववर्ती दर्शनशास्त्र की उपलब्धियों के आलोचनात्मक आत्मसात्करण, धार्मिक विश्वदृष्टिकोण के साथ युद्ध, हेगेल की तेजस्वी प्रणाली के साथ शुरू में इसे आधुनिक बनाने के उद्देश्य से और बाद में इसे विजित करने के उद्देश्य से संघर्ष के ज़रिये मार्क्स भौतिकवाद पर पहुंचे।

हेगेलीय दर्शन की "परिकल्पनात्मक प्रकृति" से असंतोष, "संसार" के साथ दर्शन की निकटतर एकता के लिए खोज, अनीश्वरवादी अवधारणाओं के लिए अविरो-

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

धात्मक सैद्धांतिक आधार के लिए खोज – इस सबने
को डाक्टर की डिग्री संबंधी शोध-प्रबंध में ही भौतिक
पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। लेकिन इसमें
यूनानी भौतिकवाद के प्रति जो सहानुभूति प्रदर्शित
है, उसका सैद्धांतिक बोध अभी भी नहीं हुआ है।

बेशक, फ़ायरबाख की 'ईसाई धर्म का सार'
अन्य कृतियों से मार्क्स के चिंतन-कार्य को उस दिशा
अग्रसर होने के लिए ज़बर्दस्त प्रेरणा प्राप्त हुई, जिस
में वह पहले से ही बढ़ रहा था।

लेकिन संभवतः इस दिशा में मार्क्स को सबसे
प्रेरणा *Rheinische Zeitung* में उनके अखबारी
कलापों, जनता के उत्पीड़ित हिस्सों के उत्कट प्रवक्ता
के दृष्किोण, राजनीतिक और सामाजिक शक्तियों,
आकांक्षाओं और भौतिक हितों के पेचीदा संघर्ष
अन्योन्यक्रिया को समझने की उनकी इच्छा से प्राप्त

इसमें उन्हें फ़ायरबाख के भौतिकवाद से इतनी
सहायता मिल सकती थी, जितनी कि हेगेल के
दर्शन से। फ़ायरबाख उस क्षेत्र में – सर्वोपरि सा
संबंधों के क्षेत्र में – भाववादी बने रहे, जिसमें
जांच-पड़ताल करना चाहते थे। यहां तो हेगेल भी फ़ा
से श्रेष्ठ थे।

यह खोज करना दिलचस्प है कि कैसे मार्क्स
षणकारी विचार सत्य के कण टटोलते हुए
संबंधों की व्याख्या की दिशा में अपना मार्ग बना
१८४२ के प्रारंभ में मार्क्स लिखते हैं कि

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

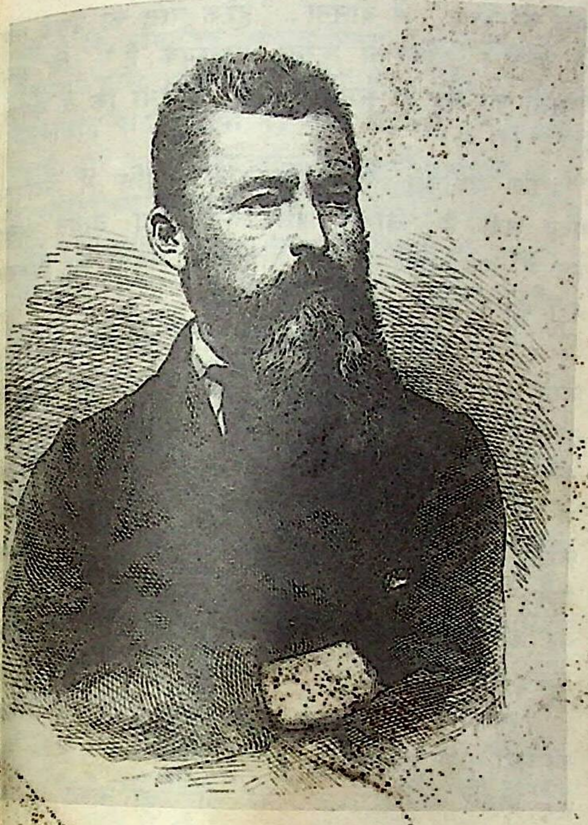

लुडविग फ़ायरबाख

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

वस्तु की भाषा" में बोलना, "हरेक वस्तु का उसके के अनुसार" विवेचन करना आवश्यक है*, कि वस्तुओं को वैसे ही समझने में है, "जैसा कि वे हैं"**।

इन वक्तव्यों की भौतिकवादी प्रवृत्ति में संदेह नहीं है, लेकिन भौतिकवाद यहां अत्यंत रूप में प्रकट होता है और सामाजिक संबंधों का नहीं करता है।

१८४२ की शरत में वन की चोरी पर लेख पर करते हुए मार्क्स के सामने स्वामित्व और क़ानून के गहनतर समझदारी प्राप्त करने की आवश्यकता प्रस्तुत चूंकि निजी स्वामित्व व्यक्ति के ऊपर प्रभुत्व और के विरुद्ध राज्य-प्रशासनिक कार्रवाई का अधिकार करता है, इसलिए क्या यही वह कारक है, जो तिक और न्यायिक संस्थाओं को निर्धारित करता यह इसी स्पष्ट निष्कर्ष की ओर इंगित करता हुआ, परंतु स्वयं मार्क्स अभी भी इसे सूत्रबद्ध नहीं

१८४३ के शुरू में मार्क्स सामाजिक संबंधों की की सही समझ के निकट अधिक निश्चित रूप से पहुंच हैं। मोज़ेल के अंगूर उत्पादकों की रक्षा करते

---

* का० मार्क्स, 'नवीनतम प्रशियाई सेंसरशिप पर टिप्पणियां'।

** का० मार्क्स, 'स्ट्राउस और फ़ायरबाख़ के लूथर पंच के रूप में'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

दर्शाते हैं कि सामाजिक अन्याय अलग-अलग व्यक्तियों की कार्रवाइयों द्वारा हर्गिज़ नहीं पैदा होता, कि ये व्यक्ति "समकालीन परिस्थितियों की सभी कठोरता" को मूर्तित करते हैं और यह कि ये परिस्थितियां "**सामान्य, अदृश्य और अप्रतिरोध्य शक्तियां**" हैं।*

ये परिस्थितियां अलग-अलग व्यक्तियों की इच्छा से उतनी ही स्वतंत्र हैं, जितनी कि "श्वसन-प्रणाली"। सद्भावना या दुर्भावना अधिकारियों के पक्ष में और नि-र्धनों के पक्ष में नहीं खोजी जानी चाहिए, बल्कि "परि-स्थितियों के प्रभाव को देखा जाना चाहिए"**।

मार्क्स इस निष्कर्ष पर पहुंच रहे हैं कि ऐसा दृष्टिकोण पेचीदा सामाजिक टकरावों को लगभग उसी निश्चितता से समझने में समर्थ बनाता है, जिससे रसायनज्ञ रासाय-निक यौगिकों के "टकरावों" को निर्धारित करता है। "यह सिद्ध हो जाते ही कि एक परिघटना परिस्थितियों द्वारा आवश्यक बना दी जाती है, उन बाह्य परिस्थि-तियों को निश्चित करना बिल्कुल कठिन नहीं रह जायेगा, जिनके अंतर्गत यह वस्तुतः उत्पन्न होनी चाहिए थी और जिनके अंतर्गत यह नहीं उत्पन्न हो सकी, हालांकि इसकी आवश्यकता पहले से ही विद्यमान थी।"***

जहां अभी कुछ समय पहले ही मार्क्स ने प्रेस की

---

* का० मार्क्स, 'मोज़ेल के संवाददाता की सफ़ाई'।
** वही।
*** वही।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

स्वतंत्रता के अभाव को सामाजिक समस्याओं के समाधान में बाधा माना था, वहां अब अपने नव-प्राप्त भौतिकवादी दृष्टिकोण के अनुसार वह यह मानते हैं कि स्वतंत्रता की आवश्यकता मोज़ेल प्रांत में विपत्तिजनक स्थिति से उत्पन्न होती है।*

इस भौतिकवादी दृष्टिकोण से मार्क्स हेगेल के "सर्व-वादी रहस्यवाद" की आलोचना करते हैं, जहां "विचार की प्रकृति के अनुरूप नहीं होता, बल्कि राज्य बनी-बनाई विचार-प्रणाली के अनुरूप होता है" **। मार्क्स सोचते हैं कि विभिन्न रूपों में राज्य की विषय-वस्तु की व्याख्या इससे, "राज्य के विचार" से नहीं, बल्कि संबंधों – परिवार और "नागरिक समाज" – के की जानी चाहिए।

प्रतीत होता है कि सामाजिक संबंधों के स्पष्टीकरण की जिस कुंजी की तलाश थी, वह अब मिल गई और हेगेल तथा फ़ायरबख के मुकाबले आगे एक बड़ा डग भर लिया गया है। सामाजिक आत्मगत आकांक्षाओं, वैयक्तिक मनोवेगों और विचारों के संघर्ष की उथल-पुथल में वस्तुगत तर्क की रूपरेखाएं की नज़रों के सामने उभरने लगी हैं।

लेकिन फ़िलहाल तो मात्र रूपरेखाएं ही धुंधली, अस्पष्ट और अनिश्चित हैं। जनसाधारण

---

* वही।

** का० मार्क्स, 'हेगेल के विधि-दर्शन की ... का एक प्रयास'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

बताना ही काफ़ी नहीं है कि उनकी बुरी स्थिति का कारण वस्तुगत संबंधों में है, बल्कि इन संबंधों की प्रकृति को बेनक़ाब किया जाना चाहिए, स्वाधीनता का मार्ग दिखाया जाना चाहिए और एक "सच्चा संघर्ष-नारा" प्रदान किया जाना चाहिए। वह शक्ति कहां है, जिस पर "उत्पीड़ित वर्ग" भरोसा कर सके?

सामाजिक समस्याओं की व्याख्या करने के कार्य के साथ मार्क्स का संघर्ष बना हुआ है, लेकिन उसके मार्ग में एक "बाधा" आ खड़ी होती है: उनके सामने राजनीतिक अर्थशास्त्र, इतिहास और सामाजिक संबंधों के सिद्धांत के क्षेत्र में, कल्पनावादी समाजवादियों और कल्पनावादी कम्युनिज्म के प्रतिनिधियों के सिद्धांतों के क्षेत्र में ज्ञान की कमी उपस्थिति हो जाती है।

मार्क्सवाद एक पूर्ण और सुसंगत सिद्धांत है। यह एक ऐसी ही पूर्ण प्रणाली के रूप में निर्मित भी हुआ, जिसमें कोई भी अंग समष्टि के पहले आविर्भूत नहीं होता, बल्कि एक जीवित भ्रूण की भांति समष्टि के साथ विकसित होता और परिनिष्पन्न बनता है।

यह सोचना भोलापन होगा कि पहले द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का आविर्भाव हुआ और इसके बाद वैज्ञानिक कम्युनिज़्म और राजनीतिक अर्थशास्त्र का आविर्भाव हुआ, हालांकि अपने जीवन की विभिन्न अवधियों में मार्क्स की रुचियां इस या उस क्षेत्र में संकेंद्रित रहीं। यद्यपि मार्क्स ने दर्शन के साथ अपने नये विश्व-दृष्किोण का विकास शुरू किया, फिर भी, इस क्षेत्र में निर्णायक मोड़

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

केवल मार्क्सवाद के सामाजिक और आर्थिक पहलुओं निर्माण की प्रक्रिया में ही संभव हुआ।

यह चीज़ *Rheinische Zeitung* की अवधि में स्पष्ट हो चुकी थी। मार्क्स का दार्शनिक ज्ञान और प्रकांड तो था, परंतु यह आत्मिक ज्ञान स्पष्ट वास्तविक जीवन द्वारा प्रस्तुत सवालों को हल करने स्वयं दर्शन में भी सही प्रगति प्राप्त करने के लिए नहीं था। मार्क्स वास्तविक जीवन और सिद्धांत में साम संबंधों के गहन अध्ययन में लग जाने के लिए विवश

उन्होंने कल्पनावादी समाजवादियों, सबसे पहले, सं मोन, फ़ुरिये और ओवेन की सैद्धांतिक संरचनाओं का आ नात्मक विश्लेषण किया। इन कल्पनावादी समाजवादि बड़ी कुशाग्रता से कम्युनिस्ट समाज के लक्षणों का वर्णन तो (निजी स्वामित्व, वर्ग-विरोध और मानव द्वारा मानव षण का अभाव, श्रम का एक अभिशाप से मूल मानव आ ता में रूपांतरण, स्वशासन, आदि), पर भोलेपन से लिया कि पूंजीवादी समाज को कम्युनिस्ट समा क्रांति द्वारा नहीं, बल्कि "उदाहरण की शक्ति" प्रवचनों, बैंकपतियों और फ़ैक्टरी-मालिकों के परिवर्तन द्वारा रूपांतरित किया जा सकता है, जो अपनी संपत्ति त्याग देंगे और सामूहिक उपयोग निर्धनों को सौंप देंगे।

स्पष्टतया, अपने विद्यार्थी जीवन में ही मा कल्पनावादी समाजवादियों के प्रति कुछ संदेह हुआ; वह कल्पना की उनकी सुंदर उड़ानों और

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

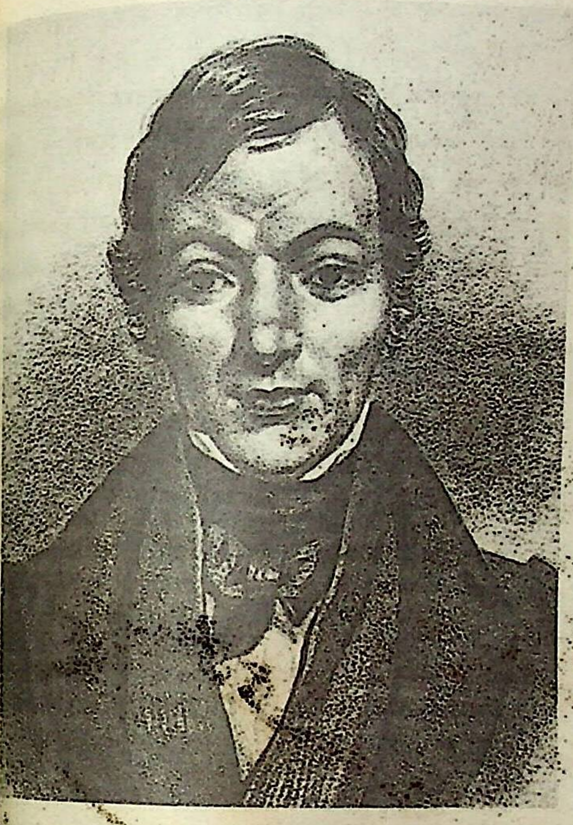

रॉबर्ट ओवेन

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सामंती प्रथा के बीच कोई वास्तविक संबंध नहीं थे। यदि हम इस बात को भी ध्यान में रखें कि में कल्पनावादी समाजवादियों के विचार अव्य और यहां तक कि रहस्यात्मक रूप में प्रचारित जाते थे, तो मार्क्स का संदेह स्वाभाविक था।

फ़ौरी व्यावहारिक कार्यों ने, जिन्हें हल करने मार्क्स ने अपने को पूरी तरह *Rheinische Ze* में काम करते हुए लगा दिया, कल्पनावाद के प्रति सतर्क रुख को और भी अधिक निश्चित बना दिया। विचार में, "सही सिद्धांत ठोस परिस्थितियों के तथा विद्यमान वस्तु-स्थिति के आधार पर स्पष्ट विकसित किया जाना चाहिए"। उन्हें अपने मित्रों, तरुण हेगेलवादियों के दृष्टिकोण से नफ़रत गयी थी, जो "संवैधानिक ढांचे में कदम-ब-कदम नता प्राप्त करने" के बजाय "कपोल-कल्पना सुखद आरामकुर्सी"* में बैठकर आम बहसें करने में मग्न

निस्संदेह, इस ढंग से स्वाधीनता प्राप्त करने आशाएं भ्रामक थीं, एक ऐसा तथ्य, जिसे मार्क्स ने तक महसूस नहीं किया था। वह सभी "स्वतंत्र सोचनेवाले व्यावहारिक लोगों" को अख़बार के गिर्द ऐक्यबद्ध होने की आशा कर रहे थे और उन्हें थी कि "वर्तमान राज्य प्रणाली के आधारों के स्पष्ट प्रवर्तन के कारण सेंसरशिप और तीव्र बना

---

* का० मार्क्स, ड० ओप्पेनहाइम को,

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

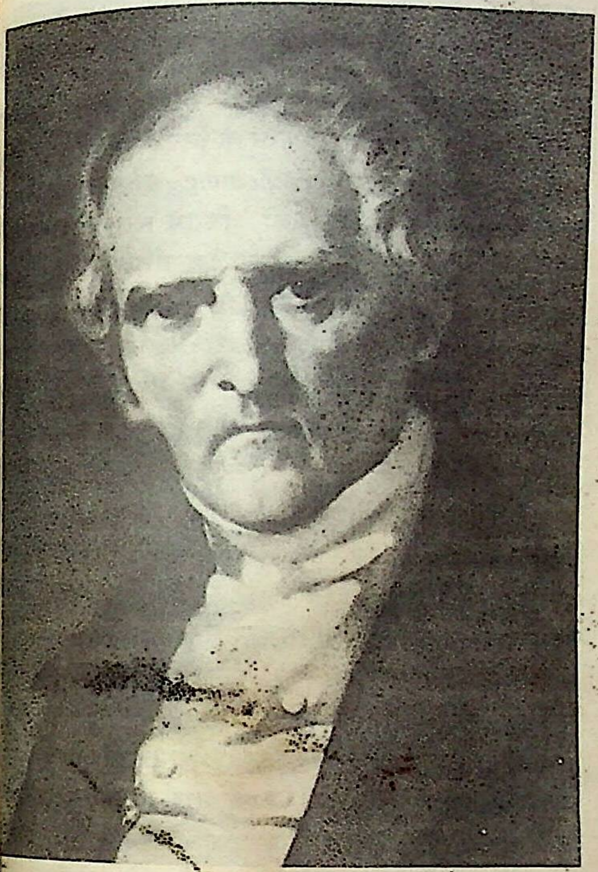

शार्ल फ़ुरिये

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सकती है और अख़बार भी बंद किया जा सकता है
लेकिन मामले ने एक ऐसा मोड़ लिया कि ... की शरत में मार्क्स को कल्पनावादी कम्युनिज़्म के ... पर अपने को खुलेआम व्यक्त करने के लिए विवश होना ...

उस समय *Rheinische Zeitung* ने मेविस्सेन ... हेस्स की लेखमाला प्रकाशित की, जिसमें लेखकों ने ... वादी विचार व्यक्त किये और "सांपत्तिक क्रांति ... लिए भी मांग पेश की। खास तौर से, मोज़ेस हे... निजी स्वामित्व के खिलाफ़ सर्वहारा के संघर्ष की ... सामंतवाद के खिलाफ़ बुर्जुआ वर्ग के संघर्ष से की ... घोषणा की कि इस संघर्ष ने राष्ट्रीय क्रांति लाने ... खतरा प्रस्तुत कर दिया है।

Rheinische Zeitung के प्रतियोगी *Aug... Allgemeine Zeitung* ने इस मौक़े का लाभ ... प्रतिद्वंद्वी पर आक्रमण करने के लिए उठाया। इसने ... व्यापारी के बेटों" (मोज़ेस हेस्स व्यापारी परिवा... थे) का मज़ाक़ उड़ाया, जो कोलोन के दस्तकारों ... गोदी-मज़दूरों के साथ अपनी संपत्ति में हिस्सा बटा... ज़रा भी इरादा नहीं रखते हुए समाजवादी विचा... साथ निश्छल ढंग से खेलते हैं। इसके साथ ही *Allge... Zeitung* ने तर्क पेश किया कि जर्मनी जैसे ... देश में मध्यम वर्ग को, जो अभी-अभी स्वतंत्र ... सांस लेना आरंभ किया है, १७८९ के फ़्रांसीसी अ...

---

* का० मार्क्स, ड० ओप्पेनहाइम को, १८४२ ...

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation.

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

आँरी सेंट-सीमोन

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

वर्ग की नियति से डराना-धमकाना निरा वचकानापन
यह कुटिल प्रहार *Rheinische Zeitung* से
पाठकों को डराने और अख़बार को सरकार की न
कम्युनिस्ट अख़बार जैसा प्रदर्शित करने के उद्देश्य से
गया था।

Rheinische Zeitung के प्रधान संपादक के
मार्क्स इस आक्रमण का मुंहतोड़ जवाब देने को बाध्य
उनके समक्ष एक पेचीदा और गूढ़ कूटनीतिक कार्य
बार द्वारा अपनाये गये दृष्टिकोण की रक्षा करना
साथ ही "कम्युनिज़्म" से स्तंभित अख़बार के ग्राहक
आश्वस्त करना – प्रस्तुत था।

मार्क्स निर्ममतापूर्वक टिप्पणी करते हैं कि कम
लच्छेदार शब्दाडम्बर के लिए दीवानख़ाने का
नहीं होना चाहिए। इससे गुलाब-जल की ख़ुशबू नहीं
है और यह गंदा लिनन पहनता है, लेकिन
महत्वपूर्ण आधुनिक प्रश्न होने से नहीं रोकता।

मार्क्स दृढ़तापूर्वक नये वर्ग अर्थात सर्वहारा के
की रक्षा करते हैं: "यह बात कि वह वर्ग जिस
आज कुछ नहीं है, मध्यम वर्गों की धन-दौलत में
दार होने की मांग करता है, एक तथ्य है, जो
की बातों के बिना और औग्सबुर्ग की चुप्पी के
मानचेस्टर, पेरिस और ल्योन में सभी लोगों को
है।"*

मार्क्स की कृतियों में सर्वहारा के बारे में इ

* का० मार्क्स, 'कम्युनिज़्म और *Augsburg A*
Zeitung, १८४२।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

उल्लेख से प्रकट है कि १८४२ में ही वह फ़्रांस और इंगलैंड में इसकी सामाजिक मांगों पर ध्यान दे रहे थे।

लेकिन मध्यम वर्ग (बुर्जुआ वर्ग) और नये वर्ग (मज़दूरों) के बीच "टकराव" किस तरीक़े से तय होगा, मार्क्स अभी इसका निर्णय करने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेते। "हमने उन समस्याओं को एक ही वाक्य में निपटा देने की कला में पारंगति नहीं प्राप्त की है, जिहें दो राष्ट्र हल करने के लिए काम कर रहे हैं।"*

मार्क्स प्रश्न के दो पहलुओं—"नये वर्ग" के आंदोलन के रूप में कम्युनिस्ट आंदोलन की वास्तविक समस्या और सैद्धांतिक व्याख्या, कम्युनिज़्म के प्रचार—के बीच स्पष्ट अंतर करते हैं। इस दूसरे पहलू के संबंध में मार्क्स आलोचनात्मक हैं। लेकिन यहां भी वह अपने को व्यक्त करने के तरीक़े में अत्यंत सतर्क हैं। यह घोषणा करने में कि *Rheinische Zeitung* कम्युनिस्ट विचारों को पक्के तौर से आलोचना का विषय बनायेगा, कि वह यह नहीं मानता कि उनमें सैद्धांतिक वास्तविकता भी है और इसलिए उनके व्यावहारिक कार्यान्वयन की और भी कम इच्छा कर सकता है, मार्क्स "अपने वर्तमान रूप में" कम्युनिस्ट विचारों को ही ध्यान में रखते हैं।

कल्पनावादी कम्युनिज़्म में वस्तुतः कौन-सी चीज़

* का० मार्क्स, कम्युनिज़्म और *Augsburg Allgemeine Zeitung*.

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

थी, जो मार्क्स को अच्छी नहीं लगी, यह *Allge*
Zeitung के किसी अज्ञात परिचित के बारे में
व्यंग्यपूर्ण टिप्पणियों से स्पष्ट रूप से देखी जा सक
जिसने अपनी सारी संपत्ति कम्यून को दे दी और
साथियों की प्लेटें धोयीं तथा जूते पालिश किये"।
तया यहां उनका इशारा फ़ुरिये के अनुयायियों के
कम्यूनों की ओर है, जो अनेक लतीफ़ों की विष
थे और कम्युनिस्ट विचारों को बदनाम ही करते
मार्क्स यह कहने में सही थे कि ऐसे "प्रयास"
में खतरनाक नहीं हैं।

सेंसरशिप की वजह से किंचित् प्रच्छन्न इन टि
का सार यह था कि कम्युनिस्ट विचारों के लि
सैद्धांतिक आधार की खोज करना आवश्यक है
लोगों के मस्तिष्कों को जीत लेगा, उन्हें कायल क
और फिर तोपों का भी प्रतिरोध करने में समर्थ हो
गा। मार्क्स मानते हैं कि कम्युनिज़्म की सैद्धांतिक
चना करने के पूर्व वह लेरू, कोंसिदेरां की कृतियं
सर्वोपरि "प्रूदों की कुशाग्रबुद्धि पुस्तक" का
अध्ययन करना चाहते हैं।

बाद में उन्होंने स्मरण किया : "उस समय जब
आगे बढ़ने' की अभिलाषा प्रायः ही वास्तविक
स्थान ले लेती थी, दर्शन का हल्का पुट लिये हुए
समाजवाद और कम्युनिज़्म की प्रतिध्वनि *Rhe*
Zeitung में सुनायी पड़ जाती थी। इस पल्लव
पर मैंने आपत्ति की, लेकिन साथ ही *Allg*

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

Augsburger Zeitung से चले एक विवाद में मैंने स्पष्टतः स्वीकार किया कि मेरा ज्ञान ऐसा नहीं है कि मैं फ़्रांसीसी सिद्धांतों की विषय-वस्तु पर कोई मत व्यक्त कर सकूं।"*

Rheinische Zeitung के संचालन ने मार्क्स से, जो उस समय २५ साल के भी नहीं थे, न केवल अधिक व्यापक और गहन ज्ञान की, बल्कि संयत, व्यावहारिक नेतृत्व के गुणों की भी मांग की, जो प्रतीयमानतः योद्धा की अदम्य प्रकृति के साथ मार्क्स के व्यक्तित्व का लक्षण नहीं थे।

लेकिन मार्क्स ने दिखा दिया कि उन्होंने सेंसरशिप और अतिक्रांतिकारी मांगों के बीच से गुज़रने वाले एकमात्र जोखिम-भरे मार्ग पर निपुणतापूर्वक आगे बढ़ते हुए मज़बूत हाथ से अखबार चलाने की जटिल कला में पूरी पारंगति प्राप्त कर ली थी।

ये मांगें 'स्वतंत्र' नामक समाज में शामिल बर्लिन के तरुण हेगेलवादियों ने कीं। उन्होंने अखबार को दुनिया में क्रांति उत्पन्न करने के दावों और अनर्गल विचारों से भरे लेखों के ढेर के ढेर भेजे, जिन्हें उन्होंने बुरी तरह सतही कल्पनावादी कम्युनिज़्म से चटपटा बनाया था। मार्क्स ने इस "शब्दप्रवाह" को दृढ़तापूर्वक इंकार करते हुए अपना चरित्रबल प्रदर्शित किया। न ही वह *Rheinishe Zeitung* के नये संपादक की "दकियानूसी"

* का० मार्क्स, 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा : एक प्रयास', १८५८-५९।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

और "गद्दारी" के बारे में 'स्वतंत्र' समाज वालों निराशाजनक शोरगुल से विचलित हुए।

क्रांतिकारी जनवादी के रूप में मार्क्स के लिए अ को देश में सभी विपक्षी शक्तियों का केन्द्र बनाना पूर्ण था। लेकिन 'स्वतंत्र' समाज वाले मांग क थे कि अखबार "अतिवादी" ढंग से काम करे, इसे फ़ौरन बंद कर दिया जाता। परिणाम यह हो "संघर्ष-क्षेत्र" पुलिस और सेंसरशिप के हाथों में चला

'स्वतंत्र' समाज के प्रति मार्क्स के कड़े रुख को झने के लिए यह जानना आवश्यक है कि यह कि का प्रतिनिधित्व करता था, जिसके सदस्यों में ऐसे थीं ब्रूनो बावेर, अडोल्फ़ रूटेनब्रेर्ग और फ़्रेडरिक कोपे थे, जिनके साथ पहले मार्क्स की अच्छी दोस्ती

'स्वतंत्र' समाज तरह-तरह के लोगों से बना इसमें वाग्विदग्धता में एक-दूसरे से होड़ लगाये वादी पत्रकार, नये राजनीतिक उषा-काल के सपने संजोये युवा कवि, चित्रकार, विश्वविद्याल युवा प्राध्यापक, जिन्होंने अभी अपने को पांडि चोग़े में नहीं लपेटा था, बैरकों और अस्तबलों की स्पियों में पूरी तरह लीन नहीं हुए फ़ौजी अफ़स अपने प्रोफ़ेसरों के उबाऊ व्याख्यानों से बुरी तरह विद्यार्थी शामिल थे। 'स्वतंत्र' समाज वालों अपने दोस्ताना मिज़ाज के लिए सुप्रसिद्ध औरतें जो याराना मज़ाक़ों या अश्लील शब्दों पर नहीं चढ़ाती थीं।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

वे एक भटियारखाने में जमा होते थे, खूब डटकर शराब पीते थे, चुगलखोरी करते थे और इन सब कामों के साथ-साथ इतने ही जोश-खरोश से विद्यमान व्यवस्था को नष्ट करते थे। कूपमंडूकता के प्रति अपनी घृणा बड़े ज़ोर-शोर से प्रदर्शित करते हुए, समाज के सभी पूर्वाग्रहों से मुक्त होने का दावा करते हुए और एक-दूसरे पर "भयंकर क्रांतिकारी" फ़िकरों की बौछार करते हुए इन अक्खड़ लेखकों ने स्वयं ही पागल कूपमंडूकों का ही उदाहरण पेश किया।

उनकी पार्टियां बहुत अक्सर व्यभिचार में बदल जाती थीं। वे ऊधम मचाते थे, भिखारियों के जुलूस निकाले, मदिरा-पान के दौर जारी रखने के लिए राह चलते लोगों से पैसे ऐंठे, वेश्यालयों में गये और वहां तब तक विदूषकी करते रहे, जब तक उन्हें बाहर निकाल नहीं दिया गया।

ब्रूनो बावेर ने, जो अपने भाई एडगर के साथ 'स्वतंत्र' समाज वालों की कलंकपूर्ण कार्रवाइयों के नेता थे, माक्स स्टर्नर की शादी के दौरान पादरी को असली विवाह की अंगूठियों की जगह अपने बटुए के छल्ले दिये।

इन उच्छृंखलताओं के साथ ही, जो कूपमंडूकों को डरा देती थीं, ब्रूनो बावेर ने इस आशय के उतने ही उच्छृंखल सैद्धांतिक वक्तव्य दिये कि राज्य, संपत्ति और परिवार को समाप्त अवधारणाएं मान लिया जाना चाहिए।

अपने को समाज की "रूढ़ियों" से मुक्त करते

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

हुए, "भीड़" से ऊपर खड़ा होने वाले स्वा[illegible] व्यक्ति की पूजा की घोषणा करते हुए, 'स्वतंत्र' [illegible] वालों ने यह नहीं देखा कि साथ ही साथ वे [illegible] मानवीय स्थिति से भी मुक्त कर रहे हैं और [illegible] नख-शिख डूबे जा रहे हैं। उन्होंने समाज की "[illegible] के खिलाफ़ अपनी वैयक्तिक नीचता से प्रतिवाद [illegible]

मार्क्स, जिन्हें प्रवचनों, कूपमंडूक ढोंग से [illegible] नफ़रत थी, इनके खिलाफ़ प्रतिवाद के ऐसे [illegible] समर्थन नहीं कर सकते थे। वह खास तौर से इ[illegible] पर क्रुद्ध थे कि अविश्वसनीय अहम्मन्यता और [illegible] साथ "बर्लिन के बड़बोले" अपने को सच्चे क्रांति[illegible] कम्युनिस्टों और मानवजाति के मुक्तिदाताओं [illegible] में प्रचारित कर रहे थे और इस तरह महान [illegible] बदनाम कर रहे थे।

उन्होंने इन "स्वातंत्र्य वीरों" का, जिन्होंने *Rhei[illegible]* *Zeitung* को निलज्र्ज आत्म-प्रचार के एक [illegible] परिवर्तित करना चाहा, एक अनम्य और उचित [illegible] कम अस्पष्ट तर्क, आडंबरपूर्ण फ़िकरे और अहम्म[illegible] आत्म पूजा और अधिक निश्चितता, वास्तविक स्थिति पर ध्यान, अधिक विशेषज्ञ ज्ञान के साथ [illegible] किया।

मार्क्स ने कहा कि वह 'स्वतंत्र' समाज वा[illegible] ऐसी हरकतें जैसे कि सांयोगिक थियेटर समी[illegible] आदि में कम्युनिस्ट और समाजवादी सिद्धांतों अ[illegible] विश्व-दृष्टिकोण को चोरी-छिपे घुसेड़ना अनुचित

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

तकि अनैतिक भी मानते हैं। उन्होंने मांग की कि "यदि कम्युनिज़्म की चर्चा छिड़ी है, तो इस पर एक मूलतया भिन्न और अधिक पूर्ण बहस की जानी चाहिए"।*

'स्वतंत्र' समाज से संबंध-विच्छेद एक सच्चाई बन चुका था, लेकिन इसने सरकार के दंडात्मक हाथ से *Rheinische Zeitung* की रक्षा नहीं की, जो आलोचनात्मक लेखों, ख़ास तौर से मोज़ेल के अंगूर उत्पादकों की रक्षा में मार्क्स के लेख से कुपित थी। अख़बार पर संकट के बादल मंडरा रहे थे।

सेंसरशिप की अत्यंत वीभत्स यातनाओं, शेयरहोल्डरों के शोरगुल, प्रांतीय असेम्बली में दोषारोपणों और प्रांत के ओबरप्रेज़िडेंट की शिकायतों के बावजूद मार्क्स अपने पद पर बने रहे और इस बात को अपना कर्तव्य माना कि सत्ताधारियों को अपनी योजनाएं लागू करने से भरसक रोकें।

मार्क्स मामले को आपसी समझौतों से निपटाने को तैयार थे, बशर्ते कि वे अख़बार को अपना स्वरूप और गरिमा बनाये रहने देते तथा जिस लाइन पर यह पहले चल रहा था, उस पर चलने देते। लेकिन जब अख़बार के मालिकों ने दबाव देना शुरू किया कि अख़बार को सरकार के प्रति नरम रुख अख़्तियार करना चाहिए, मार्क्स ने इसका प्रतिवाद किया और संपादकीय मंडल से इस्तीफ़ा देने को विवश हुए। युक्तिगत कारणों से

* का० मार्क्स, आ० रूगे को, १८४२।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

वह बड़ी बात के हित में छोटी-मोटी बातों में तो सम[illegible] कर लेते थे, लेकिन अपने सिद्धांतों से कभी पीछे [illegible] हटे।

अखबार का कट्टर दुश्मन, इसका सेंसर [illegible] तक भी, जिसने बड़ी बेशर्मी से संपादकीय म[illegible] परेशान किया, संपादक मार्क्स की मान-मर्यादा, [illegible] बल और गहन विश्वासों से इंकार नहीं कर सका। [illegible] को अखबार से डा० मार्क्स के इस्तीफ़े की सूचना [illegible] हुए, जिसके अतिजनवादी विचार प्रशियाई रा[illegible] सिद्धांतों से लेशमात्र मेल नहीं खाते थे, सेंट-पाल ने [illegible] कि अब कोलोन में एक भी ऐसा आदमी नहीं है, जो [illegible] को इसके प्रहारकारी स्वरूप को बनाये रखते हुए [illegible] और इसकी नीतियों के लिए ज़ोर-शोर से लड़ने में सम[illegible]

स्वयं मार्क्स नें अखबार छोड़ देने के बाद रा[illegible] सांस ली। उन्होंने आर्नोल्ड रूगे से कहा कि उस वा[illegible] में उनका दम घुटने लगा था। "मुझे इस बात [illegible] होती है कि अंकुश तले काम किया जाये, भले [illegible] अंकुश स्वतंत्रता के नाम पर हो, कि मामूली [illegible] भरी जायें, जबकि डंडा लेकर लड़ाई करने की [illegible] है। मैं ढोंग, मूढ़ता, [illegible]नमानीपन और इस [illegible] आ गया हूं कि हर वक्त अपनी चेतना को दबा[illegible] बाल की खाल खींचने वाली बात करूं, [illegible] मीन-मेखों का जवाब दूं — संक्षेप में, [illegible]कार ने फिर स्वतंत्र बनाया।"*

* का० मार्क्स, आ० रूगे को, १८४३।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

संभवत: मार्क्स ने १८६५ में अपने जीवन की इसी अवधि के बारे में स्मरण किया, जब उन्होंने अपनी पुत्रियों द्वारा तैयार की गयी प्रश्नावली के एक प्रश्न "आपकी नज़र में दु:ख क्या है" का उत्तर "परवाशता" दिया था।

मार्क्स के लिए अखबार छोड़ने का अर्थ अपने देश में राजनीतिक संघर्ष में भाग लेने का अंतिम अवसर खोना था। और इसके बिना उनके लिए कूपमंडूक जर्मनी में, जो उन्हीं बूटों को चूम रहा था; जिनसे कैसर उदीयमान बुर्जुआ उदारतावाद को कुचल रहा था, अब और रहना व्यर्थ था।

इस वजह से मार्क्स ने बिना किसी हिचकिचाहट के और संभवत: खुशी से जर्मनी छोड़ देने का निर्णय किया, जहां "लोग अपने को खोटे बनाते हैं"*, क्योंकि "यहां का वातावरण आदमी को दास बना देता है"**।

मार्क्स की प्रफुल्ल मनोदशा का एक दूसरा महत्वपूर्ण कारण भी था। उन्होंने जेनी के साथ अपना जीवन जर्मनी से बाहर शुरू करने का दृढ़ निश्चय किया था, जो विश्वविद्यालय में अध्ययन और *Rheinische Zeitung* के कार्य के वर्षों में लगातार उनकी प्रतीक्षा करती रही थीं।

---

* का० मार्क्स आ० रूगे को, १८४३।

** का० मार्क्स, '*Deutsch-Französische Jahrbücher* पत्र'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अपनी व्यक्तिगत योजनाओं के बारे में आर्नोल्ड को सूचित करते हुए मार्च १८४३ में मार्क्स ने स्वीकार किया: "ज़रा भी रोमांसवाद के बिना मैं आ विश्वास दिला सकता हूं कि मैं रोम-रोम से, क संजीदा रूप में प्यार करता हूं। मेरी सगाई सात पहले हुई थी और मेरी मंगेतर ने मेरे लिए अंशतः धर्मभीरू अभिजात सगे-संबधियों के खिलाफ़, जिनके 'स्वर्गवासी ईश्वर' और 'बर्लिनवासी ईश्वर' समान से पूजा की वस्तु हैं, और अंशतः मेरे परिवार के लि बड़ी ज़बर्दस्त लड़ाइयां लड़ी हैं, जिसमें कुछ पुरोहित मेरे दूसरे दुश्मन आश्रय लिये हुए हैं।"

१२ जून, १८४३ को "श्री कार्ल मार्क्स, डी० फि कोलोन-निवासी और फ़्रोइलैन जोहान्ना वेर्टा जेनी फ़ोन वेस्टफ़ालेन, व्यवसाय-रहित, क्रेउ निवासिनी के बीच" विवाह-संविदा पर ह हुए।

इसी दिन से मार्क्स को एक वफ़ादार जीवन- मिल गयी। एंगेल्स के शब्दों में, जेनी "... न केवल पति के भाग्य, कार्य और संघर्ष की सहभागिनी बल्कि उनमें बड़ी कुशाग्रता और उत्कट भावना से भी लिया"*।

क्रेउज़्नाख में कुछ महीने रहने के बाद युवा

---

* फ्रे० एंगेल्स, 'जेनी मार्क्स, फ़ोन वेस्ट की बेटी', १८८१।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

पेरिस के लिए रवाना हो गये, जहां मार्क्स और रूगे *Deutsch-Französische Jahrbücher* पत्रिका प्रकाशित करना चाहते थे।

"इस तरह दर्शन के प्राचीन विश्वविद्यालय – पेरिस को – *absit omen!*"* (अपशकुन दूर हो! – सं०)।

* फ़े० एंगेल्स, 'जेनी मार्क्स, फ़ोन वेस्टफ़ालेन वेटी'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

८

कम्युनिज़्म : पूर्ण मानवतावाद

... विज्ञान के प्रवेश-द्वार
नर्क के प्रवेश-द्वार की भांति
यह मांग अवश्य की जानी चाहि
"समस्त अविश्वास को
तिलांजलि देनी होगी ;
कायरता यहां त्याग देनी हों

कार्ल मा

१९वीं शताब्दी के पांचवें दशक में पेरिस
का राजनीतिक और सांस्कृतिक केन्द्र था। यहां
इटली, रूस और जर्मनी से क्रांतिकारी और राज
शरणार्थी आते थे। जर्मनी के विपरीत, यहां सब
हाल की महान घटनाएं और नयी सामाजिक
की आशा – क्रांति का सूचक था।

उस काल के पेरिस का वर्णन युवा एंगेल्स
लिखित शब्दों में करते हैं : "और केवल फ्रांस के
एक पेरिस है, एक ऐसा नगर, जिसमें यूरोपीय

* का० मार्क्स, 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की
का एक प्रयास'। मार्क्स यहां दांते की 'दिव्य सुखा
से पंक्तियां उद्धृत करते हैं।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अपने उत्कृष्टतम रूप में पुष्पित हुई है, जो यूरोपीय इतिहास का धमनी-केन्द्र है और जिससे नियमित अंतरालों पर ऐसे तड़ित-आवेग उत्पन्न होते रहते हैं, जो सारी दुनिया को हिला सकते हैं, एक ऐसा नगर, जिसकी आबादी ने अपने में सुख की उत्कट कामना और ऐतिहासिक कार्रवाई की कामना को इस तरह समन्वित किया है, जैसा कि अन्य किसी ने नहीं, जिसके लोग एथेन्स के सबसे सुसंस्कृत एपिक्यूरियन की भांति जीना और सबसे साहसी स्पार्टन की भांति मरना जानते हैं..."*

स्वाधीनता, समानता और भ्रातृत्व के उच्च आदर्शों के स्थान पर धनलोलुपता को प्रेरित करने वाली बुर्जुआ व्यवस्था के प्रति जितना असंतोष पेरिस में महसूस किया गया, उतना संभवत: कहीं नहीं।

यह संयोग की बात नहीं है कि यहीं पर सामाजिक चिंतन ने सैद्धांतिक रूप से ऐसे समाज की प्राक्कल्पना करने की चेष्टा की, जो पूंजीवाद का स्थान लेने आ रहा था। अपने स्वप्नलोकों के साथ सेंट-सीमोन और फ़ुरिये के बाद काबे, देज़ामी, ब्लांकी, प्रूदों, लेरू आये, जो प्रगतिशील बुद्धिजीवियों और मज़दूर मंडलों और यूनियनों में बड़े लोकप्रिय थे। फ्रांस के सर्वहारा ने बुर्जुआ वर्ग का मुक़ाबला करने में समर्थ एक शक्तिशाली सामाजिक शक्ति का रूप ले लिया था।

पेरिस में ऐतिहासिक विकास के क्षितिज खुल रहे

* फ़्रे० एंगेल्स, 'पेरिस से बर्न तक', १८४८।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

थे, जो जर्मनी की अपेक्षा बहुत ही व्यापक और अ दूरगामी थे। अतः स्वभावतया मार्क्स पेरिस में ही, ऐसा कहा जा सकता है तो, मार्क्सवादी बने और वैज्ञानिक कम्युनिज़्म के महत्वपूर्ण विचार खोजे और किये गये।

क्रांतिकारी सिद्धांत की रचना करने, एक सच्चे नारे की खोज करने के लिए विगत के वर्ग-संघर्षों अनुभव का सामान्यीकरण करना आवश्यक था। मार्क्स जर्मनी में क्रेउज़्नाख में इस अनुभव का अध्ययन शुरू दिया था, लेकिन फ्रांस में उन्हें इस कार्य को पूरा करने लिए बेहतर परिस्थितियां मिल गयीं। उन्होंने बुर्जुआ हासकारों – थियेरी, मिन्ये, गीज़ो, थियेर, आदि कृतियों का अध्ययन किया, जिन्होंने, जैसा कि मार्क्स बाद में स्वीकार किया, समकालीन समाज में वर्गों वर्ग-संघर्ष के अस्तित्व की खोज की। उन्होंने मान्ते मैकियावेली और रूसो के सामाजिक सिद्धांतों का अध्ययन किया।

यदि संपूर्ण इतिहास वर्ग-संघर्ष का इतिहास है तर्कसंगतः निम्नलिखित सवाल उठते हैं: समकालीन परि तियों में कौन-सा वर्ग क्रांतिकारी शक्ति का वाहक भविष्य किस वर्ग का है? यह भविष्य कैसा हो

मार्क्स पुनः कल्पनावादी समाजवाद और के आलोचनात्मक अध्ययन की ओर मुड़े, जिनका आदि प्रत्यक्षतया फ्रांसीसी भौतिकवाद से हुआ। सेंट-सि और फ़ुरिये ने बुर्जुआ समाज की मौलिक आलोचना

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

डेविड रिकार्डो

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

कहते हुए की थी कि यह मानवतावाद के सिद्धां लेशमात्र मेल नहीं खाता। उन्होंने भी सर्वहारा की ध्यान दिया, पर वे इसे मात्र सत्ताधारियों की और दान के मुहताज, एक उत्पीड़ित और मुसीबत वर्ग के रूप में मानते थे।

जिस तरह हेगेल के लिए संपूर्ण विश्व परम की अभिव्यक्ति था, उसी तरह कल्पनावादियों के समाजवाद मानव संबंधों के परम सत्य की अभि था। जिस तरह हेगेल के यहां उनके मिथ्या प्रस्थान ने एक ऐसी जड़सूत्रवादी प्रणाली के निर्माण पर दिया, जिसमें परम चित् स्वयं अपनी सिद्धि करता है, उसी तरह कल्पनावादियों के लिए, यहां कि उनमें सबसे प्रख्यात (विशेषतः फ़ुरिये) के भी सारा मामला समाज के विकास की ऐसी आदर्श प्रणालियों के निर्माण तक ही सीमित हो कर रह जिन्हें जानकर ही सभी विरोध हल हो जायेंगे।

हेगेल और सामाजिक कल्पनावाद को विजित दो अलग-अलग कार्य हर्गिज़ नहीं थे: वे एक ही थे, जिनका समाधान मानव समाज के विकास में भूमिका अदा करने वाले कारक की खोज में था।

न तो हेगेल की शिक्षा में और न ही कल्पन समाजवाद में "तैयारशुदा प्रणालियों" और "जड़सूत्र अमूर्तकरणों" के रूपांकनों से मार्क्स सतुष्ट थे। विचार की इन बड़ी उपलब्धियों में से कोई भी दुनिया बदलने का एक साधन बनने योग्य नहीं थी। दोनों

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

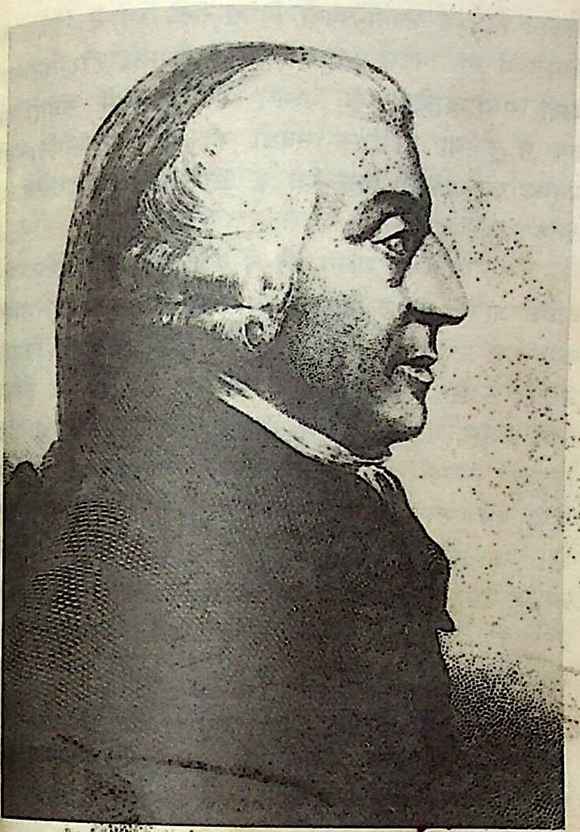

ऐडम स्मिथ

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सिद्धांत निज में अपना-अपना निषेध लिये हुए थे। हेगेल मामले में यह निषेध द्वंद्वात्मक चिंतन-प्रणाली और कम्यु वादी समाजवादियों के मामले में यह ऐसे संबंधों रूप में बुर्जुआ सांपत्तिक संबंधों की आलोचना थी, मनुष्य को अशक्त बना देते हैं और उसके सारतत्व अनुरूप नहीं होते हैं।

इन संबंधों की प्रकृति को न केवल न्यायिक दृष्टि बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी स्पष्ट करने के लिए ने बुर्जुआ राजनीतिक अर्थशास्त्र का गहन अध्ययन कि उन्होंने ऐंडम स्मिथ, रिकार्डो, मैक-कुलोच, जेम्स जान बतिस्त सेय, स्काबैंक, देस्तुत दे त्रासी और ल्बेर की कृतियों का विश्लेषण किया। प्रत्यक्षतया, रा तिक अर्थशास्त्र के अध्ययन में मार्क्स को युवा के 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा की रूप शीर्षक लेख से और भी प्रेरणा प्राप्त हुई, जो De *Französische Jahrbücher* में प्रकाशित हुआ था जिसे मार्क्स ने प्रतिभाशाली कहा।

पेरिस में मार्क्स को राजनीतिक विपक्ष की मह हस्तियों, क्रांतिकारी जनवादियों और समाजवादि ब्लां, पियरे लेरू, हेनरिख हाइने, पियर जोसेफ और मिखाईल बकूनिन के साथ व्यक्तिगत तौर पर प होने का मौक़ा मिला।

सैद्धांतिक आलोचना और वास्तविक वर्ग-संघ परस्पर समन्वित करने की अपनी आकांक्षा का पालन हुए मार्क्स ने जर्मन दस्तकारों और फ्रांसीसी मजदू

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

क्रांतिकारी संगठनों के साथ संपर्क क़ायम किये। पुलिसवालों ने अपनी रिपोर्टों में लिखा कि मार्क्स ने विंसें महल के निकट एक पेरिस गेट पर क्रांतिकारी मज़दूरों की सभाओं में भाग लिया।

क्रांतिकारी मज़दूर मार्क्स को बहुत चाहते थे, क्योंकि वे उनमें सच्चे राजनीतिक योद्धा की संकल्पशीलता और दृढ़ता का अनुभव करते थे, जो भली-भांति जानते हैं कि किस चीज़ के लिए और कैसें संघर्ष किया जाये। जर्मन मज़दूरों के एक राजनीतिक समाज के एक नेता हेर्मान्न एवेर्बेक ने लिखा: "कार्ल मार्क्स ... बेशक कम से कम गो० ए० लेसिंग जैसे ही एक मनीषी हैं। असाधारण प्रतिभा, लौह-चरित्र, अविचलित दूरदर्शिता और व्यापक ज्ञान से संपन्न कार्ल मार्क्स ने अपने को अर्थशास्त्र, राजनीति, वैधानिक और सामाजिक प्रश्नों के अध्ययन में लगा दिया है।"*

मज़दूरों के जीवन से सीधे संपर्क के ज़रिये मार्क्स ने क्रांतिकारी मज़दूरों के नैतिक बल, ज्ञान के लिए अथक चेष्टा और मानव-गरिमा का परिचय प्राप्त किया और उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सके। लुडविग फ़ायरबाख के नाम ११ अगस्त, १८४४ के एक पत्र में वह लिखते हैं: "ये कठोर परिश्रम से थके-हारे लोग जो निर्मल ताज़गी और गरिमा बिखेरते है, उस पर विश्वास करने के

* ओ० कोर्नू। कार्ल मार्क्स और फ़्रेडरिक एंगेल्स। जीवन और कार्य

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

लिए आपको फ़्रांसीसी मज़दूरों की एक सभा में भाग लेना होगा। अंग्रेज़ सर्वहारा भी बड़े डग भर रहा है, पर वह उस सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से वंचित है, जो फ़्रांसीसियों को प्राप्त है। लेकिन मुझे स्विट्ज़रलैंड, लंदन और पेरिस में जर्मन दस्तकारों के सैद्धांतिक गुणों पर भी ज़ोर देना नहीं भूलना चाहिए। सिर्फ़ हमें यही कहना होगा कि जर्मन दस्तकार हद से ज़्यादा दस्तकार है।

"लेकिन जो भी हो, हमारे सभ्य समाज के इन "असभ्यों" के बीच ही इतिहास मानवजाति की मुक्ति के लिए व्यावहारिक तत्व तैयार कर रहा है।"

कल्पनावादियों के विपरीत मार्क्स सर्वहारा को दया के उद्गारों का पात्र नहीं बल्कि सक्रिय क्रांतिकारी कार्य में समर्थ एक शक्ति मानते हैं।

सर्वहारा सिद्धांत और कार्य को, दर्शन और संघर्ष को जोड़ने वाली कड़ी है। मार्क्स ने इस खोज को 'हेगेल के विधि-दर्शन की समीक्षा का एक प्रयास' शीर्षक लेख में सूत्रित किया, जो विषय-वस्तु और रूप दोनों दृष्टियों से वैज्ञानिक प्रचार की एक सच्ची श्रेष्ठ कृति मानी जा सकती है। यह लेख और 'यहूदी प्रश्न के बारे में' शीर्षक लेख, जो विचार-प्रक्रिया में इससे जुड़ा हुआ है, *Deutsch-Französische Jahrbücher* में १८४४ में प्रकाशित किये गये।

इन लेखों में मार्क्स कहते हैं कि सच्ची मानव मुक्ति "सभी प्रकार की दासता" को तोड़े बिना संभव नहीं और सर्वहारा वह वर्ग है, जो अत्यंत अधिकारहीन

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

उत्पीड़ित अवस्था में है। सर्वहारा तब तक अपने को मुक्त नहीं कर सकता, जब तक वह समाज के सभी क्षेत्रों को मुक्त नहीं कर देता।

इस मुक्ति का मस्तिष्क दर्शन है और इसका हृदय सर्वहारा है।*

इन लेखों में मार्क्स एक महत्वपूर्ण डग भरते हैं— वह एक सच्चे संघर्ष-नारे की और एक ऐसी "भौतिक" शक्ति की भी खोज करते हैं, जो इसे यथार्थ में बदलने, मानवजाति के मानवीय आदर्शों को प्राप्त करने में समर्थ है। लेनिन ने मार्क्स के इस कदम को भाववाद से भौतिकवाद और क्रांतिकारी जनवाद से कम्युनिज़्म में उनका अंतिम संक्रमण कहा।**

२६ साल की आयु में मार्क्स एक नये विश्व-दृष्टिकोण के शिखर पर पहुंच गये थे। यह अप्रतिम सैद्धांतिक चिंतन कार्य के बाद ही संभव हुआ था। उन्होंने दर्शन और सामाजिक चिंतन के क्षेत्र में यूरोपीय संस्कृति की संपूर्ण विरासत का अध्ययन किया और उसे आलोचनात्मक ढंग से आत्मसात् किया। मार्क्स ने मिलेथुस के थालेस से लेकर लुडविग फ़ायरबाख और मोज़ेस हेस्स तक एक भी दार्शनिक को नज़रदाज़ नहीं किया, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो। उन्होंने हेरोडोटस और प्लुटार्क से लेकर गीज़ो और

* का० मार्क्स, 'हेगेल के विधि-दर्शन की समीक्षा का एक प्रयास'। भूमिका।

** व्ला० इ० लेनिन, 'कार्ल मार्क्स', १८१४।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

थियेर तक सभी मौलिक ऐतिहासिक कृतियों को आत्म किया। उन्होंने प्लेटो से लेकर लेरू और वाइटलिंग कल्पनावादी समाजवादियों को पढ़ डाला। उन्होंने स्मिथ से लेकर फ्रेडरिक एंगेल्स तक राजनीतिक अर्थ पर महत्वपूर्ण कृतियों का अध्ययन किया। अंत में, मार्क्स लुक्रेशियस के काव्य से लेकर हेनरिख हाइने के काव्य एस्खीलस के दुःखांत नाटकों से लेकर शेक्सपियर नाटकों तक और प्लेटो के संवादों से लेकर बाल्जाक गद्य तक कलात्मक संस्कृति की विविध मूल्यवान कृतियों आत्मसात् किया। फिर भी, नये विश्व-दृष्टिकोण के नि के लिए इस सारे ज्ञान को मात्र आत्मसात् क अपर्याप्त था। सभी युगों में ऐसे आराम-कुर्सी वाले वि की संख्या कम नहीं रही है, जो आकाश-तले सभी चीज़ बारे में ज्ञान से तो भरे हुए थे, पर अपने एक भी वि की प्रस्थापना नहीं कर सकते थे। मार्क्स ने मानव की महान् उपलब्धियों को केवल आत्मसात् ही नहीं कि बल्कि सत्य के सामने ज़रा भी विचलित न होते जिसके लिए उन्होंने अथक प्रयास किया, उन्हें सृजन चिंतन का साधन और तरीक़ा भी बनाया।

और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मार्क्स ने ढंग से आरंभ में जर्मनी में उत्पीड़ित किसान जन- और बाद में सभी युगों में क्रांतिकारी वर्गों में से सबसे कारी और सबसे प्रभावकारी सर्वहारा की स्थिति अपनायां।

वैज्ञानिक समाजवाद (या वैज्ञानिक कम्युनिज्म

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

वही चीज़ है) का आविर्भाव न केवल मानवजाति की आत्मिक उपलब्धियों के सामान्यीकरण और व्यावहारिक व्याख्या के रूप में, बल्कि (यह तथ्य अंतिम विश्लेषण में निर्णायक सिद्ध हुआ) स्वयं बुर्जुआ समाज में कुछ आर्थिक और सामाजिक-राजनीतिक प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति के रूप में भी हुआ।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए एंगेल्स ने लिखा: "हर नये सिद्धांत की तरह आधुनिक समाजवाद को भी आरंभ में उपलब्ध विचार-सामग्री के साथ अपना संबंध जोड़ना पड़ा, भौतिक-आर्थिक परिस्थितियों में उसकी जड़ें चाहे कितनी भी गहरी क्यों न हों।"*

क्रांतिकारी सर्वहारा आंदोलन के दृढ़ समर्थन में मार्क्स के संक्रमण के फलस्वरूप बुर्जुआ जनवादियों, सबसे पहले आर्नोल्ड रूगे के साथ उनका संबंध-विच्छेद हो गया। अपने संपूर्ण तेजस्वी उग्रवाद के बावजूद रूगे मात्र एक कूपमंडूक थे, जिन्हें स्वतंत्रता के बारे में सपने देखने से तो कोई आपत्ति नहीं थी, मगर वह इसके लिए कोई कुर्बानी करने को तैयार नहीं थे। रूगे *Deutsch-Französische Jahrbücher* की बिक्री से मोटा मुनाफ़ा कमाने की उम्मीद कर रहे थे और जब उनकी इस उम्मीद पर पानी फिर गया, तो वह निराशा के गर्त में डूब गये, उसी तरह शक्की हो गये, जिस तरह दूकानदार हो जाता

* फ़्रे० एंगेल्स, 'समाजवाद: काल्पनिक और वैज्ञानिक', ८०।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

है और मार्क्स के हर प्रकाशन संबंधी प्रयास को इस
देखने लगे मानो यह उनकी थैली लूटने का प्रयास
इसके साथ ही, रूगे मार्क्स की "रुपये-पैसे के
में घोर उदासीनता" (मेहरिंग) का इस्तेमाल करने
ज़रा भी नहीं हिचकिचाये और मार्क्स की बड़ी तंगी
के बावजूद, ज़िनका परिवार बढ़ता जा रहा था (
पुत्री जेनी मई, १८४४ में पैदा हुई), निर्लज्जता
उन्हें तनखाह के बदले में *Jahrbücher* की प्रतियां
लेकिन मुख्य बात यह थी कि मार्क्स के कम्युनि
रूगे में कूपमंडूकी आंतक पैदा कर दिया।

Jahrbücher के संपादकीय दायित्वों से मुक्त
मार्क्स ने अपने को बढ़े हुए उत्साह के साथ अध्ययन
लगा दिया। मुख्य चीज़ प्राप्त कर ली गयी प्रतीत
थी – नये विश्व-दृष्टिकोण के आधारों का निरूपण हो
था। लेकिन मार्क्स के लिए यह मात्र शुरूआत थी
मानवजाति के संपूर्ण विगत, वर्तमान और भविष्य
इस नये दृष्टिकोण से पुनर्व्याख्या करने के लिए प्रयत्न
थे। उन्होंने बहुत-कुछ पढ़ा और उनके दिमाग़ में
बाद एक योजना उभरती गयी। पहले वह हेगेल
विधि-दर्शन के बारे में अपनी अधूरी पांडुलिपि पर
काम शुरू करना और अब इसकी कम्युनिस्ट दृष्टि
व्याख्या करना चाहते थे। बाद में वह फ़्रांसीसी
इतिहास के अध्ययन में पूरी तरह लीन हो गये
कंवेंशन का इतिहास लिखने के लिए बहुत व्यग्र
में, वह कल्पनावादी समाजवादियों और राजनीति
शास्त्रियों की आलोचना की ओर मुड़े।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

उनका दिमाग़ इतनी तेज़ी से काम कर रहा था कि यह, वह जो कुछ लिखते थे, उससे आगे बढ़ता जाता था। वह अपने किये हुए कार्य से कभी संतुष्ट नहीं थे: जितना ही अधिक वह अध्ययन करते थे, अनन्वेषित ज्ञान-सागर उतना ही अधिक असीम प्रतीत होता था। जितने ही अधिक प्रश्नों को वह हल करते थे, उतनी ही अधिक समस्याएं उनके सामने प्रस्तुत हो जाती थीं।

उनकी पांडुलिपियां अधूरी रह गयीं, नये विचारों को जन्म देते हुए उनके चिंतन का क्षितिज निरंतर व्यापक होता गया। आत्मालोचना का शैतान मार्क्स को कोई भी चीज तब तक प्रकाशित नहीं करने देता था, जब तक वह प्रश्न का इसके सभी पहलुओं के साथ अध्ययन नहीं कर लेते थे।

आर्नोल्ड रूगे मार्क्स के इस अध्ययन-काल के बारे में निम्नलिखित ढंग से लिखते हैं: "वह बहुत-कुछ पढ़ रहे हैं: वह असाधारण तीव्रता से काम करते हैं और आलोचनात्मक प्रतिभा से संपन्न हैं, जो कभी-कभी अत्यधिक अपकर्षी द्वंद्ववाद बन जाती है, लेकिन वह कोई भी चीज़ पूरी नहीं कर रहे हैं, वह पुस्तकों के अनंत सागर में रह-रह कर अपने को झोंक देते हैं।"*

असाधारण रूप से कठोर वैज्ञानिक अनुसंधान और अपने किये हुए कार्य से निरंतर असंतोष से मार्क्स हतोत्साहित हुए, मगर वह इसके बारे में कुछ नहीं कर सके।

* ओ० कोर्नू, 'कार्ल मार्क्स और फ़्रेडरिक एंगेल्स। जीवन और कार्य'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

उनका एकमात्र हल था लगातार कई रातें सोये बिना और भी कठोर परिश्रम करना। आर्नोल्ड रूगे के शब्दों में, "मार्क्स, अगर संभव हो तो, और भी अधिक चिड़चिड़ा और क्रोधी हैं, विशेष रूप से जब वह बीमार पड़ने तक काम करते रहते हैं और तीन-तीन या चार-चार रातों तक सोने नहीं जाते"*।

इन सब अध्ययनों का सबसे महत्वपूर्ण नतीजा था वह बृहत् अधूरी कृति, जो '१८४४ की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियों' के नाम से सुप्रसिद्ध है।

इस कृति पर उस "प्रसव-पीड़ा" की छाप है, जिसमें मार्क्सवाद का जन्म हुआ, जो खास तौर पर हेगेल और फ़ायरबाख़ से ली गयी शब्दावली में देखा जा सकता है। लेकिन कुछ पुरानी दार्शनिक अवधारणाओं के मुरझाये खोलों में से समाज के एक मूलभूत नये दृष्टिकोण के अंकुर फूट निकले, संसार की व्याख्या का एक दृष्टिकोण, जो पहले विश्व को नहीं मालूम था।

इसमें पहली बार समाज के विश्लेषण के आर्थिक, दार्शनिक और सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिकोण व्यापक रूप से संश्लेषित किये गये हैं। इसमें मनुष्य को संपूर्ण पड़ताल के केन्द्र में रखा गया है और वह प्रकृति तथा समाज के साथ अपने संबंधों की संपूर्ण जटिलता में प्रकट होता है। इसमें लेखक सच्चे और सुसंगत मानवतावादी

---

* ओ॰ कोर्नू, 'कार्ल मार्क्स और फ़्रेडरिक एंगेल्स : जीवन और कार्य'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

दृष्टिकोण से बुर्जुआ समाज में जीवन की अमानवीय परिस्थितियों का जीता-जागता उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसमें राजनीतिक योद्धा के क्रोध और मनोवेग का महान चिंतक की विश्लेषणात्मक प्रौढ़ता के साथ संगम हुआ है। इसमें ठोस यथार्थ के प्रति यथातथ्य रुख को सामाजिक विकास के सुदूर क्षितिजों के विचार से समन्वित किया गया है। यह कृति अत्यंत गहन समस्याएं पेश करती है, जिनका महत्व सदियों तक बना रहेगा।

यही कारण है कि वर्तमान समय में सभी देशों में दार्शनिक, अर्थशास्त्री और समाजशास्त्री '१८४४ की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियों' में निरंतर दिलचस्पी प्रदर्शित करते हैं।

'पांडुलिपियों' मे विचारों की निधि ऐसी है कि बडी से बड़ी टीका अथवा अत्यंत वस्तुगत व्याख्या में भी इसका वर्णन नहीं किया जा सकता : सैद्धांतिक विचार की निर्भीकता, व्यापकता और कलात्मक सौंदर्य का पूर्ण रसास्वादन करने के लिए इस कृति को स्वयं ही और कई बार पढ़ना होगा, जो एकतरफ़ा विचारों की दीवारें, मतवादी स्कीमों की संकीर्णता को तोड़ देती है, जो न केवल प्रकृति की व्याख्या से, बल्कि सामाजिक विकास की व्याख्या से भी अंतिम भाववादी जंजीरों को हटा देती है।

इस कृति में मार्क्स उसी विचार से आगे बढ़ते हैं, जिस पर वह पहले ही पहुंच चुके हैं यानी यह कि मानवजाति के संपूर्ण इतिहास के स्पष्टीकरण की खोज भौतिक

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

संबंधों में की जानी चाहिए। वह इसे निम्नलिखित रूप में प्रतिपादित करते हैं : "... संपूर्ण क्रांतिकारी आंदोलन अनिवार्यतः अपना आनुभविक और सैद्धांतिक आधार निजी संपत्ति के संचालन ठीक-ठीक कहें तो, अर्थव्यवस्था में पाता है।"

मनुष्य का उत्पादक जीवन, उसका श्रम – यही सामाजिक प्रगति का स्रोत है। मनुष्य का श्रम विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में विभिन्न रूप धारण करता है। अंत में, "कुल मिलाकर, आबादी के सिर्फ़ दो वर्ग रह जाते हैं – मज़दूर वर्ग और पूंजीपति वर्ग।"

फ़ायरबाख के अमूर्त मानव की जगह मार्क्स मज़दूर को स्थापित करते हैं। फ़ायरबाख के मनुष्य-मनुष्य संबंधों की जगह मार्क्स मज़दूर और पूंजीपति के संबंधों, जीवंत श्रम और संचित श्रम (पूंजी) के संबंधों की स्थापना करते हैं।

उस दुनिया में, जहां हर चीज़ खरीदी और बेची जाती है, जहां मुद्रा-शक्ति सर्वोच्च और परम है, वहां मज़दूर भी एक माल है। उसके पास न तो पूंजी होती है, न ही ज़मीन का लगान। उसके पास केवल श्रम करने की योग्यता होती है और श्रम ही समाज की संपूर्ण संपदा का उत्पादन करता है।

बुर्जुआ समाज के इसी वास्तविक तथ्य को मार्क्स अपने विश्लेषण का प्रस्थान-बिंदु बनाते हैं।

मज़दूर भौतिक संपदा का उत्पादन करता है। लेकिन यह संपदा उसकी नहीं होती। इसके अलावा, यह संपदा

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

केवल मज़दूर से अलग कर दी जाती है, बल्कि एक परायी शक्ति के रूप में उसकी विरोधी भी है, जो पूंजी के रूप में मज़दूर पर शासन करती है। मार्क्स इस चीज़ को श्रम का अन्यसंक्रामण कहते हैं।

मज़दूर जितना ही अधिक परिश्रम करता है, उसके द्वारा निर्मित संपदा की दुनिया उतनी ही अधिक बढ़ती जाती है। लेकिन इसके साथ ही, मज़दूर पर इस संपदा का शासन भी बढ़ता जाता है। पूंजीपति निरंतर शक्तिशाली बनता जाता है और मज़दूर दिन-प्रतिदिन निर्धन एवं अपने अधिकारों से भी वंचित होता जाता है।

मज़दूर उसी वस्तु का दास बन जाता है, जिसका वह उत्पादन करता है। पूंजी, मुद्रा-संपदा के रूप में मज़दूर का संचित श्रम मज़दूर को किराये पर लेता है, उसे जीवन-निर्वाह के साधन प्रदान करता है और उसके जीवंत श्रम, स्वयं उसके जीवन के साथ ही मनमर्ज़ी करता है।

मज़दूर का श्रम आश्चर्यजनक वस्तुओं की सृष्टि करता है, लेकिन यह मज़दूर की निर्धनता को भी जन्म देता और बढ़ाता है। यह भव्य महलों का निर्माण करता है, लेकिन मज़दूरों के लिए गंदी बस्तियां भी पैदा करता है। यह सौंदर्य का सृजन करता है, लेकिन स्वयं मज़दूर को कुरूप बना देता है। यह शारीरिक श्रम के स्थान पर मशीनें मात्र इसलिए क़ायम करता है, ताकि स्वयं मज़दूरों को ही मशीनों में बदल दिया जाये। उसका कार्य जितना ही अधिक जटिल बनता जाता है, उसकी

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मानसिक तबाही उतनी ही अधिक बढ़ती जाती है।

बाद में मार्क्स ने 'पूंजी' और इसके प्रारंभिक कार्यों में सिर के बल खड़ी इस दुनिया का विस्तृत रूप से विश्लेषण किया है, जहां वस्तुएं अपने स्रष्टा पर शासन करती हैं, जहां लोगों के बीच संबंध वस्तुओं के बीच संबंधों के रूप में प्रकट होते हैं। '१८४४ की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियों' में उन्होंने जो चित्र प्रस्तुत किया है, वह इसमें और भी जीवंत और डरावना रूप ग्रहण कर लेता है।

लेकिन आइए, हम 'पांडुलिपियों' पर गौर करें और मार्क्स के तर्कों को समझें। अपने श्रम के फलों से मजदूर का अन्यसंक्रामण समस्या का मात्र एक पहलू है। दूसरा ऐसा ही महत्वपूर्ण पहलू यह है कि मजदूर के कार्यकलाप की जीवंत प्रक्रिया ही अन्यसंक्रामित स्वरूप की होती है, यह उसके मानव सारतत्व का आत्म-अन्यसंक्रामण है।

इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि मजदूर न तो अपनी स्वतंत्र इच्छा से श्रम करता है और न उसका कार्यकलाप आत्म-कार्यकलाप होता है, बल्कि वह जबरी और अनिवार्य श्रम होता है, जिसे संपन्न करने की प्रक्रिया में मजदूर का अपने पर कोई अधिकार नहीं होता, बल्कि उल्टे वह मालिक के अधिकार में होता है।

इस जबरी श्रम-प्रक्रिया में मजदूर अपनी शारीरिक और मानसिक क्षमता स्वतंत्रतापूर्वक विकसित नहीं कर पाता, उल्टे वह जर्जर होता जाता है, शारीरिक कष्ट

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

करता है और मस्तिष्क को नष्ट कर देता है। तर्कसंगततः श्रम में उसे सच्ची मानवीय आवश्यकता – सृजन की आवश्यकता – की पूर्ति का संतोष मिलना चाहिए। लेकिन उसके लिए श्रम जीवन-निर्वाह की आवश्यकता की पूर्ति का मात्र एक साधन होता है।

श्रम का अन्यसंक्रामित स्वरूप इस चीज़ से बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि लोग इसे एक अभिशाप मानते हैं, वे इसे विरक्ति-भाव से संपन्न करते हैं और इससे महामारी की तरह दूर भागते हैं।

श्रम – इस अत्यंत मानवीय आवश्यकता – की प्रक्रिया में मज़दूर अपने को मानव प्राणी नहीं अनुभव करता। वह मात्र एक विवश पशु, एक जीवित मशीन की भांति काम कर रहा होता है। इसके विपरीत, श्रम के परे, अपने प्राकृतिक, सारतः पशु-कार्यकलापों – खाना, पीना, सोना, यौनचर्या, आदि – में ही मज़दूर अपने को स्वतंत्र रूप से काम करता हुआ मानव प्राणी पाता है। "जो चीज़ पशु की है, वह मानव की बन जाती है और जो चीज़ मानव की है, वह पशु की बन जाती है।"

इस तरह, श्रम की प्रक्रिया में मज़दूर का आत्म-अन्यसंक्रामण होता है। और इसका प्रत्यक्ष परिणाम है मानव से मानव का अन्यसंक्रामण, मज़दूर और पूंजीपति की विरोधी स्थितियां।

साधारणतया, श्रम के अन्यसंक्रामण और आत्म-अन्यसंक्रामण की समस्या के बारे में मार्क्स के प्रतिपादन को मात्र नकारात्मक दृष्टि से आर्थिक यथार्थ की विनाशकारी

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

आलोचना के रूप में आंका जाता है। लेकिन इस आलो[illegible] में मार्क्स का सकारात्मक सिद्धांत, जिसके आधार [illegible] उन्होंने विद्यमान व्यवस्था का मूल्यांकन किया है, [illegible] यह विचार कि मानव श्रम और मानव संबंध कैसे [illegible] चाहिए यानी कम्युनिस्ट समाज का उनका विचार [illegible] साफ़ देखा जा सकता है।

मार्क्स के विचार में श्रम को व्यक्ति की आ[illegible] **अभिपुष्टि** होना चाहिए न कि आत्म-अन्यसंक्रामण। [illegible] आजीविका का साधन नहीं, बल्कि जीवन का सा[illegible] होना चाहिए, एक ऐसी प्रक्रिया, जिसमें मनुष्य [illegible] योग्यताओं को पूरी तरह विकसित करता है। श्रम [illegible] प्रोत्साहन सृजन हेतु गहन आंतरिक आवश्यकता न [illegible] बाह्य विवशता होना चाहिए।

Ökonomische Studien (Exzerpte)—'अर्थशा[illegible] अध्ययन (उद्धरण)'—नामक कृति में, जो '१८४[illegible] आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियों' से बहुत मि[illegible] जुलती है, मार्क्स अन्यसंक्रामित मनुष्य की इस [illegible] को मनुष्य के वास्तविक सामाजिक सारतत्व, "मानव[illegible] के सच्चे जीवन" के मात्र विद्रूप के रूप में वर्णन करते [illegible]

Exzerpte के निम्नलिखित अंश से स्पष्ट [illegible] जाता है कि कैसे युवा मार्क्स ने मानवीय ढं[illegible] संगठित दुनिया में [illegible] कम्युनिस्ट समाज में इस [illegible] विक [illegible] का चित्रण किया है।

"[illegible] हमने लोगों के रूप में उ[illegible] किया है: हममें [illegible] प्रत्येक ने अपनी उत्पादन-प्रक्रि[illegible]

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo
स्वयं को और दूसरे को द्विगुणित रूप से अभिपुष्ट किया है। मैंने १) ... कार्यकलाप के दौरान जीवन की वैयक्तिक अभिव्यक्ति और वस्तु का अवलोकन करते हुए वैयक्तिक आनंद प्राप्त किया है... २) मेरी पैदावार के आपके आनंद या आपके उपयोग में मुझे इस अनुभूति का भी प्रत्यक्ष आनंद मिला कि अपने श्रम में... मैंने एक ऐसी वस्तु बनायी है, जो दूसरे मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करती है; ३) मैं आपके और मानवजाति के बीच मध्यस्थ रहा हूं और आपने मुझे स्वयं अपने अस्तित्व के पूरक तथा स्वयं अपने ही अभिन्न अंग के रूप में जाना और महसूस किया है... ४) अपनी वैयक्तिक जीवन-अभिव्यक्ति में मैंने प्रत्यक्षतया आपकी जीवन-अभिव्यक्ति का सृजन किया है और फलतः अपने वैयक्तिक कार्यकलाप में मैंने प्रत्यक्षतया अपने सच्चे अस्तित्व, अपने मानवीय, अपने सामाजिक सारतत्व की पुष्टि और सिद्धि की है।

"मेरा श्रम जीवन की स्वतंत्र अभिव्यक्ति, फलतः जीवन का आनंद होगा। निजी स्वामित्व की विद्यमानता में यह जीवन का अन्यसंक्रामण है, इसलिए कि मैं जीवित रहने के लिए, जीवित रहने के साधन प्राप्त करने के लिए श्रम करता हूं।"

बुर्जुआ राजनीतिक अर्थशास्त्र केवल भौतिक मूल्यों की दुनिया को ही संपदा मानता है। इसके लिए मजदूर मात्र संपदा बढ़ाने का एक साधन होता है। यह मजदूर को अपनी आवश्यकताओं को दबाने, मुद्रा और चीजों की संचित करने के लिए जीवन की खुशियों को तिलांजलि देने का उपदेश देता है।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जितना ही कम खायेंगे, पियेंगे और किताबें खरीदेंगे, जितना ही कम थियेटर, बॉल-नृत्य, कैफ़े जायेंगे, जितना ही कम सोचेंगे, प्रेम करेंगे, चिंतन करेंगे, गायेंगे, ... करेंगे, उतना ही अधिक बचायेंगे, उतना ही बड़ा आपका खजाना होगा, आपकी पूंजी, आपके द्वारा प्राप्त ... उतनी ही अधिक हो जायेंगी।

इस दृष्टिकोण के अनुसार मुद्रा-विहीन, वस्तु-विहीन मनुष्य कुछ नहीं है। वस्तुओं और मुद्रा के बल पर ... समाज में प्रभाव और महत्व प्राप्त करता है, वे ... खुद अपने नजरों में भी महत्वपूर्ण बना देती हैं।

जो काम आप स्वयं नहीं कर सकते, उन्हें आपका पैसा कर सकता है। आपका पैसा खा और पी सकता है, बॉल-नृत्य और थियेटर जा सकता है, यह सफ़र कर सकता है, कला, शिक्षा, ऐतिहासिक कलाकृतियां, राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर सकता है।

'१८४४ की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियों' में मार्क्स एथेन्स के टिमोन का एकालाप उद्धृत करते हैं जिसमें शेक्सपियर "सुनहले शैतान" की सर्वशक्तिमत्ता का वर्णन करते हैं:

यह पीला गुलाम
धर्मों को जोड़-तोड़ देगा,
अभिशप्तों को वरदान देगा,
... की पूजा करवायेगा,
चोरों को उपाधियां देगा,

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

उनके सामने लोगों को घुटने टिकवायेगा,
मान-सम्मान दिलवायेगा,
और सिनेटरों के साथ तख्त पर बैठायेगा...

मार्क्स के विचार में शेक्सपियर "अत्युत्तम ढंग से मुद्रा की वास्तविक प्रकृति का चित्रण करते हैं; खास तौर से मुद्रा के दो गुणों पर ज़ोर देते हैं :

"यह प्रत्यक्ष दिव्यता है – संपूर्ण मानवीय और प्राकृतिक गुणों का उनके वैपरीत्यों में रूपांतरण, वस्तुओं की सार्विक गड्डमड्ड और तोड़-मरोड़ है।

"यह आम वेश्या, लोगों और राष्ट्रों की आम दलाल है... मुद्रा मानवजाति की अन्यसंक्रामित शक्ति है।"

शेक्सपियर और गेटे के काव्य से प्रेरित इन विचारों को बाद में मार्क्स ने 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा का एक प्रयास' और 'पूंजी' में विकसित किया।

उलटी-पलटी दुनिया में, अन्यसंक्रामण की दुनिया में, जैसा कि युवा मार्क्स ने दिखाया, हस्तगतकरण ही जीवन का उद्देश्य बन जाता है और सच्ची मानवीय आवश्यकताओं के विकास के स्थान पर वस्तुओं के प्रति उपयोगितावादी उपभोक्ता दृष्टिकोण प्रकट होता है। चीज़ मनुष्य का मापदंड बन जाती है न कि मनुष्य चीज़ का मापदंड। भौतिक संपदा मानवीय योग्यताओं की संपदा का स्थान ले लेती है।

अन्यसंक्रामण की दुनिया भोंडी, भद्दी आवश्यकताओं, हस्तगतकरण की दुनिया है। "निजी संपत्ति ने हमें ऐसा

15-465

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मूढ़ और एकतरफ़ा बना दिया है कि वस्तु को हम अपना मानते हैं, जब उसका उपयोग हो जाता है, यह प्रत्यक्षतया हस्तगत हो जाती, यानी खायी, पहनी और रही जाती है।" सभी शारीरिक और मानसिक बोधों का स्थान स्वत्व बोध ने ले लिया है।

परिणामस्वरूप वस्तुएं न केवल श्रम-प्रक्रिया में, घर में भी मनुष्य पर हावी होती हैं। वस्तुओं पर दिलचस्पी संकेंद्रित करते हुए मनुष्य को यह पता नहीं चलता कि वह उनका ग़ुलाम बनता जा रहा कि वे न केवल उसके श्रम के स्वरूप और गति बल्कि उसके अवकाश के स्वरूप और पद्धति तथा लोगों के साथ उसके निजी संबंधों के स्वरूप और को भी बलपूर्वक निर्देशित कर रही हैं।

मानवीय ढंग से संगठित दुनिया में अन्यसंक्रामण के लन का अर्थ होगा न केवल मनुष्य के साथ मनुष्य संबंधों के स्वरूप में, बल्कि उसके जीवन के संपूर्ण मा में भी परिवर्तन।

"मनुष्य को मनुष्य की तरह मानो," मार्क्स हैं, "और संसार के साथ उसके संबंध को मानवीय की तरह मानो: तब तुम प्रेम के बदले प्रेम, बदले विश्वास पा सकते हो। यदि तुम कला का आनंद चाहते हो, तो तुम्हें कलात्मक रूप से परिष्कृत होना चाहिए, यदि तुम दूसरे लोगों पर प्रभाव डालना हो, तो तुम्हें प्रेरक और उत्साहवर्द्धक प्रभाव वाला व्यक्ति होना चाहिए। मानव और प्रकृति के साथ तु

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

हर संबंध तुम्हारे **सच्चे वैयक्तिक** जीवन की **विशिष्ट**, तुम्हारी इच्छा के विषय के अनुरूप अभिव्यक्ति होनी चाहिए। यदि तुम्हारा प्रेम दूसरे में प्रेम अनुप्राणित नहीं करता अर्थात यदि प्रेम के रूप में तुम्हारा प्रेम पारस्परिक प्रेम जागृत नहीं करता, यदि तुम एक स्नेहमय व्यक्ति के रूप में अपनी **जीवंत अभिव्यक्ति** के द्वारा अपने को एक **प्रिय व्यक्ति** नहीं बनाते, तो तुम्हारा प्रेम निःसत्व और दुर्भाग्य है।"

मार्क्स ने कहा कि मूल्य-संपदा के अपने आत्म-निर्भर सिद्धांत के साथ बुर्जुआ राजनीतिक अर्थशास्त्र मनुष्य के निषेध की सुसंगत शिक्षा है।

कम्युनिस्ट समाज में वस्तु-संपदा वही बन जाती है, जो इसे होना चाहिए अर्थात यह ओजस्वी मानव कार्य-कलाप का मात्र एक साधन बन जाती है न कि मानव जीवन का उद्देश्य। "... राजनीतिक अर्थशास्त्र की **समृद्धि** और **निर्धनता** के स्थान पर **समृद्ध मनुष्य** और **समृद्ध मानव-आवश्यकता** क़ायम हो जाती है।"

'पूंजी' और इसके प्रारंभिक कार्यों में मार्क्स इस विचार पर बार-बार लौट कर आते हैं। वह घोषणा करते हैं कि समाज की उच्चतम संपदा, उच्चतम पूंजी वह नहीं है, जो मनुष्य पैदा करता है, बल्कि स्वयं मनुष्य, व्यक्तियों की आवश्यकताओं, योग्यताओं, खुशियों, उत्पादक शक्तियों, आदि की सार्विकता है"।* कम्युनिस्ट

* का० मार्क्स, 'पूंजीवादी उत्पादन से पहले रूप', १८५७-५८।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

समाज में मनुष्य संपूर्ण सामाजिक उत्पादन का उ होता है और भौतिक मूल्य इस उद्देश्य को प्राप्त क का मात्र एक साधन, शर्त और आधार होते हैं।

प्रस्थान-बिंदु (आत्म-अन्यसंक्रामण) और उद्देश्य प्रकट करने के बाद मार्क्स इस उद्देश्य की ओर बढ़ने मार्ग, अन्यसंक्रामण के उन्मूलन के मार्ग की रूप प्रस्तुत करते हैं। यह प्रश्न अब भी विभिन्न देशों समाजविज्ञानियों और मार्क्सवादवेत्ताओं के बीच उत्तेजित बहस का विषय बना हुआ है।

मार्क्स पूर्णतया स्पष्ट और असंदिग्ध ढंग से तथ्य से आगे बढ़ते हैं कि अन्यसंक्रामण का उन्मूलन तया निजी संपत्ति के उन्मूलन पर निर्भर है। निजी "अन्यसंक्रामित श्रम की पैदावार, परिणाम, आव नतीजा" यानी आर्थिक अन्यसंक्रामण है।

विभिन्न रूपों में अन्यसंक्रामण के सभी अर्थभेद पहलू (राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक, नैतिक, आ आर्थिक, अन्यसंक्रामण में एकत्रित होते हैं। संपूर्ण दासता मजदूर की दासता के उत्पादन के साथ संबंध में अभिव्यक्ति पाती है। "... सभी दासता के मात्र इस संबंध के रूपभेद और परिणाम होते यहां मार्क्स तत्वतः समाज के जीवन में उत्पादन की मुख्य भूमिका के विचार का प्रतिपादन कर रहे

हेगेल के लिए सभी अन्यसंक्रामण का अर्थ विचार अन्यसंक्रामण था और इस प्रकार के अन्यसंक्रामण उन्मूलन भी व्यक्ति के मस्तिष्क में संभव है।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

चूंकि वह संसार के साथ अपने संबंधों की दासता का अनुभव करता है, इसलिए उसका अन्यसंक्रामण ग़ायब नहीं होता, बल्कि यह बढ़ता ही जाता है।

तैरना सीखने के लिए अपने को तैरते हुए कल्पना करना ही काफ़ी नहीं है, स्वतंत्र होने के लिए अपने को स्वतंत्र मान लेना ही काफ़ी नहीं है। "निजी संपत्ति के विचार का उन्मूलन करने के लिए कम्युनिज़्म का **विचार** पूर्णरूपेण पर्याप्त है। वास्तविक निजी संपत्ति का उन्मूलन करने के लिए **वास्तविक** कम्युनिस्ट कार्रवाई की आवश्यकता होती है।"

मार्क्स को इसमें संदेह नहीं है कि "इतिहास इस कम्युनिस्ट कार्रवाई की ओर लायेगा"। लेकिन वह अपने को कल्पनावादियों की तरह भ्रमित नहीं करते कि निजी संपत्ति का उन्मूलन जल्दी और कष्टरहित ढंग से होगा। उन्हें अपने ऐतिहासिक बोध से सही तौर पर ज्ञात हो गया कि यह "बहुत कठिन और लंबी प्रक्रिया" होगी।

निजी संपत्ति अकस्मात् जादू की छड़ी घुमा देने से नहीं पैदा हो गयी; यह विभिन्न रूप धारण करते हुए सदियों के दौरान विकास-प्रक्रिया से गुज़रती रही है और उसका विकास अभी भी पूरा नहीं हुआ है। इसने अब औद्योगिक पूंजी का रूप धारण कर लिया है और यह इस रूप में तब तक विकसित होती रहेगी, जब तक यह समाज के सभी अवयवों पर प्रभुत्व नहीं जमा लेती, तब तक यह अपने अत्यंत सार्विक रूप में विश्व ऐतिहासिक शक्ति नहीं बन जाती।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

इस विकसित रूप में, जीवन से पूर्ण, निजी ... अपनी मृत्यु, अपने विलोम – औद्योगिक मजदूरों का ... डित, अन्यसंक्रामित श्रम – को जन्म देती है।

इस क्षण से यह अपने उन्मूलन की ओर बढ़ती ... है, लेकिन इसकी मृत्यु का रास्ता वैसा ही है जैसा ... इसकी प्रौढ़ता का : यह कम्युनिज़्म के विकास के विभि... रूपों और चरणों में प्रकट होती है।

जैसा कि मार्क्स स्पष्टतः अमरीका और इंग्लैं... निर्धनों के कम्यूनों की स्थापना में प्रारंभिक गलतियों ... ध्यान में रखते हुए दिखाते हैं, कम्युनिज़्म पहले ... समतावादी कम्युनिज़्म के रूप में प्रकट होता है। "कम्युनिज़्म" बर्बर साधनों के साथ निजी संपत्ति ... बर्बर प्रकृति के खिलाफ प्रतिवाद व्यक्त करता है। ... असमानता को जन्म देने वाली निजी संपत्ति से ... "विमुग्ध" रहता है कि यह सबको समान स्तर पर (... स्त्रियों तक !) लाना चाहता है। यह उन सभी चीज़ों ... नष्ट कर देने की चेष्टा करता है, जो मनुष्य-मनुष्य ... फ़र्क़ करती है, जो सबकी संपत्ति नहीं बन ...

अतः भोंडा और बैरक-आवासीय "कम्युनिज़्म" ... को मनुष्य की प्रतिभा, उसके व्यक्तित्व से पृथक् ... लेता है। यह सबको मजदूरों में बदल देने की ... करता है, न कि मजदूर के अन्यसंक्रामित श्रम का ... करने की।

ऐसा कम्युनिज़्म, जो हर क्षेत्र में मनुष्य के व्यक्ति... को निषेध कर देता है, ...थ ही "संस्कृति और ...

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

की संपूर्ण दुनिया" का भी निषेध है। इसका आदर्श इनी-गिनी आवश्यकताओं वाले निर्धन व्यक्ति की अस्वाभाविक सादगी है। यह आदर्श एक ऐसी "सादगी" का प्रमाण है, जो न केवल निजी संपत्ति से ऊपर उठने में असफल रही है, बल्कि अभी उस तक पहुंची भी नहीं है।

इस तरह के "कम्युनिज़्म" में श्रम और पूंजी की परस्पर-विरोधी प्रकृति का उन्मूलन नहीं किया जाता। श्रम (अपने सबसे साधारण रूप में) एक ऐसे प्रवर्ग के रूप में प्रकट होता है, जिसमें हरेक व्यक्ति को रखा जाता है, और पूंजी सार्विक पूंजी और शक्ति के रूप में।

मार्क्स ने इस "भोंडे कम्युनिज़्म" को "निजी संपत्ति की निकृष्टता" की अभिव्यक्ति कहा। यह देखना मुश्किल नहीं है कि इस आलोचना का सैद्धांतिक और व्यावहारिक महत्व आज भी बना हुआ है, कि यह अतिक्रांतिकारी लफ़्फ़ाज़ी के प्रेमियों द्वारा महान कम्युनिस्ट विचारों को बाज़ारू बनाने और बदनाम करने तथा मानवजाति को बदहाल बनाने की बैरक-आवासीय विधियों के ख़िलाफ़ संघर्ष को सहायता करती है।

भविष्य के बारे में उन कुछ विचारों को ध्यान में रखते हुए, जो उस काल के कल्पनावादी समाजवादियों और टुटपुंजिया बूर्जुआ जनवादियों के लिए अभिलाक्षणिक थे, मार्क्स जिस दूसरे रूप का ज़िक्र करते हैं, वह ऐसा कम्युनिज़्म है, जिसने अपना राजनीतिक स्वरूप नहीं खोया। यह जनवादी या निरंकुश होता है। यह निजी संपत्ति का बंदी बना रहता है और इसके द्वारा संदूषित होता है।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अंतिम, तीसरा रूप मानव संस्कृति और म... की संपूर्ण संपदा के संरक्षण और विकास के आधार ... सभी रूपों में अन्यसंक्रामण के सच्चे उन्मूलन के तौर ... निजी संपत्ति के "वास्तविक" उन्मूलन की अपेक्षा ... है। यह कम्युनिज़्म पूर्णतः विकसित मानवतावाद ... भांति है, यह "मनुष्य और प्रकृति तथा मनुष्य ... मनुष्य के बीच संघर्ष का **सच्चा** समाधान" है।

इतिहास की संपूर्ण प्रगति इस कम्युनिज़्म के जन्म ... वास्तविक कार्रवाई, इसके आनुभविक अस्तित्व का ... है। इस समस्या का समाधान "केवल समझ की ... हर्गिज़ नहीं है, बल्कि जीवन की **वास्तविक** समस्या ... जिसे **दर्शन** वस्तुतः इस वजह से हल नहीं कर सका ... इसने इस समस्या को मात्र एक सैद्धांतिक समस्या ... में देखा"।

एक साल बाद मार्क्स ने इस विचार को ... सुप्रसिद्ध सूक्ति में सूत्रित किया: "दार्शनिकों ने ... विभिन्न रूपों में दुनिया की व्याख्या ही की है, ... असली काम तो इसे **बदलने** का है।"*

और १५–२० साल बाद मार्क्स ने अपनी ... कृतियों में उन विचारों को बड़ी गंभीरतापूर्वक और ... वार विकसित किया, जिन्हें उन्होंने '१८४४ की ... और दार्शनिक पांडुलिपियों' में व्यक्त किया था।

ये श्रम और पूंजी की परस्परविरोधी प्रकृति ...

---

* कार्ल मार्क्स, 'फ़ायरबाख पर निबंध', १८...

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

माल के रूप में मज़दूर, माल की जड़पूजा, मज़दूर के एक जीवित मशीन में, मशीन के एक पुर्जे में रूपांतरण के बारे में विचार थे। ये माल संबंधों की दुनिया में मानव व्यक्तित्व के अन्यसंक्रामण के विचार थे; जहां उद्यमकर्ता पूजी का मूर्त रूप और सर्वहारा श्रम-शक्ति का मूर्त रूप होता है।

अन्यसंक्रामण की दार्शनिक अवधारणा की जगह मार्क्स ने आगे चलकर अर्थशास्त्र के यथातथ्य और सुनिश्चित प्रवर्गों का उपयोग किया। लेकिन यह अधिकतर शब्दावली का सवाल है, न कि सिद्धांत का।

'१८४४ की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियां' नामक कृति नये विश्व-दृष्टिकोण की एक मेधावी रूपरेखा है, एक ऐसे कार्यक्रम की रूपरेखा, जिसका प्रतिपादन कार्ल मार्क्स के शेष जीवन का मुख्य कार्य था।

इस कृति का एक असाधारण भाग्य था। दुनिया को इसके बारे में इसकी रचना के लगभग ९० साल बाद और लेखक की मृत्यु के ५० साल बाद मालूम हुआ। लेकिन इसने तुरंत ही ऐसे ध्यान आकर्षित किया, जैसे कि यह अत्याधुनिक विषय पर अभी-अभी लिखी गयी थी। तब से विभिन्न देशों में 'पांडुलिपियों' के बारे में प्रकाशित पुस्तकों का अंबार लग गया है, उनके बारे में साहित्य-सरिता लगातार बढती जा रही है और विवाद अधिकाधिक तीखे बनते जा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस कृति के रचना-क्षण से जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे यह अधिकाधिक आधुनिक बनती जाती है।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

इसमें जो समस्याएं उठायी गयी हैं, वे मार्क्सवाद के भोंडे-जड़सूत्रवादी से लेकर भोंडे-संशोधनवादी तक के नानाविध विचारों के बीच संघर्ष का क्षेत्र बन गयी हैं और मजेदार बात यह है कि दोनों "चरमों" में कुछ न कुछ मिलता-जुलता है। दोनों ही दो मार्क्सों—युवा और प्रौढ़—के बीच फ़र्क करते हैं। सिर्फ़ वे इसे अलग-अलग ढंग से करते हैं: भोंडे-जड़सूत्रवादी युवा मार्क्स को "सच्चा" मार्क्स और भोंडे-संशोधनवादी प्रौढ़ मार्क्स को "सच्चा" मार्क्स मानते हैं।

दोनों ही दृष्टिकोण मार्क्सवाद की तोड़ी-मरोड़ी सरलीकृत अवधारणा दिखाते हैं। यह इसलिए है कि मान-सिक जड़ता के कारण मार्क्सवाद को मतवादी कसौटी से आंका जाता है। लेकिन 'पांडुलिपियां' और 'पूं... दो सिद्धांतों, दर्शन की ऐसी दो पूर्ण प्रणालियों के रूप में एक-दूसरे का विरोध नहीं करतीं, जहां पहले के केन्द्र में "मानवतावाद" और दूसरे के केन्द्र में "अर्थवाद" है।

यदि वे एक-दूसरे का "विरोध" भी करती हैं, तो यह मात्र स्रोत और शिखर के रूप में ही करती हैं: एक ऐसी कृति के रूप में, जहां सर्वविदित परिघटनाओं के विश्लेषण की एक नयी विधि खोज निकाली जाती है और एक ऐसी कृति के रूप में, जहां इसे अमल में लाया जाता है। एक दार्शनिक-आर्थिक कृति के रूप में और आर्थिक-दार्शनिक कृति के रूप में।

मार्क्सवाद एक विधि है न कि एक मत, जैसा कि इसके संस्थापक अक्सर जोर दिया करते थे। अतः

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

विभिन्न कृतियों के "तैयारशुदा" सूत्रों की व्याख्या द्वारा नहीं समझा जा सकता। मार्क्सवाद की जीवंत आत्मा को केवल गत्यात्मकता, विचारों की उत्पत्ति और विधि की निरंतर परिनिष्पन्नता में ही समझा जा सकता है।

मतवादी संकुचित मानसिकता को 'पूंजी' में कोई "मानवतावाद" नहीं दिखायी देता, क्योंकि यह मार्क्स की संपूर्ण विरासत में उनकी इस कृति के स्थान को नहीं समझ पाती। यह नहीं समझ पाती कि किन मानवीय आदर्शों के लिए उन्होंने "आर्थिक मानव" का अध्यवसायी अध्ययन किया। यह मार्क्स के मानवतावाद को इसलिए नहीं देखती कि यह दर्शन झाड़ने वाले दिवा-स्वप्नदर्शियों के भावुक परोपकार को "मानवतावाद" के रूप में मानने को आदी है।

दूसरी ओर, युवा मार्क्स के आलोचक, जो उसी संकुचित मानसिकता से ग्रस्त हैं, मार्क्सवाद की संरचना के लिए 'पांडुलिपियों' का जो महान महत्व है, उसे समझने में असमर्थ हैं। "अन्यसंक्रामण" और "मानवतावाद" के बारे में सुनते ही वे संदेहात्मक ढंग से नाक-भौं चढ़ा लेते हैं—क्या ये अवधारणाएं पर्याप्ततः मार्क्सवादी हैं? वे मार्क्स की विचार-निधि को मार्क्सवाद की उस सरलीकृत व्याख्या की "प्रोक्रस्टस की शय्या"* में ज़बर्दस्ती नहीं

* यूनानी पौराणिक कथा में प्रोक्रस्टस नाम का डाकू अपने शिकारों को शय्या पर लिटा देता था और यदि उनके पैर छोटे पड़ते थे, तो उन्हें खींचकर बढ़ा देता था और यदि बड़े होते थे, तो उन्हें काटकर शय्या के बराबर कर देता था। – अनु०

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ठूंस सकते, एकमात्र चीज़ जिसे वे समझने में समर्थ हैं और इसलिए "शुद्ध" और "अशुद्ध" मार्क्स तथा "प्रौढ़" और "अप्रौढ़" मार्क्स के बीच फ़र्क करने को प्रवृत्त होते हैं।

मार्क्स का मानवतावाद एक अस्थायी सैद्धांतिक मनो... नहीं था, जैसा कि मार्क्स के शब्दों में, "भोंडे ... निज़्म" के स्वैच्छिक या अस्वैच्छिक सिद्धांतकार सोच... चाहेंगे। मानवतावाद मार्क्सवाद का पुच्छल्ला नहीं, ... मार्क्सवाद का मर्म, आंतरिक स्रोत है, जो उसे ... देता है और जीवंत बनाता है, जो इसे मानवजाति ... खुशहाली के लिए संघर्षरत करोड़ों-करोड़ लोगों ... विश्व-दृष्टिकोण बनाता है।

मार्क्स का मानवतावाद, जैसा कि 'पांडुलिपि... में इसकी प्रस्थापना की गयी है, नृविज्ञान की ... फ़ायरबाख़ीय हिमायत, दो लोगों का दिव्यकारी ... और प्रकृति से उनकी निकटता नहीं है। यह तो व्यक्ति... उत्पीड़न और दमन के सभी रूपों की घृणा से अभि... शिक्षा है, यह एक ऐसी शिक्षा है, जो अपने ... सामाजिक रूपांतरणों की प्रचंड शक्ति धारण किये ... हैं। '१८४४ की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलि... (और *Deutsch-Französische Jahrbücher* में मु... लेख) मार्क्स के आत्मिक विकास में एक महत्वपूर्ण ... की द्योतक हैं। जहां इससे पहले लिखी गयीं ... मार्क्सवाद की ओर उनके मार्ग के लिए अभिलाक्षणिक ... वहां इसके बाद की कृतियां अपने सभी अंगों में, सर्व...

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

राजनीतिक अर्थशास्त्र के क्षेत्र में मार्क्सवाद के विकास, मूर्तीकरण और प्रतिपादन के लिए अभिलाक्षणिक हैं।

१८४४ का वर्ष वैज्ञानिक विश्व-दृष्टिकोण के जन्म का वर्ष कहा जा सकता है। लेकिन हम वह साल इंगित नहीं कर सकते, जिसमें इस विश्व-दृष्टिकोण का विकास पूरा हुआ। यह मार्क्स और एंगेल्स की सभी कृतियों में उनके मृत्युपर्यंत सतत विकसित होता रहा। इसका विकास आज भी हो रहा है और तब तक होता रहेगा, जब तक मानव समाज क़ायम है।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

६

युगपुरुष और उनका परिवेश

—आपकी मुख्य चारित्रिकता?
—उद्देश्य की अनन्यता।
—आपकी प्रिय सूक्ति?
— *Nihil humani a me alienum puto.* (कोई भी मानवीय चीज मेरे लिए परायी नहीं है।)

कार्ल मार्क्स
'आत्मस्वीकृति'

जब तक मार्क्स के विश्व-दृष्टिकोण के मूल तत्वों की प्रस्थापना हुई, तब तक उनके व्यक्तित्व का भी निर्माण हो गया था, एक ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व, जिसमें वैज्ञानिक और क्रांतिकारी दोनों का संगम हुआ था। मार्क्स विज्ञान के एक महान क्रांतिकारी और क्रांति के पहले वैज्ञानिक थे, जिन्होंने संपूर्ण क्रांतिकारी सिद्धांत और व्यवहार को यथातथ्य विज्ञान की परिधि में लाने के लिए "विवश करते" हुए दर्शन और समाज पर विचारों में कोपेर्निकस जैसी उथल-पुथल ला दी।

मार्क्स ने अपने को एक ऐसा आदर्श पुरुष सिद्ध किया, जो विगत की सांस्कृतिक विरासत का अपने समकालीनों से अधिक गहराई से अध्ययन करके और इसे आलोचनात्मक ढंग से आत्मसात करके अपने किसी भी

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

पूर्ववर्ती के मुक़ाबले अपने समय से बहुत आगे बढ़ गये।

स्वयं एक चहुंमुखी रूप से विकसित व्यक्ति होते हुए मार्क्स ने सृजनात्मक क्षेत्र में भी अपने को व्यापक रूप से अभिव्यक्त किया। मानव कार्यकलाप के एक भी ऐसे क्षेत्र का नाम लेना कठिन होगा, जो उनके अन्वेषणकारी विचार से अछूता रहा हो। दार्शनिक और अर्थशास्त्री, समाजविज्ञानी और इतिहासकार, क्रांतिकारी और संगठनकर्ता, प्रचारक और भाषाविज्ञानी, साहित्यिक विशेषज्ञ और पत्रकार के रूप में मार्क्स के बारे में बात करने में हम बिल्कुल सही हैं।

हम जानते हैं कि 'पूंजी' पर काम पूरा करने के बाद मार्क्स 'तर्कशास्त्र', दर्शन के इतिहास पर एक कृति, बाल्ज़ाक के लेखन पर एक पुस्तक और ग्राक्ख बंधुओं के बारे में एक नाटक लिखना चाहते थे। उन्होंने अपने पीछे गणितशास्त्र और टेक्नोलाजी के इतिहास के क्षेत्र में कुछ मौलिक अध्ययन छोड़े और भौतिकविज्ञान, रसायनविज्ञान, जीवविज्ञान और विकासवादी सिद्धांत की उपलब्धियों में बड़ी दिलचस्पी ली।

अपनी सहज उद्देश्यपूर्णता के साथ मार्क्स ने अपने प्रकांड ज्ञान और चहुंमुखी रूप से विकसित योग्यताओं को आर्थिक समस्याओं के समाधान पर संकेंद्रित किया, जो उनके वैज्ञानिक अनुसंधान का मुख्य लक्ष्य बन गयीं। लेकिन एक संकुचित वैज्ञानिक क्षेत्र का विशेषज्ञ 'पूंजी' जैसी कोई कृति कभी नहीं लिख सका होता।

उनका व्यक्तित्व देखने में इतना भव्य था कि उनसे

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

जल्दबाज़ी में परिचित हुए और मार्क्सवाद से कोई संबंध न रखने वाले लोग भी उनका प्रभाव महसूस किये बिना नहीं रह सकते थे।

रूसी उदारतावादी साहित्यकार प० आन्नेन्कोव ब्रसेल्स में मार्च, १८४६ में मार्क्स से मिले और लिखा कि मार्क्स एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिसमें शक्ति, संकल्प और अनश्वर विश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ है तथा वह देखने में भी अत्यंत प्रभावशाली हैं। सिर पर सघन काले केश, बालों से भरी बांहों के साथ, तिरछे बटनों के ओवरकोट में वह एक ऐसे व्यक्ति की भांति दिखायी देते थे, जो चाहे जैसे भी आपके सामने आये और चाहे जो कुछ भी करे, आपके मन में अपने प्रति सम्मान जागृत कर देता हो। उनके चलने का ढंग थोड़ा बेढंगा, किंतु दृढ़ और आत्म-विश्वासपूर्ण होता था। लोगों के साथ उनके व्यवहार का ढंग उन्मुक्तता के लिए उल्लेखनीय था, सामान्यतया स्वीकार्य व्यवहार से भिन्न था और चीज़ों तथा परिघटनाओं के बारे में उनके दृढ़ निर्णयों से पूरी-पूरी मेल खाता था।

२८-वर्षीय मार्क्स ने आन्नेन्कोव पर एक ऐसे व्यक्ति की ज़बर्दस्त छाप छोड़ी, जो मानव-मस्तिष्कों को शासित करने और उनका नेतृत्व करने के अपने कर्तव्य से विश्वस्त हो, एक ऐसा आदमी, जिसे सभी "मिथ्या पैगंबरों" और "मानवजाति के उद्धारकों" के आडंबरपूर्ण अज्ञान से बहुत नफ़रत थी।

आन्नेन्कोव कम्युनिस्ट पत्र-व्यवहार समिति की एक बैठक का वर्णन करते हैं, जिसमें मार्क्स और मौ...

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

विल्हेल्म वाइटलिंग

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

समतावादी कल्पनावादी कम्युनिज़्म के एक सिद्धांतकार विल्हेल्म वाइटलिंग के बीच एक झड़प हो गयी। वाइटलिंग ने अपनी भ्रामक किंतु आकर्षक शिक्षाओं से जर्मनी में सनसनी पैदा कर दी थी और मज़दूरों के बीच कुछ अनुयायी प्राप्त कर लिये थे।

मार्क्स के इस तीखे प्रश्न का उत्तर देते हुए कि वह अपने कार्यकलाप में किन सैद्धांतिक आधारों से निर्देशित होने की सोचते हैं, वाइटलिंग अस्पष्ट ढंग से कहने लगे कि उनका उद्देश्य नये आर्थिक सिद्धांतों का विकास करना नहीं, बल्कि अपनी भयावह स्थिति के प्रति मज़दूरों की आंखें खोलना, उन्हें जनवादी और कम्युनिस्ट कम्यूनों में संगठित होने की शिक्षा देना है।

ग़ुस्से से त्योरी चढ़ा कर मार्क्स ने सहसा वाइटलिंग को बीच में ही रोक दिया और व्यंग्यात्मक ढंग से कहा कि कार्रवाई के लिए कोई दृढ़, सुविचारित आधार प्रदान किये बिना आबादी को भड़काना उसे मात्र धोखा देना होगा। किन्हीं सही वैज्ञानिक विचारों अथवा रचनात्मक सिद्धांत के बिना मज़दूरों से कार्रवाई के लिए आह्वान करना उस उपदेशक के बेईमान, खोखले खेल के समान होगा, जो एक ओर, अनुप्राणित पैगंबर और दूसरी ओर, केवल मुंह फाड़ कर देखते मूर्खों की कल्पना करता है।

वाइटलिंग के पीले गाल सुर्ख हो गये। वह आडंबरपूर्ण ढंग से अपनी सेवाओं के बारे में बोलने लगे और खास तौर से कहा कि आम ध्येय के लिए उनके आरंभिक कार्य का शायद उन सिद्धांतों की आलो-

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

और कोरे विश्लेषण से कहीं अधिक महत्व है, जो पीड़ित और विपत्तिग्रस्त लोगों की दुनिया से वहुत दूर हैं।

इन शब्दों पर क्रुद्ध होकर मार्क्स ने मेज़ पर अपनी मुट्ठी इतनी ज़ोर से पटकी कि इस पर रखा लैम्प झनझनाने और डगमगाने लगा। वह यह कहते हुए कूद पड़े: "अज्ञान ने अभी तक किसी की सहायता नहीं की है!"*

मार्क्स से मिलने वाले अनेकानेक लोग उस कड़ाई से स्तंभित रह जाते थे, जिससे वह लोगों और सिद्धांतों पर "निर्णय" देते थे। कूपमंडूक संस्मरण लेखकों और मार्क्स के जीवनी-लेखकों ने अक्सर उनकी व्यग्र कठोरता, उनके "तानाशाही" तरीक़ों और उन लोगों के प्रति उनकी "मेफ़िस्टोफ़ीलीस-सी" घृणा के बारे में शिकायत की, जो उनके विचारों से सहमत नहीं थे।

अपने विरोधियों के साथ मार्क्स जो वादानुवाद करते थे, उनमें सचमुच ही प्रायः प्रबल भावनात्मक पुट दिया जाता था। जन्मजात राजनीतिज्ञ और क्रांतिकारी मार्क्स के लिए सामाजिक विज्ञान एक ऐसा क्षेत्र था, जहां विचारों का संघर्ष विभिन्न सामाजिक-वर्गीय दृष्टि-कोणों के टकराव के रूप में प्रकट होता था। उनके लिए यह संघर्ष उन "महाविद्वानों" का पंडिताऊ, आवेशरहित और पाखंडी शास्त्रार्थ नहीं था, जो बाज़ी हारते हुए भी अपनी झेंप छिपाने की कला में पारंगत होने की चेष्टा करते हैं।

* 'संस्मरण : मार्क्स और एंगेल्स', मास्को, १९५७, अंग्रेज़ी में।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सिद्धांत के प्रश्नों पर मार्क्स का निर्णय नरम नहीं होता था, चाहे यह ऐसे लोगों के बारे में ही प्रश्न क्यों न हो, जिनसे मार्क्स अनेक वर्षों की दोस्ती से बंधे हुए थे। स्वयं असाधारण रूप से एकनिष्ठ व्यक्ति होते हुए, मार्क्स ने दूसरे लोगों को आंकने के लिए दोहरे मापदंडों– एक "मानवीय" स्तर पर और दूसरा वैज्ञानिक, "कार्य" स्तर पर – का इस्तेमाल नहीं किया। ऐसा कोई भी आदमी, जो वैज्ञानिक सिद्धांत अथवा क्रांतिकारी व्यवहार के प्रश्नों पर "विचलित" हुआ, उसने ऐसा करने में मार्क्स की दृष्टि में एक नैतिक ग़लती भी की और न केवल एक चिंतक या क्रांतिकारी के रूप में, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में भी अपना सम्मान खो दिया। उल्टे, किसी के भी व्यक्तिगत संबंधों में ज़रा-सी भी बेईमानी ने मार्क्स के लिए वैज्ञानिक और राजनीतिक मामलों में उस व्यक्ति पर विश्वास न करने का महत्वपूर्ण औचित्य प्रदान किया।

पुरानी सूक्ति "प्लेटो मुझे प्रिय है, लेकिन सत्य और भी अधिक प्रिय है" ने अपने मित्रों के साथ मार्क्स के संबंधों में पूर्ण अभिव्यक्ति पायी। उन्होंने सत्य के साथ विश्वासघात करने वाले किसी भी व्यक्ति को कभी नहीं बख्शा। वैज्ञानिक प्रश्नों पर मतभेदों ने हमेशा उन्हें अंततः मैत्री-विच्छेद और फिर तीखे वादानुवाद-युद्ध पर लाया।

ब्रूनो बावेर, अडोल्फ़ रूटेनबेर्ग, आर्नोल्ड रूगे, प्रिं... प्रूदों, मिखाईल बकूनिन, मोज़ेस हेस्स, विल्हेल्म वाइ... और ग्योर्ग हेर्वेग के साथ ऐसा ही हुआ।

युवा मार्क्स ने अपने बौद्धिक विकास में इतने...

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

प्रगति की कि कल के उनके समान-विचार वाले दोस्त बहुत पीछे छुट गये। लेकिन अपने आप में यही चीज़ नहीं थी, जिसने उनके वादानुवादात्मक क्रोध को उत्तेजित किया। वह निश्चित रूप से अपने ज्ञान और योग्यताओं का प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति नहीं थे। ज्ञानाभाव को वह हमेशा समझ और बख्श सकते थे, लेकिन दूसरों को शिक्षा देने और नेतृत्व करने का दावा करने वाले पांडित्यपूर्ण अज्ञानियों की आत्म-संतुष्ट और युयुत्सु महत्वाकांक्षाओं को उन्होंने कभी नहीं बख्शा। ऐसे मामलों में अज्ञान एक व्यक्तिगत कमी न रहकर सामाजिक खतरा बन जाता है। मार्क्स ने इसकी निन्दा करने में कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी।

उन्होंने इस या उस व्यक्ति को आंकने में लगभग अचूक सहजबुद्धि प्रदर्शित की। उन्होंने न केवल क्षण-विशेष में इस व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को बहुत स्पष्ट ढंग से देखा, बल्कि यह भविष्यवाणी भी कर सके कि यह स्थिति भविष्य में उसे कहां ले जायेगी। उनके आलोचनात्मक प्रहार शुरू में अनुपयुक्त प्रतीत हो सकते थे, लेकिन कुछ समय बाद यह प्रकट हो जाता था कि मार्क्स सही थे।

विचार के "आतंकवादी" ब्रूनो बावेर ने बाद में प्रतिक्रियावादी *Kreuz-Zeitung* के लिए काम करना [illegible] कर दिया। अडोल्फ़ रूटेन्बेर्ग, जिन्होंने अपना [illegible] एक राजनीतिक शहीद के रूप में शुरू किया, [illegible] धसते हुए *Preussischer Staats-Anzeiger* के

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

संपादक तक आ गये। आर्नोल्ड रूगे, जिन्होंने १९वीं शताब्दी के पांचवें दशक के प्रारंभ में अपने प्रकाशनों के पृष्ठों पर राजनीतिक संघर्ष का घंटानाद किया था, अपने जीवन के अंत में बिस्मार्क का समर्थक बन गये।

जहां तक वाइटलिंग और प्रूदों का संबंध है, जैसा कि मेहरिंग ठीक ही उल्लेख करते हैं, उनके भाग्य में उसी प्रसिद्धि और उसी दुर्भाग्य का भागीदार होना बदा था। उनके कार्यकलाप के प्रारंभ में किसी भी व्यक्ति से अधिक मार्क्स ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और उनके रूप में मज़दूर वर्ग की आत्म-चेतना का जागरण देखा। लेकिन वाइटलिंग जर्मन दस्तकार के सीमित क्षितिजों और प्रूदों फ़्रांसीसी टुटपुंजिया बुर्जुआ वर्ग के क्षितिजों से आगे नहीं बढ़ पाये। ऐतिहासिक विकास की लहर ने उन्हें चट्टानों पर ला पटका और वे मार्क्स से अलग हो गये, जिन्होंने उस ध्येय को बड़े शानदार ढंग से पूरा किया, जिसे वाइटलिंग और प्रूदों ने शुरू किया था।

लेकिन मार्क्स वाइटलिंग के साथ मैत्री-विच्छेद के बाद भी उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करते रहे हालांकि वह खुद तंगहाली में थे। इस संबंध में हेस्स ने लिखा: "जैसा कि मैंने तुमसे आशा की थी, तुम वाइटलिंग के साथ टकराव को न देखते हुए उनके सामने तब तक अपना बटुआ खोलना नहीं बंद करोगे, जब तक इसमें कुछ है।"*

---

* फ़्रांज़ मेहरिंग, 'कार्ल मार्क्स: उनके जीवन की कहानी', न्यूयार्क, १९३५।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

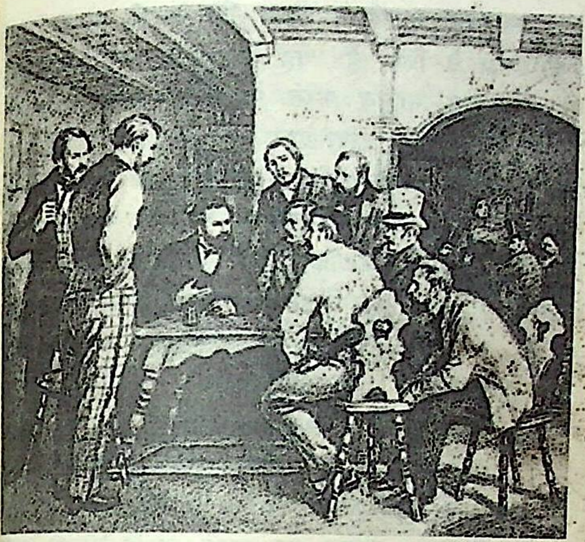

कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स
पेरिस के समाजवादियों और कम्युनिस्टों के बीच।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

एक दिन मार्क्स ने सोचा कि उनकी सहजबुद्धि ने उन्हें धोखा दे दिया है : वह मिखाईल बकूनिन के प्रति जो अविश्वास महसूस करते थे, वह उनके क्रांतिकारी कार्यकलाप के तथ्यों द्वारा पुष्ट नहीं हुआ। मार्क्स ने तुरंत उन अमैत्रीपूर्ण कार्रवाइयों के लिए खेद प्रकट किया, जिन्हें उन्होंने बकूनिन के खिलाफ़ तब की थी, जब वह *Neue Rheinische Zeitung* के संपादक थे। उन्होंने बकूनिन के साथ मेल-मिलाप कर लिया और "उनका समर्थन किया"*।

वर्षों बीत गये और इंटरनेशनल में बकूनिन द्वारा अपनायी गयी फूटकारी स्थिति ने दिखला दिया कि मार्क्स की सहजबुद्धि ने उन्हें पूरी तरह धोखा नहीं दिया था।

मार्क्स ने एक बार कहा था : "मैं बहुत कम लोगों से दोस्ती करता हूं, लेकिन तब उनसे गहरी दोस्ती करता हूं।"** और वास्तव में, उनके बहुत कम असली, सच्चे मित्र थे। लेकिन वे कितने निर्मल और सर्वहारा ध्येय के प्रति कितने समर्पित लोग थे! विल्हेल्म वोल्फ़, जोजेफ़ वेडेमेयर, विल्हेल्म लीब्कनेख्त और गेओर्ग वेयेर्थ...

मार्क्स इतनी तीव्र घृणा करने में इस वजह से समर्थ थे कि वह प्रेम और दोस्ती की अत्यधिक गहन भावनाओं को महसूस करने में सक्षम थे। दो लोगों ने उनके जीवन में आसाधारण भूमिका निभायी : जेनी का प्रेम

---

* का० मार्क्स, फ़० लासाल को, १८४२।

** का० मार्क्स, फ़० फ्रेइलिग्राथ को, १८६०।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

और एंगेल्स की दोस्ती मार्क्स के लिए भाग्य का सबसे सौभाग्यशाली वरदान थे।

जेनी न केवल उनकी पत्नी, बल्कि उनकी निकटतम दोस्त और सलाहकार तथा उनकी रचनाओं की पहली आलोचक भी थीं। मार्क्स (अपने मित्र हाइने की तरह) उनके व्यंग्य, उनकी परिष्कृत सौंदर्यबोधी रुचि और उनके व्यापक ज्ञान की बड़ी क़द्र करते थे, जो कुछ क्षेत्रों में स्वयं उनके ज्ञान से कम नहीं था। वह जेनी की साहित्यिक प्रतिभा की प्रशंसा करते थे और उन्हें पत्र-विषयक कला का मर्मज्ञ मानते थे।

मार्क्स उत्कृष्ट साहित्यिक शैली से संपन्न थे, जिसमें, विल्हेल्म लीब्कनेख़्त के शब्दों में, "टैसिटस की रोषपूर्ण कठोरता, जुवेनाल का मर्मांतक व्यंग्य और दांते का पवित्र क्रोध" समन्वित थे। फिर भी मार्क्स इस कला में जेनी की सहायता से अपने को निपुण बनाते रहे।

जून, १८४४ में लिखा मार्क्स को जेनी का एक बहुत दिलचस्प पत्र बचा है। इसमें वह मार्क्स की शैली की आलोचना करती हैं और उन्हें सलाह देती हैं: "... इतने अधिक विद्वेष और चिढ़ से मत लिखो। तुम जानते हो कि तुम्हारे अन्य लेखों का कितना ज़बर्दस्त प्रभाव पड़ा है। या तो तथ्यात्मक और सूक्ष्म ढंग से या व्यंग्यात्मक और सहज ढंग से लिखो। कृपया, मेरे परमप्रिय, तुम अपनी क़लम और इसके साथ वाक्यों को काग़ज़ पर स्वतंत्रतापूर्वक प्रवाहित होने दो, भले ही यह यदा-कदा लड़खड़ाये और मंद पड़े। जो भी हो, तुम्हारे विचार दृढ़ और

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

साहसी पुराने गार्ड के सिपाहियों की तरह सीधे तनकर खड़े होते हैं और वे पुराने गार्ड की तरह कह सकते हैं: *elle meurt mais elle ne se rend pas"* (गार्ड मर जाता है, पर आत्मसमर्पण नहीं करता। —अनु०)। "और इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि वर्दी पूरी-पूरी फ़िट न आकर कभी-कभार कुछ ढीली-ढाली रह जाये? फ़्रांसीसी सैनिकों के बारे में जो चीज़ इतनी अधिक आकर्षक है, वह उनकी उन्मुक्त और सहज वर्दी है। और ज़रा हमारे बेढंगे प्रशिआई सैनिकों को याद करो, क्या तुम्हारे रोंगटे खड़े नहीं हो जाते? पेटियों को ढीला कर दो और टाई तथा टोप को हटा दो—कृदंतों को अपना स्वतंत्र मार्ग लेने दो और शब्दों को उसी क्रम में रखो, जिस क्रम में वे स्वयं सहजतः आते हैं। ऐसी फ़ौज को इतने सख़्त क्रम में कूच करने की आवश्यकता नहीं है। और क्या तुम्हारी फ़ौजें युद्ध-क्षेत्र में नहीं आ रही हैं? जनरल को सफलता की कामना करती हूं..."

उनसे निकटता से परिचित सभी लोगों के अनुसार, मार्क्स और जेनी सुखी और आनंदपूर्ण दंपति थे। बड़ी से बड़ी विपत्ति और मुसीबत भी उनके प्रेम को क्षीण या धुंधला नहीं कर सकी। उल्टे, विपदा उनकी भावना को मज़बूत करते ही प्रतीत हुई। प्रौढ़ावस्था में भी मार्क्स अपनी पत्नी के प्रति वही कोमल और उत्कट प्रेम महसूस करते रहे, जो उन्होंने अपने विद्यार्थी वर्षों में महसूस किया था।

१८५६ में उन्होंने जेनी को एक भावपूर्ण पत्र लिखा

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जो कुछ समय के लिए यात्रा पर जर्मनी गयी थीं। तब तक जेनी एक बड़े परिवार की ४२-वर्षीय माता बन चुकी थीं। अपनी अनुभूति की कोमलता और शक्ति के कारण एक असाधारण मानव दस्तावेज़ होने के साथ यह पत्र गहन विचार से भी ओत-प्रोत है। यह मार्क्स के व्यक्तित्व और उनके चिरयुवा प्रेम के लिए इतना अधिक अभिलाक्ष-णिक है कि इसके विस्तृत अवतरण यहां उद्धृत करने योग्य हैं:

"मेरी प्रियतमा,

"मैं तुम्हें फिर लिख रहा हूं, इसलिए कि मैं अकेला और इसलिए कि मेरे मन में हमेशा तुम्हारे साथ वार्तालाप करना मुझे परेशान किये दे रहा है, जबकि तुम इसके बारे में न कुछ जानती हो, न कुछ सुनती हो और न ही मुझे उत्तर दे सकती हो... मैं तुम्हें अपने सामने साक्षात् देखता हूं, मैं तुम्हें अपनी गोद में उठा लेता हूं, मैं तुम्हें सिर से पांव तक चूमता हूं, मैं तुम्हारे सामने घुटने टेक देता हूं और आह भरता हूं: 'मैं आपको प्यार करता हूं, मदाम!' और मैं तुम्हें सचमुच बहुत-बहुत प्यार करता हूं, उससे भी ज्यादा प्यार करता हूं, जिसे 'वेनिस के मूर' ने कभी किया था। मिथ्या और भ्रष्ट दुनिया लोगों को मिथ्या और भ्रष्ट रूप में ही देखती है। मेरे अनेकानेक निन्दकों और चुगलखोर शत्रुओं में से किसने कभी मेरी इस बात के लिए भर्त्सना की कि मैं किसी द्वितीय श्रेणी के थियेटर में प्रथम प्रेमी की भूमिका अदा करने के योग्य हूं? और फिर भी यह सही है।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

यदि इन बदमाशों के पास बुद्धि होती, तो वे एक तरफ़ 'उत्पादन और विनिमय संबंधों' और दूसरी तरफ़ मुझे तुम्हारे चरणों में चित्रित कर दिये होते। 'इस चित्र को देखिये और उस चित्र को देखिये' – उन्होंने नीचे लिख दिया होता। लेकिन वे मूढ़ बदमाश हैं और मूढ़ ही रहेंगे *in seculum seculorum*" (हमेशा के लिए – अनु०)।

" ...केवल अंतराल ही हमें एक दूसरे से अलग करता है और मुझे फ़ौरन विश्वास हो जाता है कि समय ने मेरे प्यार की मदद ही की है, वैसे ही जैसे धूप और बारिश से पौधे के बढ़ने में मदद मिलती है। ज्योंही तुम मुझसे दूर हटती हो, तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम विराट रूप ग्रहण कर लेता है, इसमें मेरी आत्मा की सारी ओजस्विता और मेरे हृदय की सारी शक्ति संकेंद्रित हो जाती है। मैं पुन: अपने को शब्द के पूरे अर्थ में मनुष्य महसूस करने लगता हूं, क्योंकि मैं एक प्रचंड मनोवेग अनुभव करने लगता हूं। विविधता का, जिसे आधुनिक अध्ययन और शिक्षा हममें विकसित करते हैं, और संदेहवाद का, जिससे हम अनिवार्यत: सभी आत्मगत और वस्तुगत प्रभावों की आलोचना करते हैं, अभिप्राय हमें छोटा, शक्तिहीन, शिकायती और असंकल्पशील बनाना है। लेकिन प्रेम फ़ायरबाख के 'पुरुष' के लिए नहीं, मोलेशोत के चयापचय के लिए नहीं, सर्वहारा के लिए नहीं, बल्कि प्रेयसी के लिए, तुम्हारे लिए प्रेम मनुष्य को पुन: मनुष्य बना देता है।

"तुम हंसोगी, मेरी प्रियतमा, और पूछोगी कि क्यों

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जेनी फ़ोन वेस्टफ़ालेन।
चित्रकार – अ० वेनेत्सियन

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मैंने सहसा अपने को आलंकारिक भाषा में झोंक दिया है? लेकिन यदि मैं तुम्हारे मधुर, निर्मल हृदय को अपने हृदय से लगा सकता, तो मैं खामोश रहता और मेरी ज़बान पर एक शब्द भी नहीं आता। चूंकि मैं तुम्हें अपने होंठों से नहीं चूम पा रहा हूं, इसलिए मुझे अपनी जिह्वा से चूमना पड़ता है और शब्द लिखने पड़ते हैं। बेशक मैं कविताएं भी लिख सका होता...

"निस्संदेह, दुनिया में अनेकानेक औरतें हैं और उनमें कुछ सुंदर भी हैं। लेकिन मुझे ऐसा चेहरा पुनः कहां मिल सकेगा, जिसमें हरेक रंगरूप, हरेक भुर्री मेरे जीवन की सबसे शक्तिशाली और मधुर स्मृतियां जगाते हों? तुम्हारे मधुर मुखड़े में मैं अपने असीम दुःखों, अपनी अपूरणीय क्षतियों" (यहां मार्क्स अपने पुत्र एडगर की मृत्यु की ओर इशारा कर रहे हैं–सं०) "को पढ़ता हूं और जब मैं तुम्हारे मधुर चेहरे को चूमता हूं, तो मेरे सारे दुःख-दर्द ग़ायब हो जाते हैं। 'उसकी बांहों में दफ़न, उसके चुंबनों द्वारा पुनरुज्जीवित'– अर्थात तुम्हारी बांहों में और तुम्हारे चुंबनों द्वारा, और मुझे ब्राह्मणों और पिथागोरस की और पुनर्जन्म के बारे में उनकी शिक्षा की तथा ईसाई धर्म और पुनरुज्जीवन के बारे में इसकी शिक्षा की कोई ज़रूरत नहीं है।"

पारिवारिक चिंताओं के बोझ के बावजूद जेनी मार्क्स के वैज्ञानिक और राजनीतिक कार्य में उनकी अथक और विश्वसनीय सहायक थीं। अनेक वर्षों तक वह उनकी आदर्श सेक्रेटरी थीं, उनकी कृतियों की नक़लें

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

करके प्रतिलिपियां तैयार कीं और पार्टी कार्यों के बारे में उनके "संदेशवाहक" का काम किया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन में अनेक सक्रिय लोगों के साथ पत्र-व्यवहार किया और इस आंदोलन से संबद्ध सभी कार्य-कलापों में बड़ी दिलचस्पी ली। उन्होंने स्वाभिमान पूर्वक अपने को एक पार्टी कार्यकर्ता माना। लासाल को लिखे पत्र में उन्होंने व्यंग्यपूर्वक टिप्पणी की:

"जल्दबाज़ी में लिखे इस नोट के लिए क्षमा करें। मेरे दिमाग़ में और हाथों में इतना कुछ है और आज मुझे शहर भी जाना है, जो मेरे पैरों को दो-तीन घंटे व्यस्त रखेगा।

"जैसा कि आप देखते हैं, मैं अब भी आंदोलन की पार्टी, अग्रगामी पार्टी की सदस्य हूं और इसके अलावा मैं एक अच्छी पार्टी धावक या संदेशवाहक, जैसा भी आप चाहें, हूं।"

मार्क्स परिवार के घर में अत्यंत साधारण रहन-सहन के बावजूद राजनीतिक शरणार्थियों ने हमेशा शरण, सहायता और आराम पाया। विल्हेल्म लीब्कनेख़्त ने स्मरण किया: "श्रीमती मार्क्स हम" (जर्मनी के उत्प्रवासी – लेखक) "पर छा जाती थीं, शायद स्वयं मार्क्स से भी ज़्यादा। उनमें स्वाभिमान, गरिमा-बोध था ... मेरे लिए वह कभी एक इफ़िगेनिया थीं, जो बर्बरों को सीधा और शांत करती है तो कभी एक लेओनोरा थीं, जो आंतरिक संघर्ष और संदेह से विदीर्ण आदमी को शांति देती है; मेरे लिए वह माता, मित्र, विश्वासपात्र और सलाहकार

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

थीं। वह मेरे लिए आदर्श नारी थीं। और मैं दुबारा कहता हूं, यदि मैं लंदन में नैतिक और शारीरिक रूप से टूट नहीं गया, तो इसका मुख्य श्रेय उन्हीं को है।"

मार्क्स के सभी आगंतुक, मित्र और परिचित जेनी के असाधारण सौंदर्य, शालीनता और बुद्धि की भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे। हाइने, हेर्वेग और फ्रेइलिग्राथ उनके बारे में उत्साहपूर्वक बात करते थे। गंभीर राजनीतिज्ञ तक जेनी के बारे में बात करते हुए कवि बन जाते थे। पहले इंटरनेशनल के एक संगठनकर्ता दर्ज़ी फ्रेडरिक लेसनर ने लिखा था: "मार्क्स का घर हर विश्वसनीय साथी के लिए खुला रहता था। मैं उन सुखद घंटों को कभी नहीं भूलूंगा, जिन्हें मैंने अनेक अन्य लोगों की भांति मार्क्स के परिवार में बिताये। श्रीमती मार्क्स ने खास तौर से एक जीवंत प्रभाव पैदा किया। वह लंबी, बहुत सुंदर, बहुत प्रतिष्ठित औरत थीं और साथ ही इतनी नेक, प्रीतिकर, वाग्विदग्ध तथा अहंकार और अक्खड़पन से इतनी मुक्त थीं कि उनकी उपस्थिति में अपनी मां या बहन की तरह ही निश्चिंतता और सहजता का अनुभव होता था... वह मज़दूर आंदोलन के प्रति उत्साह से भरी हुई थीं और बुर्जुआ वर्ग के खिलाफ़ हर सफलता से, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, उन्हें बड़ा संतोष और सुख प्राप्त होता था।"

और, निश्चय ही, अपने पति से संबंधित हर घटना से जितना जेनी प्रभावित होती थीं, उतना दूसरा कोई भी नहीं। जब प्रतिक्रियावादी जर्मन प्रेस में १८४८

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

क्रांतिकारियों के ख़िलाफ़ अभियान शुरू हुआ और मार्क्स पर निन्दा के विष-वाण छोड़े गये, तो जेनी इतनी परेशान हो उठीं कि वह बीमार पड़ गयीं। 'पूंजी' के प्रथम खंड के प्रकाशन के बाद वह इस बात से अत्यंत चिंतित थीं कि इस युगांतरकारी कृति को जर्मनी में बिल्कुल नज़रंदाज़ कर दिया गया। उन्हें इस बात से बहुत दुःख हुआ कि मार्क्स की प्रतिभा को उचित मान्यता नहीं मिली और अपनी मृत्यु के दो साल पूर्व एक अंग्रेजी पत्रिका में उनके बारे में उल्लेख को पढ़कर बच्चे की तरह ख़ुशी से झूम उठीं। मार्क्स ने अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद एंगेल्स को लिखे एक पत्र में इसका कटुतापूर्वक स्मरण किया।

जब १८८१ के अंत में जेनी की मृत्यु हुई, तो एंगेल्स ने ऐसी टिप्पणी की, जिसने अनेक लोगों को चौंका दिया: "मूर भी मर गया है।" वह जानते थे कि ये दो लोग अक्षरशः एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे और मार्क्स के गिने हुए दिन रह गये थे। और वह सही थे।

मानवजाति के पास प्रेम की अनेक कहानियां, आख्यान और किंवदंतियां सुरक्षित हैं और मार्क्स और जेनी की प्रेम-कहानी एक और उत्कृष्टतम प्रेम-कहानी है।

दोस्ती में मार्क्स उतनी ही प्रबल और सतत भावनाओं में समर्थ थे जितना कि प्रेम में, जो वर्षों के साथ पुरानी नहीं हुईं। मार्क्स और एंगेल्स ने अपनी सभी मुसीबतों और दुःख-तक़लीफ़ों को साथ-साथ झेला, वे बिरले ही किसी समय के लिए अलग होते थे और अपने आम ध्येय के लिए मिलकर काम किया।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

भले ही देखने में मार्क्स का जीवन जीवंत रंगों और असाधारण घटनाओं में बहुत समृद्ध नहीं प्रतीत होता हो, यह क्रांतिकारी, राजनीतिक कार्यकर्ता, प्रचारक और वैज्ञानिक की ज़बर्दस्त आत्मिक उत्तेजना से भरा हुआ है, यह जोशीली भावनाओं, संघर्ष और जांबाज़ी, सत्य एवं सर्वहारा संघर्ष के ध्येय की निस्स्वार्थ सेवा से संपन्न है।

उनका जीवन यूरोप के मज़दूरों की वर्ग-चेतना के गठन का संपूर्ण ऐतिहासिक युग है।

वह कम्युंनिस्ट पार्टी की पहली छोटी इकाई, कम्युनिस्ट लीग के संगठनकर्ता और एंगेल्स के साथ समाज के पुनर्संगठन के लिए संघर्ष के अनुप्राणित और स्पष्ट कार्यक्रम 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' के लेखक थे। *Neue Rheinische Zeitung* में उनके लेख १८४८ की क्रांति के सड़क-मोर्चों पर साहसी योद्धा थे। १८६४ की शरत से मार्क्स ने अपने को पहले इंटरनेशनल के कार्यों में पूर्णतया लगाने के लिए अपने वैज्ञानिक अध्ययनों को छोड़ दिया। वह इस समाज की जान थे। विभिन्न देशों के मज़दूर आंदोलन को सूत्रबद्ध करते हुए, ग़ैर-सर्वहारा, पूर्व-मार्क्सवादी समाजवाद के विभिन्न रूपों (माज़्ज़िनी, प्रूदों, बकूनिन, अंग्रेज़ उदारतावादी ट्रेड-यूनियनवाद, जर्मनी में लासालवादियों के दक्षिणपंथ आदि) को संयुक्त कार्यकलाप में मोड़ने की चेष्टा करते हुए और इन सभी संप्रदायों और धाराओं के सिद्धांतों के ख़िलाफ़ संघर्ष करते हुए मार्क्स ने विभिन्न देशों के सर्वहारा वर्ग के संघर्ष की संयुक्त कार्यनीति को निरूपित किया।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

उन्होंने युवा उत्साह के साथ पेरिस कम्यूनार्डों की क्रांतिकारी लड़ाइयों का अनुसरण किया और कम्यून के कार्यकलापों का विश्लेषण किया।

यह सब स्वतः ही एक एकांत वैज्ञानिक के रूप में मार्क्स के बारे में बुर्जुआ कपोल-कल्पना का खंडन कर देता है। अपने जीवन के एक बड़े भाग को वैज्ञानिक विश्व-दृष्टिकोण के प्रतिपादन जैसे एक महान ध्येय को समर्पित करके मार्क्स ने प्रत्यक्ष राजनीतिक और संगठनकारी कार्य के लिए समय देने में कभी कोई कोताही नहीं की।

जब मार्क्स के एक मित्र लुडविग कुगेलमन ने उन्हें राजनीतिक प्रचार से विरत रहने और सर्वोपरि 'पूंजी' के तीसरे खंड पर काम में लगने के लिए समझाने-बुझाने का प्रयास किया, इसलिए कि यह क्रांति के ध्येय के लिए अधिक महत्वपूर्ण था, तो मार्क्स नाराज़ हो गये और उनसे संबंध तोड़ लिया।

उनका राजनीतिक जीवन उनके वैज्ञानिक जीवन से अविच्छेद्य था, कार्यकलाप के एक क्षेत्र ने दूसरे क्षेत्र को प्रखर बनाया और अनुप्राणित किया। उन्होंने दोनों ही क्षेत्रों में साध्यों और साधनों की पवित्रता के लिए समान रूप से निर्मम संघर्ष किया और इससे सभी विचलनों को लज्जाजनक माना।

मार्क्स ने अहम्मन्यतावादी उद्देश्यों के लिए क्रांतिकारी नारों के लफ्फ़ाजीपूर्ण इस्तेमाल को सर्वहारा के ध्येय के खिलाफ़ सबसे बुरा अपराध माना। वह राजनीतिक नारेबाजों की मिथ्या चमक-दमक से नफ़रत करते थे,

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जो लच्छेदार फ़िक़रों की आड़ में अपना बुद्धि-अभाव और क्षुद्रता छिपाना चाहते थे। मार्क्स ने अचूक ढंग से इस सब के मूल में निहित कुत्सित पाखंडपूर्ण कूपमंडूकता को खोज निकाला।

उन्होंने न तो खोखले फ़िक़रों और न ही फ़रेबी कार्यों को कभी बख्शा। मार्क्स और एंगेल्स ने जर्मन सामाजिक-जनवादियों के नेता फ़र्दीनांद लासाल की सस्ती लोकप्रियता के प्रयास, उनके दंभ, मेधावी व्यक्ति और अभिजात वर्ग के प्रतिनिधि की भूमिका अदा करने वाले एक प्रादेशिक अभिनेता के छिछोरेपन और भावुकता, सौदेबाज़ी और उदारतापूर्ण व्यवहारों के घालमेल की निर्मम आलोचना की।

फ्रांसीसी टुटपुंजिया बुर्जुआ राजनीतिज्ञ और इतिहासकार लुई ब्लां के प्रति भी मार्क्स का रुख ऐसा ही था।

"... हममें से कोई भी लोकप्रियता के लिए परवाह नहीं करता है। इसका प्रमाण, मिसाल के लिए, यह है कि किसी भी प्रकार की व्यक्ति-पूजा के प्रति घृणा के कारण मैंने विभिन्न देशों से प्राप्त अनेकानेक प्रशंसात्मक अभिव्यक्तियों को, जिनकी इंटरनेशनल के अस्तित्व के दौरान मुझ पर झड़ी लगा दी गयी, प्रकाशन-क्षेत्र तक पहुंचने की अनुमति नहीं दी और न ही उनका कभी उत्तर दिया, सिवाय यदा-कदा झिड़कियों से जवाब देने के। जब एंगेल्स और मैं पहले पहल गुप्त कम्युनिस्ट सोसायटी (कम्युनिस्ट लीग – सं०) में शामिल हुए, तो हमने इसे शर्त बनायी कि व्यक्ति-पूजा में दक़ियानूसी विश्वास

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

प्रोत्साहित करने वाली सभी चीज़ों को नियमावली से हटा दिया जाये।"*

व्यक्ति को न केवल उसकी पसंदों से, बल्कि उसकी नापसंदों से भी, न केवल उसकी सहानुभूतियों से, बल्कि उसके विद्वेषों से भी पहचाना जाता है। बताइये कि आपका शत्रु कौन है और मैं बताऊंगा कि आप कौन हैं।

एक टुटपुंजिया बुर्जुआ जनवादी कार्ल शुर्ज़ ने, जिन्होंने १८४८ में कोलोन में जनवादी संघों की कांग्रेस में मार्क्स को बोलते हुए सुना था, अपने जीवन के अंत तक उस तीखे व्यंग्यात्मक लहजे को स्मरण किया, जिससे मार्क्स ने शब्द "बर्गर" (बुर्जुआ; कूपमंडूक) का उच्चारण किया।

अपने लेखों, पैम्फ़लेटों, पुस्तकों और पत्रों में मार्क्स ने कूपमंडूकों के पूरे गिरोह को उनकी योग्यताओं के अनुसार पुरस्कृत किया। वह इस बात की बिल्कुल चिंता नहीं करते थे कि उनका विरोधी उनकी आलोचना योग्य था भी या नहीं और प्रायः छुटभैये उनकी असीम वाग्विदग्धता का निशाना बन गये। लेसिंग के बारे में हाइने की टिप्पणी मार्क्स पर पूर्णतया लागू होती है: "अपने विरोधियों की हत्या करने में उन्होंने उन्हें अमरत्व प्रदान किया।" उन्होंने छुटभैये लेखकों को अपने हाज़िर-जवाब विद्रूप, अपने दीप्त व्यंग्य से ढंक दिया और वे सदा के लिए उनकी कृतियों में वैसे ही सुरक्षित हो गये, जैसे कि कहरुबे के टुकड़ों में कीड़े।

* का० मार्क्स, विल्हेल्म ब्लोस को, १८७७।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मार्क्स के संपूर्ण जीवन में कूपमंडूकों (नेपोलियन तृतीय से लेकर अख़बार संवाददाताओं तक) ने निन्दा, उत्पीड़न और झूठ से और जब इससे कोई सहायता न मिली तो उनकी कृतियों की एकदम उपेक्षा करके उनसे बदला लेने की कोशिश की। तो भी, सभी कठिन मुसीबतों के बावजूद मार्क्स यह गर्वपूर्वक कह सकते थे कि उन्होंने कूपमंडूक से कभी नहीं हार मानी, "कूपमंडूक के पाव तले" कभी नहीं आये और हमेशा उससे दो-दो हाथ करने को तैयार रहते थे। "जी हां, सब कुछ के बावजूद," उन्होंने फ्रेइलिग्राथ के नाम एक पत्र में (१८६०) टिप्पणी की, "**मेरे ऊपर कूपमंडूक** हमेशा हमारे लिए **कूपमंडूक के पांव तले** से एक बेहतर आदर्श-वाक्य होगा।"

मार्क्स राजनीति और विज्ञान दोनों ही में कूपमंडूकता के प्रति उतने ही कठोर थे।

विज्ञान में कूपमंडूकता मुख्यतया कायरता, विचार की नीचता के रूप में प्रकट होती है, जो प्रेक्षित तथ्यों से अनिवार्य निष्कर्ष निकालने में भय खाती है, विज्ञान से परे सभी विचारों पर ध्यान दिये बिना वस्तुओं के वास्तविक तर्क का निस्संकोच अनुसरण करने में भय खाती है।

विज्ञान में कूपमंडूक सत्य के छिपाव और जालसाज़ी से सरोकार रखता है न कि सत्य के अन्वेषण से। अपनी बेईमान मंडन-विद्या से वह शासक वर्गों की स्थिति और इसके ज़रिये अपनी स्थिति भी मजबूत करने का प्रयास करता है। वह सत्य को छद्म-सत्य वार्ता के चिपचिप

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कीचड़ में दफ़ना देता है, इसे मजबूती से वैज्ञानिक-सा जामा पहना देता है।

कूपमंडूक विज्ञान को अपने उद्देश्य की प्राप्ति का एक साधन बनाता है, जिसका विज्ञान से कोई संबंध नहीं होता। वह इसका नीच उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करता है। "लेकिन जब एक आदमी विज्ञान को एक ऐसे दृष्टिकोण के अनुकूल बनाने की चेष्टा करता है, जो स्वयं विज्ञान से नहीं (चाहे यह कितना ही ग़लत क्यों न हो), बल्कि बाहर से, परकीय बाह्य हितों से उत्पन्न होता है, तो मैं उसे '**नीच**' कहता हूं।"*

मार्क्स चाबुक की मार या चेहरे पर तमाचे जैसे तीक्ष्ण इन शब्दों को माल्थस, रोशेर और बास्तिआ जैसे विज्ञान को झुठलाने और विकृत करने वालों को संबोधित करते हैं। मार्क्स पादरी माल्थस के प्रति असीम घृणा महसूस करते हैं, इसलिए कि "यह कमबख़्त" विज्ञान द्वारा अन्वेषित पूर्वाधारों (जिन्हें वह हमेशा **चुरा लेता है**) से केवल ऐसे निष्कर्ष निकालता है, जो शासक वर्गों को "पसंद" हों। वह इन वर्गों को "दृष्टि में रखते हुए" वैज्ञानिक निष्कर्षों को झूठमूठ गढ़ता है, लेकिन उसके निष्कर्ष "जहां तक ग़ुलाम वर्गों का संबंध है, निर्मम हैं।" यहां "वह न केवल निर्मम है, बल्कि निर्ममता का **स्वांग भी भरता है**, वह, इसमें मानवद्वेषी आनंद उठाता है..."**

* का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १।
** वही।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

विज्ञान के क्षेत्र में एक परजीवी की भांति काम करते हुए ऐसा "वैज्ञानिक" सामान्यतया साहित्यिक-चोरी की ओर मुड़ता है, लेकिन यहां भी अपने प्रति सच्चा बना रहता है। "एक विचार का आविष्कर्ता इसे संपूर्ण ईमानदारी में अतिरंजित कर सकता है; जब साहित्यिक-चोर इसे अतिरंजित करता है, तो वह हमेशा ऐसी अतिरंजना से 'लाभप्रद धंधा' करता है।"*

विचार की वैज्ञानिक नीचता की इस क्रुद्ध निन्दा में मार्क्स न केवल अपने विद्वेष, बल्कि अपनी सहानुभूतियां-सच्चे वैज्ञानिक के बारे में, सत्य की निष्पक्ष और निस्स्वार्थ सेवा के बारे में अपने विचार—भी प्रकट करते हैं।

स्वयं मार्क्स को ठीक ही अन्वेषणकारी वैज्ञानिक विचार का मूर्तरूप कहा जा सकता है। उनके लिए सृजनात्मक चिंतन जीवन का सबसे बड़ा सुख था। जब भी कोई चीज़ वैज्ञानिक कार्य से उनका ध्यान बंटाती थी, उन्हें हमेशा ही बड़ा कष्ट होता था। यहां तक कि बीमारी के अति क्लांतकारी दौरे भी उस कष्ट के मुक़ाबले कुछ नहीं थे, जो उन्होंने उनसे जनित अपनी निष्क्रियता से महसूस किया।

मार्क्स की वैज्ञानिक ईमानदारी न केवल निष्कलंक, बल्कि एंगेल्स के ख्याल में, अतिशय भी थी। "...हालांकि स्वयं एंगेल्स वैज्ञानिक कार्य में यथातथ्यता का पालन इसकी चरमावस्था तक करते थे, पर वह भी

---

* का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड ४

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कभी-कभी मार्क्स की अतिसावधानी पर झल्ला उठते थे, जो काग़ज़ पर एक भी वाक्य तब तक नहीं लिखते थे, जब तक वह दसियों विभिन्न तरीक़ों से इसे सिद्ध नहीं कर लेते थे।"*

मार्क्स महान चिंतक और महान आलोचक दोनों ही थे, लेकिन उनकी आलोचना – जवानी और प्रौढ़ावस्था में भी – मूलतया स्वयं अपने ही खिलाफ़ निर्दिष्ट थी। मार्क्स ने स्वीकार किया, "यह भी मेरा लक्षण है कि यदि मैं ऐसी कोई चीज़ देखता हूं, जिसे मैंने महीने भर पहले लिखना समाप्त कर दिया है और यदि इसे असंतोष-जनक पाता हूं, तो मैं इसे पुनः पूरा का पूरा लिख डालता हूं"**।

'पूंजी' की आरंभिक पांडुलिपियां दिखाती हैं कि पहले खंड के (और अगले खंडों के भी) मुख्य विचारों का अन्वेषण और प्रतिपादन मार्क्स ने १८५७-५८ में ही कर लिया था, लेकिन प्रकाशकों को इस खंड को भेजे जाने से पहले इसमें बहुत कठिन कार्य के दस वर्ष लग गये। तब तक (१८६७) "ऐतिहासिक परिच्छेद" यानी 'बेशी मूल्य के सिद्धांत' सहित शेष खंड इस सीमा तक तैयार कर लिये गये थे कि स्वयं मार्क्स ने संपूर्ण कृति को अधिक से अधिक एक साल में पूरा कर लेने की आशा की थी। लेकिन वह इसे अपनी मृत्यु से पहले तक पूरा करने में

* 'संस्मरण : मार्क्स और एंगेल्स'।
** का० मार्क्स का फ़े० लासाल को, १८६२।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

असमर्थ रहे (प्रकाशकों के लिए 'पूंजी' के दूसरे और तीसरे खंडों को तैयार करने की ज़िम्मेदारी एंगेल्स के कंधों पर पड़ी)। मालूम हुआ कि एक परिच्छेद के लिए रूसी सामग्री का अध्ययन करना आवश्यक हो गया था और मार्क्स रूसी सीखने में लग गये।

मार्क्स तब तक किसी प्रश्न पर विचार व्यक्त करने में अपने को न्यायसंगत नहीं मानते थे, जब तक वह संबद्ध साहित्य का पूरा अध्ययन नहीं कर लेते थे, भले ही लेखक की "गिनती" कैसी भी क्यों न हो। 'पूंजी' में उन्होंने हरेक अर्थशास्त्री का, चाहे उसका योगदान कितना भी छोटा क्यों न हो, उसकी योग्यताओं के अनुसार मूल्यांकन करते हुए वास्तव में "इतिहास का निर्णय" दिया।

यदि सिर्फ़ सामग्री के विस्तार की दृष्टि से भी देखा जाये, तो 'पूंजी' एक अपूर्व, विशाल कृति है, क्योंकि इसमें अपने सभी रूपों और अभिव्यक्तियों में आर्थिक (और केवल आर्थिक ही नहीं) विचार के संपूर्ण इतिहास का संश्लेषण किया गया है। इसमें मार्क्स के संपूर्ण जीवन-काल के दौरान उनके आत्मिक विकास का, विगत की संपूर्ण सांस्कृतिक विरासत का संश्लेषण है। यह कृति इस वजह से भी अपूर्व है कि इसमें पहली बार अपने अनिवार्य विघटन की दिशा में पूंजीवादी उत्पादन-प्रणाली की प्रगति का तर्क प्रकट हुआ।

'पूंजी' मात्र आर्थिक कृति ही नहीं है। यह संपूर्ण बुर्जुआ समाज के जीवन के सभी संबंधों और पहलुओं

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

विश्लेषण करती है। यह अपनी मुक्ति के लिए मज़दूर वर्ग के राजनीतिक संघर्ष और विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन की रणनीति तथा कार्यनीति का एक दृढ़ वैज्ञानिक आधार प्रदान करती हैं। इसलिए, स्वयं मार्क्स के शब्दों में, यह बुर्जुआ वर्ग पर दागी गयी "सबसे भयानक गोली" है, यह बुर्जुआ वर्ग को सुनाया गया अपील के अधिकार से रहित "मृत्यु-दंड" है।

'पूंजी' एक साहित्यिक और शैलीगत श्रेष्ठ कृति है। इसे पढ़ने से गहन सौंदर्यबोधी आनंद की अनुभूति होती है। यह एक "कलात्मक समष्टि" है। यह केवल रचना, संतुलन और प्रतिपादन के यथातथ्य तर्क के संबंध में ही नहीं, बल्कि अक्षरश: सही है; क्योंकि इसमें मार्क्स अपने को ललित साहित्य का श्रेष्ठ कलाकार सिद्ध कर देते हैं।

मार्क्स ने अपने विचारों के प्रतिपादन के साहित्यिक रूप को बड़ा महत्व दिया। वह उन विद्वानों का मज़ाक उड़ाया करते थे, जो नीरस, शुष्क दफ़्तरी भाषा को विद्वत्ता का एक अनिवार्य गुण मानते थे। वोल्तेयर के साथ उन्हें यह कहना बहुत पसंद था कि सभी शैलियां अच्छी होती हैं, सिवाय उस शैली के जो उदासी लाती है। 'पूंजी' के दूसरे जर्मन संस्करण की प्रस्तावना में मार्क्स ने तत्कालीन प्रेस से अपनी साहित्यिक शैली के बारे में टिप्पणियां उद्धृत कीं। यहां तक कि उस अंग्रेज़ी प्रेस ने भी, जो उनके विचारों के प्रति खुलेआम वैरपूर्ण था, टिप्पणी की कि 'पूंजी' में "विषय का प्रस्तुतीकरण शुष्क से शुष्क आर्थिक प्रश्नों को भी कुछ अनूठा आकर्षण प्रदान करता

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

है"। 'सेंट पीटर्सबर्ग पत्रिका' ने लिखा कि मार्क्स का "विषय का प्रस्तुतीकरण इसकी स्पष्टता और असाधारण सजीवता के लिए विशिष्ट है और कि इस संबंध में उनकी कृति जर्मन विद्वानों की कृतियों से "किसी भी रूप में नहीं मिलती", जो अपनी पुस्तकें इतनी शुष्क और अस्पष्ट भाषा में लिखते हैं कि इससे साधारण मनुष्यों के सिर चिटक जाते हैं।

लेकिन यदि मार्क्स 'पूंजी' में जटिल विषयों का स्पृहणीय स्पष्टता और जीवंतता के साथ प्रतिपादन करने में समर्थ थे, यदि वह मूल्य के रूपों, माल जड़पूजा और पूंजीवादी संचय के सार्विक नियम के अपने विश्लेषण को व्यंग्य और परिहास से मजेदार बनाने में सफल रहे, तो वादानुवादात्मक और अखबारी लेखों में उनकी साहित्यिक प्रतिभा और भी देदीप्यमान थी!

मार्क्स ने शक्तिशाली, गतिशील और असाधारण रूप से सारगर्भित वाक्यों की रचना की कला में पूर्ण पारंगतता प्राप्त की थी। वह श्लेषोक्तियों में आनंद लेते थे। यहां तक कि अपनी मृत्यु-शय्या पर भी उन्होंने अपनी पुत्री को लिखा कि वह उससे श्लेषोक्तियों के बिना बात नहीं कर सकते।

लेखन के क्षेत्र में मार्क्स के गुरु थे लेसिंग, गेटे, शेक्सपियर, दांते, सेर्वांतेस और हाइने। उन्होंने उनको बार-बार पढ़ा। लेकिन वह मात्र एक आज्ञाकारी शिष्य भर नहीं थे: कुछ मामलों में वह अपने महान गुरुओं से भी आगे गये।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मार्क्स "बोधों को सिद्धांतकार" बनाने, साहित्यिक बिम्बों को गहन विचार से अनुप्राणित करने की कला में जितना पारंगत थे, उतना कोई भी दूसरा महान लेखक नहीं था। स्वयं वाक्य की संरचना में द्वंद्ववाद का तनाव प्रकट करने में वह जितना समर्थ थे, उतना और कोई नहीं। वह पहले "एक ओर", फिर "दूसरी ओर" और अंत में "संश्लेषण" की जांच-पड़ताल नहीं करते हैं। एक और उसी वाक्य में, एक और उसी बिम्ब में वह विभिन्न पहलुओं का टकराव और उनका संश्लेषण दोनों करने की चेष्टा करते हैं। वह साहसपूर्वक कर्ता और विधेय को प्रतिध्रुवों के रूप में एक साथ लाते हैं, उन्हें एक दूसरे के साथ टकराने और तुरंत अपने विलोम में बदल जाने के लिए विवश करते हैं।

अवधारणाओं की इस द्वंद्वात्मक कलाबाज़ी में, उनके हेरफेर में मार्क्स की शैली का अनुपम आकर्षण और मौलिकता है।

"धर्म उत्पीड़ित प्राणी की आह, हृदयहीन संसार का हृदय, आत्माविहीन परिस्थितियों की आत्मा है।"

"...आलोचना बुद्धि का कोई मनोवेग नहीं, बल्कि मनोवेग की बुद्धि है। यह नश्तर नहीं, एक अस्त्र है।"

"...एक ऐसा साध्य, जिसे अनुचित साधन की आवश्यकता हो, कोई उचित साध्य नहीं है।"

"मोची जैकोब बोमे बड़ा दार्शनिक था। अनेक प्रसिद्ध दार्शनिक सिर्फ बड़े मोची थे।"

"निर्ममता: कायरता द्वारा अधिप्रेरित नियमों का

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

लक्षण है, क्योंकि कायरता केवल निर्मम होते हुए ही शक्तिशाली बन सकती है।"

प्रतीत होता है कि अपने चढ़ाव-उतार में, अपने विकास और निषेध में सामाजिक परिघटनाओं के सारतत्व ने ही मार्क्स के हाथ को इन और ऐसे ही अनेक अन्य वाक्यों को लिखने के लिए प्रेरित किया, कि स्वयं "जीवन के द्वंद्ववाद" ने अवधारणाओं के द्वंद्ववाद में अत्यंत पूर्ण और सारगर्भित अभिव्यक्ति पायी।

यहां हरेक वाक्य में विचार की तेज़ी से खुलती हुई कमानी है। हरेक वाक्य इतना विशाल है, विम्ब और विचार के टकराव से जनित इतने "घनीभूत" सारतत्व से भरा हुआ है कि यह सूत्रात्मक सूक्ति बन जाता है। मार्क्स की सूक्तियों से एक पूरी की पूरी पुस्तक बन सकती है।

उसी सूत्रात्मक सारगर्भिता, गहराई और व्यंग्य से, जो प्रायः कटूक्तियों की सीमा तक पहुंच जाता है, मार्क्स ने मानव चरित्रों का वर्णन किया। तूलिका के इने-गिने स्पर्शों से गहन मनोवैज्ञानिक और सामाजिक छवि चित्रित करने की उनकी योग्यता पर अनेक उच्च कोटि के व्यावसायिक लेखकों को ईर्ष्या हो सकती है।

दुर्भाग्य से मार्क्स की साहित्यिक शैलीगत निपुणता का अभी तक कम ही अध्ययन हुआ है। इसकी जांच से हमें इसके सारतत्व को अधिकाधिक प्रकट करने, मानवजाति के एक महानतम युगपुरुष की रचनात्मक प्रयोगशाला के मर्म को समझने में सहायता मिलेगी।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मार्क्स ने विषयवस्तु की अधिकतम पूर्णता और प्रतिपादन का निर्दोष रूप प्राप्त करने के लिए 'पूंजी' को लंबे समय तक और बड़ी सावधानी से परिमार्जित किया। तो भी, वह अपनी कृति से पूर्णतया संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने प्रकाशन के बाद भी 'पूंजी' के पहले खंड में संशोधन करना जारी रखा। वह अकेले ही इसमें उन त्रुटियों को देखने में समर्थ थे, जिन्हें अत्यंत प्रशिक्षित और विवेकी पाठकों की नजरें भी नहीं देख सकीं। संदेह और असंतोष का "भूत" जीवन के अंत तक उनका पीछा करता रहा और उन्हें तैयार दूसरे खंड को प्रकाशित करने तथा तीसरे और चौथे खंडों पर कार्य पूरा करने से रोक दिया।

'पूंजी' पर कार्य सच्चा मानवीय और वैज्ञानिक कारनामा था, खास तौर से, यदि उन परिस्थितियों को ध्यान में रखा जाये, जिनमें यह संपन्न हुआ।

१८४८ की क्रांति के दमन के बाद जब मार्क्स परिवार ने इंगलैंड उत्प्रवास किया, तो उनके पास जीवन-निर्वाह का कोई साधन नहीं था। वे इतनी घोर ग़रीबी में थे कि जब १८५२ में मार्क्स की छोटी पुत्री की मृत्यु हुई, तो उनके पास उसे दफ़नाने तक के लिए पैसा नहीं था। मार्क्स अपने वैज्ञानिक कार्य को एक ओर रखने और आजीविका का साधन खोजने के लिए विवश हुए। अनेक वर्षों तक उन्होंने अमरीकी *New-York Daily Tribune* के लिए लिखते हुए अविराम परिश्रम (सप्ताह में दो लेख!) किया। लेकिन यह साधारण

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

आय भी नियमित नहीं थी, क्योंकि संपादक सभी लेखों को कदापि नहीं प्रकाशित करता था और अक्सर निर्लज्जतापूर्वक मेहनताने में भी कटौती कर देता था, जो हर हालत में बहुत ही कम था। अतः, मार्क्स यह शिकायत करने में बिल्कुल सही थे कि अखबारी कार्य ने उन्हें किसी भी अधकचरे क़लमघिस्सू लेखक से कम आजीविका प्रदान की।

वह अपना अनुसंधान केवल अनियमित अल्पांतरालों में ही कर सकते थे और इसमें कई महीने पूर्णतया लगाने में समर्थ होने के सपने को एक ऐसी सबसे बड़ी खुशी के रूप में देखते थे, जो उनकी पहुंच के बाहर हो।

कई वर्ष बीत गये, लेकिन निर्धनता मार्क्स और उनके परिवार का पीछा करती रही। १८६१ में मार्क्स ने अखबार का काम खो दिया, जो उनकी आय का मुख्य स्रोत था। कभी-कभी वह हफ्तों बाहर नहीं जाते थे, क्योंकि उनके पहनने के कपड़े गिरवी में रखे हुए थे। 'पूंजी' के लिए अपनी आर्थिक गणनाओं को एक ओर रखते हुए वह नानबाई, क़साई, मकान-मालिक के क़र्जों की अंतहीन सूची तैयार करते। पहले इंटरनेशनल के "दृढ़" अध्यक्ष को अक्सर अपने ऋणदाताओं से छिपने के लिए विवश होना पड़ा, जिन्हें वह दानव मानते थे।

कभी-कभी स्थिति निस्सहाय प्रतीत होती थी। और यहां तक कि मार्क्स ने भी कभी-कभी धैर्य खो दिया, व मार्क्स, जो महान आत्मिक सहनशक्ति और अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों का विनोदपूर्ण पहलू देखने की असाधारण

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

क्षमता से संपन्न थे, जो घर में "दूसरे पक्ष की ओर से" (यानी अपनी पत्नी की ओर से) "भावना-उद्रेकों को संतुलित करने के लिए मौन सुख-दुःख उपेक्षी"* बने रहते थे। "संक्षेप में, शैतान उन्मुक्त है,"** उन्होंने उस विपत्ति का वर्णन करते हुए कटुतापूर्वक कहा, जो उनके परिवार पर आ पड़ी थी: निर्धनता, क़र्ज़, उनकी पत्नी की बीमारी, उनका अपना ख़राब स्वास्थ्य। "धीमी आग पर भुनाई, जिससे मन और हृदय घायल हो जाते हैं, और इसके अलावा मूल्यवान समय भी नष्ट हो जाता है... इस स्थिति का अंत होना चाहिए।"*** लेकिन इसका कोई अंत नज़र नहीं आता था।

मार्क्स, जो एक सौम्य, स्नेहमय पिता थे, ख़ास तौर से इस बात से दुःखी थे कि ग़रीबी से उनकी पुत्रियां प्रभावित हो रही थीं: कभी-कभी उनके पास ऐसे कपड़े नहीं होते थे, जिन्हें पहन कर वे स्कूल जा सकें। १८६२ में मार्क्स ने एंगेल्स को लिखा: "मेरी पत्नी हर रोज़ मुझसे कहती है कि बेहतर होता कि वह और बच्चे क़ब्र में होते और मैं सचमुच इसके लिए उसे दोष नहीं दे सकता, क्योंकि तिरस्कार, यातनाएं और विभीषिकाएं, जिन्हें इस परिस्थिति में बर्दाश्त करना पड़ता है, वास्तव में अवर्णनीय हैं।"

लेकिन मार्क्स के जीवन की संपूर्ण लंदनवाली अवधि की

---

* का० मार्क्स, फ़े० एंगेल्स को, १८६३।

** [illegible]

*** ही।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

एक उदास तसवीर चित्रित करना ग़लत होगा। मार्क्स केवल जीवन की विपदाओं को आत्मसंयमपूर्वक बर्दाश्त करने में ही नहीं, बल्कि थोड़ा-सा भी मौक़ा मिलने पर आमोद-प्रमोद में तन-मन से मग्न हो जाने में भी समर्थ थे। अपने परिवार और मित्र-मंडली में उनका उदास, रुक्ष और क्रोधी वज्रवाहक की उस छवि से कोई संबंध नहीं था, जिसे बुर्जुआ लेखकों ने अक्सर चित्रित किया।

जवानी की भांति ही प्रौढ़ वर्षों में भी वह अच्छा मज़ाक़ पसंद करते थे, उसकी सराहना करते थे। उनके लिए परिहास शारीरिक और आत्मिक बीमारियों का सर्वोत्तम इलाज था। जर्मनी की यात्रा के दौरान लासाल के यहां मेहमानी के बाद मार्क्स उनको १८६१ में लिखे एक पत्र में टिप्पणी करते हैं: "तुम जानते हो कि मेरा सिर चिंताओं से भरा हुआ है और मुझे जिगर की बीमारी है। लेकिन मुख्य चीज़ यह है कि हम साथ-साथ खूब हंसे। *Simia non ridet*" (बंदर नहीं हंसता – सं०) "और इस तरह हमने अपने को संपूर्णतः बुद्ध सिद्ध कर दिया है।"

एंगेल्स को लिखे मार्क्स के अत्यंत निराशाजनक पत्र भी कुछ व्यंग्यात्मक विवरणों से शुरू होते हैं। मार्क्स और एंगेल्स के बीच संपूर्ण पत्र-व्यवहार सजीव व्यंग्य से भरा हुआ है, जब दोनों ओर से व्यंग्य की चिनगारियां उड़ती हैं। एक दिन मार्क्स के चरित्र की "उदासी" के बारे में कूपमंडूकीय टिप्पणियों का उत्तर देते हुए [illegible] ने एडुअर्ड बर्नस्टीन को लिखा : "अगर इन मूर्खों की मू

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

और मेरे बीच पत्र-व्यवहार पढ़ने को मिल जाये, तो वे बेहोश हो जायेंगे। हाइने का काव्य हमारे उद्धत, हास्यमय गद्य की तुलना में बच्चे का खेल है। मूर कुपित हो सकते थे, लेकिन उदास – कभी नहीं! पुरानी पांडुलिपियों को फिर से पढ़ते हुए मुझे ऐसी हंसी आयी कि मेरे पेट में बल पड़ गया।"

मार्क्स परिवार में मनोदशा खास तौर से तब उल्लासित हो उठती, जब क्रांतिकारी घटनाओं, मज़दूरों की विजयों, पूंजीवादी प्रणाली के संकटों के बारे में खबरें आती थीं। उदाहरणार्थ, जब १८५७ का अमरीकी संकट शुरू हुआ। मार्क्स खुशी से झूम उठे, हालांकि इसने उन्हें आय के एकमात्र स्रोत – अखबारी कार्य – से लगभग बिल्कुल वंचित कर दिया। श्रम के लिए उनकी पहले जैसी शक्ति पुन: जाग्रत हो उठी और उन्होंने दुगुने जोश-खरोश से – दिन में अपनी आजीविका कमाने के लिए और रात में अपना राजनीतिक अर्थशास्त्र पूरा करने के लिए – परिश्रम किया।

और पुन: १८६१ में, ऐसा ही था, जब एक नया वित्तीय संकट शुरू हुआ। मार्क्स ने कहा, "यदि केवल मैं इन तुच्छ परिस्थितियों से मुक्त होता और अपने परिवार को दयनीय कंगाली से अनुत्पीड़ित देख सकता, तो दिसंबर की वित्तीय प्रणाली की विफलता ने, जिसकी मैंने इतने लंबे समय से और अक्सर *Tribune* में [illegible] मुझे कितनी खुशी से भर दीं होती!"*

* का० मार्क्स, फ़० लासाल को, १८६१।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

बेशक अपने गूढ़ ज्ञान से मार्क्स आसानी से अपने परिवार को वह आरामदेह जीवन प्रदान कर सकते थे, जो बुर्जुआ वर्ग के विद्वज्जनोचित चाकर बिताते थे। लेकिन उनके विचार में, विज्ञान को पैसा कमाने के एक साधन में बदलना उसी तरह हेय था, जिस तरह विज्ञान को भुठलाना। ऐसा क़दम उठाने के बजाय तो वह मर जाना पसंद करते।

उन्होंने एक ऐसे कार्य को अपनी आय का स्रोत बनाना चाहा, जो विज्ञान से संबद्ध न हो। लेकिन इस ढंग से भी आय प्राप्त करने का उनका प्रयास असफल रहा। जब उन्होंने एक रेलवे कार्यालय में नौकरी ढूंढ़ने का निर्णय किया, तो उन्हें उनकी खराब लिखावट की वजह से अस्वीकार कर दिया गया।

सभी विपत्तियों और मुसीबतों के बावजूद मार्क्स दृढ़तापूर्वक अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते रहे। उल्लेखनीय चीज़ यह नहीं है कि 'पूंजी' लिखने में इतना लंबा समय लगा, बल्कि यह है कि यह ऐसी बुरी परिस्थितियों में लिखी गयी।

प्रायः कहा जाता है कि प्रतिभा अध्यवसाय और धैर्य है। मार्क्स के बारे में यह कहना उनके महत्व को कम करके बताना होगा। अपने वैज्ञानिक अध्ययनों को जारी रखने के लिए मार्क्स को अनेक वर्षों के दौरान लौह, लगभग अतिमानवीय संकल्प दिखाना पड़ा, एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाते हुए और अपने स्वास्थ्य को इतना दुर्बल बनाते हुए घोर परिश्रम करना पड़ा कि वह हमेशा अपने को क़ब्र के नज़दीक महसूस करते थे।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

लेकिन कोई भी विपत्ति इस आदमी को नहीं तोड़ सकी।

गर्वपूर्वक मस्तक ऊंचा किये हुए उन्होंने अपनी जवानी में चुने हुए मार्ग का, एक प्रोमीथियस के शहीद के मार्ग का अनुसरण किया, जिसने कठोर मुसीबतों की चिंता नहीं करते हुए जनसाधारण के लिए ज्ञान-अग्नि लाने का संकल्प किया था। प्रोमीथियस की भांति मार्क्स ने भी "सांसारिक ईश्वरों" के चाकरों द्वारा पेश किये गये सभी समझौतों को अस्वीकार कर दिया।

स्वयं मार्क्स जर्मन जनवादी ज़िगफ्रिड मेयेर को लिखे पत्र में (१८६७) उस क़ीमत के बारे में असाधारण शक्ति और स्पष्टता के साथ वर्णन करते हैं, जो उन्हें 'पूंजी' के पहले खंड के लिए चुकानी पड़ी थी। मेयेर मार्क्स को दोस्ताना पत्र लिखा करते थे, जिनसे उन्हें बड़ा आनंद प्राप्त होता था और वे उनकी "दु:खद अवधि" में सचमुच सांत्वना थे। मार्क्स लिखते हैं कि सरकारी दुनिया के साथ तीव्र संघर्ष करते हुए वह इसका कम कद्र करने में अयोग्य हैं।

मार्क्स लिखते हैं: "तो मैंने तुम्हें क्यों उत्तर नहीं दिया? इसलिए कि मैं हमेशा क़ब्र के किनारे मंडरा रहा था। अतः जब मैं अपनी पुस्तक, जिसके लिए मैंने अपने स्वास्थ्य, खुशी और परिवार की उपेक्षा की है, पूरी करने हेतु कम [illegible] में समर्थ था, तो मुझे हर क्षण का उपयोग [illegible] था। मुझे [illegible]स है कि यह स्पष्टीकरण काफ़ी है। तथाकथित 'चालू' लोगों और उनकी बुद्धिमत्ता

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

पर मुझे हंसी आती है। यदि कोई दुष्ट होना चाहता है, तो बेशक मानवजाति के कष्टों की ओर अपनी पीठ मोड़ सकता है और अपनी जान बचा सकता है। लेकिन यदि मैं अपनी पुस्तक, कम से कम पांडुलिपि में, पूरी किये बिना मर जाता, तो मैं वास्तव में अपने को अव्यावहारिक मानता।"

मार्क्स के हृदय से यह आत्मस्वीकृति हमें उस कार्य-विद्यालय की अंतिम परीक्षा में पेशे के चुनाव के बारे में उनके निबंध—का बरबस स्मरण दिलाती है, जिसके साथ उन्होंने अपना मार्ग शुरू किया। स्मरणीय है कि वहीं पर युवा मार्क्स ने मानवजाति के लिए काम करने, आम भलाई के लिए व्यक्तिगत खुशहाली का त्याग करने की अपनी इच्छा के बारे में लिखा था।

यौवन का यह विचार मात्र एक सुंदर सूक्ति नहीं था। इसने मार्क्स के संपूर्ण जीवन का मार्गदर्शन किया। [illegible] यह उनकी सभी कृतियों का विशिष्ट स्वर था। और वि[illegible] विद्यालय के उस निबंध के ३२ वर्षों बाद, जब वह 'पूंजी' [illegible] प्रकाशित कर रहे थे, वह गुलाबी यौवन के उस सुदूर [illegible] समय में प्रतिध्वनित अपने शब्दों को गर्व और आत्म-[illegible] संतोष के साथ दुहरा सकते थे :

"यदि हमने जीवन में एक ऐसी स्थिति का चुनाव [illegible] किया है, जिसमें हम मानवजाति के लिए अधिक से[illegible] अधिक काम कर सकते हैं, तो कोई [illegible] हमें [illegible] झुका नहीं सकते; क्योंकि वे समष्टि के लाभार्थ त्याग [illegible]

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

१०

युगपुरुष के साथ – युगपुरुष

"मैं अब तक मार्क्स और एंगेल्स से प्रेम करता हूं और उनकी कोई भी निन्दा चुपचाप बर्दाश्त नहीं कर सकता। नहीं, ये सच्चे लोग थे! हमें उनसे सीखना चाहिए। हमें वह बुनियाद नहीं छोड़नी चाहिए।"

व्ला० इ० लेनिन*

१९वीं सदी के नौवें दशक के प्रारंभ में पश्चिमी यूरोप अभी भी पेरिस कम्यूनार्डों द्वारा प्रेरित क्रांतिकारी विप्लवों से आंदोलित हो रहा था। रूसी साम्राज्य ने, उदारतावाद का स्वांग भरने के बाद, अपने अस्तित्व के एक सबसे अंधकारपूर्ण और प्रतिक्रियावादी दशक में समावेश किया था। यह वही समय था, जब "उपद्रवियों" और "उदारतावादियों" से देश का सफ़ाया करने और दास-प्रथा पुनः क़ायम करने की चर्चा शुरू हुई; जब हताशा और निराशा ने प्रगतिशील बुद्धिजीवियों की हमला [illegible] दिया।

---

* व्ला० इ० लेनिन, इ० आर्मांद को, १९१७।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

उन सुदूर उजाड़ वर्षों में
था शासन निद्रा और अंधेरे का लोगों के मन में
और रूस पर पोबेदोनोस्त्सेव *
फैलाये था अपने विशाल उल्लू-जैसे पंख।
न रात थी न दिन,
सिवाय उसके पंखों की मनहूस छाया के।

(अ० ब्लोक, 'प्रतिरोध' से)

ठीक इसी अवधि में कुछ यूरोपीय विद्वानों ने दावा किया कि क्रांतिकारी आंदोलन का केन्द्र रूस की ओर स्थानांतरित हो रहा है और अब से क्रांतिकारी आंदोलन के नये उभार और समाजवादी पुनर्निर्माण के लिए सभी आशाएं उस देश से जुड़ी हैं। इनमें से पहले फ्रेडरिक एंगेल्स थे। मार्च, १८८३ में लंदन में एंगेल्स ने सक्रिय रूसी क्रांतिकारी और समाजवादी हेरमन लोपातिन के साथ बात-चीत में कहा :

"अब सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि निकट भविष्य में पीटर्सबर्ग में क्या किया जाता है, जिस पर

---

* पोबेदोनोस्त्सेव क० प० (१८२७–१९०७) जारशाही रूस में प्रतिक्रियावादी राजनीतिज्ञ, सीनोद (रूस के आर्थोडॉक्स चर्च के सर्वोच्च प्रशासकीय निकाय) का [illegible] प्रोक्यूरेटर। क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ़ दृढ़ सं[illegible] किया। असीमित निरंकुशता का कट्टर समर्थक, वि[illegible] और प्रबोधन का विरोधी।

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अब संपूर्ण यूरोप के सभी चिंतनशील, दूरदर्शी, विवेकी लोगों की नज़रें टिकी हुई हैं।"

इसके बाद उन्होंने अपने को और भी सुनिश्चित रूप में व्यक्त किया:

"रूस वर्तमान सदी का फ़्रांस है। स्वभावत: नये सामाजिक पुनर्संगठन की क्रांतिकारी पहल उसी की है।"*

अंतिम रूसी ज़ार निकोलाई द्वितीय और उसके शासन के भाग्य का उनका वर्णन अत्यंत दूरदर्शी है:

"वह अर्ध-मूर्ख, मानसिक और शारीरिक रूप से कमज़ोर है और यही चीज एक ऐसे व्यक्ति के ढुलमुल शासन का संकेत देती है, जो अपने परस्पर-विरोधी षड्यंत्रों के साथ लोगों के हाथों में मात्र खिलौना होगा, और यही रूसी निरंकुश प्रणाली को सदा-सर्वदा के लिए नष्ट करने के लिए आवश्यक है।"**

एंगेल्स की यह दूरदर्शिता हालांकि असाधारण प्रतीत हो सकती है, इसके बारे में कुछ भी दैवी और विशिष्ट नहीं था, सिवाय एंगेल्स के अनन्य और अनूठे व्यक्तित्व के।

एंगेल्स की दूरदर्शिता प्राय: उनके इर्दगिर्द के लोगों को आश्चर्य में डाल देती थी। १८४८ की क्रांति के

---

* 'संस्मरण: मार्क्स और एंगेल्स'।

** फ़े० एंगेल्स, लाउरा लफ़ार्ग को, १८९४।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

दौरान मार्क्स द्वारा प्रकाशित *Neue Rheinische Zeitung* में कभी-कभी हंगरी में क्रांतिकारी युद्ध के बारे में लेख छपते थे, जो सूचनाओं से इतने भरपूर और सैनिक कार्र-वाइयों के विकास के बारे में पूर्वानुमानों में इतने सटीक थे, कि इनके बारे में कहा जाता था कि एक हंगेरियाई जनरल इनका लेखक है। ये लेख वास्तव में जर्मनी में एक ऐसे नौजवान द्वारा लिखे जाते थे, जो कभी हंगरी नहीं गया था। उसका नाम फ़ेडरिक एंगेल्स था।

१८७० में फ़्रांस-प्रशा युद्ध के दौरान एंगेल्स के लेखों ने पेशेवर सैनिक विशेषज्ञों का ध्यान आकर्षित किया, इसलिए कि उनमें उन्होंने सेदान की लड़ाई और फ़्रांसीसी सेना की हार की भविष्यवाणी की थी। तब से वह मार्क्स परिवार में "जनरल" के लक़ब से सुप्रसिद्ध हो गये। इसका एक दूसरा कारण उनकी फ़ौजी चाल-ढाल थी, जिसने उनके परिचितों को उनके अंतिम वर्षों में भी प्रभावित किया। फ़्रेडरिक लेसनर ने उनका निम्नलिखित रूप में वर्णन किया: "एंगेल्स लंबे और छरहरे थे, तेज़ और स्फूर्तिमय गतिविधि, संक्षिप्त और नपी-तुली बातें, चाल-ढाल सिपाहियाना।"

तो भी, अपने नानाविध अध्ययनों की गूढ़ता के बावजूद, सैनिक रणनीति उनके लिए उनकी अनेकानेक दिलचस्पियों में से मात्र एक बनी रही, जिनमें उनका बहुमुखी रूप से मेधावी व्यक्तित्व समर्थ था और जिनमें यह अपने को लगा सकता था।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

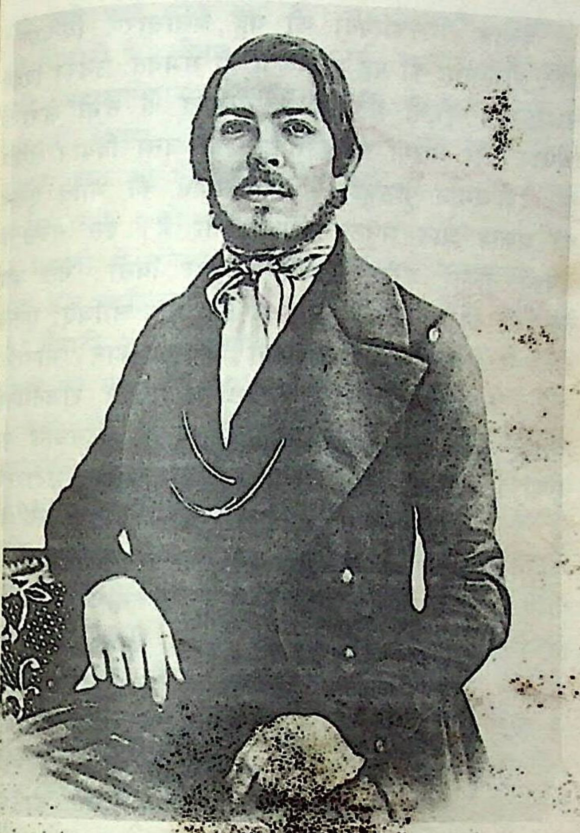

युवा एंगेल्स

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

वस्तुत: दिलचस्पियों की यह असाधारण विविधता, ज्ञान और मेधा की यह सार्विकता ही संभवत: उनका विशेष लक्षण है। १९वीं शताब्दी ने संस्कृति के सभी क्षेत्रों में विचार और आत्मा के मनीषियों को जन्म दिया। लेकिन इस देदीप्यमान पृष्ठभूमि में भी मार्क्स की भांति एंगेल्स का प्रकांड ज्ञान अनूठा प्रतीत होता है। इस संबंध में उनकी तुलना अरस्तू, लेओनार्दो दा विंसी, गेटे और हेगेल से की जा सकती है। स्वयं ही आंक लीजिए: एंगेल्स दार्शनिक, राजनीतिक अर्थशास्त्री, इतिहासकार, भाषाविज्ञानी, साहित्यिक आलोचक, अनुवादक और राजनीतिक प्रचारक थे। उन्हें ठोस समाजवैज्ञानिक अनुसंधान का संस्थापक कहा जा सकता है, जिसका देदीप्यमान उदाहरण है 'इंगलैंड में मज़दूर वर्ग की स्थिति'। उन्हें भौतिकविज्ञान, यांत्रिकी, रसायनविज्ञान, जीवविज्ञान, गणितशास्त्र, खगोलिकी और अनेकानेक तकनीकी विद्याओं की अत्युत्तम जानकारी थी। इस ज्ञान ने उन्हें 'प्रकृति की द्वंद्वात्मक गति' में प्राकृतिक विज्ञानों के संपूर्ण विकास का सार दार्शनिक रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ बनाया। जहां तक भाषाओं का संबंध है, एंगेल्स वास्तविक बहुभाषी थे और उन्हें अनेक भाषाओं की बोलियों का भी पूरा ज्ञान था।

उत्तेजना के क्षणों में एंगेल्स की हकलाहट का उल्लेख करते हुए एक समाजवादी ने कभी मज़ाक में कहा था "एंगेल्स बीस भाषाओं में हकलाते हैं।" इसके साथ ही एंगेल्स के व्यक्तित्व में एकांत विद्वान, नीरस किताबी

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कीड़े जैसी कोई चीज़ नहीं थी। वह खिलाड़ी, घुड़सवार और शिकारी थे। जीवन ने उन्हें क्लर्क, व्यापारी, वाणिज्य-यात्री, कारखानेदार और वित्तप्रबंधक के काम करने के लिए भी विवश किया। प्रसूति-विज्ञान पर कार्य सहित अक्षरश: ज्ञान का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था, जिसमें एंगेल्स की दिलचस्पी न हो।

जवानी में एंगेल्स ने काव्य पर हाथ आज़माना शुरू किया और साहित्य तथा कला के क्षेत्र के लिए गंभीरता-पूर्वक तैयारी की। उनकी क़लम ने कुछ बड़ी काव्यात्मक कृतियों का प्रणयन किया, जो पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित की गयीं और अपने समय में असीम वाग्विदग्धता और व्यंग्यात्मक प्रतिभा से ध्यान आकर्षित किया।

१९वीं सदी के पांचवें दशक के प्रारंभ में एंगेल्स ने गार्ड्स रेजिमेंट में एक स्वयंसेवक के रूप में सेवा की और तीन लड़ाइयों में लड़ते हुए बादेन विद्रोह में भाग लिया। जिन लोगों ने उन्हें गोलियों की बौछारों में देखा, उनकी वीरता और असाधारण आत्मसंयम के बारे में स्मरण किया।

१९वीं सदी के चौथे दशक के अंत तक फ़्रेडरिक एंगेल्स अपने भावी मित्र की असाधारण प्रतिभा, अदम्य शक्ति और क्रांतिकारी आवेश के बारे में बहुत-कुछ सुन चुके थे। उनकी पहली मुलाक़ात नवम्बर, १८४२ में कोलोन में हुई, जब एंगेल्स लंदन जाते हुए *Rheinische Zeitung* के कार्यालय में गये, जिसके संपादक मार्क्स थे। अनेक कारणों से उस मुलाक़ात से कोई वास्तविक

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

परिचय नहीं विकसित हुआ। लेकिन जब वे दो साल बाद पेरिस में पुनः मिले, तो उन्हें यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि वे अलग-अलग रास्तों से समाज के विकास पर मूलतया उसी सिद्धांतों पर पहुंचे थे।

एक बार मिल जाने पर उनके मार्ग पास-पास मार्क्स के देहांत तक आगे बढ़ते रहे। मार्क्सवाद, हालांकि यह एक व्यक्ति के नाम पर है, वस्तुतः दो व्यक्तियों का अविच्छेद्य श्रम है। स्वयं मार्क्स ने एक बार एंगेल्स को अपने "*Alter ego*"—"इतर अहम्" के रूप में परिचय कराया था।

लेनिन ने एक बार कहा था कि मार्क्स और एंगेल्स के पारस्परिक संबंधों ने मानव-मैत्री की अत्यंत हृदयस्पर्शी पुराण-कथाओं को पीछे छोड़ दिया है। स्पष्टतया, उनके दिमाग़ में ख़ास तौर से कास्टोर और पोलक्स की आनंदप्रद गाथाएं थीं। पोलक्स ज़ीयस और लेडा का पुत्र था और उसे अपने जिगरी दोस्त कास्टोर के विपरीत अमरत्व प्राप्त था। वे एक-दूसरे से भिन्न थे और नानाविध प्रति-भाओं से संपन्न थे। जहां कास्टोर कुशल रथसारथी था, वहां पोलक्स अद्वितीय योद्धा था। एक साथ वे अजेय थे और प्रायः शत्रु को सिर पर पैर रख कर भागने के लिए विवश किया। वे दोनों उसी नाम—डिओस्कुरी—से पुकारे जाते थे।

लेकिन एक दिन कास्टोर लड़ाई में मारा गया। पोलक्स शोकातुर हो उठा। वह ज़ीयस के पास गया और अपने पिता से अपना अमरत्व वापस लेने तथा पाताललोक

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

हेडीज़ — में अपने मित्र के पास जाने देने के लिए याचना की। बुद्धिमान ज़ीयस ने इस समस्या को दूसरे ही ढंग से हल किया। उन्होंने अमरत्व को दोनों के बीच बराबर-बराबर बांट दिया, ताकि वे बारी-बारी से आधे समय हेडीज़ में रहें और आधे समय ओलिम्पस में।

देवगण इस निस्स्वार्थ मैत्री से बहुत प्रभावित और प्रसन्न हुए तथा उन्होंने कास्टोर और पोलक्स को स्वर्ग में उठा लिया, जहां वे मिथुन तारामंडल में चमकते हैं। एक प्रभात-तारा और एक सांध्य-तारा: एक अंधेरे हेडीज़ में अस्त होता है और दूसरा ओलिम्पस पर उदित होता है।

दिओस्कुरी की भांति मार्क्स और एंगेल्स बुद्धि और चरित्र में बिल्कुल एक-जैसे नहीं ढले हुए थे, लेकिन ठीक इसी वजह से वे एक-दूसरे के इतने उत्तम पूरक थे। सामान्यतया लोग एंगेल्स के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहते हैं कि उन्होंने हमेशा मार्क्स के बाद "गौण भूमिका" अदा की। और बात भी यही थी। लेकिन मार्क्स के साक्ष्य को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए; उन्होंने एक बार अपने मित्र को एक पत्र में (१८५६) स्वीकार किया: "तुम जानते हो कि, पहले तो, हर चीज मेरे साथ विलम्ब से आती है और, दूसरे, मैं हमेशा तुम्हारे पदचिन्हों का अनुसरण करता हूं।"

अपनी सभी असाधारण प्रतिभाओं के बावजूद एंगेल्स बुद्धि की रचनात्मक शक्ति, सतत अन्वेषणशील अनुसंधान और निर्दोषता और गहराई, शैली की उत्कृष्ट द्वंद्वात्मक यता और सामान्यीकरणों की सूत्रमय यथार्थता में

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मार्क्स की बराबरी नहीं कर सकते थे। लेकिन कुछ मामलों में एंगेल्स श्रेष्ठ थे : वह नवीन को अधिक आसानी से समझते और पुनर्विचारित करते थे, एक ही विषय के अध्ययन में इतने लंबे समय तक नहीं उलझे रहते थे और विज्ञान तथा संस्कृति के अत्यंत नानाविध क्षेत्रों की सामग्रियों को अधिक स्वतंत्रतापूर्वक संश्लेषित करते थे।

एंगेल्स के सुप्रसिद्ध अध्ययनकर्ता, म० सेरेब्रियाकोव की उपयुक्त तुलना के अनुसार, हल्के अस्त्रों से लैस योद्धा एंगेल्स अधिक चपल थे, अधिक स्वतंत्रतापूर्वक पैंतरा बदलते थे और शत्रु के दुर्ग पर पहले धावा बोल देते थे। यह वैज्ञानिक कम्युनिज्म के संस्थापकों के आत्मिक विकास के पहले चरणों में ही स्पष्ट हो गया।

एंगेल्स मार्क्स से दो वर्ष छोटे थे, इसके बावजूद उन्होंने मार्क्स से पहले [illegible] में कवि के रूप में और बाद में प्रचारक [illegible] अपनी कृतियां प्रकाशित करना आरंभ कर दिया था। वह मार्क्स के पूर्व विद्यमान सामाजिक व्यवस्था का विरोध करने लगे और क्रांतिकारी जनवादी तथा जनतंत्रवादी बन गये। कल्पनावादी समाजवाद और कम्युनिज्म उस समय जिस रूप में विद्यमान थे वह उनकी ओर मुड़ने वाले दोनों लोगों में से पहले और राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा करने में भी पहले थे। एंगेल्स के "[illegible]" का अनुसरण करते हुए मार्क्स प्राकृतिक विज्ञानों की उपलब्धियों में दिलचस्पी लेने लगे।

लेकिन यह तथ्य बना रहता है कि जहां एंगेल्स ने प्रतिभाशाली स्केच छोड़े, वहीं मार्क्स ने युगांतरकारी

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कृतियां छोड़ीं। दोनों की अपनी-अपनी शैलियां, अपनी-अपनी विशिष्ट प्रतिभाएं, वैज्ञानिक दिलचस्पियों के अपने-अपने क्षेत्र थे। लेकिन इस बात ने मात्र एक-दूसरे के प्रति उनके आकर्षण को बढ़ाया ही। मार्क्स एंगेल्स को वास्तविक विश्वकोश मानते थे तथा दिन और रात के किसी भी समय काम करने की क्षमता के लिए उनकी जितनी प्रशंसा करते थे, उतनी ही इस बात के लिए कि वह शीघ्रता से लिखते थे और "शैतान की तरह" तीक्ष्णवुद्धि थे।

राजनीतिक अर्थशास्त्र के उनके अध्ययन अधिक विस्तारपूर्वक बताने के योग्य हैं। १८४४ में एंगेल्स द्वारा लिखित 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा की रूपरेखा' शीर्षक लेख *Deutsch Französische Jahrbücher* में प्रकाशित किया गया। इसका लेखक मात्र २४ साल का ही था। लेकिन इसने आधुनिक [illegible] के जीवन के मूलभूत प्रश्नों को इतने साहसपूर्वक [illegible] प्रभावशाली ढंग से उठाया और क्लासिकीय राजनीतिक अर्थशास्त्र के सूत्रों की, जिनका अभी तक किसी ने संदेह भी नहीं किया था, ऐसी पूर्ण आलोचना प्रस्तुत की कि एंगेल्स तुरंत इस क्षेत्र में एक मान्य विशेषज्ञ बन गये। लेख में अनेक मूलभूत रूप से नये विचार प्रस्तुत किये गये थे, जिन्हें बाद में मार्क्स ने 'पूंजी' में विकसित किया। वस्तुतः यह वैज्ञानिक समाजवाद का पहला आर्थिक निबंध था और स्वयं मार्क्स ने प्रायः 'पूंजी' में इसका हवाला [illegible]।

एक साल बाद एंगेल्स ने अपनी [illegible] 'इंगलैंड में मज़दूर वर्ग की स्थिति' प्रकाशित की। इसमें तथ्यात्मक

19—465

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सामग्री की विस्तृत राशि प्रस्तुत की गयी थी, जिसके आधार पर लेखक ने केवल यह निष्कर्ष ही नहीं निकाला कि सर्वहारा वर्ग कष्टग्रस्त वर्ग है, बल्कि समाज में इसकी क्रांतिकारी भूमिका को भी पुष्ट किया। अनेक साल बाद एंगेल्स को एक पत्र में मार्क्स ने लिखा कि कितनी नूतनतापूर्वक और भावपूर्ण ढंग से यह कृति लिखी गयी थी; उन्होंने इसकी साहसपूर्ण दूरदर्शिता, सैद्धांतिक अथवा वैज्ञानिक संदेहों से रहित होने के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की।

लेनिन ने भी एंगेल्स की इस पुस्तक का अत्युच्च मूल्यांकन किया। उनके विचार में, मजदूर वर्ग की दयनीय दशा का इतना प्रभावोत्पादक और सत्यदर्शी चित्र न तो १८४५ के पहले और न इसके बाद ही और कहीं प्रस्तुत किया गया था।

अनुसंधानकर्ता द्वारा अगली बड़ी कृति, जिन्होंने इतनी मेधावी शुरूआत की थी, १८७८ में प्रकाशित हुई। इन दो पुस्तकों के बीच ३३ सालों का अंतराल था। यह सही है कि ये वर्ष साहित्यिक मौन की अवधि बिल्कुल नहीं थे। एंगेल्स ने अखबारों और पुस्तिकाओं में अनेक लेख प्रकाशित किये; लेकिन दुर्भाग्य से कोई बड़ी कृति लिखने में असमर्थ थे। यह संभवत: उनकी जीवनी का सबसे दु:खद पहलू है।

१८४६ के अंत में, जर्मनी में क्रांतिकारी घटनाओं के बाद, जिनमें मार्क्स और एंगेल्स ने अत्यधिक सक्रिय भूमिका अदा की, ये दोनों इंगलैंड चले गये। मार्क्स

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

और उनके परिवार को सहायता करने की इच्छा करते हुए, जिनके पास जीवननिर्वाह का कोई साधन नहीं था, एंगेल्स मैनचेस्टर में बस गये और एक सूती मिल में, जहां उनके पिता एक हिस्सेदार थे, क्लर्क का काम करने लगे। इस "वाणिज्यिक दासता" को उन्होंने बीस साल अर्पित किये! इन वर्षों के दौरान मार्क्स और एंगेल्स के बीच जीवंत पत्र-व्यवहार होता रहा और लगभग हर पत्र में एंगेल्स, जो स्वयं अमीरी में हर्गिज़ नहीं रह रहे थे, घोषणा करते थे कि उन्होंने छोटी रक़म का एक चेक भेजा है। फ़ांज़ मेहरिंग ने ठीक ही यह टिप्पणी की कि ऐसा त्याग करने और उसे स्वीकार करने के लिए समान रूप से उदात्त आत्मा की आवश्यकता थी। यह केवल भौतिक सहायता का ही प्रश्न नहीं था।

जब मार्क्स से *New York Daily Tribune* के लिए लेख लिखने को कहा गया, तो एंगेल्स ने इन लेखों को अंग्रेज़ी में अनूदित किया, क्योंकि उनके मित्र अभी अंग्रेज़ी भाषा में पूरी तरह पारंगत नहीं हुए थे।

मार्क्स ने एंगेल्स के साथ उन सभी कठिन समस्याओं पर विचार-विमर्श किया, जो 'पूंजी' पर उनके कार्य के दौरान प्रस्तुत हुईं। मार्क्स के लिए एंगेल्स का विचार अत्यंत महत्वपूर्ण था। अपने मित्र से परामर्श लिये बिना मार्क्स ने अपने जीवन की लंदनवाली अवधि में न तो कोई व्यावहारिक क़दम उठाया और न ही कोई कृति प्रकाशित की।

उनकी मैत्री, जो 'पवित्र परिवार' और 'जर्मन

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

विचारधारा' पर कार्य में परस्पर रचनात्मक सहयोग से पैदा हुई और उनके क्रांतिकारी कार्यकलापों द्वारा मज़बूत बनी, सालों के गुज़रने के साथ निरंतर बढ़ती गयी। उनका आत्मिक साहचर्य इतना सुदृढ़ था कि वे एक दूसरे के बिना काम नहीं चला सकते थे।

अपने आसानी से आहत हो जाने वाले आत्म-सम्मान के बावजूद मार्क्स अपनी आलोचना की अपेक्षा एंगेल्स की आलोचना से कहीं अधिक मर्माहत हो उठते थे। वह भाड़े के क़लमघिस्सू लेखकों द्वारा अपने पर किये गये दूषित आक्रमणों को उत्तर देने योग्य न समझते हुए दार्शनिक शांति के साथ बर्दाश्त कर सकते थे। लेकिन यदि यह एंगेल्स के सम्मान का प्रश्न होता था, तो मार्क्स से न अनुग्रह, न ही दया की कोई आशा की जा सकती थी। वह तुरत लड़ाई में उतर जाते थे। जब १८५० में किसी मुल्लेर-टेल्लेरिंग ने एंगेल्स की निन्दा करते हुए मज़दूर समाज को पत्र लिखने का दुस्साहस किया, तो मार्क्स आग-बबूला हो गये। संयमित क्रोध के साथ उन्होंने नीच निन्दक की निम्न पंक्तियों में भर्त्सना की:

"मज़दूर समाज को कल के आपके पत्र के लिए मैं आपको द्वंद्वयुद्ध की चुनौती देता, यदि आप एंगेल्स के खिलाफ़ अपनी लज्जाजनक निन्दा के बाद इस चुनौती के लायक होते... क्रांतिकारी कट्टरपन के उस ढोंगी नकाब को नोच फेंकने के लिए मैं एक अन्य क्षेत्र में आपके साथ संघर्ष की प्रतीक्षा करता हूं, जिसकी आड़ में आप अब तक अपने निम्न हितों, अपनी ईर्ष्या, अपने असंतुष्ट

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

दंभ और इस बात पर अपने अतृप्त क्रोध को छिपा रखने में सफल रहे हैं कि दुनिया आपकी महान प्रतिभा को नहीं मान्यता देती ... ”

एंगेल्स भी तब ऐसी ही तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करते थे, जब यह अपने मित्र की प्रतिष्ठा की रक्षा का प्रश्न होता था। उन्होंने भोंडे अर्थशास्त्री आ० लोरिआ को कुपित झिड़की दी, जिसने 'पूंजी' के विचारों को झुठलाने और तोड़ने-मरोड़ने में विशेषज्ञता प्राप्त की थी: “मुझे कार्ल मार्क्स के बारे में आपका लेख मिला है। आप उनकी शिक्षा को तीव्रतम आलोचना का विषय बनाने और इसे कुछ का कुछ समझने के लिए भी स्वतंत्र हैं; आप मार्क्स की जीवनी लिखने के लिए स्वतंत्र हैं, जो विशुद्ध कपोल-कल्पना के अलावा और कुछ नहीं है। लेकिन आप जो चीज़ करने के लिए नहीं स्वतंत्र हैं और जो चीज़ मैं किसी को कभी नहीं करने दूंगा, वह मेरे दिवंगत मित्र की निन्दा है।”*

जब एंगेल्स लंदन जाते और मित्रों की मुलाक़ातें होतीं, तो मार्क्स परिवार में खुशियां मनायी जातीं। मार्क्स की पुत्रियां उन्हें अपना दूसरा पिता कहती थीं। यह कहना मुश्किल है कि यदि एंगेल्स अनेक वर्षों तक निःस्वार्थ सहायता नहीं करते, तो मार्क्स और उनके परिवार को क्या हुआ होता। उन्होंने जानबूझकर अपने वैज्ञानिक दिलचस्पियों को एक ओर रख दिया, उन्हें

* फ्रे० एंगेल्स, आ० लोरिआ को, १८८३।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अपने मित्र के वैज्ञानिक अध्ययनों के लिए बलिदान किया। यह हमेशा मार्क्स के मन पर बोझ बना रहा।

१६ अगस्त, १८६७ को दो बजे रात को मार्क्स ने 'पूंजी' के पहले खंड के प्रूफ़ समाप्त किये और एंगेल्स को लिखा: "अत: **यह खंड पूरा हो गया।** यह सिर्फ़ **तुम्हारी** वजह से ही संभव हुआ। मेरे लिए तुमने जो आत्म-त्याग किया है, उसके बिना संभवत: मैं तीन खंडों के लिए इस विशाल कार्य को पूरा नहीं कर पाया होता! तुम्हें गले लगाता हूं, बहुत-बहुत आभारी हूं!"

लेकिन एंगेल्स ने न तो कभी अपने भाग्य का रोना रोया और न ही इस पर कोई शोक प्रकट किया। वह अपने काम पर इतने प्रसन्न और शांत रहते थे, जैसे कि नौकरी पर जाने और दफ़्तर में बैठने से अच्छा दुनिया में और कुछ हो ही नहीं।

इसका वस्तुत: एंगेल्स के लिए क्या अर्थ था, यह एलेओनोरा मार्क्स-एवेलिंग के संस्मरण से समझा जा सकता है, जो उस समय एंगेल्स के घर मेहमान थीं, जब उनके "कारावास" का अंत हो रहा था।

"सुबह अंतिम बार दफ़्तर जाने के लिए जूते पहनते हुए जिस विजयोल्लास के साथ उन्होंने पुकार लगा कर कहा था कि 'बस, अंतिम बार!', उसे मैं कभी नहीं भूलूंगी।

"चंद घंटों बाद हम गेट पर खड़े उनका इंतज़ार कर रहे थे। हमने उन्हें उनके मकान के सामनेवाले छोटे मैदान में से आते देखा। वह अपनी छड़ी लहराते हु

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

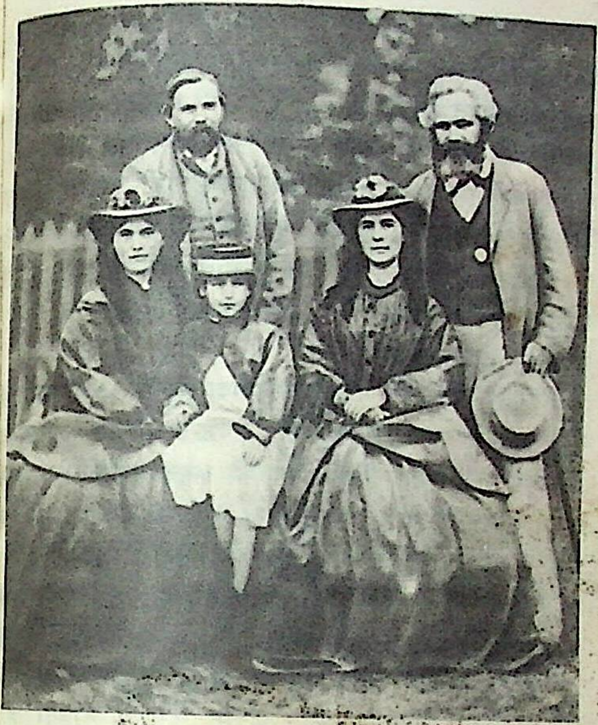

कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स और
मार्क्स की बेटियां – जेनी, लाउरा, एलेओनोर।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

गा रहे थे और उनका चेहरा ख़ुशी से चमक रहा था। फिर हमने जशन मनाने के लिए मेज़ लगायी और शैम्पेन पीकर आनंदित हुए।

"उस समय मैं बहुत छोटी थी और यह सब कुछ समझ नहीं सकती थी, पर अब, जब कभी इस बात की याद करती हूं, तो आंखों में आंसू आ जाते हैं।"*

उसी दिन एंगेल्स ने अपनी माता को लिखा: "मैं बिल्कुल दूसरा आदमी बन गया हूं और दस साल से नौजवान हो गया हूं।"

एंगेल्स के चरित्र में जीवन-आनंदानुभूति, उतावलापन, मौलिक स्पष्टता और सरगर्मी ने उन्हें अत्यंत आकर्षक व्यक्ति बनाया। एक दिन मार्क्स को अपने हैम्बर्ग के प्रकाशक से पत्र मिला, जिसने उन्हें सूचित किया था कि एंगेल्स उसके यहां आये थे, कि उसने एक ऐसे आकर्षक व्यक्ति से परिचय किया है कि इससे पहले ऐसे आदमी से कभी मुलाक़ात ही नहीं हुई।

मार्क्स ने बीच में ही पत्र को पढ़ना रोक कर निष्कपट गर्व के साथ कहा: "ऐसा आदमी देखना चाहता हूं, जिसने फ्रेड को उतना ही स्नेही न पाया हो जितना कि वह विद्वान है!"

उनकी 'आत्मस्वीकृतियां' – मार्क्स की पुत्रियों के प्रश्नों के प्रसन्नचित्त उत्तर – पढ़ने पर एंगेल्स वस्तुतः स्नेही, प्रफुल्ल और वाग्विदग्ध व्यक्ति के रूप में ही दिखायी देते हैं...

* संस्मरण : मार्क्स और एंगेल्स।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

आपका अभीष्ट गुण	उल्लास
पुरुषों के लिए	अपना काम देखना
स्त्रियों के लिए	चीज़ों को अपने उपयुक्त स्थान पर रखना
आपकी मुख्य चारित्रिकता .	सब कुछ अधूरा जानना
आपकी नज़र में सुख क्या है .	शातो मार्गो १८४८ (शराब का नाम और उस वर्ष की क्रांतिकारी घटनाओं की ओर इशारा)
आपकी नज़र में दुःख क्या है .	दंतचिकित्सक के पास जाना
आपके निकट क्षम्य दोष .	सभी प्रकार का अतिरेक
आपके निकट घृण्य दोष . .	पाखण्ड
आपके लिए असह्य . . .	बनी-ठनी, दंभी औरत
प्रिय काम	नोक-झोंक करना
प्रिय वीरनायक	कोई नहीं
प्रिय वीरनायिका	इतनी अधिक कि एक नाम लेना मुश्किल है
प्रिय फूल	ब्लू बेल
प्रिय रंग	एनीलिन को छोड़ कर कोई भी
प्रिय खाद्य	ठंडा: सलाद, गर्म: आयरी दमपुख्त
प्रिय जीवन-नियम	कोई भी नहीं रखना
प्रिय आदर्शवाक्य	घबराओ मत

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मार्क्स की तरह एंगेल्स भी असाधारण रूप से विकसित व्यंग्य-बोध से संपन्न थे। इसने उन्हें निर्वासन में जीवन के भारों को बर्दाश्त करने में सहायता की।

एंगेल्स को एक पत्र में अपने ख़राब स्वास्थ्य से जनित कष्टों का वर्णन करते हुए मार्क्स ज़ोर देते हैं कि इन सभी परिस्थितियों के बावजूद वह इस चीज़ को पहले से कहीं ज़्यादा महसूस करते हैं कि उनकी जैसी मैत्री कितनी बड़ी ख़ुशी है, कि वह किन्हीं भी अन्य संबंधों को इतना ऊंचा नहीं आंकते।

वाणिज्य के घृणित जुए को उतार फेंकने के बाद एंगेल्स लंदन चले आये और मार्क्स के घर के निकट ही रहने लगे। दोनों मित्र लगभग रोज़ ही मिलते थे। पहले से संचित सभी रचनात्मक योजनाओं को पूरा करते हुए, जिनमें से एक मुख्य थी प्राकृतिक विज्ञानों की उपलब्धियों का द्वंद्वात्मक संश्लेषण करने का विशाल कार्य, एंगेल्स अब बहुत कठिन परिश्रम कर रहे थे। १८७८ में 'ड्यूहरिंग मत-खंडन' प्रकाशित की गयी, जिसमें, लेनिन के शब्दों में, दर्शन, प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र की अत्यंत महत्वपूर्ण समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। उन्होंने 'परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति' नामक पुस्तक पर काम करते हुए आदिम समाज के इतिहास का भी अध्ययन किया। यह पुस्तक १८८४ में प्रकाशित हुई।

अपने विशुद्धतः वैज्ञानिक अध्ययनों के अलावा एंगेल्स ने अपने को अत्यंत जोश-ख़रोश के साथ पार्टी संगठित

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

करने के कार्य में भी लगाया। वह इंटरनेशनल की जनरल कौंसिल के सदस्य चुने गये, जहां उन्हें अनेक देशों के लिए संवादी सचिव का कार्यभार सौंपा गया।

एंगेल्स ने हमेशा अपनी वैज्ञानिक दिलचस्पियों को क्रांतिकारी संघर्ष के व्यावहारिक उद्देश्यों के अनुकूल बनाने की चेष्टा की। इस तरह, भविष्य का पूर्वानुमान करते हुए उन्होंने स्लाव भाषाओं का अध्ययन शुरू कर दिया।

मार्क्स और एंगेल्स मज़दूर आंदोलन की सफलता को स्वयं अपनी आंखों से देख सके। वे उसकी हर विजय को व्यक्तिगत जीत के रूप में मनाते थे। यहां तक कि अपने आखिरी वर्षों में भी एंगेल्स जर्मनी में संसदीय चुनावों के अवसर पर अपने घर पर जशन का आयोजन करते थे। एडुअर्ड एवेलिंग स्मरण करते हैं कि एंगेल्स खास जर्मन बियर का एक विशाल पीपा खरीदते, विशेष भोजन का प्रबंध करते ("एंगेल्स एक बड़े बावर्ची थे") और अपने नितांत अंतरंग मित्रों को निमंत्रित करते थे। "'जनरल' हर तार को खोलते, उसे ज़ोर से पढ़कर सुनाते। जीत होती" (चुनावों में सामाजिक-जनवादियों की) "या हार, हम हर तार पर पीते।"*

१८८३ में मार्क्स की मृत्यु के बाद एंगेल्स अंतर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन के मान्य नेता बने। उन्होंने "आर्केस्ट्रा का संचालन किया," पर वह पहले जैसे ही विनम्र, निरभिमान और निष्कपट बने रहे। एक दिन उन्होंने

* संस्मरण : मार्क्स और एंगेल्स।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अपने बारे में कहा : "भाग्य की इच्छा है कि उत्तराधिकारी के रूप में मैं अपने दिवंगत समकालीनों और सर्वोपरि मार्क्स के कार्य के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले सम्मानों को बटोरूं"* और अपने जीवन के शेष भाग को सर्वहारा की सक्रिय सेवा में लगाने का वादा किया ताकि उनके शब्दों में, कम से कम भविष्य में दिये गये सम्मानों का यथासंभव योग्य पात्र बन सकूं।

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में मार्क्स और एंगेल्स ने अपना ध्यान रूस की ओर मोड़ा। एंगेल्स ने अनेक ख्यातिप्राप्त रूसी समाजवादियों – प्लेखानोव, ज़ासूलिच, लोपातिन और अन्य – के साथ पत्र-व्यवहार किया।

रूसी क्रांतिकारियों के साथ अपनी बातचीत में एंगेल्स ने आग्रह किया कि उन्हें मार्क्स की कृतियों को सिर्फ़ उद्धृत नहीं करना चाहिए, बल्कि उसी तरह सोचने की कोशिश करनी चाहिए, ज़िस तरह मार्क्स ने उनकी जगह सोचा होता। उनके विचार में केवल इसी सूरत में "मार्क्सवादी" शब्द को क़ायम रहने का अधिकार है। एंगेल्स को पूर्ण विश्वास था कि रूस में आसन्न क्रांति संपूर्ण विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन के भाग्य में महान भूमिका अदा करेगी। और वह इसमें ग़लत नहीं थे।

अपने चुने हुए मार्ग की यथातथ्यता और उस ध्येय के महान भविष्य के प्रति विश्वस्त होकर, जिसमें उन्होंने मार्क्स के साथ अपनी पूरी शक्ति लगा दी, एंगेल्स जीवन

---

* फ़्रे० एंगेल्स, एडुअर्द म० वाइयां को, १८६०।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

के अपने असीम प्रेम में पूर्णतया न्यायसंगत थे। और सभी भारों के बावजूद, एंगेल्स का जीवन स्वयं इस आदमी की तरह ही संपूर्ण और भव्य था।

मार्क्स की मृत्यु के बाद 'पूंजी' के दूसरे और तीसरे खंडों की पूर्ति एंगेल्स का मुख्य कार्य बन गयी। अपनी पांडुलिपि 'प्रकृति की द्वंद्वात्मक गति' को एक ओर रखते हुए, जो कभी पूरी होने वाली नहीं थी, एंगेल्स ने अपने मित्र की पांडुलिपि पर काम शुरू किया। उन्होंने इस विशाल कार्य को अपनी मृत्यु के कुछ महीने पहले पूरा किया, लेकिन अध्यवसाय, यथातथ्यता और परिनिष्पन्नता के साथ संपन्न किया, जो हमेशा ही उनके कार्य की विशिष्टता थी।

इस प्रकार, 'पूंजी' का प्रकाशन दो युगपुरुषों की उपलब्धि है। मानवजाति को इसके पहले ऐसी आत्मिक शक्ति से परिपूर्ण कृति की जानकारी नहीं थी, जिसने इसके संपूर्ण भाग्य पर इतना बड़ा प्रभाव डाला हो।

* * *

चूंकि अब हम जानते हैं कि कैसे और किन परिस्थितियों में 'पूंजी' लिखी गयी, आइए हम इस असाधारण पुस्तक की ओर मुड़ें। विशुद्धतया आर्थिक समस्याओं को अलग रखते हुए, हम इस पर एक ऐसी कृति के रूप में दृष्टिपात करें, जिसने नये, सच्चे वैज्ञानिक विश्व दृष्टिकोण, द्वंद्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद के दर्शन को पूर्णतम अभिव्यक्ति दी।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

११

'पूंजी' का दर्शन

"यदि मार्क्स ने अपने पीछे 'तर्कशास्त्र' नहीं छोड़ा, तो उन्होंने 'पूंजी' का तर्क अवश्य ही छोड़ा... 'पूंजी' में मार्क्स ने एक ही विज्ञान पर तर्कशास्त्र, द्वंद्ववाद और भौतिकवाद के संज्ञान का सिद्धांत [तीन शब्दों की आवश्यकता नहीं है: यह एक ही बात है] लागू किया, जिसने हेगेल से सभी मूल्यवान चीज़ों को आत्मसात् किया है और उन्हें विकसित किया है।"

व्ला० इ० लेनिन*

"'पूंजी' का दर्शन" बहुतों को शब्दों का विचित्र मेल प्रतीत हो सकता है। हम जानते हैं कि 'पूंजी' बुर्जुआ समाज के आर्थिक संबंधों का एक विश्लेषण है। कुछ पश्चिमी मार्क्सवादवेत्ता इन्कार करते हैं कि 'पूंजी' में कोई दर्शन है, कि मार्क्स एक दार्शनिक थे। उनके अनुसार, दार्शनिक वह व्यक्ति है, जो विचारों की अपनी प्रणाली प्रतिपादित करते हुए विशेष दार्शनिक कृतियां लिखता है।

* व्ला० इ० लेनिन, 'हेगेल के द्वंद्ववाद (तर्कशास्त्र) की योजना', १९१५।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मार्क्स ने ऐसी पुस्तकें नहीं लिखीं। कहीं भी उन्होंने कोई दार्शनिक सिद्धांत प्रतिपादित नहीं किया। फिर भी, वह युग-युगों के महानतम दार्शनिक बने रहते हैं। मार्क्स के दर्शन – द्वंद्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद – का प्रतिपादन उन सभी कृतियों में किया गया है, जिनकी उन्होंने रचना की। इस प्रश्न के संबंध में कि इससे परिचित होने के लिए मार्क्स की कौन-सी पुस्तक पढ़नी चाहिए, उत्तर यह होगा: उनके जीवन की मुख्य कृति – 'पूंजी' – पढ़िये।

यह पिछली शताब्दी के अंत में रूसी उदारतावादी नेता और समाजविज्ञानी नि० मिखाइलोव्स्की को लेनिन का उत्तर था। मार्क्सवाद के विरुद्ध अपने एक वादानुवादात्मक लेख में मिखाइलोव्स्की यह सवाल पूछते हैं: "मार्क्स ने किस कृति में इतिहास की अपनी भौतिकवादी अवधारणा की व्याख्या की है?" इसका उत्तर उन्होंने तुरंत एक अन्वेषक के आत्म-विश्वास के साथ दिया कि मार्क्स ने ऐसा कोई कार्य नहीं किया, न ही संपूर्ण मार्क्सवादी साहित्य में ऐसा कोई कार्य है।

"मार्क्स ने किस कृति में इतिहास की अपनी भौतिकवादी अवधारणा की व्याख्या नहीं की है?" लेनिन ने ठीक ही इस पर आपत्ति करते हुए सवाल किया और उन्होंने यह दिखाया कि बुर्जुआ चिंतकों को मार्क्स की कृतियों में सामाजिक विकास का दार्शनिक सिद्धांत इस वजह से नहीं दिखायी देता कि मार्क्स ने सभी पूर्ववर्ती समाजविज्ञान यानी समाज के बारे में सभी शिक्षाओं

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

और सिद्धांतों से मूलतया भिन्न किसी चीज़ की सृष्टि की।*

उस समय के बुर्जुआ बुद्धिजीवियों के हलकों में आदरणीय और श्रद्धास्पद समाजविज्ञानी वह व्यक्ति माना जाता था, जो ऐसे "गंभीर मामलों" पर विचार-विमर्श करता था, जैसे, सामान्यतया समाज क्या है, इसका उद्देश्य और सारतत्व क्या है, "मानव प्रकृति" से मेल खाने वाला समाज कैसा होना चाहिए। ये समाजविज्ञानी इस तथ्य पर सच्च रोष व्यक्त करके कि विद्यमान व्यवस्था असामान्य है और "मानव प्रकृति" तथा न्याय के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती है, प्रबुद्ध जनसाधारण से नैतिक प्रतिष्ठा प्राप्त करते हुए अपने को लगभग क्रांतिकारियों के रूप में भी दिखा सकते थे।

मार्क्स से पहले के समाजविज्ञानियों के विचार में, जो सामाजिक प्रक्रियाओं की गहराई से जांच-पड़ताल करने में असमर्थ थे और उन्हें तात्कालिक घटनाओं की दृष्टि से देखते थे, सामाजिक संसार राजाओं और सम्राटों के निर्णयों से शासित होता है, कि घटनाक्रम पूर्णतया उनकी इच्छा तथा जनमत को प्रभावित करने वाले चिंतकों के विचारों पर निर्भर करता है। इस विचार के अनुसार, इतिहास ऐसी घटनाओं, प्रक्रियाओं और तथ्यों के अव्यवस्थित घालमेल के रूप में प्रकट होता है, जो शक्तिशाली व्यक्तियों के मनोवेगों के संघर्ष पर निर्भर करते

---

* व्ला० इ० लेनिन, "'जनता के मित्र' क्या हैं और वे सामाजिक-जनवादियों के विरुद्ध कैसे लड़ते हैं?", १८९४।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

हैं, एक ऐसा घालमेल, जिसमें महत्वहीन परिघटनाओं से महत्वपूर्ण परिघटनाओं का भेद नहीं किया जा सकता, जिसमें किन्हीं नियमों को नहीं देखा जा सकता, न ही सामाजिक विकास की प्रेरक शक्तियों और उन्हें प्रभावित करने के तरीक़ों को समझा जा सकता है।

यह सब समाजविज्ञान में आत्मगतवाद, भाववाद था। जहां प्रकृति पर विचारों में भाववाद के विरोधी – भौतिकवादी – यूनानी दर्शन में इसके जन्म से ही थे, वहां समाज पर विचारों में भाववाद का बोलवाला ठीक मार्क्स तक था।

मार्क्स समाज के विकास पर भौतिकवाद के विचार को लागू करने वाले पहले व्यक्ति थे। और यह, लेनिन के शब्दों में, स्वयं में एक मौलिक सूझ थी। मार्क्स ने मनोवेगों, विचारों और हितों के टकरावों को कारण के रूप में नहीं, बल्कि मानव चेतना से स्वतंत्र कुछ अधिक गहन कारण के परिणाम के रूप में देखा। लोगों के ये या वे विचार अथवा प्रयत्न स्वयं उनके सामाजिक अस्तित्व, समाज में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। विचार समाज के विकास को प्रभावित कर सकते हैं, बशर्ते वे विद्यमान सामाजिक आवश्यकताओं से मिलते हों, बशर्ते वे समाज के अधिकांश लोगों के हितों, सबसे पहले भौतिक हितों को व्यक्त करते हों, बशर्ते वे जनसाधारण के मन में घर कर लिये हों।

क्यों, मिसाल के लिए, फ्रांसीसी राजतंत्र का १८वीं सदी के अंत में पतन हुआ? बेशक, इसलिए नहीं कि

–465

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

लुई सोलहवें ने यह या वह राजनीतिक ग़लती की (हालांकि यह भी महत्वपूर्ण था), वल्कि इसलिए कि निरंकुश सत्ता और सामंती सामाजिक संबंध देश के व्यापार और उद्योग के विकास में रुकावट डाल रहे थे तथा पूंजीवाद और उस उदीयमान बुर्जुआ वर्ग के विकास में बाधा बन गये थे, जिसने आर्थिक सत्ता तो प्राप्त कर ली थी, लेकिन राजनीतिक सत्ता से वंचित था।

अतः सामाजिक संबंध, जो मानव चेतना से स्वतंत्र रूप से विकसित होते हैं, अंतिम विश्लेषण में प्रमुख विचारधारात्मक, राजनीतिक और न्यायिक प्रणालियों को निर्धारित करते हैं। सामान्यतया विचारों का मार्ग सामाजिक-आर्थिक प्रक्रियाओं के मार्ग पर निर्भर करता है, न कि विलोमतः। इसका अर्थ यह है कि स्वयं सामाजिक संबंध भौतिक, वस्तुगत हैं! यही वह निष्कर्ष है, जिसे निकालने में मार्क्स से पहले के चिंतक असफल रहे थे।

लेकिन सामाजिक संबंध अत्यंत नानाविध होते हैं। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण वे हैं, जो उत्पादन प्रक्रिया में क़ायम होते हैं, यानी उत्पादन संबंध। वे, सर्वप्रथम, उत्पादक और उत्पादन साधनों के मालिक के संबंध हैं, अर्थात दास और दास-स्वामी, भूदास और ज़मींदार, मज़दूर और पूंजीपति के संबंध।

शोषणकारी संबंधों के इन तीन रूपों के बीच मूलभूत [illegible] देखना आसान है। अतः हम उन तीन सामाजिक [illegible]ओं पर विचार कर रहे हैं, जो स्वभावतया [illegible] शक्तियों के विकास के परिणामस्वरूप एक

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

दूसरे में विकसित हुईं।

मार्क्स ने समाज के विकास को ऐसे नियमों के अधीन एक ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में देखा, जो मानव चेतना से स्वतंत्र, लेकिन पूर्णतया संज्ञेय होते हैं।

मार्क्सवाद के संस्थापकों ने इन सभी विचारों को १९वीं सदी के छठे दशक में ही व्यक्त कर दिया था। किंतु, लेनिन के शब्दों में, 'पूंजी' की रचना के पूर्व यह मात्र एक प्राक्कल्पना, हालांकि वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित प्राक्कल्पना, था। 'पूंजी' के प्रकाशन के उपरांत इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा प्राक्कल्पना नहीं रह गयी है, बल्कि वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित सिद्धांत बन चुकी है और समाजविज्ञान सचमुच एक विज्ञान बन गया है।

क्यों 'पूंजी' ने ऐतिहासिक भौतिकवाद के निर्माण और विकास में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की? क्योंकि मार्क्स ने अपने को समाज के संगठन की विधियों के बारे में परिकल्पनात्मक सामान्य विचारों तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि पूंजीवादी संरचना के उदाहरण का इस्तेमाल करते हुए समाज के कार्य और विकास प्रक्रिया का ब्योरेवार अध्ययन भी किया। परिणामस्वरूप, पाठक इस संपूर्ण संरचना को इसकी उत्पादक शक्तियों और उत्पादन संबंधों की संजटिल, द्वंद्वात्मकता, बुर्जुआ और सर्वहारा वर्गों के वैरभाव तथा उन राजनीतिक, न्यायिक और विचारधारात्मक संस्थाओं के साथ एक जीवंत जीव के रूप में देखता है, जो मज़दूर का शोषण [illegible] उद्यमकर्ता के अधिकार की रक्षा करती हैं।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अकाट्य तर्क के साथ मार्क्स ने सिद्ध किया कि जिस तरह सामंतवाद का स्थान पूंजीवाद ने ले लिया, उसी तरह पूंजीवाद भी विकास के वस्तुगत नियमों के कारण अपने विनाश की ओर, एक वर्गविहीन समाज की ओर बढ़ रहा है। "पूंजी का एकाधिकार उत्पादन की उस प्रणाली के लिए एक बंधन बन जाता है, जो इस एकाधिकार के साथ-साथ और उसके अंतर्गत जन्मी है और फूली-फली है। उत्पादन साधनों का केन्द्रीयकरण और श्रम का समाजीकरण अंत में एक ऐसे बिंदु पर पहुंच जाते हैं, जहां वे अपने पूंजीवादी खोल के भीतर नहीं रह सकते। खोल फट जाता है। पूंजीवादी निजी स्वामित्व की मौत की घंटी बज उठती है। संपत्ति-अपहरण करने वालों की संपत्ति का अपहरण हो जाता है।"*

मार्क्स विश्वस्त ढंग से दिखाते हैं कि कम्युनिस्ट समाज कल्पनावादी स्वप्नदर्शियों का आदर्श नहीं है, बल्कि आर्थिक जीवन की संपूर्ण धारा इसकी ओर निदेशित होती है। स्वयं पूंजी विज्ञान और टेक्नोलाजी, सभी उत्पादक शक्तियों के विकास को निर्बाध रूप से तीव्र करते हुए नये समाज, नयी सामाजिक-आर्थिक संरचना की भौतिक पूर्वापेक्षाएं तैयार करती है। बड़ी फ़ैक्टरियों में सर्वहारा को संयुक्त करके और आबादी के अधिकांश भाग को शोषित मज़दूरों में परिवर्तित करके पूंजी पुराने समाज की जंजीरों को तोड़ने और इसका पुनर्सगठन शुरू करने में

---

* का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

समर्थ एक क्रांतिकारी शक्ति तैयार कर रही है।

कम्युनिज़्म एक ऐसा समाज है, जिसमें स्वयं मज़दूर संपूर्ण भौतिक और आत्मिक संपदा के मालिक होते हैं, जिसमें मनुष्य उच्चतम मूल्य और उद्देश्य बन जाता है, न कि सामाजिक उत्पादन का एक साधन, जिसमें प्रत्येक का स्वतंत्र, चहुंमुखी विकास सबके स्वतंत्र विकास की शर्त होती है। मार्क्स ने कल्पनावाद के पुट के बिना, भावी "स्वर्ण युग" की मनमानी, काव्यात्मक तसवीरें खींचने के किसी प्रयास के बिना इस समाज की रूपरेखाएं प्रस्तुत कीं। तार्किक विश्लेषण की शक्ति से वह उन प्रवृत्तियों और नियमों को प्रकट करते हैं, जो कम्युनिज़्म को ऐतिहासिक रूप से अनिवार्य बनाते हैं। वह नये समाज का वास्तविक मार्ग – सर्वहारा क्रांति और मज़दूर वर्ग के अधिनायकत्व के ज़रिये – दिखाते हैं। इस प्रकार, पूंजीवादी उत्पादन के अध्यवसायपूर्ण आर्थिक विश्लेषण की प्रक्रिया में मार्क्स इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा प्रस्तुत करते हैं। इसी तरह, 'पूंजी' मार्क्सवादी दर्शन के मर्म – द्वंद्वात्मक-भौतिकवादी पद्धति – को मूर्त रूप प्रदान करती है।

द्वंद्वात्मक-भौतिकवादी पद्धति का वर्णन विशेष शब्दावली में नहीं किया गया है, यह कार्य-प्रणाली में, पूंजीवादी समाज की अर्थव्यवस्था के विश्लेषण में व्यावहारिक प्रयोग में दी गयी है। 'पूंजी' का विश्लेषण करते हुए हम देखते हैं कि कैसे मार्क्स ने इस पद्धति को इस्तेमाल किया, कैसे इसे लागू किया। अतः 'पूंजी' के पाठक ० भी

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सीखते हैं कि समाज के अध्ययन में द्वंद्वात्मक-भौतिकवादी पद्धति कैसे लागू की जा सकती है और लागू की जानी चाहिए, सैद्धांतिक चिंतन के इस शक्तिशाली हथियार के प्रयोग में कैसे पारंगत बना जा सकता है।

संज्ञान की द्वंद्वात्मक पद्धति मार्क्स से बहुत पहले अनेक दार्शनिकों द्वारा विकसित की जाती रही। स्वयं "द्वंद्ववाद" शब्द का अर्थ था वाद-विवाद चलाने की कला, अपने संवादी को युक्तिपूर्वक गतिरोध में ले जाने, अंततः उसे कुछ ऐसा कहने के लिए विवश करने की कला, जो उसके प्रारंभिक वक्तव्य का बिल्कुल विलोम हो। समय के गुज़रने के साथ "द्वंद्ववाद" शब्द ने कुछ भिन्न अर्थ प्राप्त किया। इसका अर्थ प्रवाहिकता, प्रकृति, समाज और चिंतन की प्रक्रियाओं के अंतर्विरोधी स्वरूप तथा विलोमों की एकता और टकराव के ज़रिये सरल से जटिल की ओर विकास से लिया जाने लगा। पहले यूनानी दार्शनिक हेराक्लिटस, अनाक्सागोरस, पार्मेनिडीज़, एलेय के ज़ेनो, डेमोक्रिटस, सुकरात और प्लेटो निपुण द्वंद्ववादी थे। उन्होंने ही द्वंद्ववाद को चिंतन, दुनिया के संज्ञान की सचेत रूप से प्रयुक्त विधि में परिवर्तित किया। उनके सूक्ष्मदर्शी दार्शनिक विचारों ने आज भी अपना महत्व, अपनी प्रासंगिकता नहीं खोयी है। यूनानी दार्शनिक सबसे महत्वपूर्ण और सार्विक अतःसंबधों को अपनी सहज-बुद्धि से महसूस करते हुए ब्रह्मांड की एक पूरी तसवीर प्रस्तुत करते हैं। वे ब्योरों की दुनिया में गहराई से जांच-पड़ताल नहीं करते – और इसी [illegible]चीन यूनानी दर्शन

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

का दोष है, जिसकी वजह से बाद में अन्य विचारों ने इसका स्थान ले लिया था। लेकिन, जैसाकि एंगेल्स ने ज़ोर दिया, इसी में उन कुछ सीमित अवधारणाओं के मुक़ाबले उसकी श्रेष्ठता भी है, जिन्हें प्राकृतिक विज्ञान आज तक पूर्णतया दूर नहीं कर पाये हैं। यूनानी दर्शन ने हमें अवधारणाओं और प्रवर्गों की एक विकसित, द्वंद्वात्मक रूप से लचकदार प्रणाली विरासत में दी, जिसे अब भी दुनिया की व्याख्या करने में सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया जाता है। इसके प्रतिनिधियों ने अनेक साहसी, दूरदर्शी प्राक्कल्पनाएं प्रतिपादित कीं, जो बाद में वैज्ञानिक रूप से, परीक्षण द्वारा प्रमाणित हुईं। महान आधुनिक भौतिक-विज्ञानी मैक्स बोर्न ने ठीक ही कहा: "जिस चीज़ के बारे में भौतिकविज्ञान आज सोच रहा है, उसका बहुत कुछ दर्शन ने पहले ही अनुमान कर लिया था।"

प्राचीन यूनानी दर्शन के अलावा एंगेल्स ने मार्क्स से पहले के द्वंद्ववाद के एक दूसरे रूप का भी उल्लेख किया, जो प्राकृतिक विज्ञान के लिए फलदायी था अर्थात क्लासिकीय जर्मन दर्शन का द्वंद्ववाद, जो हेगेल के दर्शन में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचा।

हेगेल ने अवधारणाओं की मौलिक प्रणाली की सृष्टि की, जो एक दूसरे में से विकसित होती हैं, एक दूसरे के साथ टकराती हैं और, उनके अनुसार, इस विकास एवं संघर्ष में प्रकृति, समाज और चिंतन की सभी प्रक्रियाओं को जन्म देती हैं। वह यथार्थ को सिर के बल खड़ा कर देते हैं : उनके ख़्याल में विचार, अवधार-

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

णाएं एवं तार्किक प्रवर्ग संसार को प्रतिबिम्बित नहीं करते, बल्कि इसकी सृष्टि करते हैं। परिणामस्वरूप, हेगेल ने अपने दर्शन को लगभग सृष्टि की निष्पत्ति के रूप में माना, क्योंकि यह अंतिम, परम सत्य प्राप्त करता है।

फिर भी, अपने भाववाद और सीमितता के बावजूद, हेगेलीय दर्शन ने संसार की व्याख्या में एक बड़ा डग भरा था।

हेगेल का महान गुण यह है कि उन्होंने दर्शन, कला और प्राकृतिक विज्ञान में मानव चित्त की सभी उपलब्धियों का सार प्रस्तुत करने का प्रभावशाली प्रयास किया। उन्होंने संपूर्ण प्राकृतिक, ऐतिहासिक और आत्मिक संसार को निरंतर परिवर्तन, रूपांतरण और विकास के रूप में निरूपित किया। प्रकृति, समाज और चिंतन उसी द्वंद्वात्मक सिद्धांतों से अनुप्राणित होते सिद्ध हुए। मानव विचार के इतिहास में ऐसी भव्य, सर्वग्राही प्रणाली की कभी सृष्टि नहीं हुई थी।

लेकिन हेगेल की महानतम उपलब्धि थी साधारण से संजटिल की ओर, अंग से समष्टि की ओर सभी अस्तित्वमान चीज़ों के विकास के मार्ग और प्रक्रिया का प्रकटीकरण, जिसे उन्होंने अमूर्त से मूर्त की ओर उत्कर्ष की पद्धति कहा और जिसने उनके द्वंद्ववाद के सभी पहलुओं, नियमों और तत्वों को अंगीभूत किया। अमूर्त से मूर्त की उत्कर्ष की हेगेलीय पद्धति की सहायता से वस्तुओं और परिघटनाओं ने न केवल अन्योन्यक्रियाकारी, बल्कि ऐतिहासिकत: उदीयमान, [illegible], वर्धमान और गति-

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मान रूप ले लिया। हेगेल द्वारा एक दूसरे में से प्रवर्गों का "विशुद्ध" निगमन विश्व-इतिहास के विकास के साथ अनूठे ढंग से मेल खाता है। और हालांकि वास्तविक वस्तु-स्थिति को रहस्यमय ढंग से इस तरह उलटा कर दिया गया है कि, हेगेल के अनुसार, चिंतन-समष्टि का सृजन वास्तविक इतिहास का सृजन-कार्य है, फिर भी, स्वयं इस चिंतन पद्धति में इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा, सामाजिक प्रक्रियाओं और परिघटनाओं के वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन तथा उनके सैद्धांतिक प्रतिरूपण की पूर्वापेक्षाएं विद्यमान थीं।

इससे क्या निष्कर्ष निकलता था? प्रतीत होता है कि ज्ञान का शक्तिशाली अस्त्र प्राप्त करने के लिए बस इस पद्धति में पारंगत होने और अपने को इससे लैस करने की आवश्यकता थी और ज्ञान के इस अस्त्र की सहायता से विज्ञान के सभी ठोस क्षेत्रों में अत्यंत जटिल समस्याएं हल की जा सकती थीं। ऐसा ही है न?

लेकिन आश्चर्यजनक रूप से, हेगेलीय दर्शन की महान उपलब्धि – द्वंद्ववाद – दार्शनिक के जीवन-काल में और उनकी मृत्यु के बाद लंबे समय तक किसी भी प्रयोग के बिना बेकार बनी रही। यहां तक कि किसी ने हेगेलीय द्वंद्वात्मक पद्धति को लागू करने का भी प्रयास नहीं किया। इसे आलोचना का विषय नहीं बनाया गया, बल्कि एकदम भुला दिया गया। सिकंदर महान के उत्तराधिकारियों की भांति हेगेलवादी "डियाडोचियों" (एंगेल्स ने यह व्यंग्यात्मक नाम जर्मन विश्वविद्यालयों में हेगेलीय विचारधारा के

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

समर्थकों को दिया था) को, जो आपस में ही लड़-झगड़ रहे थे, बिल्कुल नहीं मालूम था कि अपनी भव्य विरासत के साथ क्या करें।

यह ऐसा क्यों था? प्रतीयमानत: इसका कारण मुख्य रूप से स्वयं पद्धति की अपूर्णता में निहित था। यह जिस रूप में भावी पीढ़ियों को सौंपा गया था, उस रूप में जीवनक्षम नहीं था। इसे अधिभूतवादी अमूर्तीकरणों के कृत्रिम, अयथार्थ परिवेश में विकसित किया गया था और केवल उस भाववादी दार्शनिक प्रणाली की आवश्यकताओं के लिए सज्जित किया गया था, जिसने स्वयं में अपना विकास पूरा कर लिया था।

जब हेगेल ने अपने दर्शन में संसार को सिर के बल खड़ा कर दिया, यह इसी नाज़ुक स्थिति में केवल खड़ा रह सकता था न कि आगे बढ़ सकता था। द्वंद्वात्मक पद्धति ऐसी कमज़ोर नींव पर नहीं विकसित हो सकती थी। परम भाववाद की हेगेलीय प्रणाली को प्रस्तुत करके दर्शन ने वह सब कुछ पूरा कर दिया था, जो इसे पूरा करना था। इसने उस सब कुछ का ज्ञान प्राप्त कर लिया था, जिसका ज्ञान प्राप्त करने में यह समर्थ था। इसने जो कुछ कहना था, कह दिया था। परम सत्य प्राप्त हो गया था। पृथ्वी सूर्य का चक्कर काटना बंद कर सकती थी। सितारे चमकना बंद कर सकते थे। मानवजाति युद्धों और क्रांतियों, मनोवेगों और दिलचस्पियों को त्याग कर साहसी जर्मन चिंतन के चमत्कारों की शाश्वत प्रशंसा में विमुग्ध खड़ा रह सकती थी। और कहीं आगे जाने, और

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कुछ पाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। हेगेलीय दर्शन प्रकृति, समाज और चिंतन की संपूर्ण ऐतिहासिक क्रिया का चरमोत्कर्ष और उद्देश्य था।

रूढ़िवादी हेगेलवादियों के लिए ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में द्वंद्वात्मक पद्धति को लागू करने का सवाल निन्दात्मक ज्ञान पड़ता था।

यह केवल भाववादी खोल को फेंक देने का ही सवाल नहीं था। भाववाद के गर्भ में विकसित द्वंद्ववाद के लिए भाववाद मात्र कोई बाह्य चीज़ ही नहीं था। इसने द्वंद्ववाद पर अपनी छाप छोड़ी थी और द्वंद्ववाद इसके रोगों, इसकी दुर्बलता से ग्रस्त था।

जैसे कि पहले कहा जा चुका है, हेगेलीय दर्शन के परम, अंतिम सत्य के दावे द्वारा द्वंद्ववाद का रुखाई से उल्लंघन किया गया था। इसके अधिकार केवल चिंतन के क्षेत्र तक ही सीमित थे। प्रकृति और समाज के संबंध में द्वंद्ववाद के अधिक से अधिक संकेत की उसी सीमा तक अनुमति थी, जिस सीमा तक यह उस समय के प्राकृतिक विज्ञानों की उपलब्धियों में प्रकट हुआ।

इसका अपना ही तर्क था। यदि भूतद्रव्य केवल संज्ञान का अन्यसत्व था (१९ वीं सदी के प्रारंभ में भूतद्रव्य का संज्ञान अभी द्वंद्ववाद तक नहीं विकसित हुआ था), तो इसका अर्थ यह था कि भूतद्रव्य विकसित द्वंद्ववाद के लिए मूलतया पराया था और वहां द्वंद्ववाद की खोज करने में कोई तुक नहीं था। अतः सैद्धांतिक अन्वेषण का आगे का मार्ग बंद हो गया और चिंतन चेष्टारहित होकर आत्म-

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

संतुष्ट बन गया। द्वंद्ववाद के लिए हेगेल की दार्शनिक प्रणाली की सीमाओं से परे कुछ भी करने को नहीं था, इसके लिए कोई भी प्रेरणा-शक्ति नहीं रह गयी।

"विशुद्ध चिंतन" के क्षेत्र में भी हेगेल के भाववाद ने उनकी द्वंद्वात्मक पद्धति को प्रभावित किया। उनके प्रवर्गों के त्रिक प्राय: मनमाने स्वरूप के थे, जो अवधारणाओं के सच्चे तर्क और सारतत्व से लेशमात्र मेल नहीं खाते थे। निर्धारित स्कीम की खातिर एक स्थिति से दूसरी स्थिति की ओर अनेकानेक संक्रमणों की कल्पना की जाती थी और ऐसे खोखले शब्दाडंबर और शब्दचातुर्य का सहारा लिया गया, जिनसे स्पष्टत: पंडिताऊपन और रहस्यवाद की बू आती थी। हेगेल मेफ़िस्टोफ़ीलीस की विषबुझी उक्ति के अनुसार काम करने से नहीं हिचकते:

और यदि रह जाती है अवधारणाओं में कोई कमी,
ले सकता है शब्द उनका स्थान।*

लेकिन यदि, फिर भी, हेगेल ने विशुद्ध चिंतन के क्षेत्र में विशाल सफलताएं प्राप्त कीं, संपूर्ण पूर्ववर्ती तर्क और अधिभूतवाद को बायें हाथ के खेल की तरह समाप्त कर दिया, यदि उन्होंने, चाहे भाववादी रूप में ही सही, विश्व-इतिहास के विकास और आंतरिक संबंध को प्रकट किया और ज्ञान के सभी क्षेत्रों में, जिन्हें उन्होंने स्पर्श किया, एक संपूर्ण युग छोड़ा, तो इसका अर्थ यह है कि

* गेटे, 'फ़ाउस्ट'।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

उनकी द्वंद्ववादी पद्धति में समृद्धतम किंतु अब तक अनन्वेषित संभावनाएं छिपी हुई थीं।

इसका अर्थ यह था कि इसे एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी, जो प्रणाली के म्यान से द्वंद्ववाद की तलवार को खींचने, इसे भाववाद के ज़ंग से साफ़ करने, इसे फिर से इस तरह गढ़ने में समर्थ हो, ताकि यह न केवल अवधारणाओं की अमूर्त छायाओं को बेध सके, बल्कि भौतिक यथार्थ, अत्यंत जटिल सामाजिक और प्राकृतिक प्रक्रियाओं के संज्ञान का एक अस्त्र भी बन जाये। वह व्यक्ति कार्ल हेनरिख मार्क्स थे।

एंगेल्स, जिन्होंने स्वयं हेगेलवाद से मार्क्सवाद तक का मार्ग तय किया था, यह कहने में पूर्णतया सही थे: मार्क्स ही हेगेलीय तर्कशास्त्र से वह मर्मवस्तु निकालने का बीड़ा उठा सकते थे, जो इस क्षेत्र में हेगेल के वास्तविक अन्वेषणों को प्रस्तुत करती है, और वही भाववादी खोलों से मुक्त की जानेवाली द्वंद्वात्मक पद्धति की पुनर्स्थापना कर उसे एक ऐसा सरल रूप देने का बीड़ा उठा सकते थे, जिसमें वह चिंतन के विकास का एकमात्र सच्चा रूप बन जाता है। ऐसी पद्धति तैयार किये जाने के कार्य को, जो राजनीतिक अर्थशास्त्र की मार्क्स द्वारा समीक्षा की आधारशिला है, हम स्वयं मूल भौतिकवादी दृष्टिकोण से ज़रा भी कम महत्वपूर्ण नहीं मानते।"*

* फ़्रे० एंगेल्स, 'कार्ल मार्क्स। राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा का एक प्रयास'।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ठोस वैज्ञानिक अनुसंधान में द्वंद्वात्मक पद्धति लागू करने का क्या अर्थ था? तैयारशुदा, निश्चित द्वंद्वात्मक रूपों को लेना और उनमें विज्ञानों की आनुभविक विषय-वस्तु को सन्निविष्ट करना? हेगेल के तर्क में अमूर्त से मूर्त की ओर उत्कर्ष की सभी गुत्थियों और विपर्यासों का अनुसरण करना और फिर इसके अनुसार भौतिकविज्ञान, रसायनविज्ञान, जीवविज्ञान, समाजविज्ञान और राजनीतिक अर्थशास्त्र की सामग्री की व्याख्या करना? हेगेल के 'दार्शनिक विज्ञानों का विश्वकोश' की पारिभाषिक शब्दावली, प्रवर्गों और अवधारणाओं में पारंगत होना और अध्ययनाधीन यथार्थ की प्रक्रियाओं और नियमों को यह भाषा बुलवाने का प्रयास करना? द्वंद्ववाद के नियमों और लक्षणों को सीखना और प्राकृतिक विज्ञानों के क्षेत्र में उनके अधिकाधिक नये उदाहरणों और अभिपुष्टियों की खोज करना? क्या यह अब तक क़ायम इस सहज विश्वास का स्रोत नहीं है कि एक वैज्ञानिक को केवल द्वंद्ववाद पर निबंधावली का अध्ययन करने की आवश्यकता है और यह उसे विज्ञान के ठोस क्षेत्रों में मेधावी अन्वेषण करने के लिए प्रेरित करेगा?

मार्क्स ने आर्थिक अनुसंधान में द्वंद्वात्मक पद्धति के प्रयोग की समस्या के प्रति एक मूलतया भिन्न दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने यथार्थ पर द्वंद्वात्मक रूपों को थोपने से इंकार किया। उन्होंने यथार्थ को तैयारशुदा द्वंद्वात्मक स्कीमों में बैठाने की चेष्टा नहीं की, जैसा कि हेगेल ने किया, बल्कि अंतर्विरोधों के विकास और उनके अपने विलोम में

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

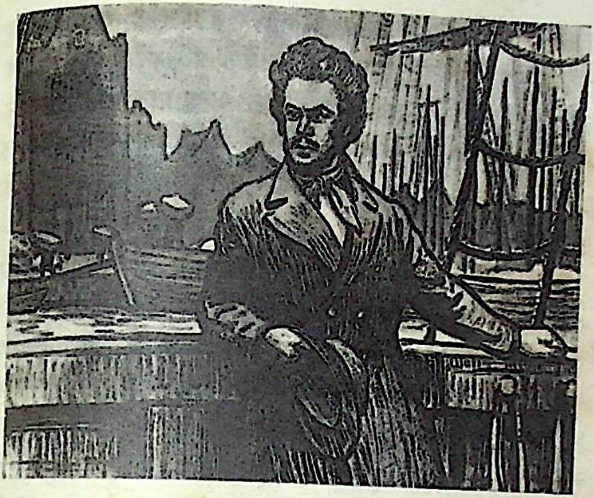

कार्ल मार्क्स हालैंड-यात्रा के दौरान।
चित्रकार – फ़० ग्लेबोव

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

संक्रमण के ज़रिये आर्थिक संघटन की प्रगति के आंतरिक तर्क को प्रकट करते हुए स्वयं आर्थिक प्रक्रियाओं का उनकी उत्पत्ति, प्रगति और प्रवृत्तियों में अध्ययन किया, यानी स्वयं विश्लेषित वस्तु के द्वंद्ववाद का निष्पक्ष अध्ययन किया। इसीलिए मार्क्स ने कहा कि उनकी पद्धति हेगेलीय पद्धति के बिल्कुल विपरीत है।

मार्क्स के अनुसार, उनका अंतिम उद्देश्य पूंजीवादी समाज की प्रगति के आर्थिक नियमों का अन्वेषण करना था। लेकिन 'पूंजी' में किस ठोस समाज का चित्रण किया गया है? यह न जर्मनी, न फ़्रांस और न ही इंगलैंड है (हालांकि मार्क्स सबसे ज़्यादा इंगलैंड का हवाला देते हैं)। यह अपने विशुद्ध रूप में पूंजीवाद है। यह पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का सैद्धांतिक माडल है, जो किसी मृत और अपरिवर्तनीय चीज़ के रूप में नहीं प्रकट होता, बल्कि "एक ऐसे संघटन के रूप में, जो बदल सकता है और बराबर बदल रहा है"*।

कैसे इस संघटन को अवधारणाओं में निरूपित किया जा सकता था? कैसे इसकी असाधारण जटिलता और नानाविधता को चिंतन में व्यक्त किया जा सकता था? कैसे पहलुओं की अन्योन्यक्रिया यानी संरचना को न केवल कार्य-प्रक्रिया में, बल्कि इसके ऐतिहासिक विकास में समझा जा सकता था? कैसे सतह पर दिखने वाले पूंजीवादी संबंधों और उनके प्रच्छन्न सारतत्व के बीच संबंध क़ायम किया जा सकता था? कैसे पूंजीवादी अर्थ-

* का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १।

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE
व्यवस्था के संपूर्ण जटिल निर्माण को प्रवर्गों की प्रणाली में प्रतिबिम्बित किया जा सकता था?

मार्क्स ने इस अपूर्व कठिन कार्य को अमूर्त से मूर्त की ओर उत्कर्ष की द्वंद्वात्मक-भौतिकवादी पद्धति की सहायता से हल किया, जो (हालांकि इसकी उत्पत्ति हेगेलीय पद्धति से हुई) हेगेलीय पद्धति से वैसे ही भिन्न है, जैसे कि सजीव रूपों के विकास की प्राकृतिक-ऐतिहासिक प्रक्रिया, जिसका चरमोत्कर्ष मनुष्य है, गेटे के 'फ़ाउस्ट' में वर्णित कांच के बर्तन में होमुंकुलुस की रहस्यमय रासायनिक सृष्टि से भिन्न है।

अपने पूर्व हेगेल की भांति मार्क्स के समक्ष यह सवाल प्रस्तुत था: पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की प्रणाली की सैद्धांतिक व्याख्या कहां से शुरू की जाये? इसके उत्तर पर बहुत-कुछ निर्भर था, क्योंकि मिथ्या पूर्वाधार मिथ्या निष्कर्षों की ओर ले जाते हैं; सिद्धांत का मज़बूत भवन कमज़ोर आधारशिला पर नहीं खड़ा किया जा सकता।

राजनीतिक अर्थशास्त्र की शुरूआत किसी यथातथ्य और ठोस चीज़, उदाहरणतः, आबादी, राष्ट्र, राज्य से करना सर्वाधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है। ऐसा ही तो १८वीं सदी के अर्थशास्त्रियों ने किया था।

लेकिन राज्य एक संजटिल अवधारणा है। जब तक यह नहीं जान लिया जाता कि राज्यीय मशीनरी किन चीज़ों से बनती है, कैसे काम करती है, कौन-से राजनीतिक और आर्थिक कारक इसके कार्यकलाप निर्धारित करते हैं, तब तक इसे नहीं समझा जा सकता।

21—465

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

यदि आप राज्य या आबादी से शुरू करेंगे, तो यह समष्टि के बारे में एक अत्यंत अस्पष्ट, अव्यवस्थित तसवीर होगी और केवल अधिक विस्तृत परिभाषाओं के ज़रिये ही इन अवधारणाओं के अलग-अलग पहलुओं की समझ-दारी पर पहुंचा जा सकता है। अतः आपको पीछे लौट कर फिर से आबादी और राज्य पर आना होगा। लेकिन इस बार जो तसवीर आपके सामने प्रस्तुत होगी, वह एक अव्यवस्थित तसवीर नहीं, बल्कि विविध परिभाषाओं और संबंधों का समृद्ध योग होगा।

सो, आपको सरल, मूल, अमूर्त अवधारणा से शुरू करना चाहिए। लेकिन ठीक-ठीक किससे? वह मूल कोशिका, भ्रूण कहां है, जिससे पूंजीवादी उत्पादन का संपूर्ण संघटन स्वभावतया विकसित होता है?

मार्क्स अपना ध्यान माल पर संकेंद्रित करते हैं। 'पूंजी' का पहला पैरा निम्नलिखित ढंग से शुरू होता है: "जिन समाज व्यवस्थाओं में उत्पादन की पूंजीवादी प्रणाली प्रमुख रूप से पायी जाती है, उनमें धन 'मालों के विशाल संचय' के रूप में सामने आता है और इसकी एक इकाई होती है माल। इसलिए हमारी खोज अवश्य ही माल के विश्लेषण से आरंभ होनी चाहिए।"

मार्क्स 'पूंजी' का आरंभ अर्थव्यवस्था की प्रारंभिक कोषिका से – माल, माल विनिमय से करते हैं। और यह कोई मनगढ़ंत चीज़ नहीं, बल्कि ऐसी कोई वस्तु है, जिसे इंद्रियों द्वारा महसूस किया जाता है, ऐसी कोई ठोस सामग्री है, जिससे सबका रोज़ ही वास्ता पड़ता है।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जो अपने सभी अंगों और विवरणों में अर्थव्यवस्था के संपूर्ण संघटन में परिव्याप्त होती है, जो इसका ऐतिहासिक प्रस्थान-बिंदु है।

इसके साथ ही, माल विनिमय "बुर्जुआ (माल) समाज का सबसे साधारण, सामान्य और मौलिक, आम और रोज़मर्रा संबंध है, एक ऐसा संबंध, जिससे अरबों बार मुलाक़ात होती है।" यह अमूर्त चीज़ है, लेकिन एक ऐसी चीज़, जो स्वयं पूंजीवाद के भौतिक अस्तित्व द्वारा इसकी उत्पत्ति और विकास के दौरान पैदा होती है। हेगेल के अमूर्तीकरण के विपरीत यह निज में चिंतन-कार्य का परिणाम नहीं है। यह भौतिक रूप से अस्तित्वमान प्रणाली के एक पहलू के रूप में, भौतिक रूप से प्रदत्त होती है और इसलिए इस प्रणाली के सैद्धांतिक माडल में अपना स्थान प्राप्त कर सकती है और प्राप्त करना चाहिए।

मालों का संबंध क्या है? यह किस चीज़ पर आधारित है? – उपयोग और विनिमय मूल्य के अंतर्विरोध पर। मार्क्स इन विलोमों के संघर्ष और इसके फलस्वरूप अमूर्त और मूर्त श्रम के अंतर्विरोध की जांच-पड़ताल करते हैं तथा मूल्य के सार्विक रूप की अधिक जटिल धारणा और फिर मुद्रा-रूप पर पहुंचते हैं। उनका विचार किसी द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार नहीं, बल्कि अध्ययनाधीन विषय के तर्क द्वंद्ववाद के अनुसार आगे बढ़ता है। और ठीक इसी कारण यह वास्तविक परिणामों पर पहुंचता है।

'पूंजी' में मार्क्स की पद्धति का वर्णन करते हुए एंगेल्स लिखते हैं: "जो कोई इस तथ्य का ज्वलंत उदाहरण

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

चाहता है कि जर्मन द्वंद्वात्मक पद्धति विकास की अपनी वर्तमान स्थिति के मामले में पुरानी, संकुचित, वाचाल अधिभूतवादी पद्धति से कम से कम उतनी श्रेष्ठ अवश्य है, जितनी श्रेष्ठ रेलें मध्य युग के परिवहन साधनों से हैं, उसे ऐडम स्मिथ अथवा किसी भी अन्य जानेमाने आधिकारिक अर्थशास्त्री की रचनाओं को पढ़कर मालूम हो जायेगा कि उपयोग मूल्य तथा विनिमय मूल्य इन सज्जनों के लिए कितना यंत्रणादायी है, उनके लिए उन्हें अलग-अलग रखना तथा हरेक को उसकी अनोखी निश्चितता के साथ समझना कितना कठिन है और फिर उसे इस सबकी तुलना मार्क्स की कृतियों में प्रस्तुत प्रश्नों के सुस्पष्ट तथा सरल विवेचन से करनी चाहिए।"*

पूंजीवादी उत्पादन की संरचना के अनुसार, एक अवधारणा से दूसरी अवधारणा तक, एक प्रवर्ग से दूसरे प्रवर्ग तक मार्क्स के सिद्धांत का सुव्यवस्थित भवन खड़ा होता जाता है। नये सारतत्व से समृद्ध बनते हुए और परिघटनाओं के अधिकाधिक दायरे को शामिल करते हुए, यानी ठोस बनते हुए, हरेक अगला प्रवर्ग अपने पूर्ववर्ती प्रवर्ग से निगमित होता है। माल संबंध में निहित मूल अंतर्विरोध का विश्लेषण अपनी ठोस अभिव्यक्तियों में पूंजीवादी समाज के विकसित अंतर्विरोधों के प्रकटीकरण और फलत: इस समाज के अनिवार्य निषेध के बारे में क्रांतिकारी निष्कर्ष पर भी पहुंचा देता है।

---

* फ्रे० एंगेल्स, 'कार्ल मार्क्स। राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा का एक प्रयास'।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सर्वहारा बुर्जुआ वर्ग के साथ संघर्ष में एक शक्तिशाली सैद्धांतिक अस्त्र प्राप्त कर लेता है। विज्ञान अमूर्त से मूर्त की ओर उत्कर्ष की द्वंद्वात्मक-भौतिकवादी पद्धति से समृद्ध बन जाता है।

द्वंद्वात्मक पद्धति को अभी भी यह दिखाना है कि यह वैज्ञानिक संज्ञान में कितनी समर्थ है। प्राकृतिक विज्ञान संचित सामग्री का सामान्यीकरण करने, उसे सुव्यवस्थित करने, द्वंद्वात्मक ढंग से संसाधित करने, नये अवधारणात्मक और रीति-वैज्ञानिक साधनों की सहायता से विभिन्न मोर्चों पर विज्ञानों की असमन्वित उपलब्धियों को एकीकृत करने की अनिवार्य आवश्यकता महसूस करते हैं।

यहीं पर प्राकृतिक विज्ञान सैद्धांतिक चिंतन के उच्चतर क्षेत्रों में प्रवेश करता है। इसके समक्ष अनिवार्यतः सभी प्राप्त परिणामों को एक निश्चित प्रणाली में संगठित करने, उनका एक ही सिद्धांत के दायरे में विवेचन करने का कार्य प्रस्तुत है। आधुनिक भौतिकविज्ञान, जीवविज्ञान और पारिस्थितिकी की कार्यसूची में ऐसा कार्य शामिल भी है। इसे अमूर्त से मूर्त की ओर उत्कर्ष की पद्धति से हल करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।

द्वंद्वात्मक-भौतिकवादी पद्धति अनुसंधानकर्ता के हाथों में एक शक्तिशाली अस्त्र है। यह उसे एक सही अन्वेषक को चुनने, अपने रास्ते से विचलित न होने, अंधी गली में न पहुंचने में सहायता करती है। यह ऐसे मामलों में समस्या को देखने में सहायता करती है, जहां परीक्षण और गणितीय विश्लेषण अभी इसे नहीं खोज सकते।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

लेकिन यह सब इस शर्त पर निर्भर करता है कि अनुसंधान-कर्ता को न केवल दार्शनिक सिद्धांतों का ज्ञान हो, बल्कि वह इस पद्धति में पूर्णतया पारंगत भी हो।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी दर्शन का ध्येय रचनात्मक, अन्वेषणकारी चिंतन की विधियां प्रतिपादित करना है, जो सामान्यीकरणों के उच्चतम स्तर पर होता है। इसका ध्येय सैद्धांतिक चिंतन की प्रगति की नयी विधियों, चिंतन के नये रूपों को खोजना है, जो ब्रह्मांड के सारभूत और सार्विक संबंधों की अधिकाधिक गहन समझ से मेल खाते हों। संपूर्ण रूप में मार्क्सवाद की भांति भौतिकवादी द्वंद्ववाद, लेनिन के शब्दों में, जड़सूत्र नहीं, बल्कि कार्य-कलाप का मार्गदर्शक है।

* * *

बेशक, यहां मैंने 'पूंजी' के दर्शन के बारे में एक बहुत संक्षिप्त रूपरेखा ही प्रस्तुत की है। मैं इतना दिखाना चाहता था कि यह बौद्धिक कार्यकलाप का एक अत्यंत उत्तेजक और रोचक क्षेत्र प्रस्तुत करता है। यह एक अथाह सागर है, जिसमें जितना गहरा हम पैठेंगे, उतना ही अधिक यह हमें आत्मिक समृद्धि प्रदान करेगा। एक लैटिन सूक्ति के अनुसार, जो स्वयं मार्क्स को बहुत पसंद थी: *Hic Rhodus, hic salta!**

* यहां रोडस, कूदो यहां! – ये शब्द ईसप की एक कथा से उद्धृत किये गये हैं। इनका अर्थ है – यही मुख्य बात है। – सं०

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

उपसंहार

"उनका नाम और वैसे ही उनका काम भी युग-युगों तक अमर रहेगा!"

फ़्रेडरिक एंगेल्स *

जब मार्क्स का हृदय धड़कना बंद हो गया – उनकी मृत्यु १४ मार्च १८८३ को अपनी पत्नी के देहांत के एक साल बाद हुई, – तो एंगेल्स ने कहा: "मानवजाति दरिद्र हो गयी है, एक रत्न छिन गया है और वह भी हमारे युग का सबसे अमूल्य रत्न।" **

मार्क्स की मृत्यु एक अपूरणीय क्षति थी। उनका ध्येय, उनके विचार मानवजाति के लिए एक महान उपलब्धि थे, जिसके महत्व को वास्तविकता से अधिक आंकना कठिन है।

मानव संस्कृति के इतिहास में ऐसी कोई भी परिघटना नहीं थी, जो मार्क्सवाद के समकक्ष हो। मार्क्स से पहले के दार्शनिकों ने जिन सिद्धांतों की रचना की, वे सब "दीक्षितों" के संकुचित दायरे की संपत्ति बन कर रह गये। ये सिद्धांत या तो यथार्थ के अलग-थलग पहलुओं

---

* फ़्रे० एंगेल्स, 'कार्ल मार्क्स की समाधि पर भाषण', १८८३।

** फ़्रे० एंगेल्स, पि० वि० पैटन् को, १८८३।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

को स्पष्ट करने या संसार की आदर्श व्याख्या होने का दावा करते थे।

ये दार्शनिक अपने सिद्धांतों की रचना इस कट्टर विश्वास के साथ करते थे कि इनसे सभी आस्तित्वमान चीज़ों की आखिरी तौर पर व्याख्या हो जायेगी। वे संसार की व्याख्या के परम सिद्धांतों की घोषणा और उन्हें बिना शर्त स्वीकार करने की मांग करते थे। विभिन्न दार्शनिकों की परिकल्पनात्मक व्याख्याओं ने चाहे जो भी नानाविध अर्थच्छटाएं ग्रहण कीं, वे सभी एक चीज़-अपने चिंतन की ऐतिहासिकता की शून्यता – अपने मतवादी दृष्टिकोण में समान थीं।

इन चिंतकों की मुसीबत यह थी कि उनके सिद्धांत यथार्थ से पीछे रह जाते। प्रच्छन्न द्वंद्वात्मक नियमों से शासित जीवन दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ता रहा, जबकि सिद्धांत, जिनसे संसार पर विजय करने की आशा की जाती थी, निराशाजनक ढंग से लगभग प्रकट होते ही कालातीत बन जाते।

> जाने मन हर नज़रिया बेरंग है बस सुरमई,
> हां मगर सरसब्ज़ है ज़र्रीं निहाले ज़िंदगी!
>
> (गेटे, 'फ़ाउस्ट')

लेकिन गेटे की इस सूक्ति ने तब अपना दोटूक स्वरूप खो दिया, जब एक ऐसे सिद्धांत की प्रस्थापना की है। – सिद्धांत स्वयं में यथार्थ के तथ्यों को नहीं,

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

यथार्थ की इस या उस अस्थायी परिघटना को नहीं, बल्कि यथार्थ के वास्तविक विकास, इसकी सतत और निरंतर प्रगति तथा परिवर्तन को प्रतिबिम्बित किया। आंखों पर चढ़ी पट्टियां उतर गयीं, जड़सूत्रवादी चिंतन के सभी पूर्वाग्रह ध्वस्त हो गये। पहली बार संसार को सिद्धांत में ठीक उसी रूप में – दिक् और काल में सतत विकास की संपूर्ण जटिलता और अंतर्विरोधात्मकता में – निरूपित किया गया, जैसा कि वस्तुतः वह है। इस अवधारणा में मानव समान प्रकृति के विकास के चरमोत्कर्ष के रूप में प्रकट होता है तथा निश्चित और संज्ञेय प्राकृतिक नियमों के अनुसार आगे बढ़ता है।

यदि कोई मार्क्सवादी विश्व-दृष्टिकोण के सारतत्व को यथार्थ को जानने की विधि की दृष्टि से संक्षिप्त रूप में परिभाषित करना चाहे, तो यह इसका सुसंगत जड़सूत्र-वाद-विरोध और सुसंगत ऐतिहासिकता होगा।

जो लोग मार्क्सवाद के इस सारतत्व को नहीं समझते, उन्हें सामान्यतया इस पर आश्चर्य होता है कि मार्क्स और एंगेल्स ने ऐसी कोई कृतियां नहीं छोड़ीं, जिनमें प्रकृति, समाज और चिंतन पर उनके विचारों की प्रणाली का "पूरे तौर पर" विवेचन किया गया हो, कि उन्होंने "मार्क्सवाद की प्रश्नोत्तरी" नहीं छोड़ी। इस "खाई" को भरने की चेष्टा करते हुए उनमें से कुछ ने ऐसी "प्रश्नोत्तरियां" तैयार करने का प्रयास भी किया। लेकिन वास्तव में उनके इस प्रयास का कोई परिणाम नहीं निकला, सिवाय मार्क्सवाद के विकृतीकरण के। १८८ ग

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

न तो सभी परिस्थितियों के लिए तैयार उत्तरों का संग्रह, न ब्रह्मांड का सैद्धांतिक माडल और न ही "सार्विक रूप से अनिवार्य" ऐतिहासिक स्कीम है। मार्क्स अपनी निरंतर प्रगति और परिवर्तन में अस्तित्वमान यथार्थ के संज्ञान की एक पद्धति है, यह सामाजिक संबंधों के क्रांतिकारी पुनर्संगठन का कार्यक्रम और इस पुनर्संगठन के लिए संघर्ष का एक अस्त्र है।

मार्क्स से पहले भी मानव प्रतिभा ने प्रकृति की अनेक परिघटनाओं और नियमों की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की थी, लेकिन सामाजिक संबंधों के क्षेत्र में विगत के चिंतक अंधेरे में भटक रहे थे। मार्क्सवाद ने सभी सामाजिक परिघटनाओं की अंतिम व्याख्या देने के खोखले दावों से इन्कार कर दिया, लेकिन इसने उनके अध्ययन की एक विश्वसनीय और सही कुंजी प्रदान की। परिणामस्वरूप, पहली बार समाज के अध्ययन को सही वैज्ञानिक आधार पर रखा गया।

मानवजाति का इतिहास क्रांतिकारी उथल-पुथलों से भरा हुआ था, पर मार्क्स से पहले इसे सच्चा क्रांतिकारी विश्व-दृष्टिकोण नहीं प्राप्त था। लेकिन अब जनसाधारण के क्रांतिकारी आंदोलन और क्रांतिकारी चिंतन परस्पर सूत्रबद्ध हो गये। मार्क्सवाद इतिहास की गति को तीव्र करते हुए इसका "इंजिन" बन गया।

जिस तीव्र गति से मार्क्सवादी विचारों का प्रसार हुआ, उस पर हम आश्चर्य किये बिना नहीं रह सकते। जब 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' लिखा गया, तो कम्युनिस्टों

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

लीग में मात्र कुछ दर्जन लोग ही थे। १८६४ में विश्व सर्वहारा का पहला आम, जुझारू संगठन – अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर संघ – क़ायम किया गया। कम्युनिज़्म मज़दूर वर्ग के अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन में परिवर्तित होने लगा। और १८७१ में फ़्रांस के सर्वहारा ने सत्ता के लिए क्रांतिकारी संघर्ष और पेरिस कम्यून के संगठन के ज़रिये, जो तीन महीने तक क़ायम रहा, कम्युनिज़्म के विचारों को व्यवहार में उतारने का पहला वीरोचित प्रयास किया।

पहले इंटरनेशनल की संतान पेरिस कम्यून के अनुभव का सामान्यीकरण करते हुए मार्क्स ने इसे राज्य के एक नये प्रकार, सर्वहारा अधिनायकत्व, एकमात्र ऐसे राजनीतिक रूप के तौर पर देखा, जिसमें श्रम की आर्थिक मुक्ति शुरू हो सकती थी। मार्क्स ने ज़ोर दिया कि सर्वहारा राज्य का ध्येय सच्चा जनवाद लाना है। उन्होंने इस बात का स्वागत किया कि कम्यून नौकरशाही के मर्म का ही उन्मूलन कर रहा था, सभी राज्यीय संगठनों के कार्यकलापों को खुलेआम जनसाधारण के नियंत्रण में रख दिया था और अपने कार्यकलापों को श्रमजीवी लोगों के व्यापक हिस्सों पर आधारित करने की चेष्टा कर रहा था।

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, अपने जीवन के अंतिम वर्षों में मार्क्स और एंगेल्स ने अपना ध्यान रूस पर संकेंद्रित किया, जो विश्व क्रांतिकारी आंदोलन का केन्द्र बन गया था। रूस मार्क्स की 'पूंजी' को अनूदित करने वाला पहला देश था। इसे विजयी सर्वहारा का पहला देश भी बनना था।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मार्क्स ने १८७७ में ज़ोर्गे को लिखा कि यूरोप के इतिहास में नया मोड़ रूस में घटनाओं से सूत्रबद्ध होगा। "रूस – और मैंने वहां की परिस्थितियों का अध्ययन ग़ैर-सरकारी और सरकारी मूल रूसी स्रोतों से किया है (सरकारी स्रोत केवल इने-गिने लोगों की ही पहुंच में हैं, लेकिन पीटर्सबर्ग में मित्रों के ज़रिये मेरे लिए प्राप्त किये गये) – लंबे समय से उथल-पुथल की दहलीज़ पर खड़ा है, इसके सभी तत्व तैयार हो चुके हैं।"

इस पर ज़ोर देते हुए कि रूसी अधिकृत समाज के सभी हिस्से आर्थिक और बौद्धिक रूप से पूर्ण पतन की स्थिति में हैं, मार्क्स ने लिखा: "इस बार क्रांति पूर्व में शुरू होती है, जो अब तक प्रतिक्रांति का अटूट दुर्ग और रिज़र्व सेना रहा है।"*

मार्क्स ने रूसी क्रांति को देखने तक जीवित रहने की आशा की थी। वह और एंगेल्स कभी-कभी सर्वहारा की विजयों के समय और निकटता के अनुमानों में ग़लती भी करते थे। लेकिन ये ग़लतियां क्रांति को "ठेल कर आगे बढ़ाने" की इच्छा का परिणाम नहीं थीं। ऐसा ब्लांकीपंथी दृष्टिकोण उनके लिए बिल्कुल पराया था। और लेनिन तब असंदिग्ध रूप से सही थे, जब उन्होंने लिखा "क्रांतिकारी चिंतन के महाकायों की ऐसी ग़लतियां .. सरकारी उदारतावाद की घिसी-पिटी बुद्धिमत्ता से हज़ार गुनी अधिक उदात्त और भव्य तथा ऐतिहासिक रूप

---

* का० मार्क्स, फ़े० ज़ोर्गे को, १८७७।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अधिक मूल्यवान और सही हैं।"*

जिस साल मार्क्स की मृत्यु हुई, रूस के सिम्बिर्स्क नगर में स्कूल का बालक व्लादीमिर उल्यानोव तेरह साल का था और उसने इतनी छोटी उम्र में ही क्रांतिकारी-जनवादी साहित्य पढ़ना शुरू कर दिया था। १५ साल की आयु में उसने मार्क्स की 'पूंजी' पढ़ डाली थी और वह शीघ्र ही मार्क्सवाद का उत्साही प्रचारक तथा रूस में क्रांतिकारी मज़दूर पार्टी का संगठनकर्ता बन गया।

मार्क्सवादी विचारों के रचनात्मक विकास और उनके कार्यान्वयन में एक नया युग तथा साथ ही, अपनी मुक्ति के लिए मज़दूर वर्ग के संघर्ष और 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' में प्रस्तुत दुनिया के निर्माण में एक नया युग व्लादीमिर उल्यानोव (लेनिन) के नाम से जुड़ा हुआ है।

जहां १९वीं सदी वैज्ञानिक कम्युनिज़्म के सिद्धांत के जन्म की सदी थी, वहां २०वीं सदी नये समाज की सदी बन गयी है, ऐसे राष्ट्रों के पूरे के पूरे समुदाय के जन्म की सदी, जो "पूर्ण मानवतावाद के रूप में कम्युनिज़्म" का निर्माण कर रहे हैं।

र समाजवाद हमारे युग में केवल महान शिक्षा ही नहीं है। समाजवाद दुनिया के देशों की एक पूरी की पूरी संख्या में वास्तविकता बन गया है। २५वीं पार्टी कांग्रेस में सोवियत कम्युनिस्टों ने इस बात पर जोर दिया कि लोगों के

---

* व्ला० इ० लेनिन, '"फ़े० ज़ोर्गे, आदि के नाम ो० बेकर, जो० डीयेट्ज़गेन, फ़े० एंगेल्स और का० मार्क्स, ादि के पत्र" नामक पुस्तक के रूसी अनुवाद की ूमिका', १९०७।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कठिन परिश्रम ने एक ऐसे समाज का निर्माण किया है, जिसे मानवजाति ने पहले कभी नहीं जाना था। यह शोषण, सामाजिक असमानता और मानव गरिमा के अपमान के सभी रूपों से मुक्त समाज है, एक ऐसा समाज, जिसकी अर्थव्यवस्था निर्बाध और तेज़ गति से विकसित हो रही है, जहां श्रमजीवी लोगों की निरंतर बढ़ती भौतिक समृद्धि के साथ-साथ उनका सांस्कृतिक स्तर ऊपर उठता जा रहा है और उनकी आत्मिक समृद्धि बढ़ती जा रही है। एक ऐसा समाज, जहां स्वयं श्रमजीवी लोग वैज्ञानिक मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्व-दृष्टिकोण से पथ-प्रदर्शित होते हुए सचेत रूप से सभी सामाजिक प्रक्रियाओं को निदेशित करते हैं, जहां मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का चहुंमुखी, असीमित विकास, "किसी भी पहले से निर्धारित पैमाने के बिना सभी मानव शक्तियों"* का विकास है।

समाजवादी देशों का विकास, उनकी शक्ति की वृद्धि और उनके द्वारा पोषित नीति – शांति और तनाव-शैथिल्य की नीति – का बढ़ता लाभप्रद प्रभाव मानवजाति के सामाजिक प्रगति में मुख्य प्रवृत्ति, उस विश्व क्रांति-कारी प्रक्रिया की मुख्य प्रवृत्ति है, जिसमें सभी देशों के करोड़ों-करोड़ श्रमजीवी लोग साम्राज्यवाद, इजारेदारियों, उत्पीड़न और औपनिवेशिक विरासत के खिलाफ़ तथा शांति, राष्ट्रीय स्वाधीनता और समाजवाद के लिए संघर्ष करते हुए निरंतर शामिल होते जा रहे हैं।

इस संघर्ष में मार्क्सवाद-लेनिनवाद ही उनका

---

* कार्ल मार्क्स, 'अर्थशास्त्र की समीक्षा', १८५७-५९।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

आलोकित करता है।

बुर्जुआ सिद्धांतकार मार्क्सवाद का "खंडन" और उसे "नष्ट" करने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं। वे इसकी जगह ऐसे "वाद" क़ायम करने की कोशिश करते हैं, जो आधुनिक कूपमंडूकों के लिए अधिक स्वीकार्य होते हैं, इसे शक्तिहीन बनाने, वैज्ञानिक समाजवाद के स्थान पर वह "उदारतावादी समाजवाद" क़ायम करने की कोशिश करते हैं, जिसकी मार्क्स और एंगेल्स ने अपने समय में निर्ममतापूर्वक खिल्ली उड़ायी थी।

हम स्पष्टतया देख सकते हैं कि ये सभी प्रयास बेकार हैं। इतिहास मार्क्स द्वारा निर्धारित दिशा में दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ रहा है। विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन दिनप्रतिदिन शक्तिशाली बनता जा रहा है।

हमारे अति गतिशील युग में सामाजिक और टेक्नोलाजिकल प्रगति बहुत ही तेज़ गति से आगे बढ़ रही है। लगभग हर रोज़ ही बड़ी महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं और नयी वैज्ञानिक खोज़ों की ख़बरें आती हैं। समाज की प्रगति के साथ मार्क्सवादी सिद्धांत भी नये तथ्यों का सामान्यीकरण करते हुए और दुनिया के सामने नये क्षि[illegible] खोलते हुए निरंतर विकसित हो रहा है। यदि [illegible] और सामाजिक अनुसंधान अपनी उपलब्धियों पर [illegible] संतुष्ट होकर हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाते हैं और अप[illegible] को मात्र लोकप्रिय बनाने तक ही सीमित कर लेते हैं तो वे अनिवार्यतः अपने विलोम – जड़सूत्रवाद और मतवा[illegible] में परिवर्तित हो जाते हैं।

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मार्क्सवाद-लेनिनवाद का निश्चलता से लेशमात्र संबंध नहीं है। यह अपने को जीवन से पृथक नहीं करता, अपने को संकीर्णतावादी सिद्धांत के दायरे में बंद नहीं करता। मानवजाति की संपूर्ण सांस्कृतिक विरासत के सामान्यीकरण और आलोचनात्मक अवबोधन के आधार पर इतिहास की निश्चित अवधि में उद्‌भूत होकर मार्क्सवाद मानवजाति की अत्युत्कृष्ट उपलब्धियों को आत्मसात् करते हुए सतत विकसित हो रहा है।

सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की २६वीं कांग्रेस में लेओनीद ब्रेज्नेव ने ठीक ही कहा : "दुनिया में जो कुछ हो रहा है, उसे अवबोधन करने, जीवन की नयी परिघटनाओं के सामान्यीकरण करने तथा **मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांत के रचनात्मक विकास** की ओर उचित ध्यान दिये बिना मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी अपनी भूमिका बढ़ा नहीं सकेगी।"

मार्क्स का साहसी, रचनात्मक और अन्वेषणकारी चिंतन आधुनिक दुनिया में क़ायम और संघर्षरत है। यह वैज्ञानिकों, दार्शनिकों और राजनीतिज्ञों के कार्य में हिस्सा लेता है। यह जीवन और सामाजिक संघर्ष में अपना स्थान समझने में सबकी सहायता करता है। यह दुनिया को सभी सामाजिक बुराइयों और गंदगियों से मुक्त होने, मानवजाति को युद्धों, दुख-तकलीफ़ों, निर्धनता, भूख और अन्याय से मुक्त होने में सहायता करता है।

यह पृथ्वी पर जीवन मनुष्योचित बनाने में सहायता कर[illegible]

'का० ७'

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

W

यदि यह पुस्तक
आपके हाथ लगे
तो इसे आश्रम
पहुँचानेका कष्ट
करें। इससे आपको
आत्मिक सन्तोष
होगा और हिम्मत...

19/...

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

main. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Fundin

nivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Fou

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga